UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180433

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—68—11-1-68—2,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 R14Ji. Accession No. P. G. H

Author राहुल सांकृत्यायन.

Title जीने के लिए. 1948

This book should be returned on or before the da
last marked below.

८४३.३

राजनैतिक उपन्यास

जीने के लिये

राहुल सांकृत्यायन

प्रकाशक

किताब महल — इलाहाबाद

प्रथम संस्करण, १९४०
द्वितीय संस्करण, १९४८

मुद्रक—जे० के० शर्मा, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद
प्रकाशक—किताब-महल, इलाहाबाद

लोला के करों में

प्रेमोपहार

प्राक्कथन

डेढ़ साल हुये, जब कि "जीनेके लिये" के लिखनेका ख्याल आया था, लेकिन शायद अब भी वह कागजपर न आता, यदि छपरा जेलमें ढाई मास रहनेका अवसर न मिलता। यह मेरा पहिला उपन्यास है, यदि "बाईसवीं सदी"को उस श्रेणीसे हटा दें। कितनेही मित्रोंको तअज्जुब होगा, कितने मेरे नौसिखियापन तथा दूसरे दोषोंके कारण हँसेंगे, तो भी कलमको रोकना आसान न था, इसलिये इस अनधिकारचेष्टाके लिये पाठक क्षमा करेंगे।

जामो, सारन
१६३६

राहुल सांकृत्यायन

बाल्यस्मृति

"चाचा, पालागी; चाची, पालागी"—सुचितसिहने लौटूसिह और उनकी स्त्रीका पैर छूकर कहा।

"खुश रहो, बच्चा सुचित, कहो, कुशल-आनदसे तो रहे?"—लौटूसिहने स्नेहभरी दृष्टिसे देखते हुए अपने भतीजेको आशीर्वाद दिया।

सब आनंद है, चाचा!"

"कलकत्ताका हाल-चाल क्या है? रोजी-रोजगार तो ठीक है न? तुम्हारी कुछ तरक्की हुई भैया?"

"हाँ, तीन साल बाद अबकी एक रुपया बढा। चावल दाल महँगा है, इसलिए महँगाईका दो रुपया और मिलता है। क्या पूछते है, चाचा, यहाँ रामपुरमें क्या दुनिया-जहानकी खबर मिलती है। कलकत्तामे रोज संसार भरकी खबर आती है, और कागज छप छपकर दो-दो चार-चार पैसेमें बिकता है। आजकाल दो बादशाहतोंमें कचवाबध लड़ाई हो रही है। रूस, जापान दो बड़े-बड़े बादशाह आपसमें जूझ रहे हैं।"

"कहो बाबू, यह कहाँसे दो नई बादशाहतें पैदा हुई है? आज तक हमने उनका नाम भी नही सुना। हम तो जानते थे, कि उदयसे अस्त तक [illegible] ही राज है।"

"नही, चाचा, दुनियामें और भी बादशाहतें है। रूम-सूम, चीन-बिल्लाइत, जर्मनी-फ्रांस—कुल अठारह बादशाहतें। कलकत्तामें

सब बादशाहतोंके आदमी रहते है। जापान और रूसकी बडी बादशाहते है। और क्या कहे, चाचा, मुझको तो जानते ही हो, घरमे पढने-लिखनेका बेशी मौका नही मिला। पुलिसमे भरती होकर भी अधिक नही सीखा। लेकिन मेरी ड्यूटी चौरस्ते पर रहती है। पासमें एक तमोलीकी दूकान है। है तो तमोली, लेकिन रोज दो पैसेका कागज मँगाता है। मै कहता हूँ—'कहो सुमगल ! क्या खबर है ?' वह रोज रूस-जापानकी खबर सुनाता है। सुन-सुनकर अचरज होता है।"

"ऐसा ! क्या खबर सुनाता है ?"

"बदूककी लडाई, तोपकी लडाई, यह तो सुनते ही आ रहे है। वहाँ समुन्दरकी लडाई भी बडे जोरसे हो रही है। समुन्दरमें जहाज नावकी तरह लकडीका नही होता, सब लोहेका होता है। उसपर बडी बडी तोपे लगी रहती है। बाहरका लोहा चार अंगुल मोटा होता है, मजाल है, तोपके गोलेका असर हो। तोपका गोला ! यदि एक गोला रामपुर पर पडे, तो डेढ सौ घरमेसे किसी घरके ऊपर न एक खपडा बचे, न एक प्राणी।

"उसका लोहा बडा जबर्दस्त है न बाबू, और कितनी अकिल ! अकिलका तो सब खेल है।"

"हाँ, चाचा, समुन्दरमे पानीके ऊपर ऊपर दोनों ओर जहाजोकी तोपे चलती है। समुन्दरके भीतर भी लड़ाई होती है। जापान बडा हुसियार है। हुसियारीमें तो वह अंग्रेज, रूस सबका कान काटता है। उसने एक पनडुब्बी जहाज निकाला है, और पानीके भीतर चलनेवाली बारूद भी। जहाँ रूसके दो-चार जहाजोको देखा कि वह अपनी पनडुब्बी छोड़ देता है। उसमें सिर्फ पाँच आदमी बैठते है, और वह पानीके भीतर भीतर जाती है। ऊपर-ऊपर चले तब न दिखाई पड़े ! बस यही

समझो कि दस कोससे पानीके भीतर ही भीतर चली आती है, और जहाँ रूसके पाँच-छै जहाज खडे मिले, वही आकर ऊपर उतरा आती है। फिर लगते है आगे-पीछे, दाहिने-बाएँ गोले छूटने। क्या किसीको सँभलनेका मौका मिलता है ? चुटकी बजाते-बजाते सब डूब जाते है।"

"ऐसा युद्ध तो कथा-पुरान कही पर नही सुना। और वह पाँच जने जो पनडुब्बीके भीतर रहते है ?"

"वे तो जीव सकलप करके आते ही है। जापानकी एक पन-डुब्बी और रूसके पाँच ज़हाज—और हरेक जहाजमे हजार हजार सिपाही।"

"एक एक जहाजमे हजार हजार सिपाही !"

"अरे, वह जहाज क्या नाव है ? एक एक जहाजमे दो दो गाँव बस सकते है ! कलकत्तामे, खिदिरपुरमे बडे बडे जहाज आते है। मैने देखा है, चाचा, वह देखने हीसे बनता है, यहाँ कहनेसे कौन विश्वास करेगा ?"

"तो बाबू, कौन जीतता है ?"

"जापान। समुन्दरमे उसने रूसको हरा दिया, अब तो धरती-पर लडाई है। वहाँ भी रूस भागता जा रहा है, और जापान खदेड रहा है। कलकत्तामे लोग जापानकी जीतसे बडे खुश है।"

"काहे बाबू ?"

"जापान भी हिंदुस्तानियोकी ही तरह काला आदमी है, और रूस है गोरा; इसीलिए हिदुस्तानी लोग बडे खुश है। कहते है—देखो, गोरे लोग समझते थे कि काले आदमी कायर होते है। कायर तो नही होते, किन्तु क्या करें ! अंग्रेजोके आधीन हैं; अब वे जो कहें, सो ही न सच ! लेकिन, शाबास जापान ! उसने काले लोगोंकी लाज रख ली।"

"अच्छा तो बाबू, जापान काला आदमी है ?"

"हॉ, कलकत्तामे मैंने देखा है। जापानी ठीक नेपाली लोगों की तरह होते है। तुम तो चाचा, बाबा पसुपतिनाथका दर्शन कर आए हो न ?"

"हॉ, बाबू, नेपाली हम लोगोसे थोडा नाटे होते है, और मुंह पर उनके मूँछ-दाढी कुछ कम होती है।"

"ठीक वैसे ही। लडाई खतम होनेको है। कलकत्तासे जब मै चला, तब वह आखिर पर पहुँची हुई थी। अग्रेज और दूसरे लोग सुलह करवानेमे लगे है।"

लौटूसिहने सुचितसिहकी बातोको बडे गौरसे सुना। सुचित लौटूसिहके बडे भाईके चार लडकोमेसे सबसे छोटे थे।

लौटूसिहके बापके पास चार एकड़ खेत था। बापके मरने पर जब दोनों भाई अलग हो गए, तो एक एकके हिस्सेमें दो-दो एकड़ खेत आया। बड़े भाई, दुक्खीसिह, का परिवार बड़ा था—चार लड़के और चार लड़कियॉ। बडी गरीबी थी। लेकिन, अब चारोके चारो लड़के कलकत्तामे नौकरी करते है। तीन पुलिसमे, एक पैंटमैन। अब दो कौर अन्नके लिए उनको कोई तकलीफ नही। पहिले बापकी गरीबीके कारण मुश्किलसे बड़े लडकेकी शादी हो पाई थी; और, वह भी न हो पाती यदि एक बहनको देकर ब्याहका इन्तिज़ाम न किया गया होता। लौटूसिहकी शादी न कोई करने आया और न बापकी ओरसे कोई उतनी कोशिश ही हुई। लौटूसिंह अलग हो गए। उनके पास दो एकड खेत था, बेचने पर दो सौ रुपया मिलता। उतने खेतसे उनका अपना काम भी नहीं चलता। वह एक साहुके पास प्यादाका काम करते थे। खाना, सालमे दो जोड़ा कपड़ा और रुपया महीना—यही तनखाह थी। सूदके तकाजाके लिए लोगोके पास उन्हें जाना

पड़ता था और शील-संकोच दिखलानेके लिए महीनेमें एक-डेढ और उन्हे ऊपरसे मिल जाते थे। लौटूसिह नक़द रुपएमेंसे एक पैसा भी खर्च नही करते थे। साहुके यहाँ सूदकी दर बडी कडी थी। डेढ़-दो रुपया सैकड़ा (माहवार)से कम पर वह क़र्ज देते न थे। साहु उधार वसूल करनेमे बडे कडे थे। जहाँ वादासे बेवादा हुआ कि भट नालिश हुई। दस-बारह साल नौकरी करनेके बाद, चालीस सालकी उम्रमे तीन सौ रुपया दे, लौटूसिहने आठ सालकी लड़की राधाको मोल लेकर शादी की।

अट्ठारह बरसके हो जानेपर भी जब घरमें लडका नही हुआ, तो उन्हे बडी चिन्ता हुई—निर्वंश हो जानेकी चिन्ता उतनी नही, जितना कि यह ख्याल करके कि बुढापेमे नाव कौन खेवेगा। दोनों प्राणियोने बड़ी बडी मिन्नते मानी। गाजीमियाँको मलीदा और मसानी माईको सुअरका छौना माना गया। तब जाकर, इक्यावन बरसकी उम्रमे, लौटूसिहके लडका पैदा हुआ। नाम रक्खा गया देवराज। लौटूसिहके वशमे पढ़ने-लिखनेका रिवाज नही था, लेकिन, साहुके लडकोको पढते-लिखते देखकर उनका भी मन ललचाया।

देवराज इस समय पाठशालाकी दूसरी श्रेणीमें पढ़ता था, और सदा अपने दर्जेमे अव्वल रहा करता था। जापान और रूस-का नाम उसने भी सुन रक्खा था, लेकिन उसके लिए युद्धका समाचार उड़ती खबर थी। अध्यापकोकी प्रथम तो तनखाह ही सात-आठ रुपए होती थी, जिससे तीन रुपएका अखबार लेना उनके लिए आसान काम न था। फिर उनको अख़बार पढनेका कोई शौक भी न था। अपने पिताके बगलमें बैठा देवराज सुचितसिहकी बातोंको बडे गौरसे सुन रहा था। लेकिन, इसका यह मतलब नही कि वह रूस-जापानके युद्धके सम्बन्धमें बाप-माँसे अधिक जान सकता था।

सुचितसिंहका कायदा था कि जब घर आते, तो चाचाके लिए भी कोई न कोई भेटकी चीज लेते आते। अबकी बार उन्होने दो नारियल भेट किए। बातचीतके बाद सुचितसिह चले गए, लौटूसिहने गॅडासेसे नारियलको काटा। ताजी गरी थी। एक टुकडा देवराजकी तरफ बढाते हुए कहा—"बचवा, देखो ज्यादा न खाना, नही तो पेटमे दर्द होगा।"

पार्वती खेलने गई थी। उसके लिए एक टुकडा रखकर लौटूसिहने बाकी नारियल राधाको देकर कह दिया कि बच्चोको ज्यादा मत देना।

२

माँ-बाप

रामपुर एक छोटा सा गाँव था, उसके डेढ सौ घरोमे अधिकाश राजपूतोके थे। खेती लायक भूमि मुश्किलसे सौ एकड़ थी। गाँवके जमीदार राजपूत थे, यद्यपि जमीदारी बँट बँटकर आध-एकड पाव-एकड रह गई थी। जमीन बलुआ और बहुत उपजाऊ न थी। लोग जिस ढंगसे खेती करनेके आदी थे, उससे अधिक उपज होना संभव न था। सत्तर घर राजपूतोमेंसे बहुत कम ऐसे थे, जिनका कोई व्यक्ति बाहर नौकरी करने न गया हो—पलटन और पुलिसमें उनके बहुतसे जवान थे। रामपुरके खाते-पीते घर वस्तुत: गाँवकी खेतीके भरोसे नही, नौकरीके सहारे गुजर-बसर करते थे। आस-पासके इलाकेमे रामपुरके जवान दो बातोके लिए मशहूर थे; एक अपनी शारीरिक शक्ति, लम्बे-चौडे डीलडौल और तदुरुस्तीके लिए, दूसरे मार-पीट और लाठी चलानेमे। इन बातोमें उनका मुकाबला दूसरा कोई न कर सकता था।

दो-ढाई रुपये महीनेकी आमदनी और डेढ-दो एकड बालू-बंजरके खेतसे लौटूसिहके घरका गुजारा चलना मुश्किल था। राधाने आमदनीके दो और रास्ते निकाल लिए थे। लौटूसिंहके घरपर न बैल था और न बैल रखनेकी उन्हे जरूरत ही थी। बरसातमे काम करके या मोलके हलसे वह अपने खेतको जोत-बो लेते थे। हाँ, राधाके पास बराबर चार बकरियाँ रहती थीं। हर बकरी सालमें दो बार बच्चे जनती थी। प्रति बकरी सालमे पाँच-छै

बच्चे होते थे, जिन्हें सात-आठ महीना पालकर वह दो-दो रुपएमे आसानीसे बेच लिया करती। राधाको बकरियोसे हर साल तीस-चालीस रुपएकी आमदनी हो जाती थी। उसे सीने-पिरोनेका काम भी अच्छा आता था। उसकी सिलाई ही अच्छी नही होती थी, बल्कि लाल-पीले कपडोकी जोडसे बेल-बूटा निकालकर वह बच्चो और स्त्रियोके कुर्त्ते-कुर्त्तियाँ, टोपी, तकियाके खोल——कई तरहकी चीजे बनाती थी। दाम भी वह ज्यादा न चाहती थी, दो-तीन आने रोज मिल गए तो उसीसे सन्तुष्ट। फेरीवाले बिसाती घर पर आकर उसकी चीजे मोल ले जाते थे।

राधा चटाई पर बैठी अपनी सिलाईमे लगी थी। बगलमे लड़की पार्वती कपड़ेका टुकडा लेकर गुडिया बना देनेके लिए ज़िद्द कर रही थी। राधाको आज ही सीकर कुछ कपड़े देने थे, इसलिए वह पार्वतीको बहलाने और बातमे फँसानेकी कोशिश कर रही थी। चटाईसे कुछ हटकर एक खाँचेके नीचे बकरीके चार छोटे-छोटे बच्चे दबे हुए थे। एक जगह बकरियाँ बँधी थी, जिनके सामने पीपलके हरे-हरे पत्ते पड़े हुए थे। जाडेका दिन छोटा होता है, इसलिए राधाको रसोईकी भी चिन्ता थी। इसीसे उसकी सुई और भी तेज़ीसे चल रही थी।

राधाकी उम्र अट्ठाइस बरसकी होगी। कहनेके लिए अभी वह युवती थी और उसके सिर्फ़ दो बच्चे हुए थे; लेकिन ग़रीबी और संसारके जीवन-संघर्षने उसे बहुत गंभीर और चिताकुल बना दिया था। उसके चेहरे पर जवानीकी बेपरवाही और प्रफुल्लताकी जगह सजीदगी अधिक दिखाई पड़ती थी। तो भी राधा उन स्त्रियोमें न थी, जो चिताकी आगको खुद कई गुना बढ़ाकर रात-दिन उसमें सुलगा करती है। राधाके मिज़ाजमें चिड़चिड़ापन छू नही गया था। किसीसे बोलते वक्त वह सदा हँसमुख रहा

करती थी; कोई दो बात कहे भी, तो उसे बर्दाश्त कर लेती थी। किसीसे झगडा करते उसे कभी किसीने नही देखा। उसकी मधुर-भाषिताका ही यह जादू था, कि टोलेकी सभी स्त्रियाँ उसकी सखी और मित्र थी। इतना सब होते हुए भी राधामे एक विशेष गुण था। वह अपनी सहेलियोकी इतनी विश्वासपात्र थी, कि सभी उसकी बातको बिना आनाकानीके माननेके लिए तैयार रहती थी। स्त्रियोके आपसी झगड़ोको निपटानेके लिए वह बनी-बनाई पंच थी। ब्याह, उत्सव और पर्वमे राधाकी बहुत पूछ थी। गीत गानेमे, गाँवमे क्या—अगर मुकाबला किया जाता तो—आसपासके गाँवोमें भी उसकी बराबरी करनेवाली कोई स्त्री न मिलती। उसका कंठ मधुर, आवाज ठोस और तर्ज बडा सुन्दर था। कितने गीत उसे याद है, इसका भी उसे छोड दूसरेको पता न था। वह गीत गानेमे ही गाँवकी स्त्रियोकी अगुआ न थी, बल्कि डोमकचमें तो वह कमाल करती थी। डोमकचके अभिनय और नाचको सिर्फ़ स्त्रियाँ ही देख सकती है, और पुरुष क्या, छोटे-छोटे बच्चे भी भीतर जाने नही पाते; लेकिन स्त्रियाँ कहती थी कि राधा नाचनेमे बडी प्रवीण है। और नकल करनेमे तो इतनी सफल कि एक बार होलीके समय राधाने साहेबका कपडा पहिन, एक दूसरी स्त्रीको अर्दली बना, चाँदनी रातमे लोगोके दरवाज़ोका निरीक्षण शुरू किया। उस समय जाडोमे अक्सर प्लेग आ जाया करता था, और सरकारकी ओरसे सफाईकी बड़ी ताकीद थी। बूढे देव-कुमारसिंह अपने ओसारेमे चारपाईपर सोये थे। साहब बहादुरने एकाएक वहाँ पहुँचकर छडीको दो-तीन बार चारपाईके पावे पर पटकते हुए कहा—

"वेल् डेवकुमार, टुम सोटा है। टुमारा डरवाजा बहुट गंदा। उट्ठो-उट्ठो"।

देवकुमारसिहको अभी पहली नीद आई थी। घबराकर उठे और जब सामने टोपधारी साहबको देखा, तो उनके होश उड गये। वह बोलनेके लिए कुछ सोच भी न पाए थे कि अर्दली चिल्ला उठा—

"कलट्टर साहब बहादुरको तू नही पहचानता ? कैसा बेवकूफ है ! साहबको सलाम नही करता ?"

देवकुमारसिह—"हु-हु-हुजूर, माई-बाप, सलाम ! माफ कीजिए।"

"माफ नही होटा। टुम नही जानटा, गाँव गॉवमे प्लेग फैला हाय, टुमारा डरवाजा पर नाबडान है।" छडीसे धमकाते हुए "अभी नाबडान साफ करो, साफ करना मॉगटा।"

"हुजूर, अभी साफ करता हूँ"—देवकुमारसिहकी नीद तो न जाने कहाँ चली गई थी। वह घरमे फावडा लाने घुसे। साहब बहादुर और अरदली बाहर टहल रहे थे, और आस-पासकी दीवारोकी आडमे कितने ही लोगोको हँसीका रोकना मुश्किल हो रहा था।

देवकुमारसिह बाहर आए तो साहब बोल उठे—"सौ रुपया जुर्माना। बहुट गडा।"

"हुजूर, गरीब अदमी हूँ, बालबच्चे मर जायेगे। अभी साफ़ कर देता हूँ। फिर गदा नही रक्खेगे। जुर्माना माफ कर दे। दोहाई हुजूरकी !"—देवकुमारसिह साहबका पैर पकड़ना चाहते थे।

"हटो हटो, नही माफ होगा। पुलिसका नौकरी किया हाय, टुम छे रूपया पेन्सन पाटा है, जुर्माना डेना होगा।"

"सरकार, गरीबपरवर, अब कसूर नही होगा। एक कसूर माफ।"

"अच्चा, एक बार छोड डेटा हाय। नाबडान अभी साफ करो।"

देवकुमारसिह फावडा लेकर नाबदानकी नादकी ओर बढ़े। उसमें गंदा पानी भरा था। सोच रहे थे—क्या करें। इतने में 'साहब' बोले—

"क्या देखटा, मट्टी डालो। टोकरीमें बरो। क्या माँगटा? सिर पर उटाओ। जाओ, गाँवसे बाहर दूर।"

रात चाँदनी जरूर थी, लेकिन आधी रातको गाँवसे बाहर अकेले जाना देवकुमारसिंहके लिए आसान बात न थी। सबसे मुश्किल यह थी, कि जिस ओर जानेके लिए 'साहब' बहादुरने उन्हें इशारा किया, उधर रास्ते हीमें, पीपलके पेडपर एक नट रहता था। यही वक्त है, जब कि वह ताल ठोका करता था। बड़े-बड़े ओझा और सयाने भी उस नटसे परास्त रहते थे। देवकुमारसिंहका पैर आगेकी अपेक्षा पीछे ही ज्यादा पडता था। लेकिन 'कलट्टर' साहब, उनकी छडी और जुर्माना उन्हें खूब याद था। उस वक्त उनके मनने यही कहा कि 'कलट्टर' साहबसे जान बचाना जरूरी है, चाहे नट उसे मुफ्त हीमें ले ले। पीपलके नीचे कुछ पत्तोंका मर्मर शब्द हुआ। देवकुमारसिंहने समझा कि नट तैयार है, तो भी वह जानपर खेलकर आगे बढे। देखा, काला साँड खडा है।

टोकरी फेंककर सोचते आ रहे थे—कहाँसे यह कसाई 'कलट्टर' आया। अभी दो-तीन टोकरी फेंकनी होगी। आज प्राण जरूर जायेंगे।

दरवाजेपर आकर देखते है, तो वहाँ स्त्रियोंकी भीड लगी है। सभी ठहाका मारकर हँस रही है—"राधा बहिनीने खूब छकाया।"

देवकुमारसिंहने जब सुना तो उन्हें बडी लज्जा आई। बोले—"अच्छा, भौजी, अबकी बार तुम्हारी बारी रही; हमारा भी मौका आयेगा।"

× × ×

२

दो बजे दिनका समय था। लौटूसिह अपनी नौकरीपर साहुके घर गये हुए थे। एतवारका दिन होनेसे देवराज भी द्वारपर, अध्यापकके दिये हुए सवालोको लगा रहा था। उसकी माँ, राधा, घरका काम खतम करके चटाईपर बैठी कपड़े सी रही थी।

पार्वतीने जिद्द करके माँको गुडिया सीनेके लिए मजबूर किया। इसी समय सुचितसिह आ गये। उन्होने चार गज मलमलका कपडा सामने रख, चाचीका पैर छूकर प्रणाम किया। राधा उठकर सुचितसिहके बैठनेका इतिजाम करना चाहती थी, लेकिन, सुचितसिह देवराजकी चटाईपर बैठकर बोले—"नही चाची, रहने दो। यही बैठता हूँ। चाची, यह कपडा तुम्हारे और देवराजके लिए है।"

"काहे तकलीफ किया, सुचित बबुआ? हम लोगोके पास देख नही रहे हो, कुर्ता-कुर्ती सब है।"

"हाँ, है तो। लेकिन, चाची, हमारा भी तो कुछ धरम है।"

"अच्छा बबुआ, तुम ही न हमारे हो। तुम न देखोगे तो कौन देखेगा?"

कुछ इधर-उधरकी बातोके बाद चाचीने कहा—

"बबुआ सुचित, एक बात तुमसे कहनी थी, उस बार भी कहनेका ख्याल था, लेकिन याद ही नही पडी। बेटा, देखो, वहाँ कलकत्तामे अपना ही न हाथ जलाते होगे? लछमिनियाँको ले जाओ न? पकी-पकायी रोटी तो मिल जाया करेगी।"

लछमिनियाँ, सुचितकी स्त्री, राधाके चचेरे भाईकी लडकी थी। उसका ब्याह करानेमे राधाका खास हाथ था। लछमिनियाँका अपनी बुआसे बहुत प्रेम था और वह भी उसे पार्वतीकी तरह ही मानती थी। सुचितको इधर-उधर करते देख राधाने फिर कहा—

"बहूको साथ रखनेमे क्या हरज है? बाहर जानेमें लाजकी

बात क्या? पतिके साथ रहनेमे शरम! देखते नही, सूरजसिह अपने बाल-बच्चोके साथ रहते है, छुट्टीमें उनके साथ ही घर आते है, और सबसे मिलमिलाकर फिर चले जाते है।"

"सो तो ठीक। लेकिन चाची, सूरजसिह स्टेशन-मास्टर है। चालीस रुपया और उससे दूनी ऊपरकी आमदनी। रहनेके लिए क्वाटर। मुझे तेरह रुपया मिलता है। अकेले रहनेके लिए तो घर मुफ्त है, लेकिन स्त्रीको रखनेके लिए किरायेका मकान लेना पडेगा। पॉच-छै रुपये महीने तो उसीमे लग जायेगे। फिर, दो प्राणीका खाना कपडा!"

"तो बबुआ, तुम्हारी ही बात ठीक है। मुझे नही मालूम था। लेकिन, चारो भाई तो कलकत्तेमें ही रहते हो। सबकी बहुएँ नही। अगर बडी बहू साथ रहे तो, खाने-पीनेकी तकलीफ नही होगी।"

"हॉ, चारो कलकत्तामे तो रहते है; लेकिन, कलकत्ता रामपुर-की तरह छोटासा गॉव नही है। बडे भैया ललुआमे, मझले भैया अलीपुर, मै सियालदह और छोटकन भैया और भी दूर बजबजमे—चार-चार पॉच-पॉच कोसपर हम लोग रहते है। एक बारके आने ही जानेमें सारा दिन चला जायगा।"

"स्त्री-जाति, मुझे क्या मालूम! लछमिनियाँसे मैंने कह दिया था, कि अबकी जो सुचित बबुआ आवेंगे, तो तुझे साथ ले जानेको कहूँगी। वह 'नही नही' कह रही थी, लेकिन जाती क्यों न।"

"सो तो जो कुछ तुम कहती, उससे कौन इन्कार करता? लेकिन चाची, यदि सूरजसिहकी तरह भी मै रहता तो भी तुम्हारी बहूको साथ न ले जाता। मझले भैया जमादार हैं, भौजीकी भी बात चल जाती। मै भी धूर-लँगोटा चढाता हूँ; इसी-

लिए अफसर लोग खुश रहते है। उन लोगोकी मेहरबानी है जब कभी असामी (कैदी) वहाँसे इधरको भेजना होता है, तो मेरा ख्याल रखते है, और इसी बहाने सालमे दो बार जरूर एक-दो दिन घर रहनेका मौका मिल जाता है।"

"सो तो देखती हूँ बाबू, तुम्हारे मझले भैयाको दो-दो तीन-तीन बरस हो जाते है घर आए।"

"कैदी ले आनेका तो काम बहुत जोखिमका है। चाची, बडे भारी-भारी चोर होते है। रेलसे कूदकर यदि कोई कैदी भाग गया, या शहर हीमे चकमा देकर चला गया, तो सिपाही-रामको ही सरकार जेल भेजती है। हमारे जान-पहिचानियोमेसे दो इसी कसूरमे जेल भेजे जा चुके हैं, नौकरी तो उनकी गई ही। चोरने कह दिया—'बाबू पास हीमे घर है, एक साँझके लिए ले चलें। पाँच सौ रुपया देंगे।' लालचके मारे सिपाही ले गये। हथकडी खोलकर घरमे जाने दिया और बैठे दरवाजा अगोर रहे है। पूछते है तो मालूम होता है, कि घरमे कोई नही। एक चोर ने कहा—"सिपाही जी, गगाजीमें थोडे ही पानीमे एक घडा रुपया और अशर्फी, चोरीका, मैने छिपा रक्खा है। बरसातके बाद फिर उसका पता नही लगेगा, किसीके काम नही आवेगा। थोडी देरके लिए वहाँ ले चले तो घडा निकालकर मै आपके सपुर्द कर दूँ। दया-धरमका ख्याल हो तो कुछ मेरे बाल-बच्चोको दे देना, नही तो व्यर्थ बरबाद होनेसे आपके काम आ जाय तो वह भी अच्छा।' मूर्ख सिपाही धनके लोभमे चोरको वहाँ ले गये। हथकडी खोलकर जहाँ उसे पानीमे जानेका मौका मिला कि दो डुबकियोमे वह धारके बीचमे पहुँच गया। सिपाही लोग मुँह ताकते रह गये। पीछे हरेकको दो-दो सालकी सजा। देखा न चाची, कितना जोखिमका काम है?"

"हाँ बाबू, सुनकर मेरा तो रोआँ खड़ा हो गया। मन तो कहता है कि कह दूँ, ऐसा जोखिम मत उठाओ। लेकिन फिर तो मुझे और लछमिनियाँको सालमें दो बार तुम्हारा मुँह देखनेका मौका नहीं मिलेगा।"

कुछ इधर-उधरकी बात होनेके बाद दूसरे भाइयोंकी चर्चा चली। सुचितसिंहने कहा—

"सुक्खू भैया तो देवता है, चाची, हमारे घरके सरदार है। और, लक्ष्मी उन्हींके भाग्यसे है। मैं, और दोनों भाई भी, चार-पाँच रुपया काटकर बाकी सब तनखाह और ऊपरकी आमदनी हर महीने सुक्खू भैयाके हाथमें दे आते है। पाँच साल हो गया, उस वक्त मुझे ग्यारह रुपये मिलते थे। पाँच रुपये खर्चके लिए रखकर छै रुपये मैंने उनके सामने रक्खे। उन्होंने दो रुपये मेरे हाथमें रखकर बड़ी करुणाके साथ कहा—"बबुआ, इसे ले जाओ। तुम अखाड़ामें लड़ते हो। घी नहीं खाओगे तो जोर करते नहीं बनेगा।' मेरे आनाकानी करनेपर बोले—'बबुआ सुचित, मैं जानता हूँ, कि कैसे पेट काट-काटकर हमारे भाई रुपया देते हैं। परिवारका बोझ, माँ, चार स्त्रियाँ और सात-आठ बच्चे। सबका खाना और इज्जत ढाँकना। रुपया लिये बिना काम नहीं चल सकता। लेकिन, क्या मेरे आँखें नहीं है। हमारे शेरकेसे तीनों भाई। अच्छी तरह खाने और कसरत करनेका मौका मिलता तो सारे कलकत्तामें कितने माँके लाल है, जो उनकी पीठमें धूल लगा पाते। मैं जानता हूँ, सोनेके शरीरको माँटी करके यह रुपया मुझे मिलता है। बापके मरनेपर बड़ा भाई उसकी जगह होता है। मैं बड़ा भाई हूँ और अपना धरम समझता हूँ। भूख और गरीबीसे क्षुब्ध हो अट्ठारह बरसकी उम्रमें मैं कलकत्ता भाग आया और उसी उम्रमें पहुँचने-पहुँचते तुम लोगोंको भी लाकर भाड़में झोंकना

पडा। कलकत्ताका पानी, कितना कमजोर! मै तो तमाम जिदगी पैटमैन रह गया। लेकिन, पढने-लिखनेवाले कितने सुख और इज्जतसे रहते है—यह बात मुझसे छिपी नही है। मेरी बडी लालसा थी कि तुम पढते। एक भाई न भी कमाता तो भी हम उसके लिए तैयार थे। लेकिन, तुम्हारी रुचि न देखकर—और कुछ अपनी गरीबीका भी ख्याल करके पॉच रुपयेके लालचसे तुम्हे भर्त्ती करा दिया। अब घरमे दस बीघा खेत हो गया है। पन्द्रह रुपया महीना चला जाय, तो घरका काम निबह जायगा। बबुआ सुचित, हम तीन भाई है। तुम घरकी फिक्र मत करो। खूब देह बनाओ। उस दिन पजाबी पहलवानको तुमने पछाडा था, उसे सुनकर मेरी गज भर की छाती हो गई थी। मुझे लज्जा है कि जितना तुम्हारे लिए करना चाहिए, उतना मैमे नही किया....' भैयाकी ऑख डबडबा आई। चाची, सुक्खू भैया देवता है।"

"ठीक कहा बाबू, सुक्खू भैया जैसा भाई, राम करे, सबको मिले। घरमे अपने-परायेका उनको कुछ ख्याल नही। बडी बहूने पहले एकाध बार कहा भी—'किसके लिए मर रहे हो, तुम्हारे न लडका न लडकी। घर भरके लिए कितने दिन तक कलकत्तामे सत्ती होगे?' तो सुक्खू भैयाने ऐसा जवाब दिया कि बहूका तबसे फिर मुँह नही खुला। कहा—'चुप रह डाइन, ये किसके लडके है? क्या हम चारो भाई एक मॉकी कोखसे नही निकले है? क्या हमने उसी मॉका दूध नही पिया? लड़का-लडकीसे क्या सहोदर भाई कम है? और लडके-लडकी ही कितनोको जग जिता देते है? कितने माँ-बाप तो बुढापेमे उनके नाम पर रोते है। मेरे भाइयों जैसे भाई तूने कही देखे है? मुँह खोलकर जवाब देनेकी तो बात क्या, कभी किसीने मेरी बातको भी नही टाला? मेरे कहनेपर वे हाथ बाँधे

चौबीसों घंटा तैयार रहते है। मेरे भाई ऐसे हैं जहाँ मालूम हुआ कि भैयाका सिर दर्द कर रहा है, तीनोमेंसे जो जहाँ है वह वहींसे आ पहुँचता है। फिर कभी ऐसी बात मुँहसे न निकालना।' और तबसे बहूने कुछ नही कहा।"

"हाँ चाची, आजकल ऐसा भाई मिलना मुश्किल है। हम तीनो भाइयोंने कई बार कहा, कि भौजीको बुला लो। क्वाटर मिला ही है। लेकिन कहते है—'नही, बेकूफ हो। यहाँ रखनेसे खरच बढेगा। इतनाही नही सिवाय रोटी पकानेके तुम्हारी भावजके लिए यहाँ कोई काम भी तो नही रहेगा। वहाँ, गाँवमे, उस पाँच रुपयेका बडा मूल्य है, जिसे कि हम यहाँ खर्च कर देगे। गाँवमे रहनेपर घरका काम-काज, लडकोंकी देख-भाल—पचास काम है। मै तो खुद पेन्शन लेनेवाला हूँ। रामप्रसाद जहाँ इन्ट्रेन्स पास हुआ, कि थानेदारीमे भर्त्ती कराया। और, फिर यहाँ जिदगी भर थोडे ही रहना है; रामपुर चलकर घर देखना है कि ?' चाची, अब उनको यही धुन है कि राम-प्रसादको दारोगा बनवाकर गाँव चले आवें। रामप्रसाद घरका बडा लडका है। उसके लिए वह जान देते है। रामप्रसाद क्या जानता है, कि मझले भैया उसके बाप है ?"

राधा और सुचितको बात-ही-बातमे शाम होनेका पता नही चला। देवराज भी हिसाब लगाना भूल गया। अबेर होते देख सुचितसिहने खुद बिदाई माँगी।

३

अनाथ लड़का

क्वारका अँधेरा पक्ष था। वर्षा हफ्तेसे रुकी हुई थी। लेकिन, रामपुरके ताल, पोखरे भरे हुए थे। मक्का कट चुका था और खेतोमे बँधे मचान सूने पड गये थे। अबकी साल रामपुरमे सभी फसल अच्छी रही। धान तो और भी अच्छा। लोग कह रहे थे—बारह सालके बाद ऐसा धान आया है। आसमान बिलकुल साफ था और तारे दुगुनी जोतसे चमक रहे थे। बागके दरख्तोकी सूरतमे छिपा अन्धकार, काली स्याही पुती सी मालूम होती थी। वृक्षोपर नीचेसे ऊपर तक लाखो जुगनू चमक रहे थे। बस्तीमें चारो ओर सन्नाटा था। लेकिन बाहरकी ओर, जब तब उल्लूकी आवाज सुनाई देती और बडी भयावनी मालूम होती थी।

लौटूसिहका घर गाँवके छोरपर था। दो कोठरियाँ, सामने फूसका ओसारा और बाहर खुला आँगन। ओसारेकी एक तरफ बकरियाँ बाँधी जाती थी। गर्मियोमे लोग बाहर सोते थे, बरसातमे ओसारेमे, जाड़ोंमे घरके भीतर। एक कोठरीमें सामान रक्खा रहता था और दूसरीमे चूल्हा, जाडोमे सोनेका भी इन्तिजाम उसीमे रहता।

पहर भर रात रह गई थी, अब भी लौटूसिहके घरकी एक कोठरीसे दियेकी धीमी रोशनी दिखलाई पड़ रही थी। भीतर जमीनपर एक तरफ दो लडके पुआलपर लेटे हुए थे। दूसरी तरफ चारपाईपर राधा पड़ी थी। उसके कठसे 'घर-घर'की आवाज आ रही थी, और लौटूसिंह बडे शकित हृदयसे गौखे-

पर रक्खे दीपकके क्षीण प्रकाशसे उसके मुँहकी ओर देख रहे थ। राधाके खूनसे भरे सुन्दर-गोरे उस हँसमुख चेहरेका कही पता न था। उसके गाल भीतर धँस गये थे और आँखे कुएँमे डूबीसी मालूम पड़ती थी। उसके पतले ओठ सूख गये थे और चेहरेपर झुर्रियाँ पड रही थी। उसके सरके काले केश बहुत कम बच रहे थे। राधा असाढसे ही बीमार पडी थी—बुखार आने लगा था, लेकिन, कितने दिनोतक लौटूसिहको उसने इसका पता भी नही लगने दिया। शरीरको गरम देखकर जब कभी लौटूसिह-ने पूछा तो कह दिया कि जरस है। शरीरमे शक्ति कायम रखनेके लिए वह जबर्दस्ती कुछ खा लिया करती थी। राधाने घरका काम-काज तब तक नही छोडा, जब तक बीमारीने उसे चारपाईपर पटक नही दिया।

वैद्यने बतलाया कि पाण्डुरोग है और, लौटूसिहने अपनी सारी शक्ति राधाकी चिकित्सामे लगाई। दस-बारह मीलके भीतर कोई अस्पताल न था और दूरके सरकारी अस्पतालमे राधाकी भर्ती हो जाती, इसमे भी सदेह था, क्योकि लौटूसिहको किसी प्रभावशाली पुरुषकी न सिफारिश मिलती और न उसके पास उतना रुपयेका ही बल था। लेकिन, दो-चार कोसके भीतर जितने भी वैद्य-हकीम थे, सबके ही दरवाजोकी उन्होने खाक छान डाली। सिलाई और बकरीसे राधाने जितने रुपये जमा किये थे, सब खर्च हो गये। बकरियाँभी बिक गई। दस-दस बीस-बीस करके लौटूसिहने डेढ सौ रुपये साहुसे उधार ले लिये। साहुने नौकर जानकर बड़ी मेहरबानी की थी और उनके दो एकड़ खेतको मकफूल रखकर रुपया सैकडेपर कर्ज दिया था। लौटूसिंह खूब समझते थे कि वह कैसी आर्थिक कठिनाइयो-मे अपनेको डाल रहे है, लेकिन वह अपने शरीर और बच्चोंको बेचकर भी स्त्रीकी प्राणभिक्षा पानेके लिए तैयार थे। महीनें

राधा जीवन और मरणके बीच झूलती रही। वैद्य निराश हो रहे थे। जोतिसियोने भी कुडली देखकर बतला दिया कि साढे साती सनीचरका कोप है, बचना सभव नही। लौटूसिहका ओझो और सयानोपर विश्वास था। यद्यपि सभी सयाने सभी बातोमे एक राय नही रखते थे। कोई कहता—ब्रह्म-पिशाच लगा है, कोई कहता—जिन कोई कहता—मुडकटा और कोई तेलिया-मसान—किन्तु यह माननेको सभी राजी थे कि कारण बहुत जबर्दस्त है; लोग, भभूत कुछ नही सुनता। राधा गाँवकी एक अनपढ स्त्री थी; लेकिन, तो भी इन बातोपर उसका उतना विश्वास न था। कितने ही दिनो तक वह बेहोश रही और किसीको उसके जीवनकी आशा नही रह गई थी। लौटूसिह बच्चोके भयसे खुल-कर रोते न थे; लेकिन, उनकी आँखे अक्सर डबडबायी रहती थी। पार्वती अपने चचेरे भाईके लडकोके साथ खेलती थी। लछमिनियाँ उसपर बहुत ध्यान रखती थी।

देवराज अभी दस सालका बच्चा था। लेकिन, गरीबीके कारण दुनियाके भले-बुरे थपेडोको सहनेका मौक़ा उसे मिला था, जिन्होने उसे अधिक चितनशील बना दिया था। माँकी बीमारीकी गंभीरता उससे छिपी न थी, चाहे उससे छिपानेकी कितनी ही कोशिश की जाती रही। वह ख्याल करता था—माँ मर जायगी, तो, इस घरका, बाबूका, पार्वतीका और मेरा क्या होगा? स्कूल और गाँवके लोगोकी भर्त्सनाओ—जिनका कि कारण दरिद्रता और जरूरतसे अधिक आत्मसम्मान होता—को सुननेके बाद जब उसका कलेजा विह्वल हो जाता, तो माँकी गोद ही थी, जिसमें एक क्षण बैठकर वह सब कुछ भुला देता। उसका मन माँके एक-एक कामकी ओर घूमने लगता था। सोये देवराजको माँ सबेरे कहती—"बेटा देवराज, उठो, पाठशाला जाओ, मुँह धोलो, कलेऊ करके

चले जाग्रो।" धूपमे ग्रानेसे मुँहको सूखा देख, वह व्यग्र हो जाती, ग्रौर देवराजके मुँहको ग्राँचलसे पोछती हुई कितने ही प्रश्न कर डालती। देवराजका मुँह, ग्राँख, नाक ठीक वैसी ही थी जैसी कि राधाकी। रग भी गोरा ग्रौर बाल तो करीब-करीब भूरे। देवराज सोचते-सोचते चिन्तामे डूबकर इतना कातर हो जाता कि उसका मन उसे यह कहकर समझाना चाहता—नही सब झूठ है, माँ मरेगी नही।

इधर एक सप्ताहसे राधाकी ग्रवस्था सुधर चली थी। उसे हल्का सा पथ्य भी दिया जाने लगा था, ग्रौर ग्रब वह मृत्युके पजेसे बाहर थी। ग्राज, इस रातको 'घर-घर' की ग्रावाज सुनकर लौटूसिह उठ पडे ग्रौर साथ ही, उनकी चिन्ता भी बडे वेगसे जग पडी। वह दिया बालकर बडी गभीरतासे राधाका मुँह देख रहे थे, उनके मन मे तरह तरहकी शंकाएँ उत्पन्न हो रही थी—बीमारीका सुधार कही दिखावटी तो नही है, ग्रक्सर ऐसे सुधार धोखा देनेके लिए होते है। 'घर-घर' की ग्रावाज उन्हें ग्रौर भी चिन्ताकुल कर रही थी। लेकिन, वह देख रहे थे कि राधा गंभीर निद्रामे उतान सो रही है। लौटूसिहने ग्रौर नज़दीकसे देखनेके लिए चिराग उठाया। उसकी रोशनी या पैरकी ग्रावाजके कारण राधाकी नीद टूट गई। ग्राँख खोलकर देखा तो पासमे लौटूसिहका चेहरा ग्रौर चिराग था। निर्बलताके कारण बड़े क्षीण स्वरमे उसने कहा—

"तुम जाग रहे हो, सोए नही? मै तो खूब सो गई थी। चिरागसे क्या देख रहे हो?"

"नही, ऐसे ही देख रहा था। तुम्हारे कंठसे 'घर-घर' की ग्रावाज़ ग्रा रही थी।"

"कुछ नही, मै बिलकुल ठीक हूँ। ग्रब खाली कमजोरी है। मैने कितनी बार कहा कि तुम ग्रपने खाने-सोनेकी

ओर ध्यान रक्खो। महीनों हो गये रात-रात जागते! क्वारका महीना है, जर-जूडी तो ऐसे ही आ जाती है। जो तुम भी बीमार पड गये तो घरका क्या होगा? बच्चोका क्या होगा? चार महीनेकी बीमारीके बाद शरीरमे शक्ति आनेमे कुछ समय जरूर लगेगा, लेकिन, मुझे मालूम है, बीमारी चली गई। हाथ जोडती हूँ, तुम्हारे पैरो पडती हूँ, मेरे लिए और दोनो नन्हे बच्चोके लिए तुम अपने शरीरपर दया करो।"

राधाकी धीमी आवाजमे निर्बलता थी, और इतनी बात करनेमे उसे कितनी ही बार सुस्ताना पडा, लेकिन, उसमे एक बात स्पष्ट थी—अब वह प्रकृतिस्थ है।

लौटूसिह जाकर सो रहे।

× × ×

राधाकी बात ठीक निकली। अतिजागरण और खाने-पीनेकी लापरवाहीके कारण लौटूसिंहका शरीर बहुत दुर्बल हो ही गया था, क्वारके उतरते-उतरते उन्हे जूडी आने लगी। राधाने अभी-अभी चारपाई छोडी थी, अभी वह कोई काम करने लायक न थी। दीवाली आई, लेकिन लौटूसिहको जूडीने न छोडा। उस वक्त माँ-बापके पथ्य और दूसरे कामका भार अधिकतर देवराजके ऊपर था। सुचितसिहकी स्त्री भी उसे मदद देती थी और चचेरे भाइयोंका परिवार भी ख्याल रखता था। दीवाली के बाद तिजारी होकर जूडी जारी रही। राधा जितनी तेजीसे बल प्राप्त नही कर रही थी, उससे अधिक तेजीसे लौटूसिंह कमजोर होते जा रहे थे। भोजन उन्हे रुचता न था और पेट की तिल्ली बढ रही थी। धीरे-धीरे अवस्था भयानक रूप धारण करने लगी। कार्तिककी पूर्णिमासी तक यद्यपि राधाका शरीर

बहुत कुछ पूर्ववत् हो गया था—हाँ, उसके बाल सब गिर गये थे—लेकिन अब लौटूसिहने चारपाई पकड ली। भाई-बदोने कातिकमे खेत तो किसी तरह बोआ दिया, लेकिन दवा-दारू और घरका खर्च एक बडी समस्या थी। न लौटूसिहकी तनख्वाह और ऊपरकी आमदनीका सहारा था और न राधाकी बकरियाँ और उसकी सुई ही काम दे रही थी। अपने प्यादेके लिए, और उससे भी ज्यादा, दो एकड खेतोके लिए साहूने डेढसौ रुपये कर्ज दे दिये थे। अब वह एक रुपया भी अधिक देनेको तैयार न थे। बहुत कहने-सुनने और गिडगिडानेपर उन्होने पच्चीस रुपया और दिया।

दवा-दारूका कोई असर न हुआ। बीमारी बढती ही गई और अगहनके मध्यतक लौटूसिह चल बसे। पतिकी बीमारीमे लगी होनेके कारण राधाको सीने-पिरोनेका मौका कहाँ था? अब सवाल था श्राद्ध और क्रिया-कर्मका। इसके लिए रुपया कहाँ से आये? यह मामूली प्रश्न नही था। राधाने अपने बचे-खुचे जेवरोको गिरवी रखकर उधार-बाढ करके पतिका श्राद्ध किया।

राधाके लिए ससार सूना था। यहाँ प्रेमिक और प्रेमिकाके भावुकतापूर्ण हृदयोके बिछोह मात्रकी बात न थी, सबसे बडा प्रश्न था आश्रयविहीन होना। दोनोकी बीमारी और श्राद्धमें ढाई सौ रुपये कर्ज हो गये, और ढाई रुपया महीना सूद बढ रहा था। उस पर राधाको अपने और दो बच्चोंका पेट चलाना था। घरमे एक अच्छत भी अनाज न था और सुई-धागा छोडकर राधाके पास जीवन-यात्राका कोई सम्बल नही रह गया था। राधाका दिल भारी बोझसे दबा हुआ था। जीविकाके लिए वह अपनी सिलाई पर भरोसा कर सकती थी लेकिन, जब वह ढाई रुपये महीने सूद और अपने खेतका ख्याल करती, तो उसके सिरमे चक्कर आने लगता। उसको चारो ओर अँधेरा ही अँधेरा नजर आता।

४

गाँवका त्याग

माँ-बापकी बीमारीके कारण देवराज पिछले तीन मास अपनी पाठशालासे अनुपस्थित रहा। लेकिन, अध्यापक उसकी योग्यताको जानते थे, और उसके स्वभावके कारण बहुत सहानुभूति रखते थे। उन्होने उसे तीसरे दर्जेसे चौथेमें तरक्की दे दी। पाठशाला रामपुरसे आध कोसपर थी। वार्षिक परीक्षाके बादकी पद्रह दिनकी छुट्टी तथा एक महीना और बीत गया। अब भी देवराज पाठशाला नही जाता था। अध्यापक स्वय देवराजके घर आये। उसकी विपत्तिको देखकर उन्होने हार्दिक सहानुभूति प्रकट की। आगेकी पढाईका जिक्र छिडनेपर मालूम हुआ, अब वह देवराजके लिए असंभव है। उसे अपनी खेती देखनी होगी। ढाई रुपये महीने सूदको यदि भविष्य-पर छोड भी दिया जाय, तो भी घरके कपडे-लत्ते और दूसरे खर्चका इन्तिजाम करना होगा। अध्यापक स्वय ग्रामीण थे और नॉर्मल स्कूलमे पढनेके वक्त सिर्फ दो साल शहरमे रहे थे। उस समय दूसरे हिंदी-अध्यापकोकी तरह उनका भी ज्ञान बहुत परि-मित था। लेकिन वह एक बात जानते थे—यदि देवराज एक साल और पढ जाये तो दर्जा चार पास करनेपर वह छात्रवृत्ति जरूर लेकर रहेगा; और, फिर मिडिल पास करके कही अध्या-पकी पा जायेगा। लेकिन वह समझते थे कि इस एक वर्षकी पढ़ाईके लिए देवराजके सामने जो कठिनाइयाँ है, उनका उनके

पास कोई हल नही है। अधिक-से-अधिक वह देवराजकी फीसका इन्तिजाम अपने पाससे कर सकते थे। लेकिन, दो तीन रुपयेकी किताबे ? और ऊपरसे घरकी आफत ? अध्यापकके लिए समाज और राजशासन, भगवान् और भाग्यकी बनाई वस्तुये थी, इसलिये वह उनकी कुछ नुक्ताचीनी नही कर सकते थे। देवराजकी प्रतिभाके बारेमे भी वह सिर्फ इतना ही जानते थे कि गणितमे वह सौ-मे-सौ नबर लेता है। इतिहास और भूगोल एक बार सुनने मात्रसे उसे याद हो जाते है। नक्शाके स्थानो-को वह आँख मूँदकर बतला सकता है, और गद्य-पद्य पाठ सम्बन्धी प्रश्नोमे शायद ही उसने कभी भूल की हो। अभी अगले साल देवराजको जिले भरके विद्यार्थियोमे अपना जौहर दिखलानेका मौका मिलता। अबतक वह उसके बारेमे इतना ही जानते थे कि वह दर्जेमे सबसे तेज लडका है।

अध्यापकने देवराजसे बातचीत की। वह पढनेके लिए अधीर हो रहा था, लेकिन, वह अपनी बेबसीको भी अच्छी तरह जानता था। हसरत भरी निगाहसे वह पाठशाला जानेवाले रास्तेको देखनेके सिवा और कोई क्षमता नही रखता था। उसने आँखोमे आँसू भरकर पाठशाला और मकानकी ओर खीचनेवाले मार्गकी चिन्ताओको प्रकट किया। अध्यापक भी अपनी दोनो आँखे तर करनेके सिवा उसकी कोई सहायता न कर सकते थे।

राधाके पास बकरियाँ न थी, लेकिन उसकी सुई अविरत चल रही थी। ढाई-तीन आने रोज वह उससे कमा लेती और जहाँ तक तीनो प्राणियोके पेटका सवाल था, उसकी उसे फिक्र न थी। लेकिन, कर्जका ख्याल आते ही उसका कलेजा दहल उठता—अगर खेत भी महाजनने ले लिया, तो बच्चोका भविष्य अधकारपूर्ण है। उसने दिमागपर बहुत जोर दिया, कितना ही सोचा, लेकिन;

कर्ज अदा करनेकी तो बात ही अलग, सूद देनेकी भी कोई तरकीब न सूझ पडी।

देवराजका काम था खेतकी रखवाली करना। अभी पुर चलाना या जोरका दूसरा काम वह कर नही सकता था। पडोसी रामसिहने प्रस्ताव किया कि हमारे बैलोकी सानी-पानी कर दो तो हम तुम्हारे खेतको सींच देगे। उसने उसे कबूल किया, और उसका काम था रामसिहके बैलोकी नॉदोको शामको साफ करना, फिर पोखरेके पानीसे भरना और बैलोको खिलाना। सबेरे भी गौशालाको साफ करनेमे उसे मदद देनी पडती थी। अब उसकी गणित और इतिहासकी सारी प्रतिभा सिर्फ यह सोचनेमे लगी रहती थी, कि औकातमे भारी घडेको उठानेके कारण होने वाला उसके जोडोका दर्द कैसे कम होगा? रातको मॉने खाना दिया और जैसे ही पुआलपर लेटा कि उसे गभीर निद्रा आ गई। मॉ जानती थी कि उसका ग्यारह बरसका देवराज जिस मेहनत मे पड़ा है, वह उसेकी क्षमतासे बाहरकी बात है। लेकिन. वह असमर्थ थी। वह जानती थी कि अपने पिताकी तरह देवराजको भी हाथ-पैर चलाकर ही गुजारा करना होगा। दिन महीने और महीने बरसके रूपमे स्वय परिणत होते जायँगे, और मशक्कतका काम करते करते देवराज समय पाकर अपने पिता ही की तरह मजबूत हाथपैरोवाला हो जायगा। उसका दिमाग यही तक जाता था कि बडा होनेपर शायद बाजितपुरके साहु देवराजको भी एक रुपये महीनेपर नौकर रख ले, प्यादागिरीमे देवराजको भी शायद डेढ-दो रुपयेकी ऊपरकी आमदनी हो। लेकिन, ढाई रुपये तो हर महीने सूद हीके निकल जायेगे। तो, क्या ढाई-सौ रुपयोके वास्ते देवराजको हमेशाके लिए बिक जाना होगा?

× × ×

माघमे सुचितसिह फिर असामी (कैदी) को बनारस पहुँचाने आये। चचाकी मौतकी खबर उन्हे चिटठीसे मिल चुकी थी और उन्होने देवराज और चाचीको सान्त्वनाका पत्र भी भेजा था। वह बनारससे लौटते वक्त एक दिन रामपुर रहनेका मौका निकाल पाये। चाची सुचितसिहको देखकर रोई। पर उनका ढाढस बँधानेके लिए सुचितसिह सिर्फ आँसू बहा सकते थे। अपनी स्त्रीसे उन्होने चाचीकी आर्थिक अवस्थाका पता पा लिया था। बात चलनेपर राधाने कहा—"खानेके लिए तो मैं सीकर काम चला सकती हूँ, लेकिन, कर्जका सवाल बेढब है। दो एकड़ खेत है, यदि वह भी निकल गया तो मेरा देवराज किसके घर जायेगा?"

सुचितसिहने इसपर बहुत सोचा-विचारा। उनको यह मालूम था कि खेतकी सिचाईके लिए देवराज रामसिहके यहाँ सानी-पानी कर रहा है। उनको भी और कोई रास्ता न दिखाई पडा हिचकिचाते हुए उन्होने चाचीके सामने एक प्रस्ताव रक्खा—"चाची, जो बात हो गई, उसके बारेमे तो हम लोगोका बस ही क्या? लेकिन, ससारमे जब तक जीना है, तब तक कुछ करना है। मै जानता हूँ, तुम सिलाई करके अपने खानेका काम चला लोगी। लेकिन, सवाल है क़र्ज और ढाई रुपये महीने सूदका। इतना ही नही, देवराजके आगमका भी ख्याल करना है। क्या चाचाकी तरह इसे भी एक रुपयेका प्यादा बनाओगी? तुमसे कहनेमे मुझे बडा सकोच होता है। लेकिन, क्या यह अच्छा नही होगा कि देवराज मेरे साथ कलकत्ता चला चले। मेरे साथ रहेगा और किसी आफिसमे चिट्ठी-पत्री ले जानेका काम मिल जायेगा। सात-आठ रुपया भी मिल गया तो चार रुपया घर भेज सकेगा। होशियार लडका है। सयाना होते और अच्छा काम मिल सकता है। पुलिसमें भर्ती हो सकता है।"

कलकत्ताका नाम सुनकर राधाके चेहरेपर उदासी छा गई, लेकिन वह भली प्रकार जानती थी कि सुचितका उसपर और देवराजपर बड़ा स्नेह है, और वह उसीकी भलाईके लिए कह रहा है। उसने कहा——

"सुचित बबुआ, मै जानती हूँ, तुम देवराजकी भलाईके लिए कह रहे हो और तुम्हे छोड ससारमे उसका और है ही कौन ? लेकिन, मेरा माँका हृदय है। साँझको उसे घरमे न देखकर अधीर हो जाती हूँ। कलकत्ता चले जानेपर, बरस-बरस, दो-दो बरस फिर अपने देवराजको न देख सकूँगी; मै कैसे धीरज धरूँगी ?"——कहते कहते राधाके नेत्रोसे आँसूकी धार बह निकली और उसका गला रुँध गया। राधा बडी धीर प्रकृतिकी स्त्री थी और आगे-पीछे खूब समझ सकती थी। महीनोसे अपनी पारिवारिक समस्याओपर वह सोच रही थी और कहीसे कोई रास्ता अब तक उसे दीख नही पडा था। सुचितके ऊपर जितना उसका विश्वास था और जिस तरहका प्रस्ताव उसके सामने रक्खा गया था, उसे वह एकदम अस्वीकृत नही कर देना चाहती थी——

"भैया सुचित, तुम अपने छोटे भाईके हितकी बात कह रहे हो, यह मै जानती हूँ। लेकिन, पुत्र-स्नेह उसमे बाधक हो रहा है। तो भी, कल सबेरे तक मुझे अपने दिलको समझाने दो। देवराजका आगम मुझे अपने प्राणोसे बढकर प्रिय है।"

सुचित सिह चले गए। सभी बाते देवराजके सामने हुई थी। उसके सामने अभी तक पाठशाला और घरकी विपत्तियोका द्वन्द्व चल रहा था। पाठशालाको वह छोड चुका था। तो भी घरकी विपत्तिसे निस्तारका कोई रास्ता उसे दिखाई नही पडता था। सुचितसिहके प्रस्तावमे आशाकी झलक थी और उससे भी बढकर

आकर्षण उसकी ओर उसके बाल-हृदयमे इसलिए हो रहा था, कि वह हिन्दुस्तानके सबसे बडे शहर—कलकत्ता—को देखेगा, वहाँ रहेगा; और सभवत. कभी कभी उसे किताब पढनेका भी मौका मिलेगा। उसने माँसे उस दिन शाम और रातको कई बार बडे आग्रहसे कहा—

"माँ, मुझे सुचित भैयाके साथ जाने दो। यहाँ सानी-पानी करते मेरी कमर टूट जायेगी और पढा-लिखा सब भूला जायगा। मै बराबर चिटठी लिखूँगा और रेलका टिकट तो मेरा आधा ही लगेगा। जैसे सुचित भैया सालमे दो-एकबार घर आ जाया करते है, वैसे मै भी आऊँगा।"

आँसू बहाते हुए भी माँने अपने वचनसे आशाकी कुछ सूचना न दी, तो देवराजने कहा—

"माँ, मेरे जानेसे तुम्हे दुख होगा, किन्तु तुम्हें छोडकर मेरा दिल भी टूक-टूक हो जायगा। तुम रोओगी। मै भी क्या वहाँ, अकेलेमे आँसुओको रोक सकूँगा ? लेकिन यहाँ भविष्य अधकारमय है। वहाँ कुछ आशाकी झलक दिखाई पडती है। माँ, तुम मुझे सुचित भैयाके साथ जाने दो।"

सुचितसिहके जानेके बाद राधाकी आँखें सूखने न पाई। वह उनके प्रस्तावपर बराबर सोचती और आँसू बहाती रही। लेकिन सोनेसे पहले माँ-बेटोने तै कर लिया. कि देवराजका सुचितसिह के साथ कलकत्ता जाना ही अच्छा है।

सुचितसिहको घंटा भर दिन चढे रामपुरसे रवाना होना था। राधाने देवराजके रास्तेके लिए गुड़के लड्डू और कुछ खानेकी चीजे तैयार की। माँ-बेटोंने पार्वतीसे इस बातको छिपा रखनेका पूरा प्रयत्न किया और तड़के ही खबर देनेपर लछमिनियाँ पार्वतीको अपने साथ ले गई।

रातमे सुचितसिहने कई बार विचार किया और अपने प्रस्तावके औचित्यपर उनका विश्वास और भी दृढ हो गया। चाचीकी दूरदर्शितापर उनका विश्वास था; लेकिन पुत्रस्नेहके बलको वह समझते थे। उनको कम विश्वास था, कि चाची देवराजको कलकत्ता जाने देगी। सबेरे जब लछमिनियाँने राधाके निर्णयको सुनाया तो उन्हे बडी प्रसन्नता हुई।

राधाके पास लडकेको नया कपडा बनानेके लिए न पैसा था और न समय। धोबीसे धुलानेका भी वक्त कहाँ था? देवराजने अब तक कभी जूता नही पहना था, इसलिए नगे पैर चलना उसके लिए कोई नयी बात न थी। उसकी धोती कई जगह फट चुकी थी, लेकिन राधाने उसे अच्छी तरह सी दिया था। यही हालत कुर्तेकी भी थी। एक फटी गमछी और एक मैली टोपी—यही उसकी पोशाक थी। साथमे उसके पाथेयकी एक पोटली। जब सुचितसिह उसे लेने आये तो देवराज तैयार था।

घंटा भर दिन चढे, दोनोने रामपुरसे प्रस्थान किया।

५

कलकत्तामें

सबसे नजदीकका स्टेशन—जखिनिया—देवराजके गाँवसे आठ मीलपर था। गाडीके समयसे एक घंटा पहले ही दोनो वहाँ पहुँच गये। देवराजको दुनियाँमे आये यद्यपि ग्यारह साल हो रहे थे, किन्तु न उसने अब तक कोई शहर देखा था और न रेलगाड़ी ही। उसने एकाध बार स्कूलके अफसरको टोप लगाए जरूर देखा था, लेकिन किसी अग्रेज स्त्री-पुरुषको देखनेका उसे मौका नही मिला था। माघका महीना था, इसलिए बहुतसे लोग प्रयाग-मेलेमे जा रहे थे। गाडीमे काफी भीड़ थी। वस्तुत: यदि सुचितकी लाल पगडीने मदद न दी होती, तो वहाँ उन्हे जगह न मिलती।

पहले पहल रेलका देखना देवराजके लिए एक कौतूहलजनक घटना थी। रेलके बारेमे सुनकर उसका जो चित्र देवराजके सामने खिचा था, वह यह नही था, जिसे कि वह अब देख रहा था। धुँआँ फेकते इजनको उस जल्दीमे उसने एक बार बड़े गौरसे देखा। यद्यपि उसे रेलके बारेमे कई प्रश्न करने थे, लेकिन जिस तरह लोग डब्बेमें ठसाठस भरे हुए थे, वहाँ बातचीत करनेका मौका नही था। देवराजको बैठनेकी जगह एक किनारे मिली थी। गाडी रवाना हुई। बाहर तारके खंभे वृक्ष और जमीन भागे जा रहे थे, इसे वह बडे आश्चर्यसे देख रहा था। डब्बेके भीतर स्त्री-पुरुष, बूढे-जवान, सभी तरह के लोग थे। बीच बीचमें "गंगा माई" और "अछयवट बाबा"

की जय होती जा रही थी। चार बजे शामसे पहले ही गाडी सारनाथ पार हुई। धमेखके स्तूपोको देखकर यात्रियोंने स्वयं उनके इतिहासको कहना शुरू किया—"यही धमाख है। लोरिककी धमाख। लोरिकको नही जानते? वही बहादुर अहीर, समरू-का भाई। वह दूधसे भरे घडोको दोनो हाथोमे लेकर एक धमाख से दूसरे धमाखपर कूद जाता था। कैसा जवान, क्या पूछ रहे हो? वह सतयुगका आदमी था। उस वक्त उनचास हाथ का शरीर होता था। भैसकी सीग पकडकर वह ऐसे उठा लेता था, जैसे चार दिनके बकरीके बच्चेको कान पकडकर हम-तुम। यहाँ, बर्मा-जापानके भी लोग आते है। वह समझते है कि यह उनके देवताका स्थान है। पडे, जानते नही, कितना झूठ बोलते है। किसीने झूठ ही उनसे कह दिया होगा, यह तुम्हारे देवताका स्थान है। देखो तो कैसे चालाक है। इन्होंने लोरिककी धमाखको चीन-जापानवालोका देवता बना दिया!. .हाँ, आप ठीक कह रहे है, पडे बडे चट होते है। हमारे गाँवके एक सस्कृत पढे-लिखे ब्राह्मण आए काशीजी। मणिकर्णिकास्नान और अन्न-पूर्णा-विश्वनाथका दर्शन करनेमे पंडोंने सब पैसा चढवा लिया। बेचारे गलीसे जा रहे थे, देखनेमे भले मानुस-सा एक पडा मिला। पूछा—यजमान, कहाँ जल्दी जल्दी जा रहे हो? काशी-करवटमे करवट नही लोगे? काशी-करवट? तुम नही जानते? जिसने काशी-करवटमें करवट न ली, उसकी काशी-यात्रा सफल कहाँ? .बेचारा ब्राह्मण भीतर गया। एक कुआँ है, जिसके ऊपर लोहेके छडोका चचरा पडा है। पासमे ले जाकर पडेने कहा— उतान लेट जाओ। लेट जानेपर कहा— दोनो कानो, दोनो आँखों, नाक और मुँहपर चाँदीका सिक्का रक्खो। यहाँ चाँदी ही चढती है। तामा चढानेसे पाप लगता

है. . . . .। ब्राह्मणके पास सिर्फ एक चौअन्नी रह गई थी और उसीको उसने मुँहपर रखकर करवट ले ली। पडे ने चौअन्नी लेकर पीठ ठोक दी! . .देखा, कैसे होशियार है। ठीक कह रहे हो—पहले तो करवट बदलनेमे ही कितने कुएँमे चले जाते थे। इसीलिए सरकार बहादुरने लोहेका चचरा लगा रक्खा है।

"और, क्या इसमे भी कोई सदेह है? काशीके ठग मशहूर है। एक साधु बाबा आप बीती बतला रहे थे। हाथमे उनके दो-ढाई रुपयेका बडा अच्छा लोटा था। किसी भलेमानुसने आकर अभिवादनपूर्वक पूछा—महाराज, भोजन करेगे? एक महात्माको भोजन करानेकी श्रद्धा है। हाँ भगत, क्यो नही—साधूने बहुत प्रसन्न हो उत्तर दिया। आइये यहाँ, हलुआईकी दूकानपर। क्या खायेगे, पूडी? कचौडी? मिठाई? पाव-पाव भर? तीनो? अच्छा भैया हलुआई, बाबाजीको तीनो चीजे पाव-पाव भर देना तो। और, महाराज, दूध तो नही पियेंगे?—बच्चा, जो तेरी श्रद्धा। एक सेर?—तो ले आइये न, इसी लोटेमे ला दू। श्रद्धालु भगत लोटा ले दूध लेने गया। बाबाने पत्तल साफ कर दी, लेकिन दूधका कही पता नही! आध घंटा बीता, एक घटा, डेढ घटा, दो घटा। बाबा चारो ओर देख रहे है। हलुआईने पूछा—और कुछ चाहिए? नही तो। हाथ धोइये न। और, वह भगत? कौनसा भगत? वही जिसने पूडी दिलवाई। दिलवाई क्या, मैने आपको पूडी दी। वह तो निमत्रण देकर लाया था। सच? तो, कुछ ले तो नही गया? हाँ, दूध लानेके लिए लोटा ले गया। अच्छा तो लोटा और दूध उससे लेते रहियेगा। छै आना पैसा इधर निकालिए।"

देवराजको शहरके भीतर जानेका मौका नही था, किन्तु सड़ककी बगलमे उसे बहुतसे बडे बडे मकान देखनेको मिले। दूधसे,

घुले, ऊँचे-ऊँचे मकान, पक्की-चौड़ी सड़के सर्व-प्रथम उसने आज ही देखी। बनारस-छावनीके प्लेटफार्मपर लोगोकी भीड़को देखकर उसे जान पड़ा—मेला लगा हुआ है। यहाँसे बडी लाइन पकडनी थी। दोनो जने एक डब्बेमे जाकर बैठ गए। मुसाफिर कम थे, जगह बहुत खाली थी। राजघाटके पुलको पार करते सुचितसिहने भी "गगा माईकी जय" बोली और जेबसे निकालकर एक पैसा बहुत जोरसे फेका। लेकिन वह पुलके खभेसे टकरा कर 'भन्' से गिर पडा। सुचितसिहने बतलाया, गगामाईको अपनी कमाईमेसे कुछ चढाना चाहिए। गाडी बहुत धीमी चालसे पुल पार कर रही थी। देवराजने देखा गगाकी हरी धार धनुषाकार बह रही है और उसीके बाएँ तटपर बडे बडे सफेद महलो और पक्के घाटोंसे सुसज्जित काशीनगरी बसी हुई है। पहला दर्शन, और समय भी कम, इसलिए वह विशेषतौरसे किसी चीजको नही देख सका, लेकिन यह अनुभव जरूर कर रहा था कि मै एक विचित्र, सुदर स्वप्नपुरीको देख रहा हूँ। पुल पारकर गाडीकी गति तीव्र हुई और कुछ ही मिनटोमे वह मुगलसराय पहुँच गई।

यहाँसे उन्हे कलकत्तेकी डाक पकडनी थी, जिसके आनेमे दो घटेकी देर थी। देवराज और सुचित गाडीसे उतरकर पुल पार हो उस प्लेटफार्मपर गए जहाँपर डाक आनेवाली थी। अबतक देवराजने एक ही तरहके स्त्री-पुरुष, एक ही भाषा और एक ही वेष देखे थे। यहाँ उसने पहले पहल अग्रेज स्त्री-पुरुष देखे। ऊपरकी तरफ सिमटे बाल, सिरपर परदार टोप और पट्टीसे कसी मुट्ठी भरकी कमर—देखकर उसे मालूम होता था, यह किसी दूसरे लोकके प्राणी है। उनके गोरे रगको देखकर पहले उसे भ्रम हुआ कि कोई रग पुता हुआ है। वह यह भी देख रहा था कि

कैसे इन गौराग स्ि ुःगोोः सामनेसे आते देख लोग भयभीत हो अगल-बगल हट जाते हैं। धोतीकी तरह लॉग बॉधकर साडी पहनी हुई महिलाको देखकर वह सदेहमे पड गया कि वह स्त्री है या पुरुष, और उसके सदेहका निवारण तब तक नही हुआ, जब तक कि पूछनेपर सुचिर्तासहने बतला नही दिया कि ये मद्रासकी स्त्रियॉ हं। जवान स्त्रियोको सिर खोले घूमते देखकर भी उसे कम कौतूहल नही हुआ। सलवार पहने पजाबी स्त्रियोको वह बडी देर तक एकटक देखता रह गया।

देवराजको एक जगह बैठाकर सुचितसिह पूडी लाने गए। खाना खानेके बाद उन्होने एक काम यह किया, कि देवराजके फटे अँगोछे और मैली-कुचैली टोपीको हटाकर उसे एक चारखाने-का अँगोछा और नयी टोपी खरीद दी। अब भी उसके बदनपर वही फटा कुर्ता और धोती थी, जिन्हे कि कुछ ही महीनो बाद वह हमेशाके लिए भूल जायेगा। वह कितने ही लोगोको सुदर, साफ और एकसे एक तडक-भडकवाली पोशाकमे देख रहा था—यह भी जीवन है।

चिराग जल गये थे, जब कलकत्तेकी गाडी आई। वह भी भरी थी। लेकिन सुचितसिहकी पुलिसकी वर्दीने बैठनेका स्थान बिना दिक्कतके दिला दिया। बडी-बडी दा-ी-मूँछ्वाले पगडी-धारी सिक्ख-जवानोको देखकर उनके बारेमे उसने सुचितसिहमे कई प्रश्न किए। सुचितसिह खुद भी बडे डीलडौलके आदमी थे और उनका कसरती शरीर, खासकर गर्दन छिपी रहनेवाली चीज़ नही थी। सिक्खोमे भी एक पहलवान था और थोडी देरमें दोनो घुल-मिलकर बात करने लगे। देवराज गॉवकी भाषा ही बोलना जानता था। किताबें उसने हिन्दीमे पढी जरूर थी, लेकिन उसे बोलनेका मौका कभी नही पडा था। सिक्खोंको

आपसमें उसने ऐसी भाषा बोलते सुना जिसको समझना उसके बसके बाहरकी बात थी। गाड़ी चलती गई और एकपर एक स्टेशन गुजरते गए। आरा और पटना तक वह किसी तरह जागता रहा, उसके बाद बेंचपर बैठे बैठे ऊँघने लगा। एक दो बार मुँहके बल गिरनेसे बचा। सुचितसिह पुलिसके सिपाही थे, शरीरसे भी पहलवान, लेकिन उनमे बड़ी नम्रता थी जो कि आस-पासके लोगोपर अपना प्रभाव डाले बिना नही रह सकती थी। उनकी प्रार्थनापर देवराजको पैर समेटकर लेटनेकी जगह मिल गई।

रातको पाँच बजे गाडी हवडा स्टेशनपर पहुँची। सुचित-सिंहने बैठे ही बैठे एकाध झपकी ली। उन्होने देवराजको जगाया और उसे हाथ पकडकर गाड़ीसे नीचे उतारा। हजारो बिजलीकी रोशनीसे जगमगाता मुसाफिरखाना और ऊँचे-ऊँचे लोहेके खंभोपर टँगी उसकी छत तथा खड़े, चलते, बैठे, सोये हज़ारो आदमियोकी भीड देवराजकी अर्धनिद्रित आँखोको भी चमत्कृत किए बिना नही रह सकती थी। स्टेशनसे बाहर आनेपर मालूम हुआ, पुल टूटा है और गंगाको स्टीमरसे पार करना होगा। देवराजने अभी तक डोंगीका भी दर्शन नही किया था। उसके लिए गगाका छोटा-सा स्टीमर चलता-फिरता महल-सा मालूम पड़ा। आजके सारे सफ़रमे उसको एक बातका अनुभव हुआ—गाँवके जीवनकी गति बडी मद है, जब कि यहाँ हर जगह जनता आहिस्ता चलना जानती ही नही। स्टीमरसे उतरकर हरिसनरोडकी मोडसे सुचितसिहने ट्राम पकड़ी। देवराजने समझा—यह शहरके भीतरकी रेल है। लेकिन, इजिनके बिना दो डब्बोको चलते देखकर उसे कुछ कौतूहल हुआ। उसने मनको समझा लिया—बैल-घोडेका काम जिस तरह इंजिनने ले लिया,

उसी तरह इजनका काम इन डब्बोने ले लिया होगा। उस वक्त सडक सुनसान सी थी। दोनो तरफ ताडो ऊँचे मकानोंकी पंक्तियाँ चली गई थी। सिवाय रास्तेपर जलते बिजली बत्तियोके और कोई रोशनी नही थी। बीच-बीचमें क्षण भरके लिए मंद हुई ट्रामसे कोई कोई आदमी उतर जाते थे। स्यालदह उतरकर जब सुचितसिह पुलिसके बासेपर पहुँचे, तो अभी भी सूर्य उगे न थे।

६

सेठका नौकर

मुंह-हाथ धोकर सुचितसिंहने थानेदारके यहाँ हाजिरी दी और उनके कहनेपर ड्यूटी शामको मिली। खाने-पीनेसे निवृत्त हो पहला काम उन्हे करना था देवराजके लिए एक नया कुर्त्ता-धोती ला देना और फिर कुछ साथियोसे मिलना, तथा हो सके तो देवराजके लिए कोई काम तलाश करना। रास्तेमे वह जा रहे थे कि सेठ रामगोपालके दरबान मैकूसिह पहलवान मिले। साहेब-सलामी हुई। कुशल-प्रश्न पूछा गया। लडकेके बारेमें पूछनेपर अपने चचेरे भाईकी विपत्ति और नौकरीकी तलाशके बारेमे भी कह दिया। मैकूसिह सुचितसिहके बड़े कृतज्ञ थे। जब पंजाबी पहलवान जसौधासिहको सुचितसिंहने पछाडा था, तो सारे कलकत्तामे सुचितसिहकी धूम मच गई थी। सेठ रामगोपालने बहुत कोशिश की, कि सुचितसिह उनके यहाँ दरबान रहे। वह वेतन भी अधिक देना चाहते थे। लेकिन यह बात मालूम होनेपर सुक्खूसिहने साफ़ इन्कार कर दिया—"भैया, सेठ हो चाहे साहूकार, उनकी नौकरी मै तुम्हारे लिए कभी भी पसंद नही करूँगा। एक दो महीने तक पहलवान दरबानकी आव-भगत होगी और इसके बाद तुम्हे खरीदा गुलाम समझा जायगा। किसी दिन भी नाराज होकर नौकरीसे हटा देंगे। पुलिसकी नौकरीमे चौबीस घंटा हाथ बाँधकर खडा रहनेको तुम्हें कोई नही कहेगा, न मनमानी फर्माइश करेगा। नौकरीसे

निकालना भी आसान नही है। तनखाह कम है, लेकिन बुढापेमे पेन्शन भी तो मिलती है।"

[illegible] कहने हीपर सेठ रामगोपालने मैकूसिहको अपने यहाँ रक्खा था, इसलिए वह उनके कृतज्ञ थे। मैकूसिहने कहा—

"तो हमारे सेठके यहाँ लड़केको काम मिल जायगा। सेठजी-के दोनो लडको—रामलाल और श्यामलाल—पर एक नौकर था, जो, दो दिन हुए, चला गया। काम मुश्किल नही है। लडकोके साथ रहना और उनके पुस्तक-पत्रेको ढोना।"

सुचितसिहने मौकेको अनुकूल समझा और वह सीधे सेठ राम-गोपालकी कोठीमे जा पहुँचे। सेठने पूछनेपर कहा—

"हाँ, बच्चोको नौकर चाहिए तो। लेकिन यह लडका बहुत छोटा है। हमारा रामू तेरह सालका है और यह ?"

"बारह बरसका। और कुछ पढना-लिखना भी जानता है।"

"पढने-लिखनेसे तो कोई मतलब नही, हाँ, यह लडकोका काम तो ठीकसे कर सकेगा ? काम यही कि लड़कोके साथ बराबर रहना। उनके लिए पानी देना, दूसरे काम करना। दश बजे लडके विशुद्धानंद-सरस्वती-विद्यालय पढने जाते है। गाडीपर उनको वहाँ पहुँचा आना और एक बजे उनके लिए जलपान ले जाना। चार बजे उनके साथ लौट आना, फिर उनके साथ रहना। कहो, इतना काम इससे हो सकेगा ?"

"हाँ"—देवराजकी राय लेकर सुचितसिहने कहा। तनखाहकी बात पूछनेपर सेठजीने खाना और दो रुपया महीना बतलाया। बहुत कहने-सुननेपर चार रुपया कबूल किया, लेकिन इस शर्तके साथ कि यदि काममें वह कुछ कच्चा निकलेगा तो तनखाह तीन ही रुपये रहेगी।

कलसे ही देवराजका कामपर आना तै हुआ।

सुचितसिहको इस सफलतापर बडी प्रसन्नता हुई, और वही बात देवराजके लिए भी थी। इतनी जल्दी नौकरी लग जानेकी उम्मीद सुचितसिहको न थी। शाम तक सुचितसिहने देवराजको कामके बारेमे कई बार शिक्षा दी। देवराजको अब सेठजीके घरपर ही रहना था। कही वह अकेलापन अनुभव न करे, इसके लिए उन्होने हर दूसरे-तीसरे दिन आनेका वचन दिया।

दूसरे दिन आठ बजे सुचितसिह देवराजको सेठजीकी कोठी-पर पहुँचा आए। कल रामू-शामू स्कूल गए हुए थे, इसलिए देवराजसे उनकी भेट नही हुई थी। देवराजके नाबालिग मालिकों-को अपने नए नौकरके बारेमे कल ही मालूम हो चुका था और वे उसकी बडी उत्सुकताके साथ प्रतीक्षा कर रहे थे। देवराजने देखा——रामू आयुमे उससे एक बरस भले ही बडा हो, लेकिन ऐसे दो रामुओको वह एक साथ जमीन दिखला सकता था। रामूका मुँह लम्बा ओठ मोटे और नीचेका जबडा हमेशा गिरा रहता था। उसकी दोनो आँखे दो दिशाओको देखती थी। सूरत देखने हीसे मालूम होता था, कि उसके पास दो माशा भी बुद्धि नही। शामू (श्यामलाल)की उमर सत्रह-अट्ठारह सालकी थी। यद्यपि शरीर और कदमे वह भी निर्बल और छोटा था तो भी वह रामूकी तरह कुरूप न था। अभी दोनों ही पतले थे, लेकिन, कौन जानता है, आगे चलकर वे सेठ रामगोपालका अनुकरण न करेगे ?

देवराजका काम था——जैसा कि सेठजीने कहा था——रामू-शामूके साथ रहना और उनका काम करना। लेकिन, साढे दस बजे उन्हे स्कूल पहुँचाकर जब देवराज लौटता, तो खानेके

समयको छोडकर, बाकी दो घटे, उसे सेठानीजीकी ताबेदारी करनी पडती थी। देवराज बहुत सुदर स्वस्थ लड़का था। नागरिक शिष्टाचारसे अब तक उसको वास्ता न पडा था, तो भी बहुत दिनो तक वह अपने गॅवारूपनको कायम नही रख सकता था। कुछ ही दिनोमे दोनो लडके उससे हिलमिल गये, और रामूके दिए पुराने, किन्तु साफ कपडे पहनकर जब वह निकलता, तो कोई कह नही सकता था कि यह रामू-शामूका नौकर है। न जाननेपर किसी काममे एक बार देवराज भले ही गलती कर डाले, लेकिन एक बार बतला देनेपर फिर कभी वह भूल नही सकता था। रामू-शामूकी बैठकमे उनके बिस्तरे, कुर्सी-मेज, पुस्तक-पत्रे, सभी चीजोको वह बाकायदे सजा देता था। हरेक चीजको सुव्यवस्थित रखना उसकी आदत थी। काममें फुर्ती और सावधानीके साथ वह हमेशा इस बातका बडा ख्याल रखता था कि किसीको कुछ कहनेका मौका न मिले। दो हफ्तेके भीतर ही रामू-शामू ही नही, सेठजी भी, देवराजको बहुत मानने लगे। लेकिन, न जाने क्यो, दो घटे हाथ जोड-कर सेवामे रहनेपर भी सेठानीजी उसको उतना न चाहती थी। उनकी भौहे तनी और स्वरमे रुक्षता देखकर बहुत सोचने पर भी देवराजको यह समझमे नही आता था कि उसने क्या भूल की है। वस्तुत: देवराजकी भूल इसका कारण न थी और सेठानीजी स्वभावसे क्रोधी भी न थी; लेकिन, जिस वक्त रामूके साथ वह देवराजको देखती उनके मनमे बडी ठेस लगती—क्यों मेरा रामू ऐसा नहीं हुआ? लेकिन, इसमे बेचारे देवराजका क्या अपराध? इतना होनेपर भी सेठानी देवराजका अनिष्ट न चाहती थी और बाज वक्त अपने व्यवहारपर उन्हे खुद पछतावा होता था।

रामू और शामूको घरपर पढानेके लिए दो दो शिक्षक रक्खे गए थे। शामू तो खैर किसी तरह चल भी सकता था, लेकिन रामूको तो जबर्दस्ती ठोक-पीटकर पडितराज बनानेकी कोशिश की जा रही थी। एक तो बेचारेके दिमाग़में ही गोबर भरा हुआ था, दूसरे पढनेमे उसका मन भी बिलकुल न लगता था। पहले एक दो सप्ताह तक रामू-शामूको पढते देख देवराज, मनमारे, चाहभरी आँखोंसे देखता रहता था। उसकी बड़ी इच्छा थी कि वह भी कुछ पढे। लेकिन वह भली प्रकार जानता था कि वह वहाँ पढनेके लिए नही रक्खा गया है। धीरे धीरे सकोच दूर हुआ और रामू-शामूसे देवराजकी घनिष्टता ज्यादा बढ गई, समय पाकर वह उनकी हिंदी किताबोको लेकर पढने लगा। एक बार छिपकर ए, बी सीखनेका प्रयास करते देख शामूने उसके लिए अक्षर लिख दिए, और अग्रेजीकी पहली पुस्तक ला दी। देवराज मौका निकालकर घरपर कुछ पढता रहता था। लेकिन, सबसे निश्चिन्त मौका उसे स्कूलमे, डेढ बजेसे चार बजे तक मिलता था। जलपान ले जानेके बाद स्कूलकी छुट्टी तक वह वही रह जाता। शामूको बहुत आश्चर्य होता जब वह देखता कि देवराज इतनी तेजीसे पुस्तकोंको समाप्त करता जा रहा है। लेकिन, उसके मनमे ईर्ष्या न होकर और सहानुभूति होती थी। वह हर तरहसे देवराजको सहायता और प्रोत्साहन देता था। देवराजको कुछ कहनेपर, दूसरे नौकरोंसे ही नही, माँसे भी वह कभी कभी लड जाता था। रामू किसी तरह घसीटा जा रहा था, लेकिन, देवराजने छै महीनेके भीतर रामूके क्लासकी सभी पुस्तके पढ डाली। लडकोके पढने और सोनेके कमरेमें ही देवराजको फर्शपर सोनेकी आज्ञा थी। उनके सो जानेपर भी वह बडी देर तक पढता रहता था। शामू नवें क्लासका

साधारण विद्यार्थी था। लेकिन उसकी हिन्दीकी ओर विशेष रुचि थी। वह दैनिक "भारतमित्र", "सरस्वती" तथा कुछ दूसरे पत्र मँगाया करता था। देवराजको पहले-पहल यही इन पत्रोके पढनेकी चाट लगी।

यह सौभाग्यकी बात थी कि रामू-शामूका कमरा बिलकुल अलग था और सेठ-सेठानी वहाँ कम आया करते थे, नही तो देवराजको तीसरे विद्यार्थीका पार्ट अदा करते देख वे कभी प्रसन्न न होते। देवराजके प्रति शामूके भावके बारेमे कहा जा चुका है। रामू देवराजके बारेमें समझता था, वह हमेशा उसकी सहायताके लिए तैयार रहता है। रामूकी पलकपर हर वक्त मन भर नीद बैठी रहती थी। देवराजका काम होता कि कोई उसकी नीदमे खलल न डाले। रामूको खेलनेका बहुत कम शौक था और देवराज खेलमे उसका समर्थक बननेको तैयार था।

तनखाह पाते ही देवराज साढेतीन रुपया सुचितसिहको दे आता। खाना सेठजीके यहाँ मिलता ही था और शामूकी कृपासे वह अच्छा था। रामूके पुराने कपडोके कारण उसे कपडो पर एक पैसा खर्च करनेकी जरूरत नही थी। आठ आना प्रति मास जो वह रख छोडता था उसका भी अधिक मतलब यही था कि वह खाली हाथ न रहे, और आवश्यकता पडनेपर रामू-शामूको रुपये-आठ आनेके लिए तरद्दुद करनेकी जरूरत न पडे।

७

पुस्तकालयका चपरासी

"देवराज, जब मै तुम्हे और रामूको देखता हूँ, तो मुझे ख्याल आता है कि क्यो रामूके ऊपर दो दो शिक्षक रक्खे गये है? इतना पैसा उसपर खर्च किया जा रहा है, क्या यह धन और समयका अपव्यय नही है? उसकी जगह यदि तुमको स्कूलमें पढने भरकी छुट्टी मिलती, तो तुम अपनी योग्यतासे समाजकी कितनी सेवा कर सकते थे? मुझे बराबर तुम्हारा ख्याल आता है। लेकिन, समझता हूँ, तुम्हारे साथ इस विषयमे अधिक पक्षपात-प्रदर्शन-का मतलब है पिताजी तुम्हें नौकरीके अयोग्य समझ लें। उस वक्त मेरा ऐसा करना तुम्हारे हितकी बात न होकर अनिष्टकी बात होगी।"

देवराजने लज्जासे सिरको अवनत करके कृतज्ञता प्रकाशित करते हुए कहा—"श्याम बाबू, मै आपका कितना कृतज्ञ हूँ! आपकी कृपासे जो अवसर मुझे मिल रहा है और मेरे लिए जो कष्ट आप उठा रहे है, वही क्या कम है? मै आजीवन आपके ऋणसे उऋण नही हो सकूँगा। दुःखका मारा मै कलकत्ता आया। पेटकी आग बुझाना और माँकी कुछ सहायता करना—बस इतना ही मेरे लिए सब कुछ था। रामपुर छोड़ते वक्त मुझे कभी ख्याल नही आया था, कि मुझे आप जैसा मालिक मिलेगा।"

"देवराज, मालिक मत कहो। कमसे कम जब हम अकेले रहें। मुझे बड़ी लज्जा मालूम देती है। मुझे किसी व्यक्तिपर

चिढ़ नही आती। व्यक्ति तो समाजके हाथकी कठपुतली है। मेरा माथा तो इसलिए गरम होता है कि तुम्हारे ऐसे होनहार लडकेको इस प्रकार उपेक्षित करके रामूकी वह आवभगत क्या अन्याय नही है? इसे तुम अपने ही लिए मत समझो। भारतमें कितने देवराज अभिशापित माता-पिताओके घर जन्म लेनेके कारण प्रतिभा रहते भी जीते कब्रमे दफना दिये गए है; और, उनकी जगह कितने रामुओपर सब कुछ वारा जा रहा है?"

"लेकिन, भाग्य भी तो कोई चीज़ है? भगवान्ने हमे यह दंड दिया और दूसरोको वह सुख। इसमे ईर्ष्या करनेका हमे हक क्या है?"

"भगवान् और भाग्यका अर्थ मुझे स्पष्ट मालूम नही होता। हमारे मास्टर महेन्द्रसिह तो इनका मजाक उडाया करते है। कुछ भी हो, अभी मास्टर महेन्द्र तक हमारी समझ नही पहुँची है। लेकिन, इतना तो मै जरूर जानता हूँ कि यह समाजका घोर अन्याय है। जिससे जितना अधिक लाभ पानेकी आशा हो, उसपर उतना ही धन, श्रम ख़र्च किया जाय—बनियापनके इस सिद्धान्तको लेकर भी समाजके लिए तो यही उचित था कि रामूकी अपेक्षा तुमपर ज्यादा ध्यान देता। मुझे तो समाजकी बुनियाद ही सडी मालूम होती है। कुछ भी हो, इतना तुम ख्याल रखना कि मै तुम्हें नौकर नही समझता। गरीब घरमे पैदा होनेसे तुम्हारा आगे बढ़नेका मार्ग कंटकाकीर्ण है। लेकिन, जहाँ संकल्प है वहाँ रास्ता खुद निकल आता है। यहाँ, कलकत्तामे, भी कोई रास्ता निकल ही आया। यदि तुम हमारी अवस्थामें होते तो तुम्हारा अधिक समय पढ़नेमें लगता। लेकिन, हो सकता था कि फजूलके खेल-तमाशोंमें भी उतना समय बिता देते। इस वक्त के पाँच-छै घंटे उस वक्तके पन्द्रह-सोलह घंटोंसे ज्यादा कामके हैं। मुझे आशा है, तुम इस रास्तेको छोड़ोगे नहीं।"

"नही श्याम बाबू, जब मै रामपुरसे चला था, तब आगे-पीछे चारो ओर मुझे अँधेरा ही अँधेरा मालूम होता था। मै समझता था कि यदि माँके लिए चार पैसे कमाकर भेज सकूँ तो वही बहुत है। आपकी दयासे मै अँधेरेसे सूर्यके प्रकाशमे आ गया। चाहे कितनी ही निराशाओमे घिरा रहूँगा, लेकिन ज्ञानकी प्राप्ति से मे कभी मुँह न मोड़ूँगा।"

× × ×

देवराजको कलकत्ता आए डेढ बरस हो रहे थे। माँके लिए वह सूद भरके लिए रुपया भेज सकता था, लेकिन उसका अपना पढनेका काम बडी तेजीसे चल रहा था। देवराजने पहला पत्र पहले महीनेकी तनखाहके साथ भेजा। राधाने उत्तर दिया—

"सोस्ति सिरी बच्चा देवराजको लिखा हमारा सुभ आसिरबाद। इहाँ कुसल-मगल है। तुमारा कुसल-मगल सदा गगामाईसे मनाया करती हूँ। यह सुनकर बडी खुसी हुई कि तुम्हे नौकरी मिल गई और मालिक लोग तुम्हे मानते है। अब सूदके बढनेकी चिन्ता जाती रही। मेरा सिलाईका काम भी ज्यादा हो रहा है। कुछ पैसे बचाकर एक बकरी मोल ले ली है। पारबती रोज उसे चराने जाती है। उमेद है कि बकरियोसे भी कुछ आमदनी होने लगेगी। खा-पीकर सिलाईसे भी कुछ बच जायगा। तुम मेरी चिन्ता मत करना। दो बातोके लिए खास तौरसे मै तुम्हे कहना चाहती हूँ। कलकत्ताका पानी बहुत नरम है। तुम अपने सरीर का बहुत ख्याल रखना। दूसरी बात उससे भी ज्यादा भयानक है। बगालामे बडा जादू है। मतरसे मारकर बिरिछ सुखा देने वाली डायने वहाँ रहती है। तुम बहुत हुसियार रहना। किसीके हाथकी दी हुई चीजको न खाना। सुचितभैया वहाँ है ही।

वह जैसा कहे, उसी तरह चलना। मिति चैत सुदी तेरस संवत् १९९४।"

शामूका बर्ताव देवराजके साथ बराबर अच्छा रहा, लेकिन घरके नौकर उससे बहुत चिढा करते थे। वे जलते थे कि देवराज नौकरकी तरह क्यो नही रक्खा जाता। लेकिन, शामूके रहते किसीकी कुछ चलनेवाली न थी। इधर कुछ महीनोसे शामूको हलका बुखार रहने लगा था। अंतमे डाक्टरोने तपेदिकका संदेह प्रकट किया और उसे अलमोडा जानेकी सलाह दी। सेठानी उसके साथ गई। शामूका हाथ उसके सिरपर नही रहा। अब देवराजको एक क्षणकी भी छुट्टी नही मिलती थी। रामूका काम तो उतना न था। लेकिन, सेठजी ही नही, मुनीमजी, रसोइयाजी और घरके नौकर भी उसपर हुकूमत चलाते थे। पढनेके लिए समय निकालना उसके लिए मुश्किल था। चिन्ताके मारे उसका चेहरा पीला पडता जा रहा था। सिर्फ वही दो घंटे उसके अच्छे कटते थे जब मास्टर महेन्द्र रामूको पढाने आया करते थे।

मास्टर महेन्द्र खुद स्वनिर्मित आदमी थे। उनका घर इलाहाबाद जिलेके किसी गॉवमे था। मिडल पास करके घरसे भाग आए थे और तबसे टचूशन करके पढ रहे थे। इस वक्त एम्० ए०के अंतिम वर्षमे थे। देवराजकी प्रतिभासे वे पूरे परिचित थे और इसके लिए बहुत उत्सुक थे, कि उसे आगे बढनेका मौका मिले। इधर देवराजके साथ जैसा बर्ताव हो रहा था, उसे वह अपनी आँखो देख रहे थे। वह वातावरण उसके शारीरिक और मानसिक—दोनो प्रकारके स्वास्थ्यके लिए बिलकुल प्रतिकूल था। वह रास्तेकी तलाशमे थे। इसी वक्त उन्हे मालूम हुआ कि उनके बी० ए० के साथी मोहनलाल खन्नाने—जिसने स्वास्थ्यके खराब

हो जानेके कारण ग्रेजुएट होनेके बाद पढाई छोड़ दी—एक पुस्तकालय खोला है। वह उससे मिलने गए। मोहनलालको अपने “हितैषी पुस्तकालय”के लिए एक चपरासीकी ज़रूरत थी। मोहनलाल महेन्द्रकी बड़ी कद्र करते थे। और, जब महेन्द्रने उनसे देवराजके बारेमे बतलाया तो उन्होने बडा हर्ष प्रकट करते हुए कहा—“भाई महेन्द्र, तुम जानते ही हो। मेरे दिलमे छात्र-जीवनसे ही देश-सेवाकी कितनी उमगे है। तुम यह भी जानते हो कि देशकी स्वतत्रताके लिए मेरा चित्त कितना उत्तेजित हो जाता है। और, यदि एक्के-दुक्के बम और पिस्तौल चलानेपर मुझे विश्वास होता तो मै कबका न उसमे लग गया होता। अनुकूल बोस, निवारण मित्र, देखो फॉसीपर झूल गए। मुझे उनपर ईर्ष्या आती है। नि.स्वार्थ हो मातृ-भूमिकी बलिवेदीपर अपने प्राणोको न्यौछावर कर उन्होने दूसरोको कुर्बानीका रास्ता दिखलाया। मै उनकी कुर्बानीका कायल हूँ। लेकिन, एक्की-दुक्की हत्याओपर मेरा विश्वास नही। मै शस्त्रको स्वतत्रताके लिए अनावश्यक नही समझता, लेकिन, उसके पीछे जनताकी क्रियात्मक सहानुभूति ज़रूरी है। खैर, मै कर क्या रहा हूँ कि प्राणोकी बाजी लगानेवाले नौजवानोके कामोंपर टिप्पणी कर सकूँ। मैने ‘हितैषी पुस्तकालय’ इसीलिए खोला है कि इसके द्वारा राष्ट्रीय स्वतत्रतामें सहायक साहित्यका प्रचार हो। मैने एक छोटी सी ग्रंथमाला भी शुरू की है। ‘हमारे पतनका कारण’—हितैषी ग्रथमालाकी पहली पुस्तक—प्रेसमें है। देवराजके बारेमें तुमसे जो मुझे मालूम हुआ, उससे मै उसे चपरासी नही समझूँगा।”

मोहनलाल खन्नाके घरमें उनके अतिरिक्त वृद्धा माता थी। अपना मकान था, जिससे सवा सौ रुपया महीना किराया आ जाता था। माँ मोहनलालपर शादी करनेके लिए पहले बहुत जोर

देती रही लेकिन जब मोहनलालने भागकर साधू हो जानेकी धमकी दी तो फिर उन्होंने इसका नाम न लिया। उनका मकान तुलापट्टीमें अफीम-चौरस्तेके पास था। नीचे दूकानें थीं और ऊपर दुतल्ले, तीनतल्लेपर खुद और किरायेदार रहते थे। इन्हीमें दो कमरे उन्होंने पुस्तकालयके लिए अलग कर रक्खे थे। पचास रुपयेमे वह अपना घरका काम चलाते थे और बाकी पुस्तकालय और ग्रथमालाके लिए अर्पित थे। देसवासियों और मारवाडियोंमें शिक्षाका ऐसे ही अभाव था और राष्ट्रीय-जागृति तो अभी उनमें छू न पाई थी। मोहनलाल निराश न थे।

सितम्बर (१६०८)से देवराज मोहनलालके पास चला आया। पहले वह उसे ध्यानसे परखते रहे, लेकिन, महीना बीतते बीतते उन्हें मालूम हो गया कि महेन्द्रने देवराजके बारेमे जो कुछ कहा था, देवराज उससे कही बढचढकर है। उसके स्वभावने माताजीको भी बहुत अनुरक्त कर लिया।

देवराज नियमपूर्वक अपने वेतनके चार रुपयोंको हर महीने सुचितसिंहको दे आया करता था।

---

*

८

सत्संग और शिक्षा

"हितैषी पुस्तकालय" के खुलनेका समय प्रात ७ से १० और साय ५ से ८ बजे था। सोमवारको छुट्टी रहती। बाकी समयमे मोहनलाल देवराजको पढाते थे। सोमवारके दिन वह घूमने निकलते थे, देवराज उनके साथ रहता था। अधिकाश लोग देवराजको उनका भाई या सम्बन्धी समझते थे। कुर्ता, धोती, जूता दोनोके एक-से होते और ढाई बरस बाद अब वह वही देवराज नही था, जो उस दिन रामपुरसे कलकत्ता आया था। बहुत दिनो तक साथ रहनेसे मोहनलालको देवराजकी सब बाते मालूम हो गई थी, लेकिन, उन्हें इसका पता नही था कि देवराजके ऊपर कर्ज है। एक दिन सुचितसिंह देवराजके पास आए। उन्होने बातचीत करते वक्त कहा कि पार्वती आठ बरसकी हो गई है। एक-दो बरसमे उसकी शादी करनी ही होगी। हमारे ही जिलेके एक सिपाही है। घरपर उनके कुछ जमीन भी है, और, यहाँ भी अच्छी नौकरी है। कहो तो चाचीको लिख दे कि इन्हीसे ब्याह किया जाय। चलते वक्त अलग ले जाकर सुचितसिंहने यह भी कहा कि यदि यह ब्याह ठीक हो जायेगा तो तुम्हारे कर्जके ढाई सौ रुपये भी वह बेबाक कर देगे। रुपयेकी बात सुनकर देवराजका चेहरा बिलकुल फकसा हो गया। उसने उस वक्त कोई जवाब न दिया। मोहनलालके सामने आते वक्त यद्यपि देवराजने अपने भीतरी

भावको छिपानेकी बडी कोशिश की, लेकिन, मोहनलालने चेहरेका रग बदलते देख लिया था। पूछनेपर देवराजने इधर-उधरकी बाते कहकर टालना चाहा। पर, उसने उसमे अपनेको असफल होते देखा, और, साथ ही, मोहनलालमे कोई बात छिपाना—वह अपने लिये अक्षम्य अपराध समझता था। उसने सारी बातोको प्रकट करते हुए कहा—"क्या रुपया लेना बहनको बेचना नही होगा ?"

"देवराज, मै तुम्हे इसके लिए दोषी नही ठहराता। मै तुम्हारे सकोचको जानता हूँ। खेद यह है कि मैने यह बात पहले क्यो न मालूम कर ली। प्रतिमास अपने वेतनको तुम सुचितसिहके पास पहुँचा आते थे, इससे भी मुझे मालूम हो जाना चाहिए था। पार्वती तुम्हारी ही बहन नही है। तुम इन रुपयोकी चिन्ता मत करो। महाजनका नाम बतला दो, मै उसके पास कल रुपये भेजे देता हूँ।"

देवराज अब उस अवस्थासे पार हो चुका था, जब कि उसे मोहनलालको रुपया न देनेके लिए आग्रह करनेकी आवश्यकता होती। तो भी कितने ही दिनो तक उसके मनमे एक तरहकी बेचैनी जरूर रही। माँके पत्रमे देवराजने लिखा कि मोहन भैयाने कर्जका रुपया चुका दिया, अब सूद देनेकी जरूरत नही। यदि रुपयोकी आवश्यकता हो तो मै जब तब भेजा करूँगा। नही तो सबसे अच्छा यही है कि मै मोहन भैयासे तनखाह न लूँ। माँने उत्तर दिया—

" .बाबू मोहनलालके उपकारको सुनकर मेरे आँसू नही रुकते। संसारमे ऐसे भी पुरुष है। मै किन शब्दोंमे उनके लिए कृतज्ञता प्रकट करूँ। उन्होने ऋणसे तुम्हारा उद्धार कर दिया। लेकिन, उनके ऋणसे तुम्हारा उद्धार नही हुआ है। मेरे और

पार्वतीके लिए एक पैसेकी भी जरूरत नही। चार बकरियाँ है। खाने भरसे अधिक अनाज खेतमे पैदा हो जाता है, और तीन-चार आने पैसे रोज सिलाईसे निकल आते है।"

× × ×

यह वह समय था जब कि, बग-भगके बाद सारे देशमें और खासकर बगालमे जवर्दस्त आदोलन उठ खडा हुआ था; और, उसने सिर्फ वाचनिक रूप न धारणकर दूसरे भयंकर आकार धारण किए थे। बडे बडे अंग्रेज़ अफसर खुलकर बाहर निकलनेकी हिम्मत न करते थे। चारो ओर खुफिया पुलिसका दौर-दौरा था। हर हफ्ते कही न कही बम पकडे जाने या गोली चलनेकी ख़बर आती थी। देशके सोचनेवाले दिमाग उस वक्त पक्ष या विपक्षमे कुछ न कुछ सोचनेके लिए मजबूर थे। मोहनलाल देवराजकी पढाईमे बडे दत्तचित्त थे। उनका ख्याल था कि प्राइवेट तौरसे पढकर देवराज इस साल (१६१०मे) इन्ट्रेन्समे बैठ जाय। किताबें भी समाप्त हो गई थी और उन्हे पूरा विश्वास था कि देवराजको बैठने दिया जाय तो इसी साल आइ० ए० (एफ० ए०)को अच्छे नम्बरोमे पास कर सकता है। लेकिन इस सारे समयमे देवराजके साथ वह कोर्सकी किताबोंके ही बारेमें बातचीत नही करते थे, ख़ासकर सोमवारका दिन तो सिर्फ राजनैतिक वार्तालापके लिए छोड रक्खा गया था। देशकी परतन्त्रताका कारण वह सिर्फ विदेशियोंको ही नही बतलाते थे। उनका कहना था——

मुट्ठी भर विदेशी हिन्दुस्तान जैसे बडे देशको गुलाम नहीं बना सकते, इसका सारा दोष हमारे समाजकी बनावटके मत्थे है। इस देशके सभी निवासी अपनेको देशकी स्वतंत्रताका जिम्मे-

वार नहीं समझते। बुद्धके एक दो शताब्दी बाद ही जनसत्तात्मक शासन-प्रणाली इस देशसे बिलकुल लुप्त हो गई। यूरोपमें एथेन्स और स्पार्टाके प्रजातंत्र और उनके स्वातन्त्र्यप्रेम रोमन-साम्राज्यके साथ बिलकुल विलुप्त नहीं हुए। इटली और दूसरे देशोंके कितने ही नगर एथेन्सकी आत्माको कायम रक्खे हुए थे; और, सबसे बड़ी बात यह थी कि अफलातूनका "प्रजातंत्र" तथा कितने ही प्रजासत्ता-प्रतिपादक यूनानी नाटक और दर्शन-सम्बन्धी ग्रंथ वहाँ मौजूद रहे। जनता भी राजाकी कभी अनन्य भक्त नहीं हुई। एकेश्वरवाद राजसत्ताका बहुत पोषक है। उसका भी ख्याल ईसाई धर्मके साथ यूरोपके सारे हिस्सोंमे बहुत पीछे फैला। इस प्रकार पुनर्जागरणके समय नये यूरोपको पुराने एथेन्ससे सम्बन्ध जोड़नेका बड़ा अच्छा मौका मिला। भारतके लिच्छवि और यौधेय जैसे गणतंत्र न जाने कबके लुप्त हो गए। जात-पाँतके झगडेने जातीय एकताको नष्ट कर दिया और इस प्रकार राजाको पूर्णतया निरंकुश होनेका मौका मिला। प्रजासत्तासम्बन्धी साहित्य, जैसे भी हो, नष्ट हो गया। वैशालीकी आत्माको जीवित रखनेवाला कोई नगर यहाँ नहीं रह गया। पुनर्जागरण यहाँ होने ही नहीं पाया। यहाँ तो देशके बड़े बडे दिमागोंको धर्मने बन्धक रख लिया और दार्शनिक लोग अपनी सारी शक्ति संसारको "माया" सिद्ध करनेमें खर्च करने लगे। मौर्योंके बाद कब सारा देश एक होकर आत्मरक्षाके लिए तैयार हुआ? हमारी स्वतन्त्रताकी जिम्मेवारी तो शासकवंशके ऊपर रही और उसीकी योग्यता और अयोग्यतापर राष्ट्रका हित-अहित निर्भर रहा।

जाति-भेदने सामाजिक विद्रोहकी आग भड़काई। किसीने खुशीसे अपनेको नीच जाति मानना स्वीकार नहीं किया और इसके परिणाम-स्वरूप हमने देखा कि जब जब देशकी स्वतंत्रता-

का सवाल आया तो देश-रक्षाका भार कुछ इने-गिने वर्णोपर पड़ा। इसी कमजोरीके कारण शकोसे हम परास्त हुए। तुर्कोने हमे जीता। मुगलोका शासन हमे स्वीकार करना पड़ा। और, आज हम अंग्रेजोके गुलाम है।

हम एक और भी भारी गलती करते चले आ रहे है, कमसे कम पिछले हजार वर्षोसे। धर्म बदलनेसे हम अपने भाई-को अपना भाई नही समझते। खूनके रिश्तेको हम भुला देना चाहते है। जिसकी खुशी हो जो मजहब रक्खे——ईसाई या मुसलमान हो जानेसे किसीका खून नही बदलता। इस बेवकूफीके कारण हमने, न जाने, कितने अपनोको अपना दुश्मन बनाया। पठान हमारे अपने रक्त-सम्बन्धी थे। मुगल जब एक बार हमारे देशमे बस गए, नाता-रिश्ता करके अपनेको हमारे भीतर विलीन कर देनेके लिए तैयार हो गए और उनकी रगोके भीतर बारह आना खून हमारा हो गया, तो वे क्यों हमसे अलग माने गए?

राष्ट्की एकता मचोपर लम्बे लम्बे भाषणसे नही होगी। इसके लिए हमे ठोस काम करना होगा। वह ठोस काम यही है कि देशके भीतर धर्म और जाति भेदने जितनी दीवारे खडी की है, उन्हे गिरा देना। हाँ, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई या लामजहब होनेसे हमारे खान-पान शादी-ब्याहमे कोई रुकावट नही होनी चाहिए। जरूरत पडने पर इसके लिए हमे मजहबसे भी लोहा लेनेके लिए तैयार रहना चाहिए।

सन् सत्तावनके युद्धमे हम क्यो अपनी स्वतत्रता नही पा सके? इसी एकताके अभावके कारण। इसमे शक नही कि धनिको और राजाओने अपने स्वार्थके कारण स्वतत्रताके सैनिकों-का विरोध किया और पराजयका वह भारी कारण हुआ। तो भी,

यदि राष्ट्रीय एकता होती तो उस बड़े तूफानके सामने ये क्षुद्र स्वार्थी, जीव टिक न सकते।

१८८५ से देशके कुछ नेता कांग्रेसके मंचसे आजादीकी आवाज निकालनेकी कोशिश कर रहे हैं। लेकिन, यह आवाज कितनी क्षीण है ? इन नेताओंमें हिम्मत कहाँ है ? इनका तो सब चिल्लाना सरकारी पदों और नौकरियोंके लिए हो रहा है। हर्षका विषय है कि अब और अधिक दिन तक इस तूफानको रोका नहीं जा सकेगा। अब भाषण-मंचकी जगह, फाँसीके तख्तेने लेली है।

देवराज भी काफी समझता था। मोहनलाल और उनके साथियोंके सत्संगसे उसका मानसिक जगत् अब माँ और पार्वती तक ही सीमित नहीं था। वह समझने लगा था कि उसका कर्त्तव्य उससे किस बातकी आशा रखता है। कितनी ही बार मोहनलालसे उसकी गरमागरम बहस हो जाती थी, जब कि वह आतंकवादकी निरर्थकता सिद्ध करने लगते थे। कितने ही समय तक तो देवराजको यह परस्पर-विरोधी बात जँचती न थी। मोहनलाल शस्त्रकी उपयोगिताको मानते हुए भी आतंकवादको व्यर्थ समझते थे। आखिर शस्त्रका उपयोग और दूसरी तरह होगा ही कैसे ? मोहनलालका कहना था—शस्त्र-प्रयोगका एक विज्ञान है। उसकी एक खास व्यवस्था है। उसके प्रयोगमें देशकी जनताकी सहानुभूति और सहायता भी आवश्यक है, और यह तभी हो सकता है जब कि जनता समझे कि इस सफलतासे उसे कुछ मिलेगा, उसके जीवनकी कटुता कुछ कम होगी, उसके सामनेका निविड अन्धकार कुछ क्षीण होगा। हमने आतंकवादियो-की गुप्तसमितियाँ सफलतापूर्वक संगठित की हैं; लेकिन, जनताके उद्बोधनके लिए हमने क्या किया ? आर्थिक परवशताओं और

सूक्ष्म बंधनोको दरसानेके लिए हमने कितना साहित्य तैयार किया; और, हममेंसे कितने इस कामके लिए लोगोमें खप जानेको तैयार हुए ?

इन बहसोंका एक नतीजा हुआ। दोनो दोस्त इस बातपर सहमत हुए कि सैनिक विज्ञानकी देशको बड़ी ज़रूरत है। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ हमें स्वतन्त्रताके लिए युद्ध छेड़ने का अवसर देंगी। लेकिन, उससे हम तब तक फ़ायदा न उठा सकेंगे, जब तक कि हममें सेना-सचालनकी योग्यता न हो। सैनिक शिक्षाके महत्त्वको समझनेपर देवराजने अपनी इच्छा उधर जानेके लिए प्रकट की। लेकिन, भारतमें यह आसान थोडे ही है ? अन्तमें तय पाया कि देवराजके लिए अच्छा यही होगा कि वह एक साधारण सिपाहीके तौरपर सेनामें भर्ती हो जाये। यूनिवर्सिटीकी डिग्री इसमें बाधक और सदेह पैदा करनेका कारण हो सकती है, इसलिए बिना परीक्षाके ही उसे अपनी पढ़ाई जारी रखनी होगी।

९

आतंकवादसे असहमत

हवा रुकी हुई थी। गर्मीके मारे लोग पसीने पसीने हो रहे थे। बूँदाबाँदी शुरू थी जब कि रामेश्वर, प्रमोद और करीम "हितैषी पुस्तकालयके" जीनेकी ओर घुसते दिखाई दिए। शायद उन लोगोंको यह मालूम नही कि सामनेके कोठेसे एक जोडी आँखें बराबर उन्ही सीढ़ियोपर लगी रहती है। मोहनलालने मुस्कराते हुए उनका स्वागत किया। जिस वक़्त वे लोग बैठकर बात शुरू कर रहे थे, उस वक़्त बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही थी।

प्रमोदने बात आरम्भ करते हुए कहा—"आप तो मोहन दा, हमारे दलके उद्देश्यको पसन्द नही करते।"

"उद्देश्य नही, ढगको पसन्द नही करता। देशकी आज़ादीको कौन नही पसन्द करेगा? लेकिन, एक दो पिस्तौल या बम चला लुकछिपकर किसीको मार देना—जिसमे कभी कभी निरपराध व्यक्ति भी निहत होते है—मेरी दृष्टिमे उतना लाभदायक नही है।"

"तो क्या आज़ादीकी लड़ाईमे शस्त्रका कोई उपयोग ही नही?"

"नहीं। शस्त्रका बहुत उपयोग है। शस्त्रकी निर्बलतासे जातियाँ परतन्त्र होती हैं; और शस्त्रकी ही शक्तिसे खोई हुई आज़ादीको फिरसे प्राप्त करती है। मै शस्त्रके उपयोगकी निरर्थकताको स्वीकार नहीं करता; लेकिन, भाई, अब धनुष-बाण, तेग-तलवारका ज़माना नहीं है। अब शस्त्र और शस्त्र-विज्ञान दूसरे विज्ञानोंकी तरह बहुत उन्नत हो चुके है। दस-पाँचके छोटे-मोटे दलके द्वारा एक दो डाके

और दो चार हत्याये भले ही की जा सकती है, लेकिन, दुनियाकी एक सबसे बडी जबरदस्त सैनिक शक्तिको हटाया नही जा सकता।"

"लेकिन, क्या बडे पैमानेपर शस्त्रका प्रयोग आसान है?"

"मै यह नही कहता कि इस वक्त आसान है। लेकिन समय मिलनेपर तुरन्त तो हम वैसा नही कर सकेगे, रिवाल्वरकी प्रैक्टिस मे उस वक्त काम नही चलेगा। आपने कितने सेना-सचालक तैयार किये है?"

"आप यह न समझे कि हम लोग उस तरफसे बिल्कुल उदासीन है। हम जिस परिस्थितिमे है, उसमे जो कुछ कर रहे है, उससे अधिक करना मुश्किल है, इसीलिए हमारा कार्य इतना सकुचित आपको दीख पडता है। लेकिन मोहन दा, इसे तो आप स्वीकार करेगे कि स्वतन्त्रताके युद्धको बडे पैमानेपर लडनेके पहले हमे मरना सीखना पडेगा। सदियोसे हम अकाल और महामारीसे मरनेके आदी हो गये है, इसलिए चारपाईपर पडे पडे मरनेके सिवा हम मरनेका और दूसरा तरीका जानते ही नही। यह तो आप मानेगे कि हमारे दलने मरनेकी शिक्षा दी है?"

"हॉ, इसकी मै तारीफ करूँगा। दुनिया भरके दार्शनिक ऊँची उडानोका ठेकेदार हमारा देश है। यहॉ ब्रह्म और आत्माके अमरत्व से छोटी बात कोई करता ही नही, लेकिन, मरनेसे डरनेवाले कायर जितने यहॉपर है उतने और कही नही है। सदियोकी गुलामीके कारण स्वेच्छापूर्वक मरनेकी बात हमने बिलकुल भुला दी है।"

"तो इसका मतलब यह हुआ कि आप हमारे कामको बिलकुल व्यर्थ नही समझते?"

"बिलकुल और थोडेका सवाल नही है। असल तो देखना है कि कामका रूप और फल कितना व्यापक है, और कैसी मनोवृत्ति उसके भीतर काम कर रही है। मै जब इन बातोंपर ध्यान देता हूँ,

तो तुम्हारा काम बिलकुल असतोषजनक मालूम पड़ता है......।"

"अच्छा, असतोषजनक ही तो आप कहते है ? उसे तो हम भी स्वीकर करते है।"

"यदि इस तरहसे शब्दोके अर्थको हलका करके तुम्हें सन्तोष हो सकता है,\तो अच्छी बात, वैसा ही समझ लो। मै कह रहा था कि तुम्हारे कार्यका रूप और फल उतना व्यापक नही है। पढे-लिखे निम्न-मध्यवित्तके लोग तुम्हारे काममे शामिल है अंग्रेजोके अभिमानपूर्ण बर्तावको असह्य समझ कर कुछ तो भावुकताके कारण इधर आकृष्ट हुए है, और कुछ समझते है कि इस तरहसे हम अग्रेजी सरकारको भयभीत कर सकेगे और बडी बडी नौकरियो तथा पदोंका रास्ता हमारे लिए खुल जायगा। 'आज़ादी' 'आज़ादी' चिल्लाते हो, लेकिन बतलाओ तो उस आजादीमे गरीबोंकी दरिद्रताको हटानेके लिए कितना स्थान है ? और, उन्हे यह समझानेके लिए तुमने कितना काम किया ? साधारण जनता तक तो पहुँचनेका विचार भी अभी तुम्हारे मनमे पैदा नही हुआ। जब तक वह जनता तुम्हारे कार्यके साथ मानसिक या शारीरिक सहयोग नही देती, तब तक कार्यका रूप और परिणाम व्यापक हो ही नही सकता।"

"खैर ! आपकी इस बातको मै कुछ हद तक स्वीकार करता हूँ।"

"कुछ हद तक नही, बहुत हद तक स्वीकार करो। व्यापक बनाये बिना हम अपने उद्देश्यमें कभी सफल नही हो सकते। हमारा हर एक शिक्षित तरुण अपनी हस्तीको भुलाकर साधारण जन-समुद्रमें डूबनेसे हिचकिचाता है। हममेंसे कितने है, जो तड़क-भड़ककी पोशाक, नफ़ीस खाने और नागरिक जीवनको लात मारकर रानीगंजकी कोयलेकी खानमें मजदूर बननेको तैयार है ? कितने है जो अपनी शिक्षा और संस्कृतिको पूरी तौरपर छिपाकर बर्न कम्पनीके कारखानेमे हथौड़ा चला सकते है ? कितने हैं जो अपनेको शकलमें ही नहीं, काममें भी

५

पक्के किसानके रूपमे परिणत कर सकते है ? मेरी ओर इशारा मत करो, यदि मै बीमारीका शिकार न होता तो आप कभी मुझे तुलापट्टीमें न देखते। आप रूसके आतकवादको अपने लिए आदर्श रखते है ? लेकिन, आपको मालूम होना चाहिए कि आज जिस आतंकवादकी आप नकल कर रहे है, उसे रूसने १८९०से पहले ही छोड दिया। अब उनके कार्यके आधार कुछ थोडेसे तरुण मस्तिष्क नही है, बल्कि वे साधरण मज़दूर-किसान जनताको अपना आधार बना रहे है। शिक्षित तरुण अब भी वहाॅ कार्यकर्ता है और आन्दोलनके नेता भी अधिकाश वे ही है; लेकिन, अब उसका आधार अस्थिर नीवपर नही सुदृढ नीवपर है . . ।"

"तो आप, हम लोगोको अस्थिर नीव कहते है ?"

"मुझे आशा है, तुम इसे इन्कार नही करोगे। लेकिन साथ ही मै यह भी कह देना चाहता हूॅ, कि मै तरुण मस्तिष्ककी निर्बलताको स्वीकार नही करता। मेरा विश्लेषण कुछ दूसरा ही है। एक तरुणका दिमाग अधिक आज़ाद होता है। आदर्शके बारेमे स्पष्ट सोचनेकी शक्ति शायद पीछे भी बनी रहे; लेकिन आदर्शको कार्यरूपमे परिणत करनेके लिए जितनी कुर्बानियोकी आवश्यकता है, तरुण मस्तिष्कही उनके लिए निर्भय होकर तैयार हो सकता है। मुश्किल यह है कि तरुणाईको बहुत दिनोके लिए रोका नही जा सकता। खासकर हिन्दुस्तानमें जहाॅकि हर एक नौजवानके लिए विवाह करना फर्ज है; और बहुतोके विवाह तो होश सँभालनेसे पहले हो चुके रहते है। आप अपनी स्त्रीको छोड नही सकते, तलाक है नहीं कि वह कोई दूसरा रास्ता ले। संतान पैदा करना आप रोक नही सकते। आपके माॅ-बाप आपके बढते परिवारकी परवरिश हमेशा नहीं कर सकते। आखिर कितने दिनो तक आप उनकी उपेक्षा करेंगे ? उपेक्षा न करनेका मतलब है उनके भरण-पोषणकी चिन्ता। और फिर, आपके पास समय

और शक्ति बाकी कहाँ रह जाती है कि क्रान्तिके लिए भी कुछ दे सके। दुनियाके और देशोमे भी जवानीके क्रान्तिकारी पीछे अपने पथसे विचलित होते देखे जाते है; लेकिन, तो भी वहाँ बहुत काफ़ी संख्या अपने कार्यपर दृढ रहती है। मै कह रहा था कि मध्यमवर्गके शिक्षित तरुणको स्थायी क्रान्तिका आधार नही बनाया जा सकता। क्रान्ति उसके मुँहके चारों ओर प्रभा-मडल बनाती है, प्रसिद्धि और सम्मान प्रदान करती है, और अक्सर पीछे दुनिया मे उसे 'सफल' पुरुष बननेका अवसर दिलाती है। इस प्रकार वह आरामकी ज़िन्दगीकी ओर झुक जाता है। पहले वह क्रान्तिको आध्यात्मिक विषय कहकर मनको समझाना चाहता है, और पीछे उसे उसकी भी जरूरत नही रह जाती।"

"आपकी इस रायसे किसीको इन्कार नही हो सकता। लेकिन आखिर इलाज ? एक बार कार्यकर्ताओंको पाकर हम सचमुच ही कुछ सालोके लिए भी निश्चिन्त नही हो पाते। मै यह नही कहता कि वे हमारा साथ छोड़कर विश्वासघात करनेको तैयार हो जाते है। नही, किन्तु उनका क्रियात्मक सहयोग हमसे दूर हटने लगता है।"

"इस बातमे यूरोपके क्रान्तिकारी अधिक अच्छी अवस्थामे है। हमारे तरुणोके सामने दो कठिनाइयॉ आती है जिनमेसे एक है स्थायी तौरसे काम करनेके लिए अपने शारीरिक ख़र्चके प्रबन्धका अभाव; मैं यह मानता हूँ कि यह भी आसान काम नही है; तो भी एक योग्य उत्साही कार्यकर्त्ताके लिए अपने व्यक्तिगत साधारण खर्चका इन्तिजाम करना उतना कठिन नही है। ख़ासकर हमारे देशमें, जहॉपर साधूके नामपर लाखो आदमी ऐसे ही गुजारा कर रहे है। लेकिन दूसरी समस्या ज़्यादा कठिन है। पुरुषमें स्त्रीकी इच्छा और स्त्रीमें पुरुषकी इच्छा स्वाभाविक बात है। हमारे देशमें संयम और ब्रह्मचर्यका बहुत हल्ला है, लेकिन, उनका पालन कितना होता है, इसे हम सब

ख़ूब जानते है। अधिकसे अधिक सिवाय एक दूसरेको धोखा देनेके इस बारेमे हम और कुछ नही करते। हाँ, तो हमारे तरुणोंमें भी कभी कभी इस काम-बुभुक्षाका होना स्वाभाविक है। और, इसके लिए सिवा ब्याह करनेके कोई सम्मानजनक रास्ता नही। ब्याहका मतलब है सन्तान। सन्तानका मतलब है पारिवारिक बोझका पडना। उसका मतलब है क्रान्तिके लिए समय और शक्तिका दारिद्रय। पश्चिमके क्रान्तिकारियोके सामने आर्थिक कठिनाई ही ज्यादा है। दूसरी कठिनाई उनके सामने उतनी नही है। इसका मतलब यह न समझे कि संयमकी मैं बिलकुल आवश्यकता समझता ही नही। क्रान्तिकारीको तो शौक, स्वाद, सबपर सयम रखना होगा। हाँ, यदि तरुणोकी भाँति तरुणियोकी सख्या भी काफी भाग ले तो मानसिक सदाचार क़ायम रखते हुए कोई रास्ता निकल आ सकता है।"

"आप कैसी बात कर रहे है? मालूम होता है—पता ही नही कि आप किस देशमे बैठे है?"

"यही तो मै कहने जा रहा था। मनोवृत्तिका सवाल जो मैंने उठाया था, उसीको मै लेना चाहता था। हमारे क्रान्तिकारी एक तरफ़ तो आजादी, जनसत्ता, सबके लिए उन्नतिका खुला मार्ग चाहते हैं; दूसरी ओर अपने कार्यकी सफलतामे कृष्ण, काली, गीता और धर्मकी सहायताकी अनिवार्य आवश्यकता समझते है। हम चाहते है क्रान्तिको आध्यात्मिक रूप देना। इस मनोवृत्तिसे मुझे सबसे ज्यादा चिढ है। क्रान्ति सार्वत्रिक उथल-पुथल है। उसे राजनैतिक क्षेत्र तक सीमित नही रक्खा जा सकता। सार्वत्रिक न करनेपर वह कभी सफल नहीं हो सकती। इसको हमको पहले ही निर्णय कर लेना है, कि हमारे क्रान्तिपथका प्रदीप विज्ञान होने जा रहा है या धर्म। धर्मको माननेपर निश्चय ही हम सारे देशमें एक क्रान्तिकारी दल कायम नहीं कर सकते। मसलमानको क्या पडी है तम्हारी काली और गीतासे। और

यदि वे कुरान और रसूलकी दुहाई देने लगे तो तुम्हे उससे क्या मतलब ? क्रान्तिके ऊपर धर्मकी छाया भी पड़ी तो समझ लीजिए, आप अपने हाथो उसकी शक्ति छिन्न-भिन्न कर रहे है। इस बारेमें मेरे विचार आप लोगोको मालूम है। भारतकी राष्ट्रीय एकता जात-पॉत और मजहबोकी चितापर होगी।"

"लेकिन, क्रान्तिके लिए क्या लामजहब होना जरूरी है ?"

"जरूरी मै नही कहता। मेरा तो कहना यह है कि क्रान्तिके भीतर मजहबको लाना नही चाहिए। मै समझता हूँ कि मजहबके बन्धनसे मुक्त होना सच्चे क्रान्तिकारीके लिए बडे फायदेकी चीज़ है, लेकिन, हर एकके लिए मै इसे शर्तके तौरपर नही पेश करता। आवश्यकता यही है कि मजहबको वैयक्तिक विचारसे अधिक महत्त्व नही मिलना चाहिए। देशकी सस्कृति, सभ्यता, इतिहासकी मौके-बे-मौके जिस प्रकार दुहाई दी जाती है, वह भी हमारे कार्यमे बाधा डालनेवाली है। मनुष्य लाखो बरसके विकासके बाद आज यहाँ पहुँचा है। पहले उसके विकासकी गति मद रही; लेकिन इधर वह तीव्र होती गई। मनुष्यके इतिहासके किन्ही भी दो समयोमे एक परिस्थिति नही रही। हमेशा समस्याये नई उठी और उनके हल भी नए निकालने पडे। अपने भूतके प्रति गौरव और आवश्यकतासे अधिक अनुराग हमारे लिए बड़ी खतरनाक चीज़ है। वह हमारी पुरानी बेवकूफियोके प्रति आदरका भाव पैदा कर देता है। आज जिन सामाजिक और धार्मिक ख़राबियोंको हम देख रहे है, उनकी जड उसी भूतकी श्रद्धामे निहित है।"

"तो आपका क्या मतलब है—क्या हम अतीतसे बिलकुल सम्बन्ध विच्छेद कर लें ? क्या यह सम्भव है ?"

"बिल्कुल सम्बन्ध-विच्छेदकी बात मैंने कब कही ? अतीतका प्रवाह तो वर्तमानमे जारी रहेगा ही। हाँ, भूतकी पूजाको मै बहुत

हानिकारक समझता हूँ। जहाँ हमने यह पूजा शुरू की कि साथ ही हमने क्रान्तिके एक पंखको तोड दिया। ऐसी स्थितिमें चिरकालसे चले आते धार्मिक और सामाजिक बोझको लादे हुए हमे क्रान्तिके मार्गपर अग्रसर होना पडेगा।"

"और भी कुछ?"

"सबसे जरूरी बात यह है कि हमारी क्रान्तिको किसी आर्थिक भित्तिपर अवलम्बित होना चाहिए। यदि क्रान्तिको जनताके लिए करना चाहते हैं तो बतावें, कि जनताको आर्थिक स्वतन्त्रता किस प्रकार मिलेगी? क्या आप चाहते है कि जिस परिमाणमे आज अंग्रेज़ हमारा शासन और शोषण कर रहे है, वह हिन्दुस्तानियोंके हाथमें आ जाय, या सबके शासन और शोषणको आप बिलकुल बन्द करना चाहते है? जनताको आप अपनी ओर मिला नही सकते जब तक क्रान्ति उनके लिए न हो। हमारी क्रान्तिका ध्येय होना चाहिए हर तरहके शोषणको रोकना। आप सब लोग तो समाजवादसे घबराते हैं। आप उसे पश्चिमकी चीज समझते है। उसका नाम लेना धर्म-प्राण भारतकी शानके खिलाफ समझते हैं। क्रान्तिमे भी योगियो और महात्माओका वरदहस्त चाहते है।"

"मोहन दा, आपका हमसे मतभेद है; लेकिन आपपर हमारा कितना विश्वास है, यह भी आप जानते है।"

"क्योंकि मै तुम्हारी निःस्वार्थ कुर्बानियोको बडे ही सम्मानकी वस्तु समझता हूँ। तुम्हारे एक एक शहीदकी चरण-धूलिको सिरपर चढाकर मै अपनेको धन्य धन्य समझता हूँ। तुम हमारे देशको मरना सिखला रहे हो और यह बहुत भारी चीज़ है।"

वर्षा बन्द हो गई थी, जब कि बैठक बरखास्त हुई।

१०

मित्रका अन्त

चीतपुर-हरिसनरोडकी मोडपर सदा ही बडी भीड रहा करती है। शामके वक्त तो भीडका और भी ठिकाना नही रहता। कितनी ही बार ट्रामोके लिए रास्ता रुक जाता है, और भीड़ ज्यादा बढ जाती है। सोमवारके दिन चार बजेका वक्त था जब कि भीडमेंसे किसीका हाथ उठा और सड़कके ऊपर खडी एक मोटरपर कोई गोल गेद पड़ता दिखाई दिया। फेकनेवाले हाथ और गेदको तो भीडमे शायद ही किसीने देखा हो; लेकिन जो भयकर आवाज उस वक्त पैदा हुई, उसे सुनकर एकबार सारी भीड़ स्तब्ध होकर उधर देखने लगी। मोटर चूर चूर हो गई थी और उसके बिखरे हुए टुकडोने आसपासके कितनेही आदमियोको हत और आहत किया था। मोटरके आरोहियोंकी देह चिथड़े चिथडे उड गई थी। पासकी भीड एकबार "बम" "बम" कहकर तितर-बितर हुई; लेकिन उसके बाद ही फिर तमाशा देखनेके लिए इकट्ठी होगई। चौरस्तेकी पुलिसने सीटी बजाई, कुछ सवार और कान्स्टेबुल जमा हो गए। उन्होने भीडको जबरदस्ती हटाया और अपराधके गुरुत्वको समझकर लोग भी खिसकने लगे।

कुछ ही मिनटोमे सशस्त्र पुलिसका भारी दल अफ़सरो और ख़ुफ़िया पुलिसवालोके साथ आ धमका। मोटरके आरोहियोके अतिरिक्त लोगोंमेसे पॉच मृत और पचीस घायल निकले। एम्बुलेन्सने उन्हें अस्पताल पहुँचाया और घटनास्थलको घेरकर पुलिसने जाँच शुरू कर दी।

"खुफिया विभागके बडे अफसर मिस्टर नेविन्सन् तथा उनके सहकारी रायबहादुर हरिपद मुकर्जी, खाबहादुर अब्दुलकरीम, और ड्राइवर उसी मोटरमे थे। इस दुर्घटनासे गवर्नमेट-हलकेमें बहुत तहलका मचा हुआ है, क्योकि तीनों ही अफ़सर भारत-सरकारके खुफ़िया-विभागके दिमाग समझे जाते थे। बम वहुत भयानक था, यह तो इसीसे मालूम है कि मोटर तकके उसने कई टुकडे कर दिए। घटना-स्थलपर सिर्फ एक रुमाल मिली, और पुलिसको ऐसा विश्वास करनेका कारण है कि रुमाल उसी व्यक्तिकी है, जिसने बम फेका "

—दूसरे दिन 'भारतमित्र' मे यह खबर छपी थी।

कलकत्ताके और आदमियोकी तरह हितैषी पुस्तकालयमे मोहनलाल और देवराजने भी इन पक्तियोको पढा; लेकिन औरोकी तरह वे भी उस दुर्घटनाके बारेमे अधिक नही जानते थे। मोहनलाल आतकवादी-दलमे शामिल न थे; लेकिन दलके आदमियोसे भी अधिक उन्हे विश्वासपात्र समझा जाता था; किसी रहस्यके बारेमे वह न कुछ पूछना चाहते थे और न उसके लिए उनमे कोई उत्सुकता ही थी।

३ मार्च १९११ को उक्त दुर्घटना हुई थी। बडाबाजारके सभी धोबियोके पास भेजकर रुमालके मार्केका पता लगाया गया और तीसरे दिन मालूम हो सका कि रुमाल तुलापट्टीके रहनेवाले बाबू मोहनलाल खन्नाकी है। पाँच बजेका वक़्त था, जब कि सशस्त्र पुलिसका एक बड़ा दस्ता "हितैषी पुस्ताकलय" मे पहुँचा। सडकके सभी रास्ते रोक दिये गए थे और सभी जगह बन्दूक लिए सिपाही और पिस्तौल लिए सार्जेन्ट खड़े थे। तुलापट्टीके रहनेवाले बनियोंमेंसे कितनोंकी साँस टँग गई थी और उनके चेहरोंपर हवाइयाँ उड रही थी। एक अग्रेज़ अफसर कुछ हिन्दुस्तानी अफ़सरोके साथ पुस्तकालयके कमरेमें पहुँचा। देवराज वहाँ मौजूद था, मोहनलाल कही बाहर गए हुए थे।

अफसरने देवराजसे अंग्रेज़ीमे पूछा—"क्या तुम्हारा नाम मोहनलाल खन्ना है ?"

"कृपया हिन्दीमे बोलिए। मै पुस्तकालयका चपरासी हूँ।"

"तुम्हारे मालिकका नाम मोहनलाल खन्ना है ?"

"हॉ।"

"वह कहॉ है ?"

"बाहर गए हुए हैं, आना ही चाहते है।"

इसके बाद मोहनलालके सारे कमरोमे ताला लगा दिया गया, और हर दरवाजेपर सिपाही तैनात कर दिए गए। पुलिस एक एक कमरेकी तलाशी करना चाहती थी। उधर यह खबर मोहनलालको लगी। लोग उन्हे परामर्श देते थे कि इस वक्त छिप जाना ही अच्छा है। बमका मामला है, नौ-नौ आदमी मरे है—जिनमे तीन तो पुलिसके बडे अफसर है।

मोहनलालने कहा—"रोपोश होना फजूल है। मै जानता हूँ कि पुलिस असली अपराधीको पकड न पायेगी, लेकिन किसीको भी फॉसीकी सजा न दिलवाकर वह अपनेको अयोग्य नही सिद्ध करेगी। मेरे ऊपर चाहे कुछ भी बीते, लेकिन, मै एक बात तो कर सकता हूँ, कि अपराधको अस्वीकार न करके मै एक तरुण की जानको तो बचा सकता हूँ।"

मोहनलाल जल्दीसे घरकी तरफ चल पडे। खबर पाकर यद्यपि वह कुछ सेकेंडके लिए गम्भीर हो गए थे, लेकिन, उस वक्त भी उनके चेहरेपर किसी प्रकारकी म्लानिका चिह्न नही था और पीछे तो उनका चेहरा और भी खिल गया—मालूम होता था कोई, खुशखबरी उन्हें मिली है।

अफ़ीम-चौरस्तेसे आगे बढ़ते ही पुलिसने उन्हें रोका। इसपर उन्होंने कहा कि मुझे ही पकडनेके लिए आप लोग आए हुए है ?

सिपाहीको मालूम हुआ, बिजलीका तार छू गया। उसके मुँहकी आकृति विकृत हो गई; और वह अ-प्रयास चार क़दम पीछे हट गया। मोहनलालने बडे शान्तभावसे कहा—"डरिए मत, मेरे पास पेन्सिल बनानेकी छुरी भी नहीं है।"

इसी बीच एक दूसरा सिपाही आ गया और पहले सिपाहीसे सब बाते जानकर मोहनलालको साथ लिवाये पुस्तकालयकी ओर बढा। उन दो सौ सशस्त्र सिपाहियोकी कतारके बीचसे जिस शान्ति और गम्भीरताके साथ मोहनलाल चल रहे थे, उससे मालूम होता था कि वे सभी गॉर्ड-ऑफ-ऑनर दे रहे है। पकडनेके लिए आई पुलिस भी दिलसे इस बहादुर—दर-असल उसकी समझमे बम इन्होने ही फेका था—का सम्मान कर रही थी। पुलिसके अफ़सरोंने बड़ी नम्रतासे उन्हे ऊपर पहुँचाया। अग्रेज़ अफसरने पूछा—"आपका नाम मोहनलाल खन्ना है ?"

"हॉ, मेरा ही नाम है।"

"आपके नाम वारंट है। क्षमा कीजिए, इस अप्रिय कर्तव्य-पालनके लिए। मुझे हथकडी देनेकी इजाजत दीजिए।"

"हाथ हाजिर है। क्षमाकी कोई आवश्यकता नही, क्योकि आप मेरा कोई अपराध नही कर रहे है।"

इसके बाद पुलिसने सारे मकानकी एक-एक, चीज़की तलाशी ली; और जिस किसी भी राजनीतिक पुस्तक या नोटबुकपर संदेह हुआ, ले लिया। मोहनलालको अपनी माँसे मिलनेकी इजाज़त बडी मुश्किलसे मिली। देवराजका चेहरा मुर्झा गया था, लेकिन वह समझता था कि उसके मित्र उससे क्या आशा रखते है। देवराजसे उन्होने इतना ही कहा—"पार्वतीके ब्याहके लिए पाँच सौ रुपये मैने अलग रख दिए है, वह तुम्हे मिल जायँगे। फिर तुम जीविकाका कोई दूसरा रास्ता ढूँढना।"

'जीविकाका दूसरा रास्ता' क्या था, इसे मोहनलाल और देवराज कितने ही समय पहले तै कर चुके थे।

मोहनलालको हवालातमें रक्खा गया। पुलिसने तरह तरहके भय और प्रलोभन देकर उनसे रहस्यका पता लगाना चाहा। मोहन लालका बराबर उत्तर यही था कि मै कुछ नही कहना चाहता। अपराधके बारेमे भी वह 'हॉ', 'नही' कुछ नही कहते थे। किसी राजनीतिक षड्यन्त्रके मामलेमे जहॉ, पुलिस तुली हुई हो, सबूत तैयार करना कोई मुश्किल बात थोड़े ही है? मोहनलालके सहकारी भी पैदा किए गए। उनमेंसे एकने सरकारी गवाह बनकर बयान दिया कि मोहनलाल बहुत अच्छे बम बनानेवाले है। उनके हाथके बनाए कुछ बम एक सुनसान तहखानेसे बरामद किए गए और उनमेंसे एकका विश्लेषण करके विशेषज्ञोंने बतलाया—"हवडा पुलको उडा देनेके लिए यह एक बम काफी है।" सरकारी गवाहने यह भी बतलाया कि जिस वक़्त मोहनलालने बम फेंका, उस वक़्त, मै भी उनके साथ भीड़मे मौजूद था। खुफ़ियाकी पुरानी रिपोर्टोंको निकालकर पुलिसने यह भी सिद्ध कर दिया कि अलीपुर बम-केसमे फॉसी पाए अनुकूल और निवारणकी मोहनलालसे बडी घनिष्टता थी। कई गवाहोंने यह भी बतलाया कि हमने अभियुक्तको भीडसे भागते हुए देखा था। गवाहियोको सुनते वक्त मोहनलाल अक्सर मुस्करा दिया करते थे। जजने जब कभी वकील रखने या जिरह करनेके लिए कहा तो मोहन लालका उत्तर था—"धन्यवाद, मुझे जरूरत नही।"

सफ़ाईके वक़्त उन्होने एक छोटा-सा भाषण दिया था, जिसका कुछ अंश था—

"हरेक देशको अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिये चाहे जो भी रास्ता स्वीकार करनेका अधिकार है। मेरी तरहके हज़ारों नव-युवक देशकी आजादीके लिए बेकरार है। हमारे लिए इससे बढकर

अच्छी बात नही हो सकती कि अपनी मातृभूमिके लिए मरे। अपनी सफाईके बारेमे कुछ भी कहना मै फजूल समझता हूँ, क्योकि मेरा फैसला बहुत पहले इस इजलाससे बाहर हो चुका है। हाँ, यदि मेरी आवाज़ क्रान्तिकारी तरुणो तक पहुँच सके, तो उनसे मैं यह कहना चाहता हूँ, कि जिस तरहका आतकवाद तुम फैलाना चाहते हो, वह देशको आजाद करनेके लिए काफी नही है।"

जूरीने अपराधी होनेकी राय दी और जजने मोहनलालको फाँसी की सज़ा सुनाई।

देवराज माताजीके साथ कितनी ही बार जेलमे मोहनलालसे मिलने जाता था। देवराजको समझानेके लिए वह वर्षोंसे बहुत कुछ कह चुके थे; लेकिन माँको धैर्य देना उनके बसकी बात न थी। वह कहते थे—"माँ, तुम अफसोस यदि मेरे लिए करना चाहती हो तो उसकी जरूरत नही। मै बराबर प्रसन्न रहता हूँ। मेरी प्रसन्नता तो उसी वक्त भग होती है, जब मै तुम्हारी आँखोमे दो बूँदे देखता हूँ। जितने दिन मुझे इस धरतीपर रहने है, माँ, तुम कोशिश करो कि मै बराबर हँसता रहूँ। यह तुम्हारे हाथकी बात है। तुम्हारे चेहरेको यदि मै व्याकुल न देखूँगा तो मेरा चेहरा कभी न मुरझायेगा। और, यह भी ख्याल करना कि एक बार तो तपेदिकके चंगुलमे मैं फँस भी गया था, यदि उसी वक्त मर गया होता तो क्या वह मौत इस मौतसे अच्छी होती? उस वक्त तो भी तुम्हे सन्तोष करना ही पड़ता। तुम्हे यह ख्याल करके अपने लिए भी अफसोस नही करना चाहिए। जिन्दगी भरके लिए तुम्हारे पास काफी धन है। यदि हमारे दोस्तोंमें कोई कामको सँभालना चाहे, तो पुस्तकालय और पचहत्तर रुपये महीने उसे दे देना।"

देवराजसे उन्होंने कहा—"तुम्हें जो कुछ कहना था, उसे मैं पिछले चार-पाँच सालसे कहता आ रहा हूँ। तुमने अपने लिए जो कर्तव्य

चुना है, उसीमें लग जाना। तुम्हारी स्मृति तो मेरे साथ खतम हो जायगी; लेकिन मेरी स्मृति तुम अपने साथ तक रखना। स्मृतिको चिरस्थायी रखनेका प्रयत्न मुझे बेवकूफी सी मालूम होती है। आदमी आया, उसने अपने कर्तव्यका पालन किया और चला गया। उसके कर्तव्य-पालनसे यदि कुछ लोगोको प्रेरणा मिली और कार्य आगे चला तो यही उसके जीवन-संघर्षका काफी पारितोषिक है। पृथ्वी विशाल है, और कालकी सीमा नही, यदि हर शताब्दीमे प्रत्येक देश पच्चीस पच्चीस महापुरुषोकी स्मृतिको भी चिरस्थायी करनेका प्रयत्न करना चाहे, तो हजार बरस बाद क्या उनके नामको भी संसार बचा रखनेमे सफल हो सकेगा? कर्तव्य और उसका अगली पीढीपर पडनेवाला सुप्रभाव बस, यही असल चीज है।"

× × ×

१२ जून, १९१२को मोहनलालको फाँसी हुई। देवराजको, माताजीको सान्त्वना देनेके लिए अभी कुछ दिन और रहनेकी आवश्यकता थी। इसी बीच बडा-बाजारके नवयुवकोंने "हितैषी पुस्तकालय" के संचालनका भार अपने ऊपर ले लिया। पुलिससे बचनेके लिए उन्होने उस स्थानको हरिसन रोडपर परिवर्तित कर दिया।

देवराज अब आगेके लिए स्वतन्त्र था।

११

फिर गाँवमें

पाँच साल पहले देवराजने रामपुर छोडा था। घर छोडते वक़्त उसे यह ख्याल नही था कि पाँच बरस तक फिर वह रामपुरकी गलियोको न देख सकेगा। उसकी माँको यदि यह मालूम हुआ होता तो वह कभी उसे घर छोडनेकी इजाजत न देती। वस्तुतः, पहले तीन सालो तक देवराज भी हर साल घर आनेका सकल्प किया करता था; किन्तु, फिर जब पढने और कामकी अधिकतामे फँसता तो उसे भूल जाता था। माँके भी पहले तीन सालके पत्रोमे पुत्रके मुँह न देखनेकी बेचैनी रहती थी, लेकिन पीछे देवराजके पत्रो और सुचित-सिंहकी बातोसे उसे सन्तोष हो जाता था। सुचितसिहने बतलाया था कि देवराज खूब पढ रहा है। बडे बडे लोगोके साथ उसका उठना-बैठना है। और वह एक बडा आदमी होगा। माँको अब क़र्जकी चिन्ता न थी। देवराजने यह भी लिख दिया था कि भैया मोहनलालने पार्वतीके ब्याहके लिए पाँच-सौ रुपया निकाल रक्खा है। अपनी सुई और बकरीके बलसे उसने चार सौ रुपये जमा कर लिये। और देवराज जब घर आया तो यद्यपि पहलेवाले ही दो घर थे, लेकिन थे बहुत साफ-सुथरे, लिपे-पुते। हँडियाकी जगह पीतलकी बटलीमें खाना बनता था। साधारण किसानके आरामके कुछ सामान—चारपाई, मचिया, रजाई—भी मौजूद थे।

पार्वती अब तेरहवे बरसमें जा रही थी। रामपुरके रिवाजके मुताबिक अब ब्याह करनेमे देर हो रही थी। देवराज इसके प्रबन्धके

लिए अपनेको अयोग्य समझता था। कलकत्तामे, अपने दोस्तोके घरोमें सुशिक्षित लडकियोको उसने देखा था। यह बात नही कि पार्वतीके लिए कभी उसके दिलमे वैसा ख्याल न आया हो; लेकिन वह क्षमताकी सीमाओंको जानता था। वह जिस आदर्शके लिए अपनेको तैयार कर रहा था, उसमे बाधा पडती यदि, पार्वतीके लिए कुछ करना चाहता। मोहनलालकी माँ बडी खुशीसे पार्वतीको रखती और वह उनके कौममे मदद भी देती; लेकिन पार्वतीको यदि फिर गाँवके एक किसान-गृहस्थका जीवन स्वीकार करना था, तो कलकत्तेकी तैयारी घाटेका सौदा होती। मनुष्यके जीवनका मोल देवराज अच्छी तरह जानता था, लेकिन, साथ ही साथ यह भी समझता था कि उस जीवनके मोलको अदा करना एक आदमीके बसकी बात नही है। सुचितसिहने फिर अपने साथीके साथ पार्वती के ब्याह करनेकी बात न उठाई, लेकिन साथ ही देवराज और उसकी माँने योग्य वर तलाश करनेका भार उन्हीके मत्थे सौपा। वर ठीक भी हो चुका था और राधाने देवराजपर बहुत दबाव डाला कि वह फागुन तक ब्याह कराकर जाये, लेकिन सितम्बरसे फरवरी तक—छै महीने—रामपुरमे रुकना देवराजके लिए संभव नही था। माँका एक और भी आग्रह था कि देवराजका भी ब्याह इसी साल हो जाय। राधाने अपने प्रस्तावकी पुष्टि करते हुए कहा—

"बेटा, जिन्दगीका कोई ठिकाना नही। मेरी साध है कि बहूको देखकर मरूँ। मेरे ननिहालके परिवारमे एक बडी सुन्दर लड़की है। मैंने उसे अपनी आँखो देखा है। भोजन बनाना, सीना-पिरोना बहुत अच्छा जानती है। लडकीके पिता मेरे सगे होते है। उनकी बडी इच्छा है कि ब्याह तुम्हारे साथ हो। कहते है—'खर्चकी कोई परवाह नही, वह सब हमारे जिम्मे रहेगा।' ब्याह तो कही होगा ही, लेकिन ऐसी लड़की नहीं मिलेगी।"

"माँ, तुम्हे मेरे ब्याहकी कैसे सूझी ? कर्जका रुपया मैने अपनी कमाईसे अदा नही किया। वह तो मोहन भैयाकी कृपा थी। पार्वतीके ब्याहके लिए भी इतिजाम उन्हीका किया हुआ है। मै तो सिर्फ पढता रहा हूँ। ब्याह करके एक और आदमीका बोझा अपने सिरपर लादना क्या अच्छा होगा ?"

"बोझा क्या है बच्चा ? ब्याह हो जानेपर पार्वती चली ही जायगी, उसकी जगह बहू रहा करेगी।"

"तो क्या घरमे रखनेके लिए ही बहू चाहिए ?"

"नही तुम्हारा ब्याह भी तो करना है।"

"ब्याह मेरा नही हो सकता। माँ, तुम जानती हो कि भैया मोहनलालका मेरे ऊपर कितना उपकार है। तुम उन रुपयोका ख्याल मत करो। उनको तो मोहन भैया ठीकरेके बराबर भी नही समझते थे। उन्होने मुझे जीवनका रास्ता दिखलाया। तुमसे कहही चुका हूँ कि उन्हे झूठ-मूठमे फँसाकर फाँसी दे दी गई। उन्होने मेरे ऊपर जो कुछ काम सौपा है, उसे हर हालतमे मुझे पूरा करना होगा। ब्याह करनेमे उस काममे बाधा होगी। इसलिए माँ, चाहे, तुम्हे दुख भी हो, लेकिन मुझे मोहन भैयाकी आज्ञा पालन करने दो। पार्वतीका ब्याह अबके फागुनमे हो जाना चाहिए। भाई सुचितसिह दो महीनेकी छुट्टी लेकर उस वक्त गाँवमे ही रहेगे। ब्याहकी सब बात पक्की हो गई है। मै उन्हे पाँच सौ रुपया दे भी आया हूँ।"

राधाने फिर बेटेसे आग्रह नही किया। संयोगसे सूबेदार मातबर सिह उस वक्त छुट्टी लेकर घर आए हुए थे। उन्हें अपनी छावनी नसीराबाद जानेमे, अभी तीन हफ्तेकी देरी थी। मातबर सिंहका गाँव रामपुरसे चार मीलपर था। देवराजका पल्टनमें भर्ती होना पहले ही तय हो चुका था, इसलिए जबसे उसे मालूम हुआ कि सत्रह राजपूत रेजिमेटके सूबेदार मातबर सिंह--जो दूरके

उसके रिश्तेदार भी लगते थे—अपने घर मित्तूपुर आए हुए है, तो वह उनके पास पहुँचा। देवराजके अभिप्रायको सुनकर मातबर सिह बहुत प्रसन्न हुए। पढाई-लिखाईके बारेमे उन्हें मालूम हुआ कि देवराज हिन्दुई पढ लेता है। पिछले दो सालसे देवराज नियमसे अखाडे जाता और कसरत करता था। देखनेमे वह अठारह नही चौबीस बरसका जवान मालूम पड़ता था—लम्बा, गोरा शरीर, चौडी छाती, मोटी गर्दन, मजबूत मांसल भुजाएँ देखकर आसानीसे समझा जा सकता था कि देवराज एक अच्छा पहलवान है। देवराज अखाड़ेमे अपने उस्तादको छोडकर और किसीसे कभी नही लडा था। उस्तादने उसके बल, फुर्ती, और लडनेके कौशलको देखकर कई बार कलकत्ताके दंगलमे चलनेको कहा था; लेकिन वह तो एक दूसरे ही दंगलके लिए अपनेको तैयार कर रहा था।

मातबर सिहने कहा—"तुम्हारे ऐसे राजपूत नौजवानके लिए पल्टनमे भर्ती होना कोई मुश्किल काम नही है। और, फिर वहाँ तो सूबेदार मै हूँ। कर्नल साहब मुझे बहुत मानते है। बहादुर जवानोके लिए पल्टनकी नौकरीसे बढकर और दूसरी कौन हो सकती है? रुपया भले ही कही अधिक मिले, लेकिन इज्ज़त जो पल्टनके जवानकी होती है, वह दूसरेकी थोडे ही होती है? अपना तमग़ा लगाकर जब कोई पल्टनका पेन्सिनिया कलट्टर साहबके पास पहुँचता है, तो वह भी खड़ा होकर फौजी सलाम लेता है, हाथ मिलाता है। शरीर बनानेकी जगह तो पल्टन ही है न? छावनी खूब अच्छे हवा-पानीवाले स्थानपर बनाई जाती है। कवायद-परेड, कुश्ती-अखाडा—यही तो सिपाहीका काम है। मुझे विश्वास है, तुम सूबेदार-मेजर जरूर होके रहोगे।"

देवराजके दिलमे पल्टनके लिए आकर्षण पैदा करनेको इतने व्याख्यानकी जरूरत नही थी। यदि पल्टनकी जिदगी नरक जैसी

सख्त होती, तो भी वह उसमे जरूर जाता। उसे चाह थी सैनिक जीवनके क्रियात्मक अनुभवको प्राप्त करनेकी। वह जानता था कि पल्टनमे वह साधारण सिपाहीके तौरपर ही भर्ती हो सकता है। सैनिक विज्ञानका परिचय और अनुभव तो अफसरोको ही होता है। लेकिन, उसने जो कुछ किताबे इस विज्ञानके सम्बन्ध की पढी थी और यूरोपके यशस्वी सेनापतियो द्वारा बड़ी बडी लडाइयोपर लिखी पुस्तकोसे जो ज्ञान प्राप्त किया था, उससे, उसे विश्वास था कि, वर्तमान परिस्थितिमे भी मै अपना रास्ता निकाल लूँगा।

रामपुरमे अभी उसे तीन हफ्ते रहने थे। समयका ठीक उपयोग देवराज अच्छी तरह जानता था। शामको दो घटे अखाडेमे कुश्ती लडता था। बरसातके तीन महीने अखाडा खेलनेका पुराना रवाज रामपुरसे गया नही था। गॉवके नौजवानोको देखकर बडा आश्चर्य हुआ जब देवराजने पहले ही दिन उनके खलीफा—नट—को दो मिनटमें चित कर दिया। लेकिन, साथ ही, उठकर खलीफासे उसने क्षमा मॉगी और दोनो गहरे दोस्त बन गए। एक दिन उसने अहीरोंका नाच देखा और उससे वह इतना प्रभावित हुआ कि अगले दस दिनोमे उनकी हर गतके नाच उसने सीख लिए। गॉवके कुछ राजपूत और ब्राह्मण—जो कि उस दिन अखाडे-मे देवराजकी सफलता देख फूले न समाते थे—उसे निर्लज्जता-पूर्वक अहीरो जैसा नाच नाचते देखकर नाक-भौह सिकोडते थे। देवराजको उसकी कोई परवाह न थी।

गॉवके लोगोकी गरीबीको लडकपनसे ही देवराज देखता और अनुभव करता आया था। लेकिन, पिछले छै वर्षोंमे ही एकदृष्टि उसे मिली, जिससे वह गरीबी अब उसके गंभीर अध्ययन का विषय बन गई थी। जहाँ भी दो चार आदमी बैठकर बात करते,

समय रहनेपर देवराज भी वहाँ जाकर बैठ जाता। उसे सबके साथ इस प्रकार घुलमिल जाते देखकर लोगोको आश्चर्य इसलिए नही होता था, कि वे अब भी उसे गरीब राधाका लडका समझते थे, और उसकी विद्या-बुद्धिका उन्हे कुछ भी पता न था। रामपुर की गलियो, खेतो, बगीचो और पोखरियो पर घूमते हुए कभी कभी उसके कलेजेमे एक ठडी हवाका झोका लग जाता था। उसका लडकपन यही बीता था। एक बार निकलकर छै वर्ष बाद वह रामपुर लौट सका। इसी बीच कितने परिचित चेहरे वहाँसे गायब हो चुके थे। कितनेके बने दिन बिगड़ चुके थे। वह जो दूसरा कदम उठा रहा है, उसके बाद रामपुरको कब और किस हालतमें देख सकेगा यह ख्याल अवसाद पैदा कर देता था।

पार्वती अब तेरह वर्षकी थी, लेकिन अपनी माँ और भाईकी तरह ही स्वास्थ्य उसे भी मिला था, इसीलिए अवस्थासे दो वर्ष बड़ी मलूम होती थी। गाँवमे कोई पाठशाला न थी, नही तो देवराजने उसे पढानेके लिए माँको जरूर लिखा होता। फिर भी भोजन बनाने, सीने-पिरोनेके कामोमे राधाने अपनी लडकीको पक्का कर दिया था। पार्वती रामपुरमे सबसे स्वस्थ और सुंदर लडकी थी। यदि सौन्दर्य-प्रतियोगिताकी प्रथा प्रचलित होती, तो पार्वतीका मुकाबला करनेवाली लडकी शायद सारे जिलेमे न मिलती। देवराजको इसका बहुत अफसोस था, कि पार्वतीके लिए वह कुछ न कर सका।

१२

पल्टनमें भरती

अक्तूबर (१६१२) का पहला सप्ताह था, जब कि सूबेदार मातबर सिहके साथ, मित्तूपुरसे देवराज जखिनिया स्टेशनके लिए रवाना हुआ। छै वर्ष पहले भी वह जखिनिया स्टेशनपर गया था, लेकिन उस वक्त वह अँधेरेसे पहले पहल उजालेमे आना सा था। उस वक्त जखिनियाकी रेल, इजन ही नही, स्टेशनकी इमारत, उसके सिगनल तथा सिगरेट-पान बेचनेवाले भी देवराजके मनमे कौतूहल पैदा करते थे। उसे मालूम होता था कि उसके गाँवसे इतने समीप एक दूसरी दुनिया थी, जिसका उसे कुछ भी ज्ञान न था। आज वहाँकी कोई चीज उसके मनमे कौतूहल नही पैदा करती थी। सूबेदारकी उम्र यद्यपि पच्चाससे ऊपर थी, लेकिन स्वास्थ्य अच्छा और डील-डौल बड़ा तथा प्रभावशाली था; खास करके उनकी बड़ी बड़ी मूँछे गल-मुच्छाके साथ बड़ी रोबदार मालूम देती थी। दोनोको साथ देखकर कोई ऐसा न होता, जिसकी नजर कुछ देरके लिए उनपर न गड जाती। बहुतेरे तो समझते थे कि दोनों बाप-बेटे है। दर-असल सूबेदार भी बडी आत्मीयता अनुभव कर रहे थे। रेलमें बैठनेपर एक बार देवराजके स्वास्थ्यकी तारीफ़ सुनकर उन्होने कहही डाला—"भाई, खेत बडा न होगा, तो फ़सल क्या खाक बडी होगी।"

देवराजको प्रयाग, कानपुर, आगरा, जयपुर जैसे शहरोसे होते अजमेर जाना था, इसलिए उसकी इच्छा जरूर होती थी कि वहाँके

दर्शनीय स्थानोको देखते चले; लेकिन, सूबेदारको उनसे कोई मतलब न था। दर्जनों बार वह इस रास्ते गुजरे होगे; लेकिन, सिर्फ एक बार प्रयागमे त्रिवेणी-स्नानके लिए उतरे थे। देवराजने अपनी इच्छाका सवरण किया और दोनो सीधे अजमेर होते छावनी नसीराबाद पहुँचे। देवराज सूबेदारके पास ठहरा। मातबर सिंहने अपने साथियोंको बडे उन्साहके साथ देवराजका परिचय कराया। जब उनको मालूम हुआ कि कल अखाडेमे खास तौरसे दंगल है और कर्नल, कप्तान ही नही, जर्नेल साहब—जो कि किसी खास कामसे नसीराबाद आए हुए है—भी कुश्ती देखनेके लिए वहाँ उपस्थित रहेगे; तो उनके लिए कल बहुत दूर मालूम पड़ा। शामको पल्टनके बडे अफसर कर्नल ज्यॉफरेके बंगलेपर वह सलामी देने गए, साथमे देवराजको भी लेते गए। देवराजके बदनपर एक कुर्त्ता, दोकच्छी धोती, दुपलिया टोपी, मोटा देसी जूता था। सूबेदारकी तरह उसने भी कर्नलको सलाम किया। नौजवानका डील-डौल और स्वास्थ्य कर्नलकी दृष्टिको अपनी ओर आकृष्ट किए बिना नही रह सकता था। उन्होने पूछा—

"वेल् सूबेडार साहब, यह नौजवान कौन है ?"

"हुजूर, मेरा रिश्तेदार है। साहब बहादुरकी ताबेदारी के लिए आया है।"

"पल्टनमें बरटी होगा। वेरी वेल ! ऐसा जवान हम माँगटा है। यह कल बर्टी होने सकटा है।"

"हुजूर, मेहरबानी। और, यह कुश्ती लड़ना भी जानता है।"

"कुश्ती लडना ! बहोट अच्छा। कल डंगल है। जेनरल साब बहाडुर आया है। वह कुश्ती देखना माँगटा है। यह जवान कुश्ती लरेगा ?"

"जरूर, हुजूरका यदि हुक्म हो।"

"ओ, जरूर जरूर! हम हुकुम डेटा है। किससे लरेगा?"

"हुजूर, रामसेवक सिंहसे।"

"रामसेवक सिंहसे! हमारी रेजिमेन्टमे वो सबसे बरा पलवान है। उससे लरेगा? कितना सालका है?"

"हुजूर, अट्ठारह सालका।"

"बहोट चोटा ओमर है। रामसेवक सिंहसे नही। अभी खाने और कसरट करने डो। कल चोटू सिंहसे कुश्ती कराओ।"

"जैसी हुजूरकी मर्जी!"

कर्नल साहबकी बात सुनकर सबसे ज्यादा खुशी हुई सूबेदार मातबर सिंहको। देवराजकी भर्तीका, एक तरहसे, सारा काम खतम हो गया, और साथ ही कर्नल साहेबसे देवराजका परिचय भी हो गया। देवराजको सबसे ज्यादा प्रसन्नता इससे हुई कि कलकी कुश्तीमे उसे भी लड़नेका मौका मिलेगा। यद्यपि रामसेवक सिंहको उसने देखा नही था, फिर भी उसके मनमे हो रहा था, यदि हो सके तो उनमे लड़ूँ—विशेषकर मातबर सिंहने जब रामसेवक सिंहके साथ उसकी जोडी चुनी तो जरूर कुछ जानकर ही।

जोड़ियोका चुनाव पहले ही हो चुका था, इसलिए कर्नल साहबके बहाने मातबर सिंह देवराजको भी डालनेके लिए व्यग्र थे। रातको ही उन्होने रामसेवक सिंहसे कह दिया कि देवराज छोटू सिंहसे लड़ेगा।

सबेरे, सात बजेका वक्त था। आज अखाड़ेपर बड़ी चहल-पहल थी। बाँसपर नया महाबीरी झंडा चढ़ाया गया था। अखाड़े की एक तरफ अफसरोंके लिए कुर्सियाँ रक्खी थी और बाकी तीन तरफ पल्टनके जवान पाँतीसे बैठे थे। सभी लड़नेवाले जाँघिया कसकर अफसरोके आनेकी इन्तिजारमें खड़े थे। देवराजको अखाड़े-

मे उतरनेमें कुछ सकोच हो रहा था; लेकिन अब वह उसके बस की बात न थी, कर्नल साहबका हुक्म जो हो गया था। थोडी देरमें जर्नल साहब, कर्नल ज्यॉफरे और दूसरे अफसरोके साथ आकर अपनी अपनी कुर्सियोपर बैठे। पॉच जोडियाॅ तैयार की गई थी। छोटू सिंहको जब मालूम हुआ कि उसकी कुश्ती एक अट्ठारह सालके छोकरेके साथ होनेवाली है, तो उन्हे कुछ गुस्सा हो आया; लेकिन जब उन्होने देवराजको लगोटा चढाये देखा, तो समझने लगे कि मामला उतना आसान नही है। रामसेवक सिहकी जोडी छोटू सिहसे लगाई गई थी, यद्यपि यह उतना लडनेके लिए न थी, जितना कि दाव-पेच दिखानेके लिए, क्योकि छोटू सिंह रामसेवक सिंहका मुकाबला नही कर सकते थे। देवराजके आजानेपर राम-सेवक सिंहको अखाड़ेका पच बनाया गया। रामसेवक सिह वैसे भी अखाडेके उस्ताद थे।

पहले नीचेकी चार जोडियाॅ बारी बारीसे छोडी गई। लडने-वाले अखाडेके चुने हुए जवान थे इसलिए उन्होने दाव-पेच और बलका अच्छा प्रदर्शन किया। आखिरी नबर था देवराज और छोटू सिहका। कदमे देवराज छोटूसिंहसे बडा था। बाँह, छाती और जॉघ भी खूब भरी थी। लेकिन, देखनेमें उसका बदन छोटू सिहका सा मँजा और कड़ा नही मालूम होता था। दोनोने अखाड़े-की मिट्टी उठाई हाथ मिलाया। कद्दावर होनेपर भी देवराजका शरीर कोमल मालूम पडता था। उसकी उम्रका ख्याल करके बहुतसे दर्शकोंकी सहानुभूति उसके प्रति थी, लेकिन, लोहे और लकडीका मुकाबला देखकर उन्हे अधिक निराशा होती थी। जिन पाँच मिनटोमें दोनोंकी कुश्ती खतम हुई, लोग साँस लेना भी भूल गए थे। देवराजने कई बार हाथ पकड़ना चाहा, लेकिन छोटू सिंह बराबर छुडा लेता था। एक बार छोटू सिंहने

जबर्दस्त बगली मारी और लोगोंने समझा कि बस देवराज गया, लेकिन वह साफ निकल गया। अंतमें गुत्थमगुत्था शुरू हुई। लोगोंने समझा—कुश्ती अब चलेगी; किन्तु देवराजने ऐसा 'धोबीपाट' मारा कि छोटू सिंह चारो खाने चित। चारो ओर लोग पागल होकर ताली पीटने लगे, जिसमे पल्टनके अंग्रेज अफसर भी शामिल थे। छोटू सिहकी पीठ लगनेके साथ देवराजने उठकर उनका हाथ पकड़ा और हाथ जोडकर अफसोस जाहिर किया। देवराजके बलको छोटू सिंह पहली ही पकडमे समझ गए थे, और उनको, सफलताकी उम्मीद, सिर्फ दाव-पेचपर थी; इसलिए पटके जानेपर उन्हे उतना खेद न हुआ।

रामसेवक सिहको, इससे, सबसे ज्यादा अफसोस हुआ। छोटू सिह उन्हीके जिला सुल्तानपुरका रहनेवाला था; दूसरे देवराज एक नवागन्तुक दुधमुहा बच्चा था; और, सबसे बढकर बात—वह यह भी जानते थे कि सारी पल्टनमे उनके खलीफापनका प्रतिद्वन्द्वी यह छोकरा आ गया। अभी वह इसी उधेड-बुनमे थे कि कर्नल ज्यॉफरेने सूबेदार मातबर सिहको अपने पास बुलाकर कहा—"देवराजकी जोडी ठीक नही लगी और जर्नल साहेब कहते है कुश्तीमे मजा नही आया। देवराज सिंहको रामसेवक सिंहसे लडाना चाहिए।"

हाकिमके हुकुमको कौन इन्कार करता? रामसेवक सिह पहले तो मन ही मन देवराजसे भिडनेको उतावले हो रहे थे; लेकिन, जब प्रस्ताव सामने आया तो पछताने लगे। कुश्ती तै हुई और एक घटा आराम लेनेके बाद देवराज और रामसेवक सिंह अखाडेमें उतरे। रामसेवक सिंहका बदन छोटू सिंहसे ज्यादा भारी किन्तु उतना गठीला न था। देवराजका बदन रामसेवककी तरह ठोस न था, लेकिन कद और छातीमें वह जरूर उनसे बढचढकर था। हाथ मिलानेके बाद धर-पकड शुरू हुई। देवराजने दो मिनट

की हाथापाईके बाद रामसेवक सिंहको जमीनपर गिरा दिया। दाव-पेंचमें दोनोंने देख लिया कि वे एक दूसरेको चकमा नही दे सकते। देवराजकी फौलादी पकडको देखकर रामसेवक सिह अच्छी तरह जानते थे कि उनका प्रतिद्वन्द्वी दुधमुंहा बच्चा भलेही हो, लेकिन बलमे वह उनसे ड्योढा है। देवराज पीठ लगानेकी बहुतेरी कोशिश करता रहा, लेकिन रामसेवक सिह काबूमे नही आते थे। एक बार दोनो खिसकते खिसकते अखाडेके किनारे पर पहुँच गये। इसपर फिरसे छोडकर लडनेको कहा गया। पूरे एक घंटेकी कुश्तीके बाद रामसेवक सिंहकी पीठ लगी। वैसे होता तो इतनी देरके बाद प्रतिद्वन्द्वीको पछाडनेके लिए लोगोमें उतना उत्साह न रहता; लेकिन देवराजकी उमर सबकी सहानुभूतिको अपनी तरफ खीच रही थी। खडे होनेके बाद बूढे जनरल पहले थे, जिन्होंने कूदकर देवराजकी पीठ ठोकी और अपनी घडी देवराजको इनाममे दी। दूसरे अफसरोंकी ओरसे भी कितने ही पुरस्कार मिले, जिनमे कुछ नोट भी थे। चारो ओरसे लोग देवराजके लिए हर्षध्वनि प्रकट कर रहे थे।

कई दिनो तक इस कुश्तीकी चर्चा नसीराबादकी सारी छावनी मे होती रही। लोग कह रहे थे, देवराज आगे चलकर हिदुस्तान का सबसे बडा पहलवान होगा; यद्यपि यह उनकी अतिशयोक्ति थी। देवराज अच्छी तरह जानता था कि राजपूत-रेजिमेन्टमें रामसेवक सिह और छोटू सिहको भले ही पहलवान कहा जाय; लेकिन उसके कलकत्तेके उस्ताद बटुक महाराज और अर्जुन सिंहके साधारण शागिर्दोंसे भी ये लोग एक हाथ नही ले सकते।

देवराजकी भर्तीके लिए उससे भी ज्यादा उत्सुक कर्नल ज्यॉफरे थे। भर्तीके बाद जिस बैरकमें उसे रहनेके लिए स्थान मिला, वहीं बनारस जिलेका एक नौजवान, मोहनसिह, भी रहता था।

मोहन सिह हिंदी मिडिल पास, शिक्षित युवक था। कुछ ही दिनोंमें दोनोका सगे भाइयोसे भी अधिक प्रेम हो गया। मोहन देवराजसे उमरमे चार-पाँच साल बडा था और एक मास पहले भर्ती हुआ था। देवराज मोहनको भैया कहकर पुकारता, यद्यपि पुकारते वक्त उसके कलेजेमे टीस सी लगने लगती थी। तो भी अपने पथप्रदर्शक साथी मोहनलाल खन्नाकी स्मृतिको ताजी रखनेमें सहायक समझकर वैसा करनेमे उसे अधिक अनुराग था। दोनो मोहनोमे जमीन-आसमानका अतर था, तथापि मोहन सिहका स्नेह देवराजके प्रति कम नही था। पहले पहल देवराजने मोहन लालकी बात नही सुनाई क्योकि आरभसे ही उसकी यह कोशिश थी कि लोग उसे एक साधारण सिपाहीसे अधिक न समझे; लेकिन जब मोहन सिहके साथ उसकी घनिष्टता बहुत बढ गई, तो एक दिन उसने राजनीतिसे अपरिचित एक सीधे-साधे व्यक्ति के शब्दोमें मोहन लालके स्वभाव, परोपकार-वृत्ति, हिम्मत और महान् त्यागकी कथा कह सुनाई। आँखोमे आँसू भरकर रुँधे गलेसे उसने कहा—"एक मोहन भैया मुझे छोडकर चला गया और मै समझने लगा था कि दुनिया मेरे लिए सदा सूनी रहेगी। लेकिन, यहाँ मैने दूसरे मोहन भैयाको पाया।"

मोहन सिह अपने आवेगको रोक न सकता था और उसने देवराजके दोनो कन्धोपर हाथ रखकर भर्रायी हुई आवाजमें कहा—

"भाई देवराज, मै उस देवता मोहन जैसा होनेकी सामर्थ्य तो नही रखता; लेकिन, तुम्हारे लिए मेरी जान तक हाजिर रहेगी। हम दोनों एक माँके पेटसे नही निकले। लेकिन, वह हमारे हाथकी बात नही थी। भाई भाई भी तो खूनके प्यासे होते है। हम लोगोमे जो भ्रातृत्व स्थापित हुआ है, उसे कोई भी स्वार्थ, कोई भी परिस्थिति डिगा नही सकेगी।"

मोहन और देवराज साथ साथ कवायद करते थे। मोहन पहलेसे सीख चुका था; लेकिन, देवराज भी उससे बिलकुल अपरिचित न था। कलकत्तेमे मामूली फौजी कवायद उसने सीखी थी। महीना बीतते बीतते जब तीन महीनेसे सीखनेवालोंका वह कान काटने लगा तो लोग कहने लगे—"पेट हीसे सीखकर आया है क्या?" चाँदमारीमे देवराज और भी सफल रहा। सौ गोलीमे पाँच गोलीसे अधिक कभी उसकी बेकार नही गई। उसके अधिक निशान कलेजेमे लगते थे। चाँदमारीमे, सारी रेजिमेन्टमे, वह हमेशा अव्वल रहता और उसके बाद नबर होता था मोहन सिहका। कर्नल ज्यॉफरेका देवराजपर बहुत स्नेह था। वह उसकी सफलताको अपने वैयक्तिक अभिमानकी बात समझते थे।

देवराज अक्सर कर्नलके बगलेपर जाया करता था। कर्नलकी इच्छा थी कि कवायद-परेडकी शिक्षा खतम हो जानेके बाद उसे अपना अर्दली बनाये। श्रीमती ज्यॉफरे अपने पतिसे कम देवराजके प्रति अपना सद्भाव न प्रकट करती थी। एक बार तो वह देवराजके सामने ही कर्नलसे अंग्रेजीमे—उस समय दोनो दम्पती समझते थे कि देवराज अंग्रेजी नही जानता—कह रही थी—

"जॉनी, देखो न इस लडकेके मुँहको। रंग कुछ कम साफ है, नही तो नाक, बाल सब इसके अंग्रेज लडको जैसे है।"

१३

शिकार और उपकार

अगले साल (१६१३की) जुलाईमे देवराज कर्नल साहबका अर्दली था। इतने दिनोके सम्पर्कसे कर्नलको देवराजके बारेमे मालूम हो पाया था कि वह और हिन्दुस्तानियोकी तरह आवश्यकतासे अधिक नम्रता नही दिखलाता। पहले उनको भ्रम होने लगा था, शायद मनमे कुछ बुरा भाव रख करके वैसा करता है; लेकिन उनका यह ख्याल बहुत दिन तक न टिका। वह समझने लगे कि देवराज झूठी खुशामद नही करना चाहता, और न अपनेको दीन-हीन दिखलाना चाहता है। उसका हरेक बर्ताव आत्मसम्मानपूर्वक होता है। एक दिन उमंगमे आकर कर्नल ज्यॉफरे कह रहे थे—

"देवराज, सचमुच हम अग्रेज लोग हिदुस्तानमे आकर बहुत खराब हो जाते है। हिदुस्तानी लोगोंकी चापलूसी और खुशामद सुनते सुनते हमपर उसका बहुत बुरा असर पडता है। हिदुस्तानियोंके लिए तो हमारे दिलमे नीच होनेका भाव आ ही जाता है; साथ ही हमारे स्वभाव में भी झूठे अभिमान, कठोरता और शेखी भर जाती है। इसका दुष्परिणाम तब भोगना पडता है, जब हम विलायत जाते है, और अपनेसे निम्नश्रेणीके आदमियोंके साथ आदत-वश वही वर्ताव कर बैठते है। तुम्हारे ऐसे भारतीय यदि हों तो कमसे कम इस गिरावटसे तो हम लोग बच सकते है।"

देवराजने खेद प्रकट करते हुए कहा—

"मुझे बहुत अफसोस है। शायद मुझसे आपकी शानमें कोई

गुस्ताखी हुई है। लेकिन, मैं दिलसे आपकी इज्ज़त करता हूँ। भूलसे शायद कभी गलती हो जाय, तो आपका फ़र्ज है, मुझे उसके लिए शिक्षा दे। कर्नल साहब, मेरे दिलमे आपका सन्मान साधारण अफसरसे बहुत अधिक है। लेकिन हो सकता है, लडकपन और गँवारूपनके कारण मुझसे कोई गलती हो जाये।"

"नही, तुममे कोई गलती नही हुई है। खेद प्रकट करनेकी आवश्यकता नही। मे तो तुम्हारे सीधे-सादे बर्तावसे बहुत खुश हूँ। वैसा ही कायदा देखकर मै भी आदी हो गया था, नही तो तुम्हारे सूबेदार मानबर सिहके—'सरकार', 'जहॉपनाह', 'मॉ-बाप', 'दुनियाके मालिक' आदि आदि शब्दोंको सुनकर पहले तो मै बौखला जाया करता था। अपने देशमें मेरी क्या हैसियत है, यह मै अच्छी तरह जानता हूँ। पहले मै समझता था, शायद ये लोग हमे बेवकूफ बनाना चाहते है। इसीलिए चिढता था। पीछे पता लगा कि हिन्दुस्तानियोमे बोलनेका यही कायदा है, और, तब मेरी निगाहमे हिंदुस्तानियोकी इज्जत गिर गई। तुम्हारे ऐसे लोग यदि हमारे आस-पास रहे, तो हममे वह दुर्गुण न आने पाए, जिसके कारण अपने देश 'भाइयोमें 'नवाब' और जाने क्या क्या अपमानजनक शब्द हमे सुनने पडते है।"

देवराजने खानसामाको कह रक्खा था, कि कर्नल साहेब जब पढ चुके, तो उनके अखबारोको रद्दीमे न फेक कर मुझे दे दिया करो। इस प्रकार दो दिन-चार दिन देर से 'टाइम्स' (लंडन) और 'स्टेट्समैन' उसे बराबर मिल जाया करते थे। एक दिन वह पुराने अखबारोंका एक पुलिन्दा बगलमे दाबे बंगलेसे बाहर सड़कपर जा रहा था, उसी समय कर्नल अपनी पत्नीके साथ सामनेसे आ गए। उन्होने पूछा—"क्या देवराज, तुम अग्रेजी पढ़ लेते हो?"

"सर, थोडी थोडी। हॉकी और फुटबॉलकी खबरोसे मुझे बडा शौक है।"

"तब तो तुम्हे हमारे फुटबॉल-टीममें शामिल होना चाहिए। मुझे मालूम नही था। खूब पढो। हमारे यहॉ जितने अखबार या किताबे आती है, तुम बेखौफ उन्हे ले जाया करो।"

कर्नलकी इस अचानक स्वीकृतिसे देवराजको बडी प्रसन्नता हुई। "टाइम्स" और "स्टेटसमैन"मे सैनिक सवाददाताओके लेखोको वह बडे चावसे पढा करता था, लेकिन, उसे हमेशा डर रहता था कि कही उसकी रुचि और योग्यताका पता अफसरोको न लग जाय। देवराजने कर्नलकी आलमारीमे सैनिक-विज्ञान सम्बन्धी बहुत-सी अच्छी अच्छी किताबे देखी थी और उन्हे पढ जानेके लिए उसका मन बहुत ललचाया करता था। अभी भी वह कर्नलको यह जाननेका मौका नही देना चाहता था कि वह भी सैनिक-विज्ञानका एक विद्यार्थी है, तो भी अब रास्ता साफ था। दैनिक, साप्ताहिक, मासिक और त्रैमासिक पत्रोको ले जाकर देखनेमें कोई दिक्कत तो थी ही नही, दो-चार घटिया उपन्यासोके साथ एक-आध सैनिक-विज्ञानकी पुस्तक भी तस्वीर देखनेके बहाने ले जाई जा सकती थी।

देवराज अब बहुत प्रसन्न था।

× × ×

जाड़ोमे अक्सर कर्नल ज्यॉफरे शिकारके लिए बाहर चले जाया करते थे। अबकी बार अक्तूबरमे सतपुडाकी पहाडियोमे बाघके शिकारके लिए जाना तै हुआ। देवराजके अतिरिक्त एक नौकर उनके साथ था। कामठीसे उतरकर पच्चीस मील जाना था। जगलके पासके एक डाकबंगलेमे लोग ठहरे और आस-पासमे पता लगाकर शिकार खेलने जाते।

एक दिन बाघका पता चला। बैलको मारकर वह चला गया था और अपने स्वभावके अनुसार शाम या रातको उसे बैलपर आना जरूरी था। बैल एक नालेमे पडा था। उसके दोनो तरफ छोटी छोटी पहाडियाँ थी। पछवा हवा चल रही थी, इसलिए, बाघको उनकी हवा न लग जाय, इसका भी ख्याल करना था। साथ ही यह भी देखना था कि वह उस रास्तेपर भी न रहे जिससे होकर बाघ जगलमे आने वाला है। कर्नल ज्यॉफरे पचासो बाघ मार चुके थे और उसके शिकार मे वह बडे सिद्धहस्त थे। देवराजके लिए पहला मौका था। उसका दिल चचल हो रहा था, कारण आतक नही, उत्सुकता थी। नालेकी बाई ओरकी पहाड़ीपर एक छोटासा दरख्त और बडी चट्टान थी। तै हुआ, देवराज दरख्तपर बैठे और कर्नल चट्टानकी बगलमे। देवराजको यह हुक्म हुआ था कि आखिरी खतरा न आने तक वह गोली न चलाए। साथ ही, देवराजके हाथमे राइफल नही, पिस्तौल थी।

सूर्य अस्त हो गए थे, लेकिन अभी अधेरा नही छाया था, जब कि कर्नल और देवराज अपने निश्चित स्थानो पर बैठे धड-कते दिलसे बाघके आनेकी प्रतीक्षा करने लगे। आध घटा हो गया, एक घंटा हो गया, लेकिन बाघका कही पता नही। चाँदनी रात थी, इस लिए रातकी तरफसे तो उन्हे कोई चिन्ता न थी; लेकिन जब दो घटा तक बाघ नही आया, तो वे निराश होने लगे। आध घंटा और बैठनेका निश्चय करके वे फिर ठहरे। उस वक्त नालेकी ऊपरी तरफ कुछ पत्थरोके खड़खडानेकी आवाज आने लगी। देवराजने साँस बद करके देखा। जमीनसे चिपकी हुई कोई काली परछाई बहुत धीरे धीरे नीचेकी ओर खिसकती आ रही है; चार चार कदमपर वह क्षण भरके लिए रुक जाती है, फिर आगे बढती है। जंगलमे स्वतंत्र बाघको देखनेका, देव-

राजको, यह पहला मौका था। बैलके पास आकर बाघने एक बार चारो ओर नजर दौडाई। फिर मुँह लगाकर वह ठमक गया। शिकारियोको सदेह होने लगा कि कही उसे उनकी आहट तो न लग गई, लेकिन, उन्होने देखा कि वे बाघसे पूरबकी ओर है, और उनकी गध उधर नही जा सकती। बाघने खाना शुरू किया। कर्नलने राइफलका निशाना लगाया। इसी वक्त उनके दाहिने पैरके नीचेसे पत्थर खिसक गया और अपनेको सँभालनेमे बदूक भी उनके हाथसे छूट गई। दोनो खडखडाते हुए नालेकी ओर लुढक चले और आवाजको सुनते ही बाघको यह समझनेमे देर न लगी कि खतरा किधरसे है। उसने सँभलती हुई कर्नलकी शक्ल को भी देख लिया। वह वहाँमे सौ गजपर था, बीचमे नालेके किनारेका अरार आठ-दस हाथ ऊँची दीवारकी तरह था। वह उधरसे झपटा। लेकिन दीवारने सीधे आनेमे रुकावट पैदा की। वह मुडकर बगलसे आने लगा, तब तक देवराजको परिस्थितिका अच्छी तरह पता लग चुका था। वह दरस्तसे कूदकर ठीक उस समय कर्नलके सामने खड़ा हो गया, जब कि तीन छलागमे बाघ उनके पास पहुँचने वाला था। उसने साधकर गोली चलायी। गोली बाघकी दाहिनी बगलमे लगी। वह तडपा और फिर आगे बढ़ा। उस वक्त देवराजने दूसरी गोली छोड़ी जो बाघकी दाहिनी ओर सीनेमे लगी। चोटसे विह्वल हो एक बार उसका बदन दुहरा हो गया। देवराजकी तीसरी गोली बाघकी रीढपर, कमरके पास लगी। उसके पिछले पैर बेकार गये, लेकिन, घसिटता हुआ वह देवराजके पैरसे दो गजपर पहुँच गया था, जब कि देवराजकी चौथी गोलीने उसकी खोपडीको चूर कर दिया।

देवराजका सारा ध्यान अभीतक एक ओर लगा था। उसी वक्त उसने देखा कि उसके दाहिने कंधेपर किसीका मजबत हाथ पड

रहा है। और, उसके बाद ही उसने अपनेको कर्नलके दोनों बाहोंके बीच दृढ़तासे आलिंगित होते पाया। कर्नलने बडे गद्गद् स्वरसे कहा—

"शाबास मेरे बेटे, आजसे सचमुच तुझे मै अपना बेटा मानता हूँ। मेरी जान बचानी बडी चीज है, किंतु उससे भी बढकर यह है जो कि तूने अपनेको बाघके मुँहमे डालकर निर्भयता और बहादुरीका परिचय दिया। इस बहादुरीने मेरे दिलमे हिदुस्तानियोके लिए वह इज़्जत पैदा कर दी, जिसे मै कभी भूल नही मकता। अब मै कभी हिंदुस्तानके खिलाफ कायरताका लाछन न मुन सकूँगा। इग्लैण्ड और हिदुस्तानका चाहे कोई भी सम्बन्ध हो; लेकिन तेरा और मेरा आजसे नया सम्बन्ध स्थापित होता है।"

बाघ ठंडा हो गया था। नापनेपर मालूम हुआ वह, पूरे बारह फुटका है। देवराजने राइफल लाकर दी, और भावातिरेकमें प्रवाहित कर्नल तरह तरहकी बाते करते देवराजके साथ डाक-बंगलेकी ओर लौटे। रातको ही आदमी भेजे गए और वे बाघको उठाकर ले आए।

दूसरे दिन कर्नल कह रहे थे—"देवराज, यह तुम्हारा पहला बाघ था। मै तो नही चाहता था कि तुम इसे मारो, लेकिन, तुम्हे रोकनेमे सफल न हुआ। बारह फुटका बड़ा बाघ और उसे आमने सामने ज़मीनपर खड़े होकर, पिस्तौलसे मारना—यह शिकारके क-ख सीखनेवाले विद्यार्थीके लिए मामूली बात नहीं है। हिम्मत और मनकी स्थिरता शरीरकी फुर्तीसे भी ज्यादा शिकारीके लिए आवश्यक चीज है, और इस परीक्षाको तुमने बडी सफलतापूर्वक पास किया। रामसेवक सिंहको पछाडते वक्त तुम्हें मैंने एक बलिष्ठ नौजवानकी शकलमें देखा था। खुशामद और चापलूसीसे दूर रहकर, साधारण शिष्टाचार और नम्रताको देखकर

मैंने समझा कि हिंदुस्तानी भद्रपुरुष कैसे होते हैं; और जब मैंने एक निर्भय और चतुर ही नही, बल्कि, अपने साथी—ऐसा साथी, जिसकी जातिका बर्ताव हिंदुस्तानियोके प्रति हमेशा अशिष्टता और बर्बरताका होता है—के प्राण बचानेके लिए अपनेको मौतके मुँहमें डालते देखा, तो तुम्हारे लिए जो स्थान मेरे दिलमें हो गया है, उसे मै शब्दोमे प्रकट नही कर सकता। तुम्हारे लिए यदि कुछ कर सकूँगा तो मै समझूँगा कि एक बडे ऋणका कुछ हिस्सा, इस तरह, मैंने अदा किया।"

"मैंने कौनसी ऐसी बात की है, जिसके करनेके लिए मुझे अपना कर्तव्य मजबूर नही कर रहा था? आपकी परिस्थितिमे यदि मै होता तो मुझे पूरा विश्वास है, कि वही काम आप मेरे जैसे एक साधारण सिपाहीके लिए करते। यह तो संयोगकी बात है जो वैसा सौभाग्य मुझे मिला। इसके लिए मैं बड़ा कृतज्ञ हूँ कि अपने इस साधारण-कर्तव्य-पालन द्वारा आपके दिलमें अपने देशके प्रति सन्मानका भाव पैदा करनेमे सफल हुआ। आपके सहृदयतापूर्ण बर्तावके लिए मै बराबर कृतज्ञ रहूँगा।"

कामठीके जंगलके शिकारके बाद कर्नलका सारा बर्ताव देवराजके प्रति बदल गया। उस रातको जब कर्नलने हँसते हुए देवराजसे कहा कि, तुम तो शायद हमारी चाय नही पी सकोगे तो देवराजने जवाब दिया था—"क्योंकि चाय आपके लिए कम होगी।" अब तक कर्नल बाकी सिपाहियोंकी तरह देवराजको भी छूतछातका शिकार समझते थे। यह उनके लिए नया आविष्कार था। उसके बाद तो देवराज जब कभी भी कर्नलके साथ जाता, दोनोंका भोजन साथ तैयार होता था। यद्यपि बाहर लोगोंको इसका पता नही देना चाहते थे, तो भी कितनी ही बार दोनो एक साथ एक मेजपर भोजन किया करते थे। साहबके इस बर्तावसे

सबसे ज्यादा आश्चर्य होता था खानसामा रहीमको। उसके लिए, यह समझना मुश्किल था कि इतना बडा अफसर एक मामूली सिपाहीके साथ भोजन क्यों करता है। उससे भी बढ़कर उसे इस बातपर आश्चर्य होता था कि देवराज राजपूत होकर क्रिस्तानके साथ खाना कैसे खाता है। पहले उसने समझा था. कि देवराज यह सब लुक-छिपकर कर रहा है। छावनीमे जानेपर, जातभाईके सामने उसकी हिम्मत न होगी। लेकिन, छावनीमे भी उसने अक्सर देवराजको श्रीमती ज्यॉफरेके हाथसे बिस्कुट, चाय खाते-पीते देखा और देखा ऐसे समय जब कि सूबेदार मातबर सिह भी वहाँ मौजूद थे।

सारी पल्टनमें तहल्का मच गया था। कितने लोग कहते थे, देवराज क्रिस्तान हो गया। देवराजका कहना था, यदि खाने-पीनेसे कोई क्रिस्तान होता है, तो बीकानेरके महाराजा और ईदरके राजा सर प्रतापसिह भी क्रिस्तान है। राजपूत सिपाही-जात है, यदि वह खाने-पीनेमें छूत-छातकी पाबंदी रक्खेगी तो लड़ेगी क्या ?

मातबर सिंहसे लेकर सभी आदमी देवराजके विरोधी हो गए; लेकिन, मोहनसिंहके भावमें जरा भी परिवर्तन नही आया। वह भोजन रसोईखानेसे ले आता था और दोनो साथ बैठकर, एक थालीमें खाते थे।

कर्नल ज्यॉफरेने सारी घटनाको सविस्तर अपनी स्त्रीको सुना दिया था और इसका असर उनपर भी वैसा ही हुआ, जैसा कि स्वयं कर्नलपर। अब देवराज उनके परिवारका एक व्यक्ति था। वह उसके साथ बाहर उतना ही भेदभाव दिखलाना चाहते थे, जितना कि दूसरे अफसरोंको नागवार न लगनेके लिए जरूरी था।

१४

रेलयात्रा

१९१३–१४ में इगलैंडके पत्रोंमे भावी युद्धके सम्बन्धमें बहुतसे लेख छपे थे। अन्तर्राष्ट्रीय वैमनस्य तथा युद्धसम्बन्धी कितनी ही महत्त्वपूर्ण पुस्तके कर्नल ज्यॉफरे मँगाया करते थे। ज्यॉफरे स्वतन्त्र प्रकृतिके पुरुष थे। इसलिए युद्ध-सम्बन्धी कलामें अधिक निपुण होनेपर भी उतनी तरक्की करने नही पाये, जितनी कि उनके जैसे योग्य अफसरकी होनी चाहिए। १९१४के शुरूके महीनो-में यूरोपका वायुमडल बहुत गर्म था—यद्यपि उस गर्मीका पता हिन्दुस्तानके भीतर छपनेवाले अग्रेज़ी और हिन्दुस्तानी पत्रोसे नही लगता था। अंग्रेज चाहते थे, गोरी शक्तियोकी जूतम्-पैजार की बात हिदुस्तानी कानो तक न पहुँच पाए, और हिन्दुस्तानी पत्र, कुछ तो सरकारके डरके मारे और कुछ अपनी अयोग्यताके कारण, महत्त्वसे अनभिज्ञ होनेसे बिलायती पत्रोके राजनैतिक और सैनिक लेखोंसे फायदा नही उठाते थे। कर्नल ज्यॉफरे अच्छी तरह जानते थे कि यूरोपके शरीरमें कितना जबर्दस्त ज़हरबाद (कारबेकल) पैदा हुआ है, वह ऊपरी मरहम-पट्टीसे अच्छा होनेवाला नही है। अंग्रेज़ोंको अपनी सैनिक शक्ति और अपार भौतिक सम्पत्तिका बहुत अभिमान था। वे अच्छी तरह जानते थे कि अगला युद्ध किसी राजाकी महत्त्वाकांक्षा या शौकको पूरा करनेके लिए नही होनेवाला है। वे यह भी जानते थे कि जर्मनोंका अभिप्राय यूरोपके छोटे राज्योंकी स्वतन्त्रता अपहरण करनेका नहीं है। जिस तरह

अंग्रेज़ोंने अपने व्यापार और उसके सहायक शासन द्वारा दुनियाके एक चौथाई भागको अपनी दुधार गाय, स्वार्थका शिकार बना रक्खा है; वही नकल जर्मनी भी करना चाहता है। जर्मनी जानता है कि दुनिया जिस प्रकार कुछ शताब्दियो पहले अंतहीन समझी जाती थी, वस्तुतः वह वैसी नही है। दुनियाके सभी स्थल और जल भाग ज्ञात हो चुके है और यूरोपकी जबर्दस्त शक्तियाँ उन्हे अपने बीच बाँट भी चुकी है। कोई भी जगह उसके व्यवसाय और व्यापारके लिए खुली नही है। साम्राज्यवादी शक्तियों ने अपने आधीन देशोको निजी व्यापार और व्यवसायके लिए सुरक्षित कर रक्खा है; वे इनके लिए मछली पालनेके तालाबसे है। किसी भी व्यावसायिक शक्तिके लिए उनका दरवाजा बंद है। सिवाय तोपोंकी सहायताके वे दरवाजे खुल नही सकते। इसके लिए ही जर्मनी बीसियो वर्षसे तैयारी कर रहा था। यह बात यूरोपके राजनीतिज्ञोको भली भाँति मालूम थी और जिस प्रकार सेना तथा शस्त्रास्त्रके बढानेमें होड़ लगी थी, उसका परिणाम युद्धके सिवा दूसरा हो ही नही सकता था।

कर्नल ज्यॉफरेकी राय हुई, अबकी साल गर्मियोंमें कश्मीरकी सैर की जाय। अप्रेलहीमें देवराज, अपनी स्त्री और रहीमके साथ वह नसीराबादसे रवाना हुए। दिल्लीसे बम्बई मेल पकड़कर रावलपिण्डी पहुँचे। उसी ट्रेनसे कितने ही दूसरे सैनिक और नागरिक अफसर पहाड़की ओर जा रहे थे। उनकी आपसमें कभी कभी युद्ध, बर्बरता और स्वार्थान्धताके सम्बन्धमें गरमागरम बहस छिड़ जाती थी। कर्नल ज्यॉफरेके डब्बेमें तीन और अंग्रेज थे, जिनमें एक भारतीय सरकारके राजनैतिक विभागके कर्नल जॉन्सन् थे। उनको मनुष्यके पतन और नंगी निर्लज्जताका बहुत दुःख था। वह कह रहे थे—

"देखिए, हम युरोपके लोग आज सभ्यतामे ससारके सिर-मौर है। लेकिन, कुछ संकीर्ण दृष्टिवाले राष्ट्र उसे बर्बाद करना चाहते है। आज यूरोपका वायुमंडल विषैला हो गया है, जर्मनी जैसे बर्बरोंके कारण। दूसरोके धन और स्वातंत्र्यको अपहरण करनेके लिए ये लोग इतने उतारू हो गये है कि औचित्य और अनौचित्य-का ख्याल ही भूल गए।"

कर्नल ज्यॉफरेने मुस्कराते हुए कहा—"ठीक, ऐसे लोगोको बर्बर कहना ही चाहिए। सभ्यता कपडे, लत्तेमें नही है। संसार की किसी भी मानवसंतानको जो लोग परतंत्र रखना चाहते है; उन्हें सभ्य नही कहा जा सकता। उनकी इस प्रवृत्तिको नीचताके सिवा दूसरे नामसे पुकारा नही जा सकता। सभी मानव-सतान भाई-भाई है। यदि परिस्थिति या अपने अध्यवसायके कारण कोई जाति अधिक समुन्नत, सुशिक्षित और शक्ति-सम्पन्न हो गई है; तो उसका कर्तव्य है पिछड़ी जातियोंको, पथ-प्रदर्शन करके, अपने जैसा बनाना। दूसरोंके अज्ञान और निर्बलतासे फायदा उठाना वीरोका काम कभी नही समझा जा सकता। कहिए कर्नल साहब, आप तो इससे जरूर सहमत होगे?"

कर्नल जॉन्सनको अपने सहयात्रीका मर्यादातिक्रमण बुरा मालूम हो रहा था, लेकिन मनुष्यता और न्यायकी दुहाई देनी पहले उन्होंने ही शुरू की थी। वह पश्चिमीय देशोकी इस सार्वजनीन धारणा—जिसमें मनुष्यसे मतलब है गोरी जातियाँ और मनुष्यतासे मतलब है इन्हीं जातियोंका स्वार्थ—की इस प्रकार अवहेलनाकी आशा एक अंग्रेज अफसरसे नही रखते थे। यद्यपि कर्नल ज्यॉफरेने अभी रंगीन जातियोका नाम नही लिया था, लेकिन जॉन्सन समझ रहे थे, कि उन्हीके ऊपर यह चोट की जा रही है।

कर्नल ज्यॉफरेने जरा-सा रुककर फिर अपनी बात जारी

की—"चाहे कुछ भी हो, एक देशमें आदमियो द्वारा चोरी और अव्यवस्था फैलाना जिस प्रकार बुरी बात है, वैसे ही उनका अन्तर्राष्ट्रीय जगत्‌में किसी एक राष्ट्र द्वारा फैलाया जाना भी बुरा है। इस तरहका अन्याय चाहे यूरोपके किसी कोनेमे किया जाय या एसियाके, उसे हमेशा ही अन्याय कहना होगा; और जब तक ऐसे अन्यायीको दंडित और लाञ्छित करनेकी व्यवस्था नही होती, तब तक शान्तिका स्वप्न व्यर्थ है।"

"लेकिन" कर्नल जॉन्सनने गभीर मुद्रा धारण करते हुए कहा—"आप तो इसे स्वीकार करेगे कि दुनियाकी शक्तियोंमें अग्रेज ही ऐसे है, जोकि ससारमें हर तरहसे शान्ति कायम रखनेका प्रयत्न कर रहे है।"

"जी हॉ, शान्ति कायम रखनेका प्रयत्न क्यो न करेंगे? जितना लूटनेको था उतना हमने लूट लिया। अब यह उस लूट की सम्पत्तिके उपभोगका समय है। ऐसी अवस्थामें हम क्यों अशान्तिको पसंद करेंगे? आप अपनी पत्नीके साथ एक सजे सजाए मेजपर बैठे है, तरह तरहकी ज़ायकेदार तश्तरियाँ और एकसे एक बढकर शराबे बारी बारीसे आपके सामने लाई जा रही है। आपके पास आप ही जेसा किन्तु भूखका मारा आदमी खडा है। वह अपनी चेष्टाओ द्वारा बतलाना चाहता है कि उसे भूख लगी है। आप एक पर एक तश्तरी उडाते जा रहे है और उसकी तरफ नजर उठाकर देखना भी नही चाहते। आपके लिए उस भूखेकी अशान्ति पसंद नही है। मान लीजिए कि शक्ति और योग्यतामें वह भूखा आपसे कम नहीं है, और साथ ही वह यह भी जानता है कि ये तश्तरियाँ और शराबकी बोतलें आपकी ईमानदारीकी कमाई नही है; तो क्या वह कभी आपको चैनसे मौज उडाने देगा? जर्मनी और हममें बस, यही भेद है। जब हम दुनियाको लूट रहे थे तब वह सोया

था। उस वक्त जो शक्तियाँ जगी हुई थी, और जो हमारी तरह खुद अपने काममें दिलोजानसे लगी हुई थी, उन्होने हमें चैनसे अपना काम नही करने दिया। पोर्तुगीज, डच, फ्रेंच, सभीके साथ लूटके मालके लिए हमारी लड़ाइयाँ बराबर होती रही। दुनियामें और नई लूट करनेकी हमारी इच्छा नही है, यह बात नही है। अब भी हम वैसी तदबीर लगानेसे बाज नही आते लेकिन हर जगह सख्त मुकाबला है—कही चौबेजी छब्बे की जगह दुबे न हो जायँ ! हिदुस्तानपर हमारा क्या अधिकार है, यदि तलवारके अधिकारका ख्याल हटा दे?"

"तलवारका अधिकार भी तो अधिकार है?"

"हाँ, जगलके कानूनमे। लेकिन, हम तो अपनेको सभ्य और संस्कृत कहना चाहते है न?"

"हम पूर्णताका दावा तो नही करते। लेकिन, हमारे सभ्य होनेमें क्या कोई सन्देह है? अपने आर्थिक स्वार्थोंके लिए कभी कभी हमे कड़ा रुख लेना पडता है। लेकिन, हम अपने पराजित शत्रुओंके साथ बडी नर्मीका बर्ताव करते है। एसियाई लोग युद्ध-बंदियोंको जीता नही छोडते। शत्रुके घायलोंकी मरहम-पट्टीका वहाँ कोई सवाल ही नही उठता। युद्धसे भी हमने बहुत-सी क्रूरताएँ हटा दी है। अपने आधीन देशोंसे दास-प्रथाको सदाके लिए बिदा कर दिया है। कौन ऐसी जाति है, जो हमारी तरह इतना अधिक धन और शक्तिका व्यय अपने आधीनोंको सभ्य और सुशिक्षित बनानेमें करती है? भारतीयोके साथ जैसा बर्ताव हम करते है, वैसा तो भारतीय शासक भी नही करते। मुझे कई देशी रियासतोका अनुभव है। वहाँकी प्रजाको इसका शतांश अधिकार भी नही है जितना कि ब्रिटिश शासित प्रान्तोंकी प्रजाको है। हम इन हिंदुस्तानी राजाओंके स्वेच्छाचार और जुल्मको अपनी आँखों देखते है,

श्रौर कभी कभी हमारी श्रंग्रेजी न्यायप्रियता उसमे हस्तक्षेप करनेके लिए हमें प्रेरित करती है; लेकिन, ऐसा करनेमें हल्ला होने लगता है—'तुम तो देशी राज्योंको हडप लेना चाहते हो' ।"

"नही जनाब, श्राप यह सब उदारता वश नही करते । सभ्यताने मनुष्यके हाथमे छापाखाना श्रौर श्रखबार दे रक्खे है । राष्ट्रोको न सही, कितने ही व्यक्तियोको उसने न्यायके पक्षमें कर दिया है । श्राधुनिक यातायात-साधनोके श्राविष्कारोने देशोंकी दूरियोंको मिटा दिया है । श्राप डरते है कि कही श्रापके दुष्कर्मोंका भंडा-फोड न हो जाये, दुनिया बदनाम श्रौर श्रविश्वास न प्रकट करने लग जाये श्रौर इस प्रकार श्राप श्रकेले न रह जाये । हमारे मुल्कमे तो कुछ पागल, सारी दुनियाको मनुष्य श्रौर मनुष्यताकी सीमाके भीतर लाना चाहते है । इन पागलोंका भी श्रापको कम डर नही है, क्योंकि ये पगले गरीबोंको यह कहकर बरगलाते है—'तुम्हारे धनी जिस तरह पराधीन जातियोंका खून चूसते है, उसी तरह तुम्हारा भी । जोक श्रपना-पराया नही देखती ।' तुम श्रपने यहाँके श्रखबारोंकी श्राजादी छीन नही सकते, क्योकि लिखने-पढनेकी श्राजादी छिन जानेपर गुप्त षड्यंत्रोंका दौरदौरा होने लगेगा । फिर तो रूसकी तरह इंग्लैंडमें भी बादशाह श्रौर राजनीतिज्ञोका जीवन खतरेमें रहने लगेगा । हिन्दुस्तानमें श्राकर हम लोगोंका दिमाग जिस तरह श्रासमान पर चढ जाता है, क्या उसे श्राप न्यायोचित मान सकते है ?"

"हम यह नही कहते कि हम लोगोमे कोई दोष नही, लेकिन हमारे वैसा करनेमें बहुत दोष तो हिदुस्तानियोका है । वे कब मनुष्यके तौरपर हमारे सामने श्राते है ? उनकी झूठी चापलूसीसे तो मैं ऊब जाता हूँ । चाहे राजा, महाराजा, नवाबको लीजिए; चाहे साधारण गँवारको । सभी हमारे सामने पैरमें पूँछ डोलानेका श्रभिनय करते हैं । ऐसे लोगोंके साथ हम कैसे मनुष्यताका बर्ताव कर सकते हैं ?"

"लेकिन ऐसा करनेके लिए भी तो हमने ही उन्हे मजबूर किया है। क्लाइव और वारेन हेस्टिग्स् ही नही नवाब बनना चाहते थे; हमारे लार्ड कर्ज़न क्या उसमे किसीसे कम थे? वही क्यो, आज भी वायसरायसे लेकर प्रान्तोके गवर्नर, लेफ्टिनेन्ट-गवर्नर, चीफ-कमिश्नरके ही नही, कमिश्नर और कलक्टरके भी दरबार लगते है; और उनमे उस तरहके नाटक खेले जाते है, जिन्हे, यदि इंग्लैडमें किया जाय तो लोग दंग हो जायँ। हम तो इन बातोंको चाहते है, क्योंकि हम लोगोकी धारणा है कि इस तरह शासितों-पर रोब और धाख जमानेमे सफल हो सकते है। घरके व्यवहारके लिए हमारे सभ्यता और शिष्टाचारके दूसरे नियम है, लेकिन स्वेजसे पूरबके लिए हमने दूसरी ही व्यवस्था बना रक्खी है। हम हिंदुस्तानियोंको दिलसे आगे बढने देना थोड़े ही चाहते है? हमको अपना शासन और शोषण सफलतापूर्वक जारी रखनेके लिए कुछ शिक्षित और सम्पन्न हिदुस्तानियोंकी भी आवश्यकता है; इसलिए हमने उसकी भी व्यवस्था कर रक्खी है। हमने रेले बनाई है विद्रोहको दबानेके लिए सेना तथा अपने मालको एक जगहसे दूसरी जगह शीघ्र और आसानीसे ले जानेके लिए; न कि गरीबोंको आरामसे यात्रा करने देनेके लिए। परोपकार और उदारताका ढोग हमारा बिल्कुल फजूल है। अब—जब हमारे कामोमें तरह तरहकी कठिनाइयाँ पडने लगी है—तो हमारे रुखमें कुछ थोडासा परिवर्तन दिखलाई दे रहा है; लेकिन इसका कारण निरा स्वार्थ है।"

× × ×

रावलपिडीसे एक मोटर की गई, और सब लोग श्रीनगरके लिए रवाना हुए। मैदानी भूमिको छोड़ मोटर पहाडियोंके भीतर ऊपर-

की ओर चढ़ने लगी। सडक खूब चौडी और साफ़ थी। वहाँ मोटरकी सवारीमें भी मज़ा आ रहा था। सूखी पहाड़ियोंके बाद वृक्षोवाले पर्वत आरम्भ हुए। कही कही कुछ गाँव भी मिल रहे थे। बारामूलासे आगे दृश्य और भी रमणीय आने लगा। अजमेर और रावलपिडीकी गर्मी न जाने कहाँ चली गई। वायु शीतल और मधुर मालूम हो रही थी। दूर-दूरपर देवदारके सुदर वृक्ष गर्वोन्नतसे खड़े दिखाई पडते थे। कश्मीरी स्त्री-पुरुष अपने चोगेकी लम्बी बाहोमें हाथ छिपाए बेपरवाहीसे घूमते दिखाई पड रहे थे। बच्चोके गुलाबी चेहरोपर मैलकी चिप्पियाँ देखकर कर्नल ज्यॉफ़रेने एक बार कहा—"यदि इन बच्चोंको नहला-धुलाकर साफ़ कपडा पहना दिया जाये, तो ये हमारे बच्चोसे कम सुदर न मालूम पडेगे?"

श्रीमती ज्यॉफरे बोल उठी—"गरीबीके कारण कपडे साफ़ नही मिलते; लेकिन, पानी तो सब जगह मौजूद है। सफाई जानते ही नही।"

"इग्लैडमे भी तो हम लोगोने अधकचरी सफाई अभी सौ ही पाचस वर्षोंसे सीखी है। हमारे यहाँ कितने ऐसे ग़रीब परिवार है जो सारे जाड़ेमें दो बार भी नहानेकी तकलीफ गवारा करते हैं? मुँह-हाथ न साफ करनेके खिलाफ जन-मत है, इसलिए लोग वैसा कर लिया करते है।"

आगे मोटर कश्मीरकी सुहावनी उपत्यकामे प्रविष्ट हुई। सड़कके दोनों तरफ़ शंख जैसे सफेद और सीधे खड़े पतले सफेदों-की पाँती चली गई थी। मालूम होता था, किसी सम्भ्रान्त पुरुष के स्वागतके लिए सफ़ेदी पुते खंभोंपर हरी पत्तियोंको सजाया गया है। पहाड़ अब सड़कसे दूर थे और धानकी क्यारियाँ चारों ओर फैली हुई थी। किसान जुताईमें लगे हुए थे। मोटर मीराक-

दलके पाससे होते बंदपर पहुँची। जाकर काश्मीर होटलमे ठहरे और दोपहरके लंचके बाद एक अच्छे हाँउसबोट (गृहनौका)को दो महीनेंके लिए किरायेपर करना तै हुआ। देवराजने कुछ गृह-नौकाएँ देखी। माँझियोंने एकका चार माँगा। लेकिन देवराज भी सौदा करनेमे पीछे रहनेवाला नही था। उसने आठके लिए एकसे शुरू किया। अंतमे तीन कमरे तथा स्नानागार सहित गृह-नौका "ताऊस", भोजनशालाके लिए एक सहायक नौका और इधर-उधर जानेके लिए छोटी डोंगी (शिकारा)के साथ डेढ़ सौ रुपय महीनेमे ली गई। उसी शामको लोग नावमें चले गए। श्रीनगरमे यात्रियोंका मौसिम था। हजारो यूरोपीय स्त्री-पुरुष होटलों और गृह-नौकाओंमें ठहरे हुए थे। जहाँ तहाँ यूरोपीय अशान्तिकी चर्चा भी छिड जाती थी, लेकिन अधिकाश लोग युद्धको अनिश्चित भविष्यकी घटना समझते थे।

१५

हिमालय

एक हफ्ता तक "ताऊस" झेलममे रहा। साहब, उनकी पत्नी, और देवराज रोज अच्छाबलके झरने, पामपुरके केसरके खेत, मार्तंड-के ध्वंसावशेष तथा दूसरी जगहोको देखने जाते थे। देवराजको अर्दलीकी वर्दीकी जगह अंग्रेजी पोशाक पहननेका हुक्म हुआ था। "ताऊस" डलमें भी दो हफ्ते एक जगहसे दूसरी जगह घूमता रहा। ऐशबाग़ और निशातके सुदर उद्यानोको देखने तथा वन-भोजोंका आनन्द लेनेका काफ़ी मौका उसे मिला। बाहरके दृश्योको देखनेके बाद बाकी समय पुस्तकोके पढ़ने, मछली मारने तथा वार्तालापमें गुजरता था। देवराजको सबसे सुदर समय वह मालूम होता था, जब कि कॉन्वेस-की आराम-कुर्सीको चिनारकी घनी छायामे डालकर उसपर बैठे वह किसी गंभीर पुस्तकको पढता था। आमतौरसे एक बजेसे तीन बजे तकका समय उसका इसीमे गुजरता था। यहाँ सभी बाहरी शिष्टाचारका दिखावा उठा दिया गया था और तीनो आदमियोंको मालूम होता था, कि वे स्वच्छन्द हवा मे साँस ले रहे है।

मईका अंत हो रहा था। लदाखियोंका पहला काफला सड़कसे आता दिखाई पड़ा। कर्नलने कहा—क्यों न हम लोग भी इस साल लदाख चलें। श्रीमती ज्यॉफरेने अनुमोदन किया और देवराजने समर्थन। चार घोड़े सवारीके और चार सामानके लिए किराएपर किए गए। दो तम्बू और अन्य मार्गोपयोगी चीज़ें ली गई। कर्नलने श्रीमती और देवराजके लिए बर्फानी बूट और रहीमके

लिए चमड़ेके मोजेवाले गिलगिती चप्पल खरीदे।

एक दिन दोपहर बाद काफला श्रीनगरसे रवाना हुआ। पहली रात श्रीनगर उपत्यकामे ठहरे और दूसरे दिन जोजीलाकी तरफ जानेका रास्ता पकड़ा। सलाह ठहरी थी, हर रोज एक पड़ाव चलने और डाक बँगलेके हातेमे कैम्प लगाकर ठहरनेकी। डेढ महीनेकी कश्मीरी आबोहवाने सबकी सेहतपर असर डाला था। और तो और बूढी श्रीमती ज्यॉफ़रेके गालोपर भी खून दौड़ने लगा था। बूढे कर्नलने मज़ाक करते हुए देवराजसे कहा—"देखो, सूखा दरख्त हरा होने लगा है। तुम्हारी माम फिर, जवान होती जा रही है।"

मेम साहबने जवाब देते हुए कहा—"देखना जॉनी, कही तुम्हें हाथ न मलना पड़े!!"

"जरा जोजीला पार तो हो ले, तो न हमे हाथ मलना पड़ेगा न तुम्हे। दोनोकी गुलाबी ताम्बेका रग धारण करेगी और बाजारमें हमारी क़ीमत एक पैसा न रह जायगी।"

"तुम्हारी, गुलाबी भले ही चली जाय, मै उसकी दवा जानती हूँ।"

"दार्जिलिंगमे किसी तिब्बतिनसे तो नही सीखा? अच्छा, कत्थेकी एक मोटी तह सारे चेहरेपर चुपड़ लेना। यही न होगा कि ज़ोजीलाकी कपूर जैसी बरफको पार करते वक्त एक दिन लोग तुम्हे काली मेम साहबा कहेंगे। द्रास चलकर कत्था धो डालना और फिर गालोकी गुलाबी अपने दूने यौवनके साथ निकल आयेगी।"

"दूने यौवनके साथ! डाह तो नही करोगे?"

"डाह करनेकी ज़रूरत ही क्या? यहाँ बयाबानमें मुझे छोड़ तुम्हारा गाहक ही कौन? और, मेरे लिए तो तुम ताम्रमुखी भी बन जाओ, तो भी यहाँ प्रेमका स्रोत सूखनेवाला नही।"

"नही, मै ताम्रमुखी नही बननेकी, और कत्था भी नही चुपड़ूँगी। मैने अच्छी वैसलिन और मुँहपर लपेटनेके लिए लाल गुलूबन्द साथ रक्खा है। समझूँगी, दस घटेके लिये बुर्कापोश बन गई।"

उस दिन शामको कैम्प बाल्तल्मे लगा। अभी भी बरफ़ ज्यादा थी और डाकबँगलेके पासके पुलसे ही वह शुरू थी। चारों तरफ पहाडोपर बरफ ही बरफ दिखाई पडती थी। डाक-बंगलेसे नीचे हरी हरी घासका मखमली फ़र्श बिछा हुआ था। भोज-पत्रके दरख्तोपर नई पत्तियाँ आने लगी थी।

दूसरे दिन फिर वही मुकाम करना निश्चय हुआ। श्रीमती ज्यॉफ़रे फ़ोटो खीचनेमे व्यस्त रही। कर्नल और देवराज किताबें पढने और बहस करनेमें। कर्नलका कहना था—"झूठे ही श्रीनगरकी उपत्यकाकी इतनी तारीफ़ की जाती है। वहाँका जो कुछ सौदर्य है, वह मनुष्यके हाथका सँवारा हुआ है। प्रकृतिने तो मुक्त-हस्त होकर अपनी उदारताका परिचय यहाँ दिया है। ऐशबाग़ और निशातबाग सुदर है, लेकिन उस सुदरताके बनानेवाले वे ही हाथ है, जिन्होने रुपहले झरनो, फव्वारों, वृक्षो और घासके फर्शको सजाया। चिनार निश्चय ही सुदर है और अपनी शीतल छायासे चित्तको आह्लादित करता है; लेकिन ये चिनारबाग़ भी मनुष्यके हाथोकी कृति है। इतनेपर भी क्या ऐश और निशातके झरने तथा फव्वारे सिंधके इन स्वाभाविक जल-पातों और कल-कलोका मुकाबला कर सकते है? क्या लाखो चिनारोके बाग़ इन सदा-हरित देवदारोके जंगलोसे आँख मिला सकते हैं?"

अगले दिन काफला आगे रवाना हुआ। श्रीमती ज्यॉफरे सचमुच ही बुर्कापोश बनी हुई थी। उनकी उस सूरतको देखकर देवराज भी जबान खोलनेसे बाज़ नही आया—"माम, हिंदुओंके यहाँ कहावत है, बहुप्रचलित प्रथाका अनुसरण न करनेपर आदमीको

गधेका जन्म लेना पडता है। अच्छा हुआ, हिंदुस्तानमे तुम एक दिनके लिए पर्दापोश तो बन गई! लेकिन, यह रगीन ऐनक लगा लीजिए, नही तो यह बुर्का आँखोको बर्फकी चकाचौंधसे हरगिज नही बचा सकेगा और फिर कल आँख मूंदकर चलना होगा।"

"लाओ डेवी, बुर्केके ख्यालमे मै सबसे जरूरी बातको ही भूल गई।"

नौ बजे तक वे लोग डॉड़ेपर पहुँच गए थे। वही लदाखियोका एक कारवॉ मिला। मालूम हुआ रास्ता ठीक है। बरफ़ भी अभी कडी है। आसमानमे कुछ बादल दिखलाई देने लगे थे और घोड़ेवाले जल्दी कर रहे थे; तो भी डाँड़के आगेके बर्फ़ानी मैदानमे सफेद बर्फ़के ऊपर बैठकर दो बिस्कुट खाकर चाय पिये बिना कर्नल आगे बढनेके लिए तैयार न थे। रास्ता उतराईका था, इसलिए पैदल आनेकी बात कहकर उन्होने रहीम तथा मेम साहबको आगे रवाना कर दिया, और थोड़ी देर ठहर हरी ऐनकके पीछेसे चारो ओरके रुपहले जगत्पर नज़र दौडाते देवराज और कर्नल भी धीरे धीरे बढ़े। बरफ पिघलने लगी थी और जहाँ-तहाँ भीतर ही भीतर बहते पानीने ऊपरवाली बरफ़की पतली तहको खतरनाक बना दिया था। देवराजको बरफ़पर चलनेका मौका यह पहले पहल मिला था, इसलिए वह कर्नलकी हरेक बातको बड़े ध्यानसे सुन रहा था। कर्नलने कहा—

"जानवरों और आदमियोके पैरोसे बने रास्तेहीसे चलो, यहाँकी बरफ़ दबकर ज्यादा मज़बूत हो गई है।"

आगे बाईं तरफ छोटी-सी झील दिखलाई पड़ी, जिसमें पानीकी अपेक्षा बरफ ही ज्यादा थी। फिर एक फर्लांगकी चढ़ाई मिली, लेकिन कर्नलने देखा कि देवराजके पैर धीमे पड़ रहे है। उन्होंने पूछा—"डेवी, थक तो नही गए?"

"पैरोके थकनेका सवाल नही है। कलेजा मुँहकी तरफ आ रहा है।"

"हम ग्यारह हजार फ़ीटपर चल रहे है। पतली हवाका यह असर है। यहाँ जितना ही जोरसे तुम चलना चाहोगे, उतना ही आगे बढनेमें तकलीफ़ होगी। स्लो-मार्च (धीमी चाल)। उतराई-मे जल्दी चलनेमे कोई हर्ज नही।"

चार बजे वे लोग अगले डाकबँगलेपर पहुँचे। घरके भीतरी भागको छोडकर सभी जगह बरफ थी। मेम साहब चाय पी चुकी थी। कर्नल और देवराजके लिए चायका पानी खौल रहा था। पहुँचते पहुँचते मेजपर चायदान और प्याले तैयार थे।

देवराजने समझा था, बाल्तल्से जोजीला डाँड़े तककी तरह डाँडेसे नीचे, इस तरफ भी कुछ दूर तक दरख्त नही मिलेगे, और फिर भोजपत्र, देवदार और दूसरे हरे-भरे दरख्तोका जगल आ जावेगा। किन्तु बात और ही निकली। दूसरे दिन पाँच-छै मील तक फिर बरफ मिली और आगे जो गाँव मिले, उनके घर छोटे-छोटे पत्थरोके ढेरसे मालूम पड़ते थे। कही वृक्ष और वनस्पतिका नाम न था। कई मील तक चले जानेपर भी वही नगे पहाड़, वही जल-वनस्पति-शून्य भूमि! कर्नल पहले भी लदाख गए थे। उन्होने बतलाया कि अब हमे फिर हरियाली, बाल्तल् लौटकर ही, देखनेको मिलेगी।

लदाखकी तरफ़ जगली भेड़ों—जो वस्तुतः भेड़की जात न होकर असाधारण मोटी सीगवाले हिरनकी जात है—के शिकारके लिए अक्सर अंग्रेज लोग आया करते है। अपने दो महीनेकी लदाख-यात्रामें कर्नलको तीन जंगली भेड़े शिकार करनेके लिए मिले और यह कम सफलताकी बात न थी।

लदाखी लामाओके कलापूर्ण मठों, और उनके विचित्र देवालयोंने

देवराजको वहुत आकृष्ट किया। तिब्बती भाषाका ज्ञान न होनेसे उसे कठिनाईका सामना करना पडता था; लेकिन, वह अक्सर किसी न किसी हिन्दुस्तानी समझनेवाले लदाखीकी सहायता प्राप्त कर लेता था। श्रीनगरमे उसने लदाख और तिब्बत सम्बन्धी तीन-चार पुस्तके पढी थी, वह महसूस कर रहा था कि यदि और पढता तथा थोडा-सा भाषाका ज्ञान होता, तो मुलबेक्के मैत्रेय तथा लामायूरू, और हेमिस्के मठोके दर्शनमे वह अधिक आनन्द पा सकता था।

लेहसे दल हेमिस मठ होते मन्-पङ् गोङ्की नीलम-मढी झील देखने गया। जिस वक्त अगस्तके मध्यमे वे लोग लेह लौटे तो कर्नलके लिए कई तार इन्तिजार कर रहे थे। भारतीय फ़ौजें यूरोपीय युद्धके लिए तैयार थी।

१६

महायुद्ध

नसीराबाद छावनीमे सिपाही भविष्यपर गभीरतापूर्वक विचार कर रहे है। जमादार धन्नू सिहने सीमान्तके कबीलोके साथ युद्धका अपना पुरानी तजर्बा सुनाना शुरू किया—"अरे लड़ाई! मैदानमें जाते है, यदि गोलीका निशाना ठीक लगा तो वही ढेर। तकलीफ थोडे ही होती है? योगीकी-सी मृत्यु! घायल हुए तो 'रेड-क्रॉस'वाले सेवा करनेके लिए तैयार रहते है—डाक्टरोंकी कमी नही। हाथ-पैर चलने लायक नही रहा तो पेन्शन। न सभी मरते है और न सभी घायल ही होते है। मैने लडाई देखी है। वजीरिस्तानमे मै घायल हुआ था।"

मोहन सिहने कहा—"जमादार साहब, वजीरिस्तानके पठानोको जर्मनोके बराबर मत कीजिए। जर्मन सिपाही और अफसर अग्रेजोंसे ज्यादा सुशिक्षित और बहादुर होते है। उनकी अस्त्र-शस्त्रकी तैयारी भी अग्रेजोसे बढकर है। सामुद्रिक सेनामें चाहे अंग्रेज़ भले ही उनका मुकाबला कर लें; लेकिन, जहाँ तक स्थल-सेनाका सम्बन्ध है, जर्मन-सेना दुनियामे अपना सानी नही रखती।"

मोहन जमादार धन्नू सिहकी बातको उस ज्ञानके बलपर काट रहा था, जिसे उसने देवराजसे पाया था। जमादार उस युगमें भर्ती हुए थे, जब कि सिपाहीके लिए अक्षर ज्ञान बिलकुल फज़ूल समझा जाता था। अब नई भर्तीके सिपाहियोंमें कितने ही दोचार सालकी पढाई ख़तम करके आए थे।

पहली सितम्बर (१९१४)—जब कर्नल ज्यॉफ़रे अपनी पत्नी और अर्दलीके साथ नसीराबाद पहुँचे, यूरोपमे लडाई जोर-शोरसे शुरू हो चुकी थी, और जर्मन सेनाएँ बेल्जियमके बहुत भीतर तक घुस चुकी थी। कर्नलके पास जो हिदायते आई थीं, उनमे इतना ही था, कि किसी वक्त भी यूरोप जानेके लिए तुम्हारी पल्टन तैयार रहनी चाहिए। छुट्टीपर गए सभी सैनिक बुलाए जा चुके थे। रोज़ युद्धके नए तरीक़ोका रिहर्सल हो रहा था। राजपूत-रेजिमेन्ट पैदल सेना थी, और उसको तोप और रिसालेके कामसे कोई मतलब नही था। लेकिन युद्धके मैदानमे न जाने किस वक्त किस चीजकी जरूरत पड जाय,, इसलिए सिपाहियोको मशीन-गनका इस्तेमाल भी सिखलाया जाता था। सैनिक यत्रोके उपयोगके सीखनेकी देवराजको बड़ी इच्छा रहती थी। उसे बहुत अफसोस होता था जब वह देखता कि उसकी पल्टनमे उनका कोई काम नही है। युद्ध-विज्ञानकी किताबोंमे दिए चित्रो और ड्राइगसे उसने बहुत कुछ सीखा था; लेकिन जब तक असली मशीन हाथमें न आए तब तक क्या सीखना ठीक कहा जा सकता था? कर्नल ज्यॉफ़रेके पास अपनी मोटर थी यह देवराजके लिए बड़ी खुशकिस्मती थी। वह अक्सर कर्नलकी मोटरको चलाता ही नही था, बल्कि उसके कलपुर्जोका भी उसे खूब पता था। कर्नल स्वय एक अच्छे मेकेनिकल इंजीनियर थे।

लेहसे चलते वक्त ही मालूम हो गया था कि लड़ाई शुरू हो गई है। कर्नलका दल दो-दो दिनका रास्ता एक-एक दिनमें तै करते सातवें दिन श्रीनगर पहुँचा था। वहाँसे मोटर और रेल द्वारा चौथे दिन नसीराबाद। घोड़ेके सात दिनके सफरमें देवराज और ज्यॉफरेके वार्तालापका विषय अधिकतर यूरोपीय युद्ध होता था। कर्नल अच्छी तरह जानते थे कि कैसा युद्ध होने जा रहा

है। देवराज भी भली-भाँति समझता था कि आज तक कोई भी युद्ध इतनी जबर्दस्त अस्त्र-शस्त्रकी तैयारीके साथ कभी नही हुआ। इतने नरसहारक हथियार और गैसे किसी युद्धमे इस्तेमाल न हो पाई।

कर्नलने कहा—

"डेवी, इग्लैडके लिए यह जन्म-मरणका सवाल है। लेकिन यह युद्ध सराजीवोमे आस्ट्रियाके युवराजकी हत्याके कारण नही है। बारूद तैयार थी। सराजीवो-काडने सिर्फ उसमे चिनगारी छोड दी।"

"ठीक! आज कई सालोसे सभी यूरोपीय शक्तियाँ सैनिक शक्ति और अस्त्र-शस्त्र बढानेमे पागल हो रही थी। यह सब तैयारी आखिर आज हीके लिए तो थी?"

"व्यक्तियोमे जिस तरह स्वार्थकी मात्रा बढनेपर वह उनके नाश का कारण होती है, उसी तरह जातियोकी स्वार्थान्धता भी अत्यन्त भयावह चीज है। वैयक्तिक तौरसे ईमानदारीका ख्याल रखनेवाले कितने ही आदमी मिल सकते है; लेकिन राष्ट्रीय स्वार्थोके लिए झूठ और धोखा तो शोभाकी बात है। हमसे कमजोर जातियाँ हमारे इन दोषोकी ओर उँगली नही उठा सकती, लेकिन बराबरकी शक्तियाँ कब उन्हे बर्दाश्त कर सकती है? जातियोकी स्वार्थान्धताने ससारमे अराजकता फैला रक्खी है। मुझे यह कहनेमे शर्म मालूम होती है, कि ऐसे अपराधका भारी जिम्मेदार मेरा अपना देश है। धोखे और बेईमानीसे कुछ समय तक काम चल सकता है, हमारी छै-सात पीढियोंने इससे फायदा उठाया। मुमकिन है, दो-एक पीढियाँ और फ़ायदा उठा ले। लेकिन, अगली पीढियोका भविष्य क्या होगा? दुनियामें इंग्लैडका प्रतिद्वन्द्वी कोई पैदा न होगा; इंग्लैडके स्वार्थ और गर्वको चूर करनेवाली शक्ति कोई तैयार न होगी; यह वही मान सकता है, जिसमे सोचनेकी जरा भी शक्ति नही।

खैर, ससारको अपने कियेका फल मिलेगा। लेकिन, सारे संसारको हम दोषी भी नही ठहरा सकते। इग्लैडके करोड़ो मज़दूर—जो खाने-पीनेमें कुछ अच्छी चीजोका भले ही इस्तेमाल करे, लेकिन जहाँ तक भूख, बेकारी, और अनिश्चित भविष्यका सम्बन्ध है, वे हिंदुस्तानके मजदूरोसे भी गए-गुजरे हैं—क्या इस प्रलयके लिए जिम्मेवार माने जा सकते है? आखिर यह झगडा तो साम्राज्यके लिए है और साम्राज्य है मुख्यत: बडे-बडे धनियोके व्यापारिक और औद्योगिक स्वार्थके लिए। इस प्रकार सारी जिम्मेवारी धनिकोपर है। शायद देशको सत्यानाश करके ही वे कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे।"

"उस वक्त शिक्षा ग्रहण करनेसे फायदा ही क्या? इग्लैडके पूँजीपति शान्तिके समय अपने श्रमजीवियोका शोषण करते है। भारत जैसे अपने आधीन देशोका खून दुहकर अपने विलासपूर्ण जीवनकी कामनाएँ पूरी करते है। आज इस सबका परिणाम भोगनेके लिए वे अकेले नही है। भारत और इग्लैडकी सभी गरीब, मेहनती जनता सबसे पहले उसका शिकार बन रही है। लेकिन, जब तक शासनकी बागडोर थैलीवालोके हाथमे है, तब तक क्या युद्ध रुक सकता है?"

"तुम ठीक कहते हो, डेवी, मै शान्तिवादी नही हूँ, खास करके किसी भी शर्तपर शान्ति लेनेके लिए मै तैयार नही हूँ। कुछ व्यक्तियोके स्वार्थके लिए युद्ध करनेको मै बुरा समझता हूँ। लेकिन, यदि सारी जनताको काटनेके लिए पागल कुत्ता आए तो उस वक्त शान्तिवादी बननेसे काम नही चलेगा। खैर, हमारे देशके पूँजीपतियोंने राष्ट्रके ऊपर यह आफत ला दी; तो भी देशकी आजादीके लिए हमें लड़ना ही होगा, क्योकि हम इंग्लैडके थैलीवालोंपर जर्मनीके थैलीवालोंको तर्जीह नही दे सकते। है तो यह युद्ध थैलीवालों ही का।"

× × ×

मोहन सिंह बड़ी उत्सुकतासे देवराजकी प्रतीक्षा कर रहा था। अभी तक पल्टनके रवाना होनेके लिए किसी निश्चित तारीखकी खबर न आई थी।

देवराजने पूछा—"मोहन भाई, सिपाही लोग युद्धकी खबरका कैसा स्वागत कर रहे है?"

"स्वागत! पल्टनकी नौकरी है। फिर किसी दिन लड़ाईपर जानेका हुक्म हो ही सकता है। जैसे दुनियाकी हजार बातोंको किस्मतका खेल समझते है, वैसे यह भी उनके लिए क़िस्मतका खेल है। मैंने कह दिया है—किस्मतका खेल तो है, लेकिन अबकी बार क़िस्मत एकको भी छोडनेवाली नही है।"

"लेकिन मोहन भाई! यदि किस्मतका ख्याल न होता तो इस वक्त कौन उनको ढाढस बँधाता? कर्नल ज्यॉफरेके लिए युद्धमे जाना है अपने घर-बार और आजादीकी रक्षाके लिए; लेकिन हमारे मातबर सिंह और रामसेवक सिहके लिए न तो वहाँ घर-बारका सवाल है, और न आजादी ही का। गरीबीके कारण नौकरी करते थे और महीने बाद बँधी-बँधाई तनखाह मिलती थी। यदि हम भी समझते कि जर्मनी हमारी स्वतंत्रता अपहरण करना चाहता है, तो हमारे दिलमे भी वही जोश उठता; देखते नही दो बिस्वा खेतपर जबर्दस्ती करनेपर किसान खून कर देते है और जानकी परवाह नही करते।"

"हाँ, किस्मत ढाढस तो बँधाती है; लेकिन मनको अन्तः प्रेरणासे वंचित भी तो कर देती है। ऐसा ढाढस मुर्देके ही योग्य है।"

"परतंत्र देशका यह भी दुर्भाग्य है। हम लोग यहाँ चौदह-चौदह पन्द्रह-पन्द्रह रुपयेपर जान देनेके लिए तैयार है। जिनके लिए हम जान देने जा रहे हैं, क्या उनके दिलोंमें हमारी जानकी

कुछ क़द्र है? वे तो समझते हैं, कि हिंदुस्तानमें करोडो आदमी भूखों मर रहे है, एक सिरके लिए दश-पन्द्रह रुपया मासिक देकर हम बाजार दरसे ज्यादा दे रहे हैं। हमारे सिरका इतना सस्ता मोल—क्या यह शर्मकी बात नही है?"

"बहुत शर्मकी बात है।"

"लेकिन मोहनभाई, युद्ध खराब चीज नही है, खासकर हमारे जैसे परतन्त्र देशके लिए। ऐसे ही वक्तमें तो जालिमका चंगुल ढीला पड़ता है। जापानने अपनी आजादी कायम रखनेके लिए अपने नौ-जवान इग्लैड, फ्रास, और जर्मनी भेजे। वे वहाँसे उस युद्धविद्याको सीखकर लौटे, जिसके द्वारा उन्होंने रूसको परास्त किया। पैदल और सवार पल्टनमें सिपाही बनना छोड़ सैनिक जीवनके सभी रास्ते हमारे लिए बन्द है। तोपखानेमे हम मामूली सिपाही भी नही बन सकते। सामुद्रिक सेनाकी भी वही बात है। फौजी अफसर बनना तो हमारे लिए स्वप्नकी बात है। लेकिन इसके लिए हम अंग्रेजोकी शिकायत ही क्या कर सकते है? उन्होंने इतनी क़ुर्बानियो, इतने कष्टसे हिन्दुस्तानपर अधिकार किया, क्या वह हमारे लिए? वे हमे क्यो अपने पैरोपर खडा होने देंगे, जब कि उनके स्वार्थपर इससे भारी ख़तरा है। परतन्त्र जातियोका युद्धसे बढकर कोई मित्र नही, लेकिन वे मौक़ेसे फायदा उठाना चाहे तब। निश्चय ही हम उससे उतना फायदा न उठा सकेंगे। हमारे देशके नेताओके लिए स्वतन्त्रता अभी असम्भव-सी बात है। वे उसकी कीमत चुकानेके लिए तैयार नही है, फिर उसे सम्भव कैसे समझ सकते है। लेकिन हम नौजवान कीमत चुकायेंगे। हमारा आरम्भिक प्रयत्न है, तो भी भविष्य हमारे हाथमे है।"

"लेकिन, देवराज, यद्यपि तुमने कितनी ही बार समझानेकी कोशिश की, तो भी मुझे यह बात अच्छी तरह समझमें नही आई,

कि तुम अग्रेजोंकी पल्टनमें एक साधारण सिपाही बननेको क्यो तैयार हुए ? अबतो एक महायुद्ध भी सरपर आ धमका। अब हम जान भी दे रहे हैं, तो भी अपने और अपने मित्रोंके लिए नही।"

"देशकी आजादीके लिए शस्त्रकी आवश्यकता मानते हो कि नही ?"

"मानता हूँ, और बडे पैमानेपर।"

"बडे पैमानेका मतलब सुव्यवस्थित और सगठित रूपमे भी। और यह हो सकता है, युद्ध-विज्ञानके उपयोगसे। लुकछिपकर किसीको मार देना शत्रुके मनपर आतक फैला सकता है; लेकिन उससे शत्रु की शक्तिको दबाया नही जा सकता। हमारे लिए सैनिक शिक्षाके रास्ते खुले नही है, लेकिन उसकी हमे अनिवार्य आवश्यकता है। सिपाही तैयार करना उतना मुश्किल नही. मौका पडनेपर सभी भारतीय सिपाही हमारे है; लेकिन अफसर चार दिनमे तैयार नही हो सकते। अब तलवार, धनुष-बाण और द्वन्द्व-युद्धका जमाना नही रहा, जब कि हर एक सैनिक अपने प्रतिद्वन्द्वीको अपनी आँखोसे देख सकता था। अफसरके बिना आजका सिपाही दर-असल अन्धा है। उसकी आँखका काम अफसर करता है। तोपखाने बिना देखे भडियो, सीटियो, और बिगुलकी आवाजके इशारेसे गोला छोडते है। सिपाही धावा बोलते है। मेरा चित्त कितना प्रसन्न होता, यदि मुझे स्वतंत्र भारतकी तरफसे लड़ना पडा होता, मुझे तुम्हारे जैसे सौ ही जवान मिलते तो भी मै दिखला देता, कि हिन्दुस्तानी दिमाग भी आधुनिक सैनिक-विज्ञानका कितना अच्छा इस्तेमाल कर सकता है।"

"लेकिन, यदि ऐसा मौका नही मिला, तो सब कुछ सीख-समझकर जर्मन गोलियोके शिकार होनेसे देशको फायदा ?"

"एक देवराज मर जायगा, किन्तु जिस रास्तेको उसने निकाला

वह तो बन्द नही होगा। हमारे नौजवान अधिकाधिक संख्यामे अपने को तैयार करेगे। व्यक्तियाँ मरेगी, लेकिन जाति अमर रहेगी। हमे सब कुछ उसके लिए करना है।"

"अपने विजेताओंके लिए जान लगाकर लडना क्या हमारे लिए उचित है?"

"हम अपने विजेताओंके लिए नही लड़ रहे है, हम लड रहे है युद्ध-विद्याके लिए, भावी स्वतन्त्रता-युद्धके रिहर्सलके लिए। यदि दिलसे न लड़ेगे तो, हम अपनी योग्यता और बहादुरीको दिखला न सकेंगे। खतरोका हमे हर वक्त स्वागत करनेके लिए तैयार रहना चाहिए। हमे अपनी निर्भयता, अपनी बहादुरी, अपनी योग्यताको अपने नाम दर्ज करनेके लिए लालायित नही रहना चाहिए। होने दीजिए इन सबको भारतके नाम दर्ज और हमे बालूपर अंकित पदचिह्नकी तरह लुप्त हो जानेके लिए तैयार रहना चाहिए। दुनियाने कितने बहादुर भुला दिए। विजेता राजाओ और सेनापतियोमेंसे कितने वस्तुतः उस यशके भागी थे?"

१७

युद्धक्षेत्रको

बडे दिनकी छुट्टियोमें ही अफवाह गर्म हो रही थी, कि राजपूत रेजिमेन्टको फ्रास जाना होगा। लडाईके दिनोमें अखबारोकी खबरोसे भी बढकर प्रामाणिक अक्सर यह अफ़वाहें हुआ करती थी। आश्चर्य तो यह था, बाज़ वक्त इन अफ़वाहोंको छै हजार मीलसे समुद्रो, पहाड़ो और रेगिस्तानोको पार करके आना पडता था। जनवरी (१९१५)के प्रथम सप्ताहमे इस अफ़वाहकी पुष्टि हो गई, जब कि श्रीमती ज्यॉफरे विलायतके लिए रवाना हुई। ज्यॉफरे-दम्पतीका देवराजपर जिस प्रकारका स्नेह था, उससे वे किसी बातको छिपा नही रख सकते थे। उन्हें देवराजपर पूरा विश्वास था, और देवराजने कभी इन बातोको दूसरे कानो तक नही पहुँचने दिया।

जनवरीके तीसरे सप्ताहमें पल्टनको ख़बर दे दी गई—तीन सप्ताह बाद उन्हे मैदानके लिए रवाना होना है। सिपाहियोने अपने पेन्शनके उत्तराधिकारियोंके नाम और पते लिखाए। स्नेही बन्धुओके नाम पत्र लिखे। देवराजने अपने पत्रमे—और यही माँके नाम उसका अन्तिम पत्र था, उस वक्त उसे यह मालूम नही था कि दो ही महीने बाद उसकी माँ इस संसारको छोड चुकी रहेगी—में लिखा था।

"... माँ! मुझे पूरा विश्वास है कि तुम एक वीर माताकी तरह प्रसन्नतापूर्वक मुझे युद्धक्षेत्रके लिए बिदा करोगी। पार्वतीका ब्याह हो गया। वह आनन्दपूर्वक अपने घरमें है। मै भी सुखपूर्वक

निश्चिन्त जीवन बिता रहा हूँ। तुम्हे भी किसी बातका कष्ट और चिन्ता नही। सुचित भाई तुम्हारा मुझसे कम ख्याल नही रखते। मेरा ब्याह करके लक्ष्मी भौजीसे बढकर अच्छी बहू तुम्हे न मिलती। लक्ष्मी भाभीके पुत्र-जन्मकी खबर सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। नाम, बलिराज, बड़ा सुन्दर है। उसमे मेरे नामकी भी छाया है। अफसोस यही है कि मै उसे देख नही सका। युद्धक्षेत्रमे आदमीको कुछ भी हो सकता है, लेकिन तुम उसकी चिन्ता मत करना। बलिराजको मेरे स्थानपर जानना। महीनेमे एक बार पत्र लिखता रहूँगा ''

८ फरवरीको राजपूत रेजिमेन्ट नसीराबादसे बम्बईकेलिए रवाना हुई। इसके लिए एक पूरी स्पेशल ट्रेन खुली थी। बम्बईमे एक खास जहाज तैयार था। राजपूत पल्टनके सिपाहियोको यह पता न था, कि वे बिल्कुल एक दूसरी दुनियामे जा रहे है। फ्रास और इग्लैडका नाम उन्होने सुना था। लेकिन उनके साकार अस्तित्वकी कल्पना उनके वशके बाहरकी बात थी। बम्बईमे बन्दरगाहपर तरह तरहकी चीजे बिक रही थी। देवराज और अफसरोने सिपाहियोको बतला दिया था कि अब हिन्दुस्तानके ये फल, ये मिठाइयाँ, ये शौक की चीजे, उनके लिए देखनेको भी दुर्लभ हो जायेगी।

सवेरे, तड़के जहाज खुला। उस वक्त जब भोपूकी गम्भीर ध्वनि आकाशमे फैल रही थी, बम्बई शहरपर बाल-सूर्यकी लाल किरणे बिखर रही थी। समुद्रतलपर एक भी लहर दिखलाई नही पड़ती थी। मालूम होता था एक विशाल काँचका फर्श बिछा दिया गया है, जिसका रंग कही लाल और कही नीला है। बंदरपर सन्नाटा छाया हुआ था। साधारण यात्रियोका जहाज होता तो कितने ही इष्टमित्र बिदाई देनेको आए होते। लेकिन, इन सिपाहियोंके इष्ट-मित्र तो दूर, गाँवोमें बिखरे हुए थे। एक बार फिर मीटीकी

आवाज़ हुई। 'राजपूताना'का कलेवर गनगना उठा और वह बम्बई छोडने लगा। देवराज डेकपर खडा था। वह देख रहा था किस तरह उसके पैरोसे भारतकी भूमि खिसकती जा रही है। उस वक़्त उसीके हृदयमे विचित्र भाव पैदा हो रहे थे। जिस भूमिको इक्कीस सालसे वह अपने जीवनका एक अंग समझ रहा था, आज वह उसे आश्रयहीन बना रही है। जिस भूमिको बन्धन-मुक्त करनेके लिए वह इतने दिनोसे कडी साधना कर रहा था, आज उन साधनाओसे कुछ भी फल प्राप्त किए बिना वह किसी अज्ञात स्थानके लिए प्रयाण कर रहा है। यही तो अवसर था जब कि उसे कुछ करनेका मौका मिलता। उसके मनका अवसाद कुछ क्षणके लिए यद्यपि प्रबल रूप धारण करता दिखलाई पड़ रहा था; लेकिन यह अवस्था देर तक न रहती। उसके मनने कहा —"तुम कही भी रहकर अपनी मातृभूमिका मस्तक ऊँचा कर सकते हो।" जितना ही जहाज दूर हटता जा रहा था और बम्बई शहरकी विशाल गृहपक्तियाँ, गगनचुम्बी प्रासाद, हरे-भरे वृक्ष क्षुद्र आकार धारण करते जा रहे थे; उतना ही वे अधिक सुन्दर और आकर्षक मालूम पड रहे थे। एक बार उसे ख्याल आया—जिस भूमिने इस शरीरको जन्म दिया, क्या उसकी थातीको भी मै उसे लौटा न सकूँगा? एक बार फिर आँखोके सामने उपस्थित बम्बई नगर अब उसके लिए लुप्त था। कितने ही समय तक उसका मन कल्पना-जगतमे घूमता रहा। जिस वक़्त फिर उसने भूमिकी ओर नजर दौडाई, उस वक्त नगरका आकार अस्पष्ट था। कर्नल ज्याॅफरेकी दी हुई दूरबीन उसके गलेसे लटक रही थी। उसने उसे आँखोमें लगाया और तब तक उसकी नज़र उधरसे नही हटी, जब तक कि दूरबीन भी असमर्थ न हो गई।

पल्टनके सिपाही चौके-चूल्हेके बडे पाबन्द थे, क्योंकि सभी

पूर्वी युक्तप्रान्त और बिहारके रहनेवाले थे। खाना बनानेके लिए ब्राह्मण रसोइये साथ चल रहे थे, तो भी उन्हे भलीभाँति मालूम था, कि घरके चौकेका नियम अब पूरी तरह पालन नही किया जा सकता। देवराजने पहले हीसे इस नियमकी तोड रक्खा था। पहले पहल कर्नलके साथ रहीमकी बनाई चाय पीनेके लिए पल्टनमे बडा बावेला मचा था; लेकिन अब वह बात पुरानी हो चली थी। चौकेके नियम तोडनेपर भी देवराज सबके प्रेमका पात्र था। पल्टनका बडा अफसर उसे कितना मानता है, यह सबको मालूम था। इस बातका उपयोग वह अपने निजी स्वार्थके लिए न करके अपने साथियोके लिए करता था। यद्यपि तरक्की अपनी योग्यता और सेवाकालके कारण होती थी; लेकिन हर एक नया होनेवाला नायक, हवलदार, जमादार, सूबेदार यही समझता था कि देवराजने उसकी सिफारिश की है। पल्टनके अंग्रेज अफसर जिस प्रकार पहले सिपाहियोंकी इज्जतको जानवरसे बढकर नही समझते थे, अब वे वैसी हिम्मत न कर सकते थे। कर्नल इस बातमे हमेशा देवराजका कहा मानते थे। उन्होंने इसके लिए कुछ अफ़सरोकी बदली करवाई थी। एक बार दो तीन अफसरोने मिलकर कर्नलपर अयोग्यता और सिपाहियोंपर अनुशासन-शून्यताका इल्जाम लगाया; लेकिन, जेनरलने खुद आकर देखा कि कवायद, परेड, चाँदमारी, खाने, रहने, उठने, बैठनेकी सुव्यवस्थामें नसीराबादकी राजपूत रेजिमेंटका मुकाबिला करनेवाली बहुत कम पल्टनें है।

देवराज स्वयं मेहनती था और आलस्य तो उसे छू तक नही गया था। पल्टनके सभी लोगोको देवराजकी विद्या-बुद्धिका पता था। लेकिन, वह सबके साथ घुलमिल जाता था। इस मिलनेमें वह अपनेको पक्का गँवार साबित करनेसे भी बाज न आता था। आल्हा

और बिरहाका गाना ही नही, कई बार उसने अहीरोंका नाच नाचके दिखलाया था। पल्टनके अंग्रेज़ अफसर इस नाचको बहुत पसन्द करते थे। कर्नलने कई बार लोगोको उसके सीखनेके लिए उत्साहित किया; लेकिन मोहन सिहके सिवा कोई इसके लिए तैयार न हुआ। देवराज अपनेसे आयु और पदमे बडे सभी लोगोको अकृत्रिम रूपसे सलाम, चाचा, बाबा कहा करता था। खाने-पीनेकी स्वच्छ-न्दताके कारण दूसरा आदमी होता, तो सबका अप्रिय बन जाता; लेकिन देवराजके हजार गुण एक अवगुणको ढॉक देते थे।

जहाज़मे अब लोग देख रहे थे कि चौका ढीला पड रहा है। यद्यपि उन्हें अभी देवराजके इतना दूर जानेकी जरूरत न थी, लेकिन इस बातपर चर्चा शुरू हो गई थी, कि खाइयोमे भुना चना ले चलना होगा या पावरोटी। कच्ची रसोईको यदि किसी तरह वहाँ तक पहुँचा भी दिया जाय, तो गोलियोकी बौछारमे बूट खोलकर भोजन करनेकी इजाजत किसको मिलेगी? पल्टनमे पावरोटी बिस्कुट पानेकी खुली इजाजत थी। धीरे धीरे देवराजके साथियोकी संख्या बढ रही थी। एक दिन पावरोटी और चौकेकी चर्चा बडे जोरसे चली। यह बम्बई छोडनेसे चौथे दिनकी बात है, अभी जहाज अदन नही पहुँचा था। दोनो पक्षके हिमायतियोमे बड़े जोर-शोरसे तर्क-वितर्क चल रहा था। देवराजने भी एक लम्बा भाषण दिया, जिसका कुछ अंश इस प्रकार था—

"... लडनेमें हमारी जाति कभी भी किसीसे कम नही थी। लेकिन जिन दोषोंने हमे सफल सैनिक नही बनने दिया, उनमे ऊँचनीचका भाव और चौका-चूल्हा प्रधान है। चौके-चूल्हेके कारण हमारी विजयने कितनी ही बार पराजयका रूप धारण किया। पानीपतके मैदानमें राजपूतों और मराठोंने अहमदशाह अब्दालीके छक्के छुड़ा दिए थे। दुश्मनकी पल्टनमे बारह बजते बजते भगदड़

मच गई थी। अब्दाली हिन्दुओंके इस चौकेकी कमज़ोरीसे आगाह था। उसने एक फ़ौजी दस्ता इसके लिए तैयार रख छोड़ा था। सिपाहियोंको कभी नाश्ता भी करनेका मौका नहीं मिला था। वे अपने प्रतिद्वन्द्वियोंकी तरह झोलीमें रोटी नहीं रख सकते थे। लड़ाईकी थकावटके बाद भूखने अँतड़ियाँ ऐंठनी शुरू की। ज़रासा दुश्मनको हटा देखकर सिपाही हथियार और वर्दी उतारकर धोती तर-ऊपर करके चौकेकी तैयारी करने लगे। उस वक़्त कोई रोटी सेक रहा था और कोई तरकारी चीर रहा था। इसी बीच अब्दाली-के तैयार दस्तेने धावा बोल दिया और पानीपतमें हम पराजित हुए। रणजीतसिंहने क्यों काबुल तकको जीत लिया? क्योंकि सिक्ख सैनिक पठानोंकी छोड़ी रोटियों तकको भी चट कर जानेको तैयार थे। अंग्रेज़ोंने तो हिन्दुओंकी दो बजेकी महामारीसे कितनी ही बार फ़ायदा उठाया है। एक सिपाहीके लिए चौका-चूल्हाका ख़्याल सबसे बुरा है। हमारे कुप्पेमें पानी और झोलेमें रोटी बराबर रहनी चाहिए; तभी हमारी अँगुलियाँ हर वक़्त बन्दूकके घोड़ेपर रह सकती हैं

अदनमें जहाज छै घंटेके लिए ठहरा। लेकिन सिपाहियोंको जहाज छोड़नेकी आज्ञा न हुई। छोटी छोटी नावें उनके आसपास मँडरा रही थी। अरबोंके लम्बे चोगे, काली रस्सीसे सिरपर बँधी चादर उन्हें नईसी मालूम होती थी; लेकिन उनमें रंगकी उतनी विशेषता न थी।

बम्बई छोड़ते वक़्त सर्दी मालूम होती थी, लेकिन अब उन्हें मौसिम बदला मालूम हो रहा था। लाल सागरमें तो ख़ासी गर्मी थी। उसी वक़्त हवा तेज़ हुई और समुद्रमें लहरें उठने लगी। पाँच लाख मनका 'राजपूताना' कागजकी नाव या बाँसकी सूखी सुपेलीकी तरह लहरोंके ऊपर उछल रहा था। सिपाहियोंकी हालत

बुरी थी। कै करते करते सबका पेट खाली हो गया था, फिर भी कै बन्द न होती थी। देवराजके लिए समुद्रयात्राकी तरह इस बीमारीका भी यह पहला तजरबा था। रातको कबसे ऐसा हो रहा था यह उसे मालूम नही हुआ, लेकिन, जब उसकी नीद खुली तो देखा कि सरमें चक्कर और मिचली बडे जोरकी है। बर्तन-मे कै करके वह फिर लेट रहा। मालूम हो रहा था कि जहाजके साथ उसे एक ताड ऊँचा उठाया जा रहा है, और फिर एक-ब-एक नीचे पटक दिया जा रहा है। उसने बहुतेरी कोशिश की लेकिन चक्कर और मिचलीमे कोई फर्क नही पडा। उसने तजरबा करके देखा कि ऊपर उठते समय पेटको खाली कर दिया जाय और फिर साँससे भरकर नीचे गिरनेके लिए तैयार रहे, तो तकलीफ कम होती है। उसने अपने तजरबेसे मोहन सिहको आगाह किया, लेकिन उसे उतना फ़ायदा नही हुआ। दोपहर तक देवराजकी वह हालत रही। उसके बाद वह बिस्तरेसे उठ खड़ा हुआ। यद्यपि पैर लडखडाता रहा और बिना हाथमे दीवार पकडे चलना मुश्किल था, तो भी उसने टहलना शुरू किया। शाम तक उसकी मिचली जाती रही और वह डेकपर खड़ा होकर लगातार करवटे बदलते जहाजसे लालसागर तटवर्ती नगी पहाडियोके उछलने-कूदनेके दृश्यका आनन्द लेने लगा। शामसे वह पूर्ववत् भोजन करने लगा। मोहन सिहको बहादुरीके लिए जब वह 'दाद' देता तो वह चिढ जाता था। जहाजके सभी सिपाही इसी तरह परेशान और उपवास करते रहे जब तक कि जहाज़ स्वेज नहरके भीतर प्रविष्ट न हुआ। नहरके मुँहपर जहाज घटे भरके लिए ठहरा।

दोनो तरफ़ दूर तक रेगिस्तानी भूमि थी। बाई तरफ़ अफ़्रीका का विशाल महाद्वीप और दाहिनी तरफ़ एसिया। दोनो अभागे द्वीपोका यह संगम आज दोनोकी पराधीनताकी बेड़ियोंको मजबूत

करनेका भारी साधन हो रहा है। नहर कितनी ही जगहें इतनी चौडी न थी कि उससे दो जहाज एक साथ गुजर सकते। किनारे-से तारके खंभे जा रहे थे और बीच बीचमें फ्रासीसी और अरबी भाषामें नाम लिखे हुए स्टेशनोंकी इमारते थी। स्टेशनोपर नहर चौडी थी। कितनी ही जगह नहरकी रक्षा के लिए हिन्दुस्तानी और अंग्रेजी पल्टनोंकी मोर्चाबन्दी थी।

जहाज जब पोर्ट-सईदसे गुजरकर भूमध्यसागरमें दाखिल हुआ तो सभी लोग बेखबर सोये हुए थे। मौसिम बदला है इसका उन्होंने तब अनुभव किया जबकि उन्हें कम्बल ओढनेकी जरूरत महसूस हुई। सिपाहियोंको खबर मिल चुकी थी कि भूमध्यसागर इस मौसिममें चचल रहता है। वे उससे बहुत डर गए थे। लेकिन, किस्मतने उनकी सहायता की।

पोर्ट-सईदके बाद पहली भूमि जो उन्हें दिखाई पडी, वह थे इटलीकी छोटी छोटी पहाडियोंपर जगह जगह बसे हरे-भरे गाँव। स्थानकी विशेषता जाननेके लिए देवराज बहुत उत्सुक था और उसे बडी खुशी हुई जब कर्नल ज्यॉफरेने अपने साथ डेकपर टहलनेके लिए बुलाया। उन्होंने बाई तरफके एक द्वीपपर उठी हलके बादलोसे आच्छादित एक चोटीको दिखला कर कहा—यह है एटना, एक सजीव ज्वालामुखी।

× × ×

सुबहके नौ बज रहे थे, जब कि जहाज़ मार्सेइ (मार्सेल्)के बन्दरगाहमें दाखिल हुआ। देवराज कर्नल ज्यॉफरेके साथ बडी देरसे दूरबीन लगाकर शहरको देख रहा था। उस वक्त दोनो व्यक्तियो-के हृदयमें दो भिन्न-भिन्न भाव पैदा हो रहे थे। यद्यपि मृत्युका आह्वान सुनकर वे आए थे, तो भी योरपकी भूमि और उसके

निवासियोको देखकर कर्नलके चित्तमे बहुत आह्लाद हो रहा था, मानो बहुत दिनोके बिछुडे प्रेमियोका मिलन हो रहा हो। देवराजके सामने एक नई दुनियाका नजारा था। यूरपके कुछ व्यक्तियों और उसकी नकलपर बने कुछ मकानोको उसने देखा था, लेकिन अब तो मूर्तिमान यूरोप उनके सामने खडा था! स्त्री-पुरुषोकी अलग-अलग पोशाकोमे हजारों गोरे रगके लोग बन्दरगाहमे खडे हाथ और रूमाल हिलाकर 'राजपूताना'का स्वागत कर रहे थे। वे जानते थे कि आगन्तुक हीन समझी जानेवाली काली जातके लोग है। लेकिन साथ ही वे यह भी समझते थे, कि ये काले सिपाही उनके देशकी रक्षाके लिए प्राण देने आ रहे है। इसीलिए उनका स्वागत कृत्रिम न था।

जहाजसे सिपाही उतरे और उन्हे सीधे रेलवे-स्टेशन जानेका हुकुम हुआ; सिर्फ देवराजको कर्नलके साथ नगरके कुछ भागोको देखनेका मौका मिला। सबसे विशेषता उसे यह मालूम हुई, कि वहाँके हरेक मकान, सडक और व्यक्तिमे सफाई और बाकायदगी दीख पडती थी। देवराज जानता था, फ्रासके एक भागपर जर्मन तोपे लगातार आग बरसा रही है और सैकडो गाँव तथा हजारो स्त्री-पुरुष बे-घर-बारके हो गए है। ऐसी अवस्थामे भी वहाँके स्त्री-पुरुषोके चेहरेको देखनेसे घबराहटका चिह्न दिखलाई नही पड रहा था।

१८

युद्धमें घायल

शामको पाँच बजे ट्रेन मार्सेइसे छूटी। सूरज डूब रहा था, लेकिन अभी अँधेरा नही छाया था। मार्सेइकी पहाडियोको पारकर रेलवे-लाइन देहातसे गुजर रही थी। वरफ़ नही दिखलाई पडती थी, लेकिन सभी वृक्ष और वनस्पति सूखकर काँटेसे जान पडते थे। गाँवके छोटे-छोटे मकानोकी चिमनियोंसे धुआँ निकल रहा था और घरके भीतर-बाहर ऊल-जलूल काले पतलूनमे किसान दिखलाई पड रहे थे। कही-कही खेतोमे गेहूँके डठलके गज लगे हुए थे, जिनकी स्तूपाकार आकृति और सीधी पाँतीमे सजावट देखनेमे बडी सुन्दर मालूम पडती थी। वसन्तके आनेमे बहुत देर न थी, लेकिन अभी प्रकृति सर्वथा अलकार-शून्य थी।

वर्षोसे इग्लैड और फ्रांस लडाईकी तैयारी कर रहे थे, तो भी उनको यह विश्वास न था कि जर्मन-सेनाये तूफानकी गतिसे बेल्जियम और फ्रासकी सेनाओको काईकी तरह हटाती इतनी जल्दी आगे बढेंगी। बेल्जियम प्राय. सारा जर्मनीके अधिकारमे था। इग्लैड और फ्रासके सिपाही टिड्डी-दलकी तरह मैदानमें भेजे जा रहे थे; और एक-एक करके कट जानेपर ही रास्ता छोडते थे। लेकिन बीसियो बरसोसे जिस तरह, अत्यन्त गुप्त रीतिसे युद्धकी तैयारी हो रही थी, उसके कारण जर्मनीके अस्त्र-शस्त्र-सम्बन्धी आविष्कारोंका उसके दुश्मनोको पता तक न था। वस्तुत: उसकी तैयारी इतनी पूर्ण थी कि यदि बेल्जियमने उसके रास्तेमे रुकावट

न डाली होती, तो अब तक पेरिस जर्मनीके हाथमे चला गया होता; और इग्लैड इंग्लिश-चैनलमें ही लडता होता। अग्रेज सेनाओंको जिस तेजीके साथ जर्मन तोपे सत्यानाश कर रही थी, उससे मुका-बिला करना कठिन हो रहा था। गोरो-गोरोकी लडाईमे काली पल्टनको खडा करना अग्रेजोको पसन्द नही था, लेकिन यह अप-राध पहले फ्रासने किया।

ट्रेन बहुत कम जगहोपर कोयला पानीके लिए ठहरती थी। ऐसे स्टेशनोपर हजारो स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढे फूलके गुच्छे सिगरेट और बिस्कुटके डिब्बोको लिए सिपाहियोके स्वागतार्थ तैयार थे। हिन्दुस्तानमे काले लोगोके समुद्रमें दो-चार बूँदोकी तरह कुछ गोरे स्त्री-पुरुष देखनेमे आते थे; यहाँ वे खुद ही गोरोके समुद्रमे चद बूँदोकी तरह थे। नसीराबादकी राजपूत-पल्टनमे सिर्फ देवराज ही अग्रेजी जानता था और यहाँ अग्रेजीसे भी काम चलने वाला नही था। जहाजमे उसने स्वयशिक्षकसे कुछ फ्रेंच शब्द सीखे थे जरूर लेकिन, अभी "मेर्सी बकू", "सिल् वु प्ली", "वूले वू फ्रासे ?", "आँ पुइ" तक ही उसका शब्दकोष परिमित था। स्टेशनपर गाडी खडी होने-पर अक्सर सिपाही प्लेटफार्मपर उतरना पसन्द न करते थे। उतरने-पर भी जब कोई तरुणी उनसे हाथ मिलानेको आगे बढती, तो वे शर्माकर पीछे हट जाते थे। देवराज पुस्तकोमे यूरोपीय शिष्टा-चारके बारेमे बहुत कुछ पढ चुका था, लेकिन उसके प्रयोगका मौका यह पहले पहल ही मिल रहा था। तो भी उसकी हिच-किचाहट देर तक न रही। सबसे पहले उसका शागिर्द बननेमें सफलता मोहन सिंहने पाई। जहाँ भी गाडी खडी होती, दोनों साथी उतर पड़ते। हर एक आगे बढनेवाले हाथसे हाथको मिलाते और फूलो तथा सिगरेटको स्वीकार करते हुए "मेर्सी बकू"का ताँता लगा देते।

बाकी सिपाही तो अपनी राय अभी कायम न कर सके थे, लेकिन देवराज और मोहन सिंह यूरोपीय स्त्री-पुरुषोकी अकृत्रिमता, स्वच्छन्दता और मिलनसारीसे बहुत प्रभावित थे। मोहन सिंह कह रहा था—"वह भी कोई आदमियोका मुल्क है, जहाँ मनुष्योकी एक श्रेणी—स्त्रियो—का घरसे बाहर, सड़कोपर पता तक न हो! नवागतुकको मालूम हो, कि इस देशमे स्त्रियोका अकाल है।"

दूसरे सिपाहियोकी आँखे और कान स्टेशनपर पहुँचते ही 'पान-बीड़ी', 'तम्बाकू-दियासलाई' ढूँढने लगते, और जब बहुत प्रयत्न करनेपर भी 'पूड़ी-मिठाई गरमागरमका' पता न लगता, तो झुँझला उठते। बिस्कुट और चाकलेटके डिब्बे उनके लिए कोई चीज न थी। देवराज और मोहन सिंहको एक चाकलेटका डिब्बा भेटमे मिला था और वे बड़े चावसे उसे खा रहे थे। उन्होंने साधू सिंहकी ओर भी एक टिकिया बढ़ाई, लेकिन जीभपर रखते ही उसका मुँह बिगड़ गया और प्लेटफार्मपर थूककर बोल उठा—"कैसे तुम लोग इसे खाते हो?" देवराजने समझाया—"हर जगह थूकना बहुत बुरी आदत है। लोग ऐसे आदमीको असभ्य, जंगली कहते है। थूकना हो तो रूमालमे थूककर पाकेटमें रख लो और पीछे धो लेना।" थूकना, मुँह हाथ धोना, पाखाना जाना, आदि बहुतसी बाते सिखानी पड़ती थी, सिपाहियोको पहले पहल इस शिक्षासे अनकुस बरता था; लेकिन पीछे वे समझने लगे कि अपने आसपास सफाई रखनेके लिए इसकी बड़ी आवश्यकता है।

दिनके ग्यारह बज रहे थे, जब ट्रेन आमीन-युद्धक्षेत्रके पास पहुँची। सभी सिपाही पहनने-ओढ़नेका सामान पीठपर लादे रायफल हाथमें लिए कारतूसोकी माला पहने गाड़ीसे उतर पड़े। अलग अलग टोलियाँ अपने अपने नायकोके नेतृत्वमें खड़ी हुईं। कर्नल ज्यॉफरेने एक छोटी सी वक्तृता दी—

"जवानो ! अब हम युद्धके मैदानमे पहुँच गए है। यहाँसे पाँच मीलपर अन्तिम खाई है, जिसके ऊपर जर्मन सेनायें प्रहार कर रही है। तोपोका गर्जन यहाँ भी सुनाई दे रहा है। हम लोग सिपाही है। सिपाहीके लिए मौत डरकी चीज नही है; और फिर हिन्दुस्तानके राजपूत तो हमेशा मौतसे परिहास करते रहे है। अपने मुल्ककी आन और इज्जत तुम्हारे लिए सबसे बड़ी चीज है। मरनेवाला मरकर रहेगा, लेकिन उसकी बहादुरीसे उसका ही नही बल्कि उसके देशका नाम दुनियामे फैलेगा। मेरा इतने सालोंसे राजपूत रेजिमेंटसे सम्बन्ध है। मै अपने सिपाहियोके साथ कितना प्रेम करता हूँ, यह तुम लोगोसे छिपा नही है। अब हम तोपोके सामने जा रहे है और कौन जाने, कितने फिर एक दूसरेको देखनेका मौका पायेगे। हमारे सामने सिर्फ एक ख्याल हमेशा रहना चाहिए, वह है राजपूत रेजिमेंट और हिन्दुस्तानका गौरव।"

गम्भीर करतल-ध्वनिसे सैनिकोने कर्नलके भाषणका स्वागत किया और उनके बैठनेपर देवराज सामने आकर बोला—

"बहादुर राजपूतो, हम शेरनियोके कोखसे जन्मे है। हमने राजपूतनियोका दूध पिया है। हमे कर्नल ज्यॉफरे जैसा नेता पानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिन्होने कि हमेशा हमे अपने लड़केकी तरह माना। वस्तुत. कर्नल साहबको लड़का न होनेका अफ़सोस नही होता जब कि वह देखते है हम आठ सौ जवान उनके लड़के है। हम अपनी रेजिमेंट, अपने देश और अपने प्रिय नेताके झंडेको ऊँचा रक्खेगे। मौत हमारे लिए कोई चीज नही। राजपूत सिरसे कफ़न बाँधकर लड़ाईके मैदानमें उतरनेके आदी है। हमको बार-बार ऐसी गौरवपूर्ण मौत मरनेका मौक़ा नही मिलेगा। हम दुश्मनके दाँत खट्टे कर देगे और यूरोपको बतला देंगे कि इस गए-गुजरे जमानेमें भी हिन्दुस्तानका लोहा कितना जबरदस्त है ..

शामको हुकुम सुनाया गया कि राजपूत रेजिमेंट तीसरी पाँतीकी अंग्रेज सेनाका स्थान ग्रहण करेगी।

× × ×

खाइयोंमें आए दो सप्ताह हो गए। इस बीच सिपाहियोंको नहाने-धोनेकी तो बात ही क्या, बूट तक खोलनेका मौका नहीं मिला। पैरोंके सड़नेका डर रहता था और इसके लिए रोज बोरिक्-पाउडर मोजोंमें डालना पड़ता था। कुप्पेमें पानी रसद पहुँचानेवाले डाल जाते थे। कच्ची-पक्की रसोईकी दिक्कतको सिपाहियोंने खूब अनुभव किया और एक-दो करके सभीने इस बातमें देवराजका अनुसरण किया। पावरोटी, बिस्कुट और दूसरी खानेकी चीजें उनके झोरेमें रहती थीं। अप्रेलका तीसरा सप्ताह जा रहा था और यद्यपि सूखे वृक्षोंमें नए पत्तों की कोपलें फूट रही थीं; लेकिन, रात अब भी बहुत ठंडी होती थी। हिंदुस्तानी सिपाहियोंको बरफका यह पहला तजरबा था। पहले सर्दीकी ही कुछ दिक्कत थी, अन्यथा सफेद बर्फका फर्श कोई उतनी बुरी चीज न थी। लेकिन, अब बरफके पिघलनेसे जगह-जगह कीचड़ उछल रही थी और खाइयोंमें पानीके मारे और भी बुरी हालत थी। कीचड़-पानीमें बूटोंको डुबाकर रात दिन रहना आसान काम न था। पहले हफ्ते रेजिमेन्टको तीसरी पाँतीमें रहना पड़ा। उस वक्त कीचड़की दिक्कत नहीं पैदा हुई, और न गोलियाँ ही सिरपर उछल रही थीं। आठवें दिन दूसरी पाँतीने पहली पाँतीके मरे और घायलोंकी जगह ली और राजपूत दूसरी पाँतीमें पहुँचे। वे इन्तजार कर रहे थे कि अगली पाँतीमें जानेको उन्हें हुकुम मिलेगा। गोलों और गोलियोंकी आवाज लगातार उनके कानमें आ रही थी और अब वे उसके अभ्यस्तसे हो गए थे।

कीचड़की तकलीफ बढने ही लगी थी कि एक दिन चार बजे उन्होंने देखा—अगली पाँतीके सिपाही अकेली पाँतीमे खाइयोके बीचमें होते उनकी पाँतीमे पहुँच रहे है। चारों ओर गोलियां सनसना रही है। बीच-बीचमे गोले गिरकर जमीन मे गढा बनाते हुए चारो ओर कीचड उडा रहे है। देवराज और उसके साथि-योको "दागो"की आज्ञा मिल गई थी और उनकी रायफलोकी ठडी नलियाँ गर्म हो रही थी। देवराजने अपनी आँखोके सामने देखा—उससे बीस गजपर, दाहिनी तरफ खाईमे एक गोला गिरा, एक बडा धडाका हुआ और आसमानमे चारो तरफ लाल कीचड उछली। पहली पाँतीके दस आदमी अभी-अभी उस जगह पहुँचे थे। अब खाईकी जगह एक बडा गड्ढा था और आदमियोका कही पता न था। खूनसे लथपथ, कीचडसे सना एक हाथ उसके दो कदमपर आ पडा। युद्ध नगे रूपमे अब उसके सामने था।

देवराज और मोहन सिहको पास-पास जगह मिली थी। दिनमे गोलियाँ बराबर चलती रहती और रातमे भी वे बिलकुल बद नही होती। देवराजके साथियोमेसे कितनेही घायल हो स्ट्रेचरो-पर उठाये जा चुके थे। कुछ मर भी चुके थे। लेकिन अभी भी रेजिमेन्टकी तीन-चौथाई शक्ति बाकी थी। खाइयोकी आडमे छिपकर जब-तब गोली दागते रहनेमे उन्हे अनकुस मालूम हो रहा था। मोहन सिंहने कहा—

"देवराज, यह भी कोई लड़ाई है? न तुम्हे दुश्मन दिखाई पडता है और न उसकी गति-विधि ही। गोलियोंकी हनहनाहट सुनो और अटकलसे बदूक दागते जाओ। अचानक छिटककर कोई गोली आ लगी। इससे क्या किसीकी बहादुरीका पता लगता है?"

"हाँ, भैया मोहन, बात तो ठीक कह रहे हो। अरे! ."

इसी बीच एक गोला फटा और लोहेका एक टुकडा देवराजके कानको चीरता निकल गया। "देखो तो, कान मलनेसे क्या फायदा? मै क्या स्कूलका छोटा बच्चा हूँ?"

"तुम हँस रहे हो! खून बहुत जा रहा है। सरमे तो चोट नही लगी?"

"नही भैया, सिर्फ कानमे कुछ खरोच लग गई मालूम होती है। हम पहलवानोके लिए कानकी कीमत ही कितनी?"

देवराजने पाकेटसे आइडिनकी शीशी निकाली और मोहन सिंह-के सामने रखते हुए कहा—"जरा सा इसे लगा दीजिए और खन-को पोछ दीजिए, नही तो लोग खामख्वाह शहीद बनाने लगेगे।"

× × ×

खाइयोमे आए अट्ठारहवाँ दिन था। दो पहरके समय गोले और गोलियोकी वर्षा होने लगी। स्थितिको नाजुक देखकर देव-राजकी पाँतीको, कुछ आदमियोको छोड, पीछे हटनेका हुक्म हुआ। देवराज और मोहन सिह अपनी जगहोपर कायम रहनेवालोमेंसे थे। उन्होने देखा—दुश्मन आगेसे उनके ऊपर धावा बोल रहा है। देवराजने अपनी खाईके तीस साथियोसे कहा—"कुछ ही देरमे दुश्मन हमारे पास पहुँचनेवाला है। खाइयोमे बैठे उनका इन्तिजार करना अच्छा नही। चलो, जवानो, आगे बढकर उनका स्वागत करें। हमारे सभी अफसर न जाने किस कारणसे अनुपस्थित है। इसलिए मै चाहता हूँ कि आप मेरा साथ दे।"

सब तैयार हो गये। सगीन चढाए, रायफलोको हाथमें लिए तीसो आदमी खाइयोसे बाहर निकल आए। दो सौ जर्मन सिपाही उनसे सिर्फ तीस गजपर थे और अभी वे खाकी पगडीको देखकर

कुछ निर्णय करना चाहते ही थे, कि बिजलीकी चालसे देवराज और उसके साथी उनपर टूट पड़े। गोली चलानेकी जगह हाथके बमो और सगीनोकी मार थी। देवराजके सभी साथियोने पटा-बनेठीका हाथ चलाया, और सख्यामे बहुत अधिक होनेपर भी जर्मन सिपाही किंकर्तव्यविमूढ से दिखाई पडने लगे। "बढो", "मारो" पर निर्जीव मशीनकी तरह वे आगे चले आते थे, लेकिन राजपूतोकी फुर्ती और सधे हाथोके सामने वे अपनेको असमर्थ पाते थे। उनके पचास आदमी धराशायी हो चुके थे; लेकिन पॉच घायल राजपूत भी घावकी कुछ परवाह न कर अपने साथियोके साथ, उछल-उछलकर, प्रहार कर रहे थे। बीच-बीचमे देवराजकी आवाज—"साथियो, मारो!", "राजपूतो, बढो!"—सुनाई दे रही थी। यद्यपि पन्द्रह ही मिनट हुए थे, तो भी जिस तेजीके साथ सैनिकोके हाथ-पैर चल रहे थे, उससे मालूम हो रहा था कि उन्हे लडते घंटो बीत गए।

सभी जर्मन सैनिक हत या आहत थे। दश रह जानेपर भी उन्होने आत्मसम्पर्ण करना नही चाहा। सबके पट जानेपर देवराजने देखा सौ गजपर एक टेकरीके ऊपरसे मशीनगनकी "ट्रा ट्रा ट्रा रा" हो रही है। उसने हुकुम दिया—"भाइयो, टेकरीपर" और वह उधरको बढे। उसके साथियोके ऊपर वर्षा-की बूँदोकी तरह मशीनगनकी गोलियाँ पड रही थी। साधू सिंह-की खोपडीमे एक लगी और कटे वृक्षकी तरह वह अरराकर गिर पडा। देवराजकी जबानपर था—"टेकरीपर" फिर दूसरा साथी गोली खाकर गिरा। उसके आधे आदमी गिर चुके थे जब कि टेकरी पचास गज आगे थी। इसी वक्त देवराजके बाये कन्धेपर एक गोली लगी। वह जरासा ठमका। मोहनने देख लिया, लेकिन उसे कहनेका कुछ भी मौका न देकर देवराज उससे चार कदम आगे

था। टेकरीकी जड़मे पहुँचनेपर उसके आठ साथी बच रहे थे, जिनमेसे एक भी ऐसा न था जिसे दोसे कम गोलियाँ लगी हो। देवराजके कधेमे खून बहुत अधिक बहा था और वह सुन्नसा मालूम होता था, लेकिन एक सेकेन्डके लिए भी बिना रुके उसने कहा—"ऊपर, टेकरीपर।" चढाई कठिन न थी, किन्तु अब दश आदमी ऊपरसे पिस्तौल छोड रहे थे। आठो राजपूत छिट-फुट होकर चट्टानोकी आड लेते और दौडते चढ रहे थे। जिस वक्त वे चोटीपर पहुँचे तो देवराजके साथ मोहन सिह और रामसेवक सिह ही बच रहे थे। आठके मुकाबले तीन घायल सिपाही। लेकिन अब उन्हे सगीनका हाथ दिखलाना था। उन आठ आदमियोको धराशायी उन्होने कर दिया, लेकिन अब रामसेवक सिह भी साथ न थे। मोहनकी छातीमे बडे जोरका घाव लगा था, और जिस वक्त देवराज मशीनगनकी देख-भाल कर रहा था, उस वक्त मोहन भी अपनेको खडा न रख सका। शत्रुकी दिशाकी ओर नजर दौडानेपर देखा—आदमियोकी एक लम्बी पाँती टेकरीकी ओर बढ रही है। उसका बायाँ हाथ अब बहुत कमजोर हो गया था। लेकिन, इसपर विचारनेके लिए उसके पास समय न था। उसने शीघ्रतासे मशीनगनका मुँह शत्रुकी पाँतीकी ओर घुमाया। उसे यह देखकर बडी प्रसन्नता हुई कि भरे कार्तूसोंकी कई मालाएँ वहाँ मौजूद है। शत्रु तीन सौ गजकी दूरीपर था। देवराजने—"मेरी प्यारी, बोलो तो" कहकर दागना शुरू किया। उसका सधा हुआ निशाना जादूकी तरह काम करने लगा। दो हजारकी सेनापंक्ति जगह-जगह टूटती दिखाई पड़ी। दूरकी पहाडीसे उसकी टेकरीपर गोले फेके जा रहे थे। वह अच्छी तरह समझ रहा था, कि किसी वक्त भी एक गोला उसके ऊपर आ सकता है और फिर वह और उसकी यह नई प्रणयिनी—मशीन-

गन—हमेशाके लिए चुप हो जायेगी। हर क्षणको बहुमूल्य समझ-कर वह लगातार "ट्रा ट्रा ट्रा रा" "ट्रा ट्रा ट्रा रा" कर रहा था। आगेकी सेनापक्ति बहुत कुछ टूट चुकी थी, जब कि उसने पीछेकी ओरसे "दौडो, बढो"की आवाज सुनी। मदद नजदीक है, यह ख्याल आया और उसने दूने उत्साहसे मशीनगन चलाना शुरू किया। इसी वक्त एक गोला उससे दश कदमपर गिरा। और उसके एक टुकडेसे उसकी बाई जाँघ टूट गई। देवराजने दाँती को दाँतोके ऊपर दबाकर ओठोको बंद कर लिया। उसका दाहिना हाथ मशीनगनपर था। उसकी आँखोके सामने अँधेरा सा फिरता मालूम हुआ। अब वह मशीनका अकशायी था।

१९

अस्पतालमें

कर्नल ज्यॉफरे एक ऊँचे धूससे दूरबीन लगाकर युद्ध-क्षेत्रको देख रहे थे। उनकी रेजिमेंटका चौथाई भाग बँच रहा था। दो बार दूसरी हिंदुस्तानी पल्टनो—सिक्खो और पठानों—के बँचे आदमियोको मिलाकर उनकी रेजिमेंट पूरी की गई थी। आजकी भयकर गोलाबारीको देखकर वह निराश हो गए थे। उन्होने कुछ जवानोको मुकाबिलेके लिए रखकर बाकीको, पिछली पक्तिमे लौटनेके लिए हुकुम दिया था। वह साँस लेकर देख रहे थे; कि कैसे जर्मन सिपाही अगली पाँतीकी ओर बढ रहे है। उसी वक्त उन्होने तीस राजपूत सिपाहियोको खाईसे निकालकर दुश्मनकी ओर दौड़ते देखा। दूरबीनसे वह साफ देख रहे थे, कि सबसे आगे जानेवाला जवान देवराज है। उसकी निर्भयताको देखकर उन्हे पचमढीके जगलोका वह बाघ याद आया, जिसके सामने यदि उस दिन देवराज न कूदा होता, तो आज ज्यॉफरे यहाँ न होते। क्षण भरमे उनकी आँखोके सामने देवराजकी कितनी ही बाते घूम गई। देवराज, जिसके प्रति पुत्र जैसा उनका प्रेम था, जिसने भारत और भारतीयोका सन्मान और प्रेम करना उन्हे सिखाया। वह सोच रहे थे, बस देवराजका यही अन्तिम जीवित दर्शन है। उन्होने संगीनोंको चलते देखा। उस हाथसे हाथकी लड़ाई-में देवराजकी उडती शकलको देखनेकी उन्होंने बारबर कोशिश की। न देखनेपर निराशा और देख लेनेपर उनके चेहरेपर प्रसन्नताकी

रेखा खिच जाती थी। अब जर्मन सिपाहियोकी भूरी वर्दियोमे एक भी न खड़ी थी। तीसों जवान आगे-आगे टेकरीकी ओर दौड़ रहे थे। देवराज सबके आगे दौडता दिखाई दे रहा था। टेकरीकी लडाईमे मानो एक युग बीत गया। मशीनगनकी नली घूमती है, आवाज दूसरी ओरसे सुनाई पडती है। जवानोने टेकरी और मशीन गनपर कब्जा कर लिया। कौन उसे चला रहा है? देवराज!!

इसी समय दुश्मनकी तोपे चुप हो गईं। कर्नल पीछे दौड़े। जमीनदोज कोठरीमे एक छोटीसी मफरी मेजपर टेलीफोन रक्खी थी। उठाकर केन्द्रको सूचना दी—"टेकरी नबर १४ पर हमारा कब्जा है, दुश्मनकी तोपे चुप है।" हुकुम आता है—"आगे बढो।"

"आगे बढो"के हुकुमसे सारी खाई गूज उठी। छोडी खाइयो और उनके हत-आहतोको रेडक्रासके लिए छोडते लोग आगे बढे। टेकरीके नीचे और पीठपर वहा खाकी वर्दियोको धराशायी देखा। "जवानो, देवराजको देखना"—कहते और खुद भी धड़कते दिलसे हर भारतीय सिपाहीको देखते कर्नल ऊपर चढे, और सबसे पहिले टेकरीपर पहुँचे। मशीनगनको आलिगन किए देवराज अपने लोहेके स्टूलपर पडा है। ज्यॉफरेकी आँखोमे छलछल आँसू निकल आए। उन्होने घुटनोके सहारे बैठकर देवराजके ललाटको चूमा। उसकी टूटी जाँघसे बहुत खून निकला था; लेकिन अभी भी उसका बदन गर्म था। क्षण भरके लिए उन्होने सामनेके मैदानपर नजर डाली और "आगे बढो"का हुक्म देकर पीछेकी ओर मुडे। रेडक्रॉसके आदमी अभी टेकरीसे दूर आते दिखाई पड़ते थे। कर्नल ज्यॉफरेने खुद मृत रामसेवककी पगड़ी फाडी और उससे देवराजकी जाँघको बाँधा। अपने साथी अफसरकी मददसे उन्होंने देवराजको जमीनपर लिटाया। पासमें देखा, मोहन भी बेहोश

था। कुछ हटकर दो जर्मन जख्मी थे। बाकी सभी मर चुके थे।

रेड्क्रासने अपना काम शुरू किया।

× × ×

रातका वक्त है। एक सुदर स्वच्छ मकान बिजलीकी रोशनी-से जगमगा रहा है। हॉलमे पॉतीसे चारपाइयॉ बिछी है, जिन-पर सफेद चादरोमे लिपटे कितने ही लोग सोये हुए हे। हॉलके बीचमे एक मेज और दो-तीन कुर्सियॉ है, जिनपर सिरमे रुमाली-टोपी बॉधे दो नर्से चुपचाप बैठी है। देवराजने दिमाग दौडाना शुरू किया। यह समझनेमे उसे बहुत दिक्कत नही हुई कि वह एक अस्पतालमे है। सपनेकी तरह उसे यह भी ख्यालमे आया कि कुछ ही देर पहले खाइयोसे निकलकर वह, मोहन और उसके दूसरे साथी टेकरीपर जा पहुँचे थे। मशीनगन चलानेमे उसे कितना आनद आ रहा था, इसे वह अब भी अनुभव कर रहा था। लेकिन, वह अब किस जगह है, उसके साथियोमेसे कोई यहॉ हे कि नही, मोहन कहॉ है—यह जाननेके लिए उसका दिल बेकरार हो उठा। उसकी नजर कुरसीपर बेठी दोनो नर्सोपर पडी। उसका दाहिना पैर पत्थर सा मालूम होता था और हाथोंका हिलाना भी आसान नही था। उसने हाथसे चादरको इधर-उधर हटाना शुरू किया, इसे देखकर एक नर्स उसके पास आई। देवराजने अग्रेजीमे कुछ कहा, जिसे वह न समझ सकी और दूसरी नर्सको बुला लाई।

"क्या चाहिए, दूध पियेगे ?"—नर्सने बडे मधुर स्वरसे अंग्रेजी-मे पूछा।

"नही, धन्यवाद, क्या आप कृपाकरके बतलाएँगी—मै कहाँ हूँ ?"

"पेरिसमे, अस्पताल न० ३ मे। आपका शरीर बहुत कमजोर है, ज्यादा न बोले।"

"नही बोलूँगा। दिमागी परेशानी दूर करनेके लिए इतना पूछ रहा हूँ। यहाँ कोई और हिन्दुस्तानी है?"

"हाँ, एक।"

"उसका नाम?"

"मै टिकट देखकर बतलाती हूँ"—लौटकर उसने कहा—"एम्० एस्० घाटे।"

"मेर्सी बकू।" कहकर मुसकराते हुए देवराजने धन्यवाद दिया।

नर्सने हँसते हुए कहा—"वूले वू फ्राँसे?" (आप फ्रेंच जानते है?)"

"आँ पुइ, मदाम! (थोडी ही, श्रीमती!)"

नर्स चली गई।

एम्० एस० से देवराजके दिमागने मोहन सिहकी कल्पना की, किन्तु 'घाटे'ने उस ख्यालको दूर कर दिया। मोहनको घायल होकर बेहोश होते उसने स्वय देखा था। उसके मनमे तरह-तरहकी आशकाएँ हो रही थी, लेकिन, उनके लिए दिमागको परेशान करना उसने फजूल समझा। एक बार फिर मशीनगनका ख्याल उसके दिमागमे आया। मालूम होता था, अब भी वह उसी फौलादी स्टूलपर बैठा है। वह उसे आसमानमे लिए जा रहा है और वह स्वेच्छापूर्वक मशीनगनसे दुश्मनोके ऊपर गोलियाँ चला रहा है। 'दुश्मन' शब्द मनमे आते ही उसके कलेजेमे सूईसी चुभ गई। क्या सचमुच जर्मन उसके दुश्मन है? क्या डेढ सौ वर्षोसे जर्मन ही उसके देशको कैद किए हुए है? क्या जर्मन बूटोसे हिदुस्तानियोकी तिल्लियाँ फटती है? क्या ब्रिटिश उपनिवेशोमे जर्मन ही

हिन्दुस्तानियोंको 'काले कुली' कहकर पुकारते हैं और उन्हें साथमें रेलोंपर भी बैठने नही देते ? क्या जर्मनोने अपने देशमें ही उन्हें पराया बना दिया है ?—इन सबका उत्तर देवराजको 'नही'-में मिला। तो, क्या मालिकके हुकुमपर दासके तौरपर तुम इस लडाईमें अंग्रेजोकी मदद करने आए ? तुमसे यदि नसीराबादकी सारी राजपूत रेजिमेन्ट तथा दूसरे हिन्दुस्तानी पल्टनोंसे मतलब है, तब तो इन्कार करना मुश्किल था, लेकिन यदि मतलब देवराजसे है, तो वह बलपूर्वक इन्कार करता है।

× × ×

देवराजको अस्पतालमें आए तीन हफ्ते हो गए थे। उसके शरीरसे बहुत खून निकल गया था। दो बार दूसरेका खून देना पड़ा। कई दिनों तक वह जीवन और मरणके बीच झूलता रहा। जाँघकी हड्डी टूट गई थी, लेकिन डाक्टरोंने राय दी कि हड्डी जुड जायगी। देवराज तकियेके सहारे अपनी चारपाईपर बैठ सकता था, लेकिन अपने दाहिने पैरपर उसका काबू न था। उसकी दाहिनी तरफ घाटेकी चारपाई थी और बाईं तरफ जॉन मरे, एक अंग्रेज तरुणकी। साधारण बात होते-होते अब दोनो साथियोंके साथ देवराजकी बडी घनिष्टता हो गई थी। घाटे ग्वालियर का मराठा था, इसलिए हिंदी उसके लिए मातृभाषा सी थी। पहले पहल साधारण सिपाही समझकर घाटे देवराजसे कुछ विलगाव-सा रखता था; लेकिन उसे यह जाननेमें देर न लगी कि सिपाही एक सुशिक्षित और सस्कृत तरुण है, एवं उसकी प्रतिभा चतुर्मुखी है। देवराजके पूछनेपर इग्लैड-प्रवासी भारतीय तरुणोंकी सैनिक-सेवाके बारेमें उसने कहा—

'जब लडाई शुरू हुई तो इंग्लैडमें शिक्षा पाने वाले हम भार-

नीय तरुणोके दिमागमे प्रश्न हुआ—क्या करना चाहिए । कॉलेज और यूनिवर्सिटियोंको सूना करके लडके युद्ध-क्षेत्रकी खाइयोंकी ओर दौड गए थे, और ऐसे वक्त हमारे लिए निश्चिन्त होकर पढना सभव न था। सामुद्रिक खतरेके कारण भारत लौटना भी आसान न था। हम लोग सोच रहे थे कि अपने सहपाठी-अग्रेज तरुणोकी तरह हम भी कुछ काम करे। हमे ऐसा करनेके लिए इस ख्यालने भी प्रेरणा दी कि अभी तक हिंदुस्तानी शाही-कमीशनके अफसर नही हो पाते। अपनी सेवाओ द्वारा हम, भारतीयोंके लिए यह रास्ता खोल पायेंगे। उस वक्त कर्मवीर मोहनदास कर्मचंद गाधी भी लदनमे थे हाँ, उन्होंने भारतीयोकी एक स्वयसेवक-सेना बनानी चाही। दक्षिणी अफ्रीकामे उनके कार्यके बारेमे हम बहुत सुन चुके थे और बडी खुशीके साथ हम लोगोने उनका नेतृत्व स्वीकार किया। सैकडो तरुण भर्ती होकर सैनिक कवायद सीखने लगे। हमने कह दिया था कि दूसरे अंग्रेज छात्र जैसे अफसरोंके दर्जेमे भर्ती किए जा रहे है, वैसे ही हमारे साथ भी होना चाहिए।

"कहीसे सुनकर किसी साथीने कहा कि हम लोगोके लिए टॉमी (मामूली सिपाही) की वर्दी बन रही है। हम लोगोंने गाँधी जीसे साफ कह दिया था, कि टॉमीकी वर्दी हम हर्गिज नही पहनेगे। गाँधीजीने विश्वास दिलाया कि ऐसा नही होगा। संयोगसे वर्दी बनानवाला दर्जी वही था, जिससे मै अपने कपडे सिलवाया करता था । मै अपने कोटके भीतर एक गुप्त पाकेट लगवाया करता हूँ। दर्जीने भेंट होनेपर पूछा—क्या आपकी वर्दीमें उस पाकेटके लगानेकी जरूरत है? पूछनेपर उसने यह भी बतला दिया, कि सभीके लिए टॉमीकी वर्दी बन रही है। मैंने अपने साथियोंसे कहा। सभी आगबबूला हो गए। गाँधीजीसे कहनेपर उन्होंने फिर विश्वास दिलाया कि ऐसा नही होगा। हम लोगोंने उनसे जोर देकर कहा

कि अधिकारियोके पास हमारी माँगके बारेमे पहलेसे ही स्पष्ट कर देना चाहिए। उन्होने हम लोगोके उतावलेपनको बुरा कहकर शान्त कर दिया। लेकिन, एक दिन जब हम परेडमे थे तो देखा कि वर्दी आ गई है—हमारा सदेह ठीक निकला। हमे टॉमीकी वर्दी पहननेको दी गई। एक गुलाम देश अपनी जानकी क़ुर्बानी भी—सो भी विजेताओके लिए—इज्ज़तके साथ नही कर सकता। हम लोग उस अपमानको बर्दाश्त नही कर सकते थे। हमने अफसर-के सामने वर्दी स्वीकार करनेसे इन्कार कर दी। हमे कोर्ट-मार्शलकी धमकी दी गई। गाँधीजीसे हमने कहा—देखिए हमारी बात ठीक उतरी। वह पहन लेनेके लिए हमपर जोर दे रहे थे। जब हमने उन्हे अपने उस विरोधमे साथ देनेको कहा, तो वह अलग हो गए। यद्यपि हम लोगोका निर्णय उस वक्त एक-ब-एक हुआ था; लेकिन इसके परिणामपर हम पहले विचार कर चुके थे, और सब कुछके लिए तैयार थे। हममे एक दो विश्वास-घाती भी निकले, लेकिन ऐसे आदमी कहाँ नही होते? नीचेके अफसरोसे काम न बनते देख मै सीधा किच्नर (प्रधान सेनापति) के पास गया। उसने सब सुनकर उसी वक्त कहा कि तुम लोग अफसरोंकी वर्दी पहनो, पूछनेपर कह देना कि किच्नरने आज्ञा दी है। हम लोग खुशीके मारे फूले न समाये। जिसके पास रुपया न था, उसने भी उधार लेकर चौबीस घटेके भीतर खूब भडकीली वर्दी बनवाई।"

देवराजने इस घटनाको सुनकर प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा —"देशके सन्मानके लिए हमे हर जगह अपने प्राणोको तिनकेके बराबर समझना चाहिए। जो प्राणोकी बाजी लगाते है, वे ही विजयी होते है। मै तो एक मामूली सिपाही हूँ और मैने भारतीयोका स्थान ऊँचा करनेमे कुछ भी हिस्सा न लिया। आप लोग धन्य है "।

घाटे देवराजको काफी समझ चुका था, इसलिए उसके इस हीनता-प्रदर्शनको वह सिर्फ शिष्टाचारकी बात समझता था।

× × ×

देवराज अब चारपाईसे उठकर खड़ा हो सकता था। लेकिन, दाहिने पैरमे अभी काफी ताकत न आई थी। एक दिन कर्नल और श्रीमती ज्यॉफ़रेको दरवाज़ेसे भीतर घुसते देखकर देवराजका चेहरा खिल गया। कर्नलके रोकते-रोकते भी वह चारपाईसे उतर कर खड़ा हो गया। अश्रुपूर्णनेत्र हो ज्यॉफरे-दम्पतीने देवराजकी पेशानीको चूमा। उसे चारपाईपर बैठाकर उन्होने अपना हार्दिक उल्लास प्रकट किया—

"डेवी, सचमुच मै तुम्हारे लिए यह नया जीवन मानता हूँ। मशीनगनको बगलमे दाबे देखकर पहले तो मुझे मालूम हुआ कि तुम्हारा शरीर निर्जीव है, और पीछे हफ्तो तक मुझे जो खबर मिलती रही, उससे मेरे मनमे आशाका सचार नही हो रहा था। मेरी ड्यूटी युद्ध-क्षेत्रमे थी, इसलिए तुम्हे देखने न आ सकता था। हमारी रेजिमेंटमे घायल और स्वस्थ मिलाकर कुल बयासी आदमी बच रहे है। हम लोगोको एक महीना विश्राम करनेके लिए छुट्टी मिली है। मैने तार देकर तुम्हारी मामको भी बुला लिया। हम दोनो एक मास पेरिसमे ही बिताने जा रहे है, जिसमे कि तुमसे रोज मिलते रहे। सच कहूँ, डेवी, जिस वक्त तुम्हारे जीवनके उस पार होनेका अदेशा हुआ, तभी मुझे इस बातका अनुभव हुआ कि तुमने हमारे दिलमे कितना स्थान ग्रहण कर लिया है। बेटा डेवी, मै तुम्हे एक और लज्जाजनक बात सुनाता हूँ—हॉ, हमारी जातिके लिए लज्जाजनक। शायद अपने लिए तुम उसका ख्याल न करोगे, लेकिन मेरे लिए तुम्हारे दिलमे जो भाव है वे

भी मेरी जातिको क्षमा प्रदान करानेमे समर्थ न होगे।"

धडकते हुए दिलसे देवराजने कहा—"नही, कर्नल साहब ! मै पिताकी मुहब्बतसे लड़कपनहीसे वंचित हो गया, लेकिन जबसे आपके साथ मुझे रहनेका मौका मिला, तबसे समझता था कि मुझे एक पिता मिल गया। आपके स्वभाव और बर्तावने मुझपर जो असर किया है, उसने अंग्रेज जातिके लिए मेरे दिलमे खास स्थान पैदा कर दिया है, और उसे हजारो वैयक्तिक दुर्व्यवहार भी मेरे दिलसे दूर नही कर सकते। आप निःसंकोच कहे।"

"यह तुम्हारी उदारता है। खैर, तुम्हारी युद्ध-चातुरी और वीरताने अंग्रेज़ी सेनाके लिए क्या काम किया, वह तुम्हें मालूम नही। उस दिन दोपहरकी गोलाबारी हमारे लिए बडी खतरनाक थी। हम दो खाइयोको छोड़ चुके थे और तीसरी खाईपर भी डटने वाले न थे। यदि जर्मन फौजोको बढनेका मौका मिलता तो हमारी सारी पाँतीको पॉच मील पीछे हट जाना पडता। सारी पॉती!—अर्थात् ५२ मील लम्बी पाँती। हमारी पॉतीका वह सबसे कमज़ोर स्थान था, जहाँपर तुम लोग तैनात थे। तुम्हारी होशियारी और बहादुरीने न सिर्फ हमारी सारी पाँतीको ५ मील पीछे हटनेसे बचाया, बल्कि टेकरीकी मशीनगनका इस्तेमाल करके तुमने एक हज़ार जर्मन सेनाको हत, आहत और बेकार कर दिया और मोर्चा छोडकर आगे बढ आई दुश्मनकी सेना-पंक्तिको हम छै मील पीछे हटानेमें समर्थ हुए। यह साधारण बात न थी। हमारे सभी अफ़-सरोने एक मतसे तुम्हारे लिए 'विक्टोरिया क्रॉस'की सिफ़ारिश की। मुझे बड़ा अफसोस है कि अधिकारियो—शायद राजनैतिक अधिकारियो—ने तुम्हें 'विक्टोरिया क्रॉस' पानेका मुस्तहक नही समझा और उन्होने मिलिटरी क्रॉस दिया। इस बर्तावको देखकर शर्मके मारे मेरा सिर झुक जाता है।"

"मेरे पितृतुल्य कर्नल साहेब, वे एक हिंदुस्तानीको 'विक्टोरिया क्रॉस' से वंचित कर सकते है, लेकिन, उसके कामसे इनकार नही कर सकते और यह मेरे और मेरे देशके लिए सबसे बड़ा पारितोषिक है। मुझे यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि माम और आप एक महीना यही रह रहे है। स्वस्थ होते ही मै फिर खाइयोंमे जानेको तैयार हूँ। डाक्टरोने बतलाया है, कि घावने मुझे सैनिक सेवाके अयोग्य नही बनाया है।"

× × ×

जॉन मरेके लिए देवराज और भी आश्चर्यकी चीज था। एक तरफ वह देवराजको अंग्रेजी शासनका जबर्दस्त दुश्मन पाता था और दूसरी ओर अंग्रेजी जातिके लिए उसे इस प्रकार लड़ने वाला देख रहा था। अब भी वह इसी उत्साहसे मैदाने-जंगमे जानेको तैयार था।

"मिस्टर सिंह, तुम्हारी बहादुरीके सभी कायल है। तुम्हारी योग्यता और संस्कृत मस्तिष्कका मुझे काफी परिचय है, इस लिए मै जो भी बात तुमसे पूछूँगा, वह किसी बुरे भावको लेकर नही होगी। मेरी समझमे नही आता कि एक तरफ तो तुम अंग्रेजी-शासनके इतने सख्त दुश्मन और अपने देशकी स्वतंत्रताके जबर्दस्त हामी मालूम होते हो; और दूसरी ओर अंग्रेजोंकी हिमायतमें उनके दुश्मनों-से लड़नेमें तुमने इतनी मर्दानगी दिखलाई है। दुश्मनको आफत-मे फँसा देखकर उससे फायदा उठाना चाहिए, या इस तरह सहा-यता देकर उसे मजबूत करना चाहिए? यदि तुम्हारे स्थानपर मै होता, तो मेरा मार्ग उल्टाही होता।"

"हर्गिज नही, मिस्टर मरे, तुम्हारे जैसे आदर्शवादी चतुर तरुणको वही करना पडता, जो मै कर रहा हूँ। अच्छा! देशको

स्वतंत्र करनेमे विज्ञान हमारा अधिक सहायक हो सकता है, या भावुकता ?"

"विज्ञान, यह निश्चित है।"

"अंग्रेजोंने वैज्ञानिक अस्त्र-शस्त्रो द्वारा ही तो छै हजार मीलपर, मुट्ठी भर आदमियोको लेकर, हमे गुलाम बना रखा है ?"

"हाँ।"

"उनके मुकाबिलेमें यदि हम अपनेको इन अस्त्र-शस्त्रोके उपयोग-मे अधिक कुशल साबित कर सकेगे, तभी तो हम उन्हे अपना हाथ खीचनेके लिए मजबूर कर सकेंगे ? युद्ध-विज्ञान हमारे लिए वैसी ही आवश्यक चीज है, जैसे कि राजनीति-विज्ञान। और बिना पानीमे उतरे तैरना आता नही। सेनामे भरती हो हमारे जैसे शिक्षित तरुण कुछ सैनिक शिक्षा पा सकते है। यद्यपि हमारे लिए उच्च श्रेणीकी शिक्षाका दर्वाजा बन्द कर रक्खा गया है, किन्तु अब पुस्तकोंने हमारे रास्तेको साफ कर दिया है। हम इसी तरह प्राणोंकी बाजी लगाकर इस ज्ञानको सीख सकते है ? आप यह न ख्याल करे, कि यदि कल मैं मर गया होता, या परसो मर जाऊँ, तो मेरे ज्ञानका देशको क्या उपयोग मिलेगा। जब मेरे ऐसे हजारो होगे, तो सभी मर न जायेगे, आज हमारे पास, यदि राजनीतिक जागृतिके साथ सेना-सचालक भी होते, तो हम अवसरसे फायदा उठाए होते। खैर, यह आखिरी अवसर नही है। अब शायद, आपने मेरे अभिप्रायको समझा होगा।

जॉन मरेके दिलमे देवराजका सन्मान कई गुना बढ गया।

२०

दुबारा घायल

अस्पतालमे तीन महीने रहनेके बाद देवराजका घाव अच्छी तरह भर गया, लेकिन, अभी उसमे पूरी ताकत न आई थी; इसलिए उसे कुछ दिन और पेरिसके एक सैनिक-विश्राममे रहना पड़ा। इतने दिनो उसे अधिकतर फ्रेच स्त्री-पुरुषोसे काम पडता था। उसने अनुभव किया कि फ्रासीसियोमे रगका अभिमान उतना नही है। फ्रासीसी लोग बड़े खुशदिल होते है और अंग्रेजोकी तरह चुप्पापन उनमे बहुत कम दिखलाई पडता है। इस समयका उपयोग उसने फ्रेच सीखने और साम्यवादके गभीर अध्ययनमे किया। फ्रासकी साम्यवादी क्रान्ति और उसके नेताओके बारेमे उसने बहुत पढा ही नही, बल्कि उस क्रान्तिसे सम्बन्ध रखनेवाले पेरिसके बहुतसे स्थानोको देखा भी।

अगस्तसे ही वह फिर मैदानमे जानेके लिए उतावला हो गया, लेकिन कर्नल ज्यॉफरे भयंकर चोटके कारण अभी उसे लेना नही चाहते थे। सितम्बरके पहले सप्ताहमे देवराजको फिर अपनी पल्टन-मे जानेका हुक्म मिला। अब पुरानी पल्टन नाममात्रके लिए रह गई थी। अधिकाश जवान मर या घायल होकर बेकार हो चुके थे। सब मिलकर सौ भी पुराने सैनिक नही बच रहे थे। देवराजने कई बार अपने साथियोके बारेमे पूछा लेकिन मोहन-के बारेमे कभी उसे पक्की खबर नही मिली। पल्टनमे लौटनेपर मालूम हुआ कि मोहन यद्यपि घायल होकर अस्पताल गया था;

लेकिन घाव मर्मस्थलपर लगा था और तीन ही चार दिन बाद वह मर गया। देवराजका मोहनके साथ जैसा सम्बन्ध था, उसको देखते हुए लोगोंने इस खबरको छिपा रक्खा।

लडाई शुरू हुए एक साल बीत चुका था; लेकिन, अब भी जर्मन सेनाएँ बड़ी तेजीके साथ आगे बढ रही थी। बार-बारकी हारसे मित्र-शक्तियोके भीतर बडी निराशा छाई हुई थी; तो भी उनकी सैनिक शक्ति दिनपर दिन बढ रही थी, जब कि जर्मनीकी सचित सैनिकशक्ति घटती जा रही थी। अंग्रेज अब लड़ाईको देरतक बढानेमे सफलताकी आशा रखते थे, और उनकी तैयारी भी इसी दृष्टिसे हो रही थी। हिदुस्तानसे बहुतसी पल्टने फ्रास पहुँची थी। देवराजके रेजिमेटमे नये चेहरे दिखलाई पड रहे थे। उनसे हिदु-स्तानकी राजनीतिके बारेमे जानना सभव नही था, क्योंकि सभी देहाती अनपढ किसान लडके थे। वे यही बतला सकते थे, कि अनाजका भाव दूना हो गया है और कपडेका ढाई गुना।

देवराजकी पल्टन एक छोटीसी नदीके किनारे मोर्चा लगाए पडी थी। नदीके दोनो तरफ मोटे टीलोकी ऊँची-नीची जमीन थी, जिसमे देवदारका जंगल था। जगल किसी वक्त घना और वृक्ष बडे-बडे रहे होगे। लेकिन दोनो तरफकी तोपोके गोलोने वृक्षोको ठूँठा बना दिया और जगलके बहुतसे भागको जला दिया था। दोनो तरफसे कोई भी नदी पार करनेकी हिम्मत न करता था, क्योकि नदीकी अगनाईमे गोलियोसे बचनेका कोई साधन न था। देवराजके युद्ध-कौशलका परिचय मिल चुका था, इस लिए कर्नल ज्यॉफरे किसी लेफ्टिनेट और कप्तानसे भी उसकी बुद्धिपर ज्यादा भरोसा रखते थे। उन्हें यह पसंद न था कि देवराज हर वक्त अपने जीवनको खतरेमें डालता रहे। इसपर उन्होंने कई सर्मन (उपदेश) भी दिए थे, जिन्हे जिस प्रकार श्रद्धा-भक्तिसे देव-

राज सुनता था उसे देखकर किसीको गुमान भी न हो सकता था कि पहले ही मौका मिलनेपर वह उसकी अवहेलना करेगा। मिलिटरी-क्रॉसके अलावा अब वह जमादार था, और अक्सर उसे सौ दो सौ सिपाहियोंकी टोलीका नेतृत्व करना पडता था। देवराज अपने सामनेकी शत्रु-पक्तियोको बडे गौरसे देख रहा था, नदी पार दाहिनी तरफ हटकर दरख्तोसे ढँका एक ऊँचा भीटा-सा था। उसकी नजरमे सबसे खतरनाक जगह वही थी। यदि किसी तरह उसको बेकार कर दिया जाय तो रास्ता साफ हो जाय—देवराज कई दिनों तक इसपर सोचता रहा। अतमे उसने कर्नलके सामने अपनी राय पेश की। उसकी सफलतामे उन्हे सन्देह न था, लेकिन, पॉतीको तोडकर आगे बढनेकी आज्ञा तो सारी सेना-पक्तिका संचालक ही दे सकता था। हॉ, अचानक हमला हो जानेपर देवराजको स्वय कुछ निर्णय करनेका मौका मिल सकता था। इसके लिए उसे ज्यादा प्रतीक्षा नही करनी पडी। जिस तरह जर्मन बैटरी उस भीटेसे अग्रेजी सेनाको आगे बढनेसे रोके हुए थी, उसी तरह देवराजकी पक्तिमे भी बाई तरफ, नदीसे ऊपर एक ऐसा ही स्थान था, जहॉसे अंग्रेजी बैटरी अपनी आवाजसे आसमानको फाड़ती हुई आग उगल रही थी। देवराजकी तरह जर्मन सैनिक भी कई बार उस अंग्रेजी बैटरीपर धावा बोल चुके थे।

क्वारकी अमावस आनेवाली थी। देवराजने सोच रक्खा था कि उस वक्त जर्मन सैनिक अवश्य नदीको पार करना चाहेगे, उस बैटरीकी रक्षाका भार देवराजकी सेनापर था। उसने अपने सौ साथियोको अपनी योजना बतलाई।

रातके दश बज रहे थे, जब कि देवराजके साथी अपनी रायफलोंको कन्धेपर डाले हाथके बमोंको बगलसे लटकाये एक-एक लकड़ीके तख्तेको दो दो आदमी उठाए धीरेसे नदीकी तरफ बढने

लगे। अँधेरा घने काजल-सा था, उसमे इनका पता नही लग सकता था· लेकिन, पैरकी आवाज दबा रखनेके लिए उन्होने पूरी कोशिश की। धारा आठ-दस हाथसे ज्यादा चौडी न थी, लेकिन पानीकी गहराईका पता न था। सलाह ठहरी कि तख्तोको जोडकर आर-पार पकडे रक्खा जाय और लोग उतर जायँ।

वे बड़े जोखिमका काम करने जा रहे थे। यदि टेकरीको दखल करनेमे वे सफल न हुए तो फिर उनमेसे एक भी जिदा लौटकर नही आ सकता, साथ ही वह यह भी जानते थे कि अगर उनकी तरफकी बैटरीपर जर्मनोने उसी रात हमला नही किया तो अपनी पाँतीको छोडकर आगे बढनेके लिए उनके पास कोई बहाना नही रह जायगा। चार जोड़े तख्तोको उन्होने पानीमे धीरेसे उतारा और जरा भी थपककी आवाज किये बिना दूसरे पारकी ओर खिसकाया। देवराज सिरेपर बैठा था और जिस वक्त तख्ता किनारेपर पहुँचा, उसने उतरकर सिरेको पकड लिया। धीरे धीरे सभी जवान सकुशल उस पार पहुँच गए। तख्तोको उन्होने स्थलपर थोडा खीचकर छोड दिया। अब अपनी रायफलो और हाथके बमोको सँभाले वे लोग एक पाँतीमे दाहिनी ओर घूमे। देवराज सबसे आगे था। कई दिनोसे दूरबीनके सहारे वह एक-एक इच जमीनको देख रहा था। उसने देखा था कि नदीकी अगनाई काफी चौडी है और वह जितना पानीके नजदीकसे चलेगे, उतना ही अच्छा है। चलते पानीमे हिलते तारोकी परछाईं उन्हे मार्गका संकेत दे रही थी। जब तक वे भीटेकी जडमे नही पहुँचे, तब तक भारी असफलताके डरसे उनका कलेजा काँप रहा था। इसी वक्त उन्हे दूर धडाकेकी आवाज सुनाई दी। देवराजका उत्साह और बढ गया। उसने समझ लिया कि जिस बहानेकी उसे जरूरत थी, वह मिल गया—जर्मन सैनिकोने अंग्रेजी बैटरीपर धावा बोल दिया

है। सुसकारीकी आवाजमे देवराजने हाथमे बम सँभाले तेजीसे ऊपर दौडनेको कहा। चढाई चालीस कदमसे ज्यादा न थी। उन्हे यह मालूम होते देर न लगी कि भीटेपर लोग बेखबर सोये नही है। तो भी, मालूम होता है, उन्हे उस रातको हमला होनेका कोई डर न था। सभवत उन्होने सोचा होगा कि सामने हिदुस्तानी पल्टन है, जो लडनेमे चाहे कितनी ही बहादुर हो, लेकिन उसे सैनिक चातुरीका पाठ बहुत कम मिला है। देवराजने अपना बम फेकते हुए 'फेको'की आवाज लगाई और दर्जनो बम भीटेके ऊपर गिरे। दुश्मनने भी बमो द्वारा जवाब दिया, किन्तु भारतीय बिखरे हुए थे और अँधरेमे वे उन्हे देख नही सकते थे। भीटेपर पहुँचकर सगीनोकी लडाई शुरू हुई। जब-तब लपटकी रोशनीके लिए राइफलसे हवाई फायर किया जाता था। जर्मन भी स्थानके महत्वको समझते थे, इसलिए जी-जानसे प्रहार कर रहे थे। बीस मिनट तक द्वन्द्व रहा। देवराजके शरीरमे एक दर्जनसे अधिक घाव थे और उसकी बाई बॉह बुरी तौरसे जख्मी हुई थी। भीटा छोडते-छोडते जर्मनोने एक बम फेका, जिससे देवराजकी दाहिनी ठठरीकी दो हड्डियॉ टूट गई। उसने उस घायल अवस्थामे भी अपने साफेको खोलकर घावको बॉध लिया और लगा लोगोको उत्साहित करने। जर्मन सैनिक कितने घायल हुए, इसका पता उस अँधेरेमे उन्हे नही लग सकता था। जर्मन सैनिक भी यह नही जान सकते थे कि आक्रमणकारियोकी सख्या कितनी है। भारतीयोने सगीनोकी नोकसे उन्हे भीटेके नीचेकी ओर भगाया और अब वहॉ उनका अधिकार था। सिपाहियोने अटकलसे कुछ बम नीचेकी ओर फेके और सभी बेकार नही गए। बमके धड़ाकेके साथकी क्षणिक लाल लपटसे उन्हे अन्दाजा मिल गया कि शत्रु मुकाबला करनेके लिए जगह नही पा रहा है। दिया-

सलाईकी रोशनीसे मालूम हुआ कि भीटेपर बैटरीके अतिरिक्त दो मशीनगने और बहुत-सा गोला-बारूद भी है। बैटरीको शत्रुओकी तरफ घुमाना आसान नही था और उसका उपयोग भी सिर्फ देवराज ही जानता था। उसकी आज्ञासे बालूकी बोरियोकी छल्ली लगाकर दोनो मशीनगने दुश्मनकी तरफ घुमा दी गई और जब-तब उन्हीकी रोशनीमे उन्हे दागा जाने लगा। दूसरे पारकी अपनी बैटरीकी आवाज भी जब-तब सुनाई देती थी, जिससे पता चल रहा था कि जर्मन अभी उसपर कब्जा करनेमे समर्थ नही हुए। नदी पारकी अपनी पक्तिके कूच करनेकी आवाज साफ सुनाई दे रही थी। दोनो मशीनगनोके सहारे देवराजने अपनी अगल-बगलकी पक्तियोको दो-दो सौ गज तक साफ कर दिया और फिर पच्चीस साथियोको भीटेपर रखकर बाकियोको दूसरी तरफकी मोर्चाबन्दियो-की ओर भेजा।

अभी छै घटे अँधेरी रात थी, सिवाय समय-समयपर कुछ गोलियाँ दागनेके वे कुछ न कर सकते थे। उनको यह भी पता न था कि चारो ओर दुश्मनकी मोर्चाबन्दी कैसी है। पौ फटनेके साथ सघर्ष बढने लगा। जर्मन तीन सौ कदम पीछेकी पाँतीमे डटे हुए थे। वह पाँती उतनी मजबूत न थी और देवराजके प्रहारका मुक़ाबला करना उनके लिए मुश्किल हो रहा था। जर्मन अपनी सारी ताकत लगाकर खोई पाँतीको पानेकी कोशिश कर रहे थे। देवराजके साथी जो भीटेकी बगलकी पाँतियोंमें घुस गये थे—बडे खतरेमे थे, तथापि बहुत हानि उठाकर भी अपनी जगहपर डटे रहे। वे पीछेसे देख रहे थे कि अंग्रेज़ी सेना तेजीसे नदी पार कर रही है। देवराजकी दोनो मशीनगनें बराबर चलती रही और जर्मन सेना पिछली पाँतीसे आगे न बढ सकी। दोपहर तक अंग्रेज़ी सेनाने परित्यक्त जर्मन पाँतीको ग्रहण किया;

और 'हुर्रे'के गगनभेदी नादसे भीटेके साथियोंका स्वागत किया। लेकिन, जिस वक्त सैनिक अफसर उसके पास पहुँचनेवाले थे, उसी वक्त देवराज चेतना खो बैठा। वस्तुतः वह एक अजीब जोश और दृढ सकल्पके कारण अभी तक अपने होश-हवासको दुरुस्त रखकर युद्धका सचालन कर रहा था।

२१

परिचय

सारे पश्चिमी युद्धक्षेत्रमे जर्मनी बडे जोरका हमला कर रहा था, और सभी जगह मित्रशक्तियोकी फौजे मीलो पीछे हटी थी। देवराजकी टुकडीने जिस भीटेपर दखल किया था, उसीके आस-पास अग्रेजी सेना कुछ आगे बढनेमे सफल हुई थी। कर्नल ज्यॉफरे खुद इस मुहिममे घायल हुए, लेकिन उनको अपनी रेजिमेट-की इस सफलतापर बहुत प्रसन्नता हुई, और सबसे बडी प्रसन्नता तब हुई, जब कि उन्हे पता लगा कि देवराजको वीरताका सबसे बडा अग्रेजी तमगा 'विक्टोरिया-क्रॉस' देना तै हुआ। देवराज पहला हिदुस्तानी था, जिसे यह सम्मान मिला।

× × ×

फ्रासके नये पुराने सभी अस्पताल घायलोसे भर गये थे और उनके लिए लन्दनमे बडे पैमानेपर इतिजाम किया गया था। हिदुस्तानी और अंग्रेज़ी घायल अक्सर इग्लैड भेजे जाते थे। देवराजका सारा बदन जख्मी हुआ था, जिसमे दाहिनी पसलीका घाव सबसे अधिक सख्त था। रेडक्रॉसने जिस वक्त उसे मैदानी अस्पतालमे भेजा, उसी वक्त उसीके साथ घायलकी असाधारण वीरताका हवाला देते हुए—इसके जीवनकी रक्षाके लिए सारे उपाय लगा डालने चाहिएँ—यह हिदायत सेना-संचालन-विभागसे भेजी गई थी। अस्पतालमे उसे तुरत खून देनेकी व्यवस्था की गई।

उसके बाद अस्पताली ट्रेनमें बोलोञ्, फिर स्टीमरसे इग्लिश-चैनल पार हो डोवर। डोवरसे रेडक्रॉसकी मोटरमे उसे लदनके जेनरल अस्पतालमे पहुँचाया गया। पिछली बारकी तरह अबकी बार कुछ घटोंसे अधिक देवराज बेहोश नही रहा। जिस प्रकार उसका सारा बदन घावसे छलनी हो गया था — और कुछ घाव तो अत्यत खतरनाक थे, तो भी जिस शान्तिके साथ घावके दर्द और धुलाई-को वह बर्दाश्त करता था, उसे देखकर डाक्टरो और नर्सोंको आश्चर्य होता था। 'आह' और 'उफ्' तो उसके मुँहसे निकलते किसीने सुना ही नही। बहुत होनेपर उसके मुँहपर सीवन और पेशानीपर हलकीसी सिकुड़न पड जाती थी। बाकी वक्त वह हमेशा स्मित-मुख रहता था। यहाँ भी दो बार उसे खून देनेकी जरूरत हुई और अस्पतालकी एक स्वस्थ नर्स, जेनी ब्राउनने बडे आग्रहपूर्वक उसके लिए अपना खून दिया। इस असाधारण सहृदयता और उदारताका देवराजके ऊपर बहुत जबर्दस्त प्रभाव पडा। जेनीके कहनेपर उसे उसी वार्डमे नर्सका काम दिया गया और इसमे शक नही कि दवाइयोसे भी अधिक जेनीकी सहानुभूतिने उसके स्वस्थ होनेमें मदद दी। अपने कामोको पूरा करके जेनी अक्सर देवराजके पास बैठकर उसे किसी बातचीतमे लगाए रहती। देवराजका दिमाग चुप बैठनेवाला नही था, इसलिए बहुत जरूरी था कि उसके दिमागको किसी गभीर चिन्तनमे न लगने दिया जाय।

खतरेसे बाहर होनेपर सबसे पहले देवराजने एक पत्र श्रीमती ज्यॉफ़रेको लिखवाया और दूसरे दिन शामको वह उसके पास थी। यद्यपि उस वक्त कर्नल ज्यॉफ़रे युद्धके मैदानमें काम आ चुके थे, लेकिन देवराजके स्वास्थ्यको देखकर श्रीमती ज्यॉफरेने उस समाचार-को बतलाना उचित न समझा। देवराजके भयकर जख्म और

उसकी कठिन वेदनाको देखकर कितनी ही बार श्रीमती ज्यॉफ़रेकी आँखोमे आँसू भर आए, और कितनी ही बार अपने पतिके वियोग-का ख्याल भी आँसुओकी बाढ लानेमे सहायक हुआ, तो भी कर्नलका समाचार पूछनेपर—'कोई हरज नही'—कहकर जल्दीसे अपने अश्रुपूर्ण मुखको दूसरी ओर घुमा उन्होंने अपना पिड छुडाया। जानेसे पहिले उन्होने जेनीको बतला दिया था—"मेरे पति देवराजको अपना पुत्र समझते थे। मेरा भी उसपर असाधारण स्नेह है। कर्नलकी मृत्यु हो गई है, लेकिन, इसकी सूचना मौका देखकर तुम्ही देना। सूचनाका असर देखकर मुझे पत्र लिखना, तब तक मै अपना यहाॅ आना अच्छा नही समझती।"

महीनो देवराज चारपाईपर पड़ा रहा। उसकी जीवनशक्ति इतनी निर्बल हो गई थी, कि उसके शरीरमे शक्ति-संचार बहुत धीरे धीरे हो रहा था। लेकिन, उस सारे समयमे जेनीका हँसमुख चेहरा उसके पास रहता था। ड्यूटीके आठ घंटेका समय वार्डके छै मरीज़ोमें उसे बराबर बराबर देना पड़ता था—लेकिन ड्यूटीके बादके समयको वह नर्सोंके क्वार्टरमें सिर्फ अपने या देवराजके सोनेके समय ही बिताती थी। देवराजके असाधारण धैर्य. वीरता और हँसमुख चेहरेको देखकर जेनी आकर्षित हुई थी। लेकिन, उस वक्त वह देवराजको असाधारण हिदुस्तानी सिपाहीके अतिरिक्त अधिक नही जानती थी। किन्तु हर रोज देवराजके रूपके नये-नये पहलू उसके सामने प्रकट होते जा रहे थे। देवराजने पहले समझा था कि जेनी एक सहृदय, किन्तु साधारण नर्स है। पीछे दोनों एक दूसरेको यह कहकर हँसते थे कि किस तरह हमने हफ्तों साधारण सिपाही और साधारण नर्सका अभिनय किया। रहस्यका उद्घाटन सबसे पहले जेनीकी ही ओरसे हुआ। जेनीने एक दिनकी छुट्टीपर घर जानेके लिए देवराजसे विदाई ली।

देवराजने पूछा—

"जेनी, तुम्हारा घर कहाँ है ?"

"यही, लदनमे, मेरा जन्म हुआ लेकिन मेरे पिता ऑक्सफोर्डमें प्रोफेसर है।"

प्रोफेसरका नाम लेते ही देवराज सोयेसे जाग-सा उठा— "प्रोफ़ेसर ब्राउन्, ऑक्सफोर्डके ? वह किस विषयके प्रोफेसर है ?"

"मेरे पिता, प्रोफेसर स्टेन्ली ब्राउन्, ऑक्सफोर्डके बेलिओल् कॉलेजमे अर्थशास्त्रके अध्यापक है।"

"ओह क्या वही जिन्होने 'आधुनिक अर्थशास्त्रकी कुछ असत्यताएँ' पुस्तक लिखी है ?"

"डेवी, तुम मेरे सामने किस रूपमें प्रकट हो रहे हो ?"

"क्यो ? मै तो वही देवराज हूँ।"

"नही, तुमने हमेशा सिपाही देवराजको ही मेरे सामने रक्खा। 'आधुनिक अर्थशास्त्रकी कुछ असत्यताएँ' पूँजीवादी अर्थशास्त्रपर गंभीर विवेचन है। विद्वानोमें उसकी बड़ी कदर हुई है—और, दरअसल, वह विद्वानोके ही समझनेकी चीज़ है। फिर उसको प्रकाशित हुए डेढ़ ही साल हुए है। इतनी गंभीर पुस्तक इतनी जल्दी तुम्हारे हाथमे चली जाय ! सच बताओ, तुमने मुझे धोखेमें क्यों रक्खा ?"

"सच बताओ, तुमने मुझे धोखेमें क्यों रक्खा ? जनन-शास्त्रके अनुसार पिताकी बौद्धिक सम्पत्तिकी दायभागिनी लड़की होती है, इसलिए प्रोफेसर ब्राउन्की लडकी जेनी भी साधारण नर्स नही हो सकती।"

"अच्छा, हम दोनों ही अपराधी है, साथ ही हमने जान-बूझकर यह अपराध नही किया है। मै तुम्हें माफ़ करती हूँ।"

"मै तुमसे माफी माँगकर उऋण नही होना चहता। तुम्हारा चिर-ऋणी रहकर ही मै अपनेको सौभाग्यवान् समझूँगा।"

"मैं अपनेको इसके योग्य नहीं समझती। तुमने हमारे देशके लिए इतना त्याग किया और उसपरसे तुम्हारे असाधारण धैर्यने मुझे प्रभावितकर तुम्हारी सेवाके लिए विशेष रूपसे प्रेरित किया। मैंने अपना कर्तव्य या अधिकसे अधिक अपने आन्तरिक भावोकी तृप्ति समझकर वैसा किया।"

"यदि मेरे आन्तरिक भावोकी तृप्ति तुम्हारा ऋणी होकर रहनेसे होती है, तो क्या तुम उससे मुझे वंचित करोगी?"

"ख़ैर! बहादुर सिपाही! जो तुम्हारी मर्जी! ऋणके बंधनसे तुम बाँधना चाहते हो?"

"तुमको नही, अपनेको। ऋणी बधनमें रहता है, ऋण देनेवाला नही।"

"लेकिन, डेवी, मुझे आश्चर्य होता है, कैसे दो-दो हफ्ते तक अखबारोकी खबरे सुनाती रही, मौसिम और लदनकी गप्पे बतलाती रही, तुमने प्रश्न भी किए, लेकिन कहीसे पता नही लग सका कि मै 'आधुनिक अर्थशास्त्रकी कुछ असत्यताएँ' के पाठक और प्रशंसकसे बात कर रही हूँ।"

"जेनी, तुमने पढना कब छोडा?"

"मै ऑक्सफोर्डके मेड्लेन कॉलेजकी छात्रा हूँ। युद्धके समय—जब कि देशके लाखो नौनिहाल अपनी बलि चढा रहे थे—छतके नीचे बैठकर किताबोके पन्ने उलटना, मैने अच्छा नही समझा। और आज तुम मुझे यहाँ नर्स देख रहे हो। बी० ए०की परीक्षामे ३ मास रह गए थे, जब कि मैने कॉलेज छोड़ा। मुझे परीक्षाकी परवाह नही। तुम सच कहते हो, पूरे तौरसे नही तो कुछ अंशोमे मैं जरूर पिताकी बौद्धिक सम्पत्तिकी अधिकारिणी हूँ। मेरा भी विषय अर्थ-शास्त्र और राजनीतिशास्त्र है, मै भी अपने पिताहीके अर्थशास्त्रीय और राजनीतिक विचारोको मानती हूँ।"

खुशीसे आपेसे बाहर होकर हाथ मिलाते हुए देवराजने कहा—"इतनी समानता ! !"

"मार्क्सवादी ! और इतने दिनो तक हम एक दूसरेको जान न सके ! !"

"शतश. धन्यवाद ।"

"किसको ?"

"तुमको, न स्वीकार हो, तो सयोगको ।"

जेनीने एक बार अपनी दोनो नीली आँखोको देवराजकी हँसती काली आँखोपर गड़ाकर देखा । वह बड़ी सुन्दर मालूम होती थी । देवराजके हर्षातिरेकके कारण उसके प्रशस्त ललाटपर कुछ श्रमविन्दु उछल आए थे । जेनीने अपना रूमाल निकालकर उन विन्दुओको पोछा । देवराजके नेत्र गीले थे, और वही अवस्था थी जेनीकी । दोनो थोडी देर नीरव रहे ।

देवराजका शरीर शिथिल मालूम होता था, जेनीने देखा, तो बदनमे कुछ हरारत थी, उसे दो डिग्री बुखार आ गया था । देवराजने बहुत समझाया, किन्तु जेनीके दिलमे घबराहट हो गई । डाक्टरने सलाह दी, कि रोगीको गभीर चिन्तनसे दूर रखना चाहिए ।

× × ×

देवराज अब भी चारपाईसे नीचे उतर नही सकता था, लेकिन उसके शरीरमे काफी बल आ रहा था । जेनीने एक दिन बहुत पसोपेशके बाद कर्नल ज्यॉफ़रेकी मृत्युका समाचार सुनाते हुए कहा—

"डेवी, श्रीमती ज्यॉफ़रे उस दिन तुम्हारे स्वास्थ्यपर बुरे असरका ख्याल करके यह खबर तुमको न दे सकी । तुम्हे देखनेके लिए वह बार-बार आना चाहती थी, लेकिन, जब तक कि कर्नलकी

मृत्युकी खबरको मैं तुम्हारे लिए सह्य न बना सकूँ, तब तक उन्होंने अपनेको रोक रक्खा। तुम कर्नलकी बात पूछते ही और फिर वह क्या जवाब देती।"

देवराजने लम्बी साँस भरकर कहा—"जेनी, शायद, तुमको मालूम नही, कभी इसका जिक्र भी न आया। कर्नल मुझे पुत्रकी तरह म. [illegible] थे। तुम्हे पता नही, हिंदुस्तानमे गए अंग्रेजोका हिंदुस्तानियोके साथ कितना अपमानपूर्ण बर्ताव होता है। हिंदुस्तानी उनके लिए गुलाम है, इसलिए मनुष्य समझे जानेके भी अधिकारी नही है। हम तो अंग्रेज़ जातिको उन्ही चंद अंग्रेज़ो द्वारा परखते है, जिन्हे कि हम अपने बीच में देखते है। मै मानता हूँ कि यह अंग्रेज जातिके साथ सरासर अन्याय है। लेकिन, तुम्ही बतलाओ—हिंदुस्तानके करोडो आदमियोके लिए, इस विषयमे अपनी राय कायम करनेका दूसरा उपाय क्या है? हिंदुस्तानमें रहनेवाले अंग्रेज़ सौमें सौ ही इतने अभद्र नही हैं, लेकिन कुछ ऐसी परम्परा बँध गई है कि कोई भद्र अंग्रेज भी अपने दूसरे जाति-भाइयोके विरोधके कारण हिंदुस्तानियोंके साथ भद्रोचित सम्बन्ध स्थापित करनेसे डरता है। मैं मानता हूँ, इंग्लैडमें आकर अंग्रेज़ जातिके प्रति हरेक भारतीय-को अपना विचार बदलना होगा। इंग्लैडके सभी क्या बहुसंख्यक स्त्री-पुरुष अपनेको स्वामी और भारतीयोको हीन और दास समझने-की गलती नही करते। मेरा यह सौभाग्य था कि मुझे कर्नल ज्यॉफरे-के सम्पर्कमें आनेका अवसर प्राप्त हुआ। मै देशकी स्वतंत्रताका उग्र पक्षपाती हूँ। मेरे कण-कणमे परतंत्रताके प्रति अपार घृणा है। इस परतंत्रतासे क्षण-क्षण मुझे अपना दम घुटतासा मालूम पड़ता है। तुम यह मत समझो कि मैंने अंग्रेज़ोंकी मददके लिए इस युद्धमें अपनेको डाला और कदम-कदमपर जबर्दस्त खतरोंका आवाहन किया—नहीं। मैने यह सब कुछ युद्ध-विद्यामें निपुणता

प्राप्त करनेके लिए किया; जिस निपुणताको पहला ही मौका मिलनेपर अंग्रेजोके खिलाफ़ इस्तेमाल करनेको मैं तैयार हूँ। देशकी दासता और अपमानने मेरे लिए अपने जीवनको कौड़ी मूल्यका कर दिया वह भार है। आत्महत्त्या करके भी मैं उससे मुक्त हो सकता हूँ लेकिन यह ऐसी खुदगर्जी होगी जिसे मानवोचित नही कहा जायगा। जीवनको गँवाना ही है तो किसी अच्छे कामके लिए—और जिस देशने इस शरीरको जन्म दिया उसकी करोड-करोड सन्तानोके लिए अर्पण करनेसे बढकर इस जीवनका दूसरा उपयोग क्या हो सकता है? "

"डेवी, शायद, मैंने कर्नलकी मृत्युका समाचार इतनी जल्दी देकर गल्ती की। "

"नही, प्यारी जेनी, तुम डरो मत। मै काफ़ी स्वस्थ हूँ। मै अपने एक परम स्नेहीकी दुःखद मृत्युकी वेदनाको अच्छी तरह बर्दाश्त कर लूँगा। मेरा मन बहुत ज्यादा बुद्धि-प्रधान है। वह भावुकतासे बिल्कुल शून्य है यह तो मैं नही कहता, लेकिन उसका अंश उसमे बहुत कम जरूर है। कर्नल ज्यॉफ़रेकी मृत्यु मेरे लिए बहुत भारी वैयक्तिक हानि है। इतना अधिक स्नेह और इतना अधिक सन्मान किसी एकके लिए मेरा कभी भी नही हुआ। उनके गुणोकी स्मृति मेरी चिरस्थायी सम्पत्ति है, लेकिन, सबसे बढकर मुझे उनसे जो शिक्षा मिली, वह है कुछ व्यक्तियोंके दुर्गुणके कारण सारी अग्रेज जातिको तिरस्कारकी दृष्टिसे न देखना। भारतके सैकड़ों अंग्रेज़ोंके दुर्व्यवहार—जिन्हें मैंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे अनुभव किया—के कारण जो दुर्भाव एक जातिके प्रति मेरे दिलमें उठा था, उसे इस एक अग्रेज़ने मेरे दिलसे बिल्कुल मिटा दिया। "

"तो क्या मै श्रीमती ज्यॉफ़रेको सूचित कर दूँ?"

"जरूर! यह काम कुछ पहले करना चाहिए था। उनके

शोकके भारको हार्दिक सान्त्वना प्रदर्शित कर हम कुछ सह्य बना सकते है।"

× × ×

श्रीमती ज्यॉफरे लंदनके दूसरे छोरपर रहती थी। जेनीसे वह बराबर देवराजके स्वास्थ्यकी हालत फोनपर पूछा करती। वह उत्सुकतापूर्वक जेनीके निमत्रणकी प्रतीक्षा कर रही थी। उनको विश्वास था कि देवराज ही एक ऐसा व्यक्ति है, जो कर्नलकी मृत्युके शोकका काफी भाग वहन करता है, और दोनोकी पारस्परिक सान्त्वना उनके शोकको कुछ हलका कर सकती है।

देवराजने जिस वक्त श्रीमती ज्यॉफरेको अपने सामने आते देखा, अपने हृदयको बहुत दबाना चाहा; लेकिन, मालूम होता था आँसुओका तूफान आँखोकी तरफ फूट निकलना चाहता है। वह देर तक दरवाजेसे आती सूरतको एकटक देखता रहा—इस ख्यालसे कि आँखोके आँसू आँखोमे ही रहे, लेकिन पलकोका गिरना एक हद ही तक रोका जा सकता है। जिस वक्त श्रीमती ज्यॉफरे उसकी चारपाईके पास पहुँची, उस वक्त वे आँसू गिर पडे। श्रीमती ज्यॉफरेने देखा। उन्होने झुक कर उसकी पेशानीपर चुम्बन दिया, साथ ही आँसुओकी गरम गरम दो बडी बूँदे देवराजके प्रशस्त ललाटपर चू पडी। देवराजने रुद्ध-कठसे कहा—

"माम, मुझे तुमने पहले सूचित नही किया। क्या तुमने मुझे अपनी वेदनाओमे सहभागी होनेके योग्य नही समझा?"

"नही, बेटा, तुम्हारे स्वास्थ्यका ख्याल करके मुझे वैसा करना जरूरी था। तुम मेरे इतने नजदीकी हो कि तुमसे किसी बातके छिपानेकी मुझे जरूरत ही क्या? इन चार हफ्तोंको मैंने मुश्किलसे गुजारा है। टेलीफोनसे तुम्हारे स्वास्थ्य-सुधारकी खबर

सुनकर मुझे संतोष नही हो सकता था। जॉनी जैसे पति, पत्नियोके-भाग्यमें विरले ही मिलते है।.. "

श्रीमती ज्यॉफ़रेका गला बिल्कुल भर आया और आँखोसे आँसू की धारा बह रही थी। देवराजके लिए उन्हें धैर्य देनेसे अधिक अपने धैर्यको ही रोकना मुश्किल हो रहा था। उसकी आँखोमें आँसू छलछला रहे थे और मुँह खोलनेमे आवाज टूटनेका डर था। उसने भर्रायी हुई आवाजमे कहा—

"मम, पापामे इतने अधिक गुण थे, उनका स्वभाव इतना सरल और व्यवहार इतना मधुर था, कि उन्हें हम एक दिनके आँसुओसे नही भुला सकते। तुम्हे यह समझ कर संतोष करना होगा, कि उनके वियोगकी व्यथाको सहनेके लिए तुम्हारा एक दूसरा भी साथी है। "

"हाँ, बेटा डेवी, सबसे आखिरी पत्रमे उन्होने तुम्हारे बारेमे बडी उत्सुकतासे पूछा था—'डेवी अबकी बार बुरी तरह घायल हुआ है। मै बडा चिन्तित रहता हूँ। और चिन्तित क्यो न होऊँगा ? हमने डेवीके रूपमे पुत्र-स्नेह पानेका सौभाग्य प्राप्त किया... '।"

देवराज और श्रीमती ज्यॉफरे देर तक नीरव अश्रु बहाते रहे।

२२

प्रेम

फ़रवरी (१९१६)का महीना था। देवराजको अस्पतालमे आए चौथा महीना बीत चुका था। अब वह चारपाईसे उठकर कुछ चल-फिर सकता था। उसके घाव भर आए थे। उसको यह सुनकर बहुत अफसोस हुआ कि घावने बाएँ हाथको बेकार कर दिया है, और अब वह सैनिक सेवाके योग्य नही रहा। देवराज 'विक्टोरिया-क्रॉस' पानेवाला पहला भारतीय था। पदक प्रदानकी सूचनाको कहनेके लिए उस दिन ख़ासतौरसे राजमाता अलक्जेन्ड्रा अस्पतालमें आईं। बड़ी तैयारी थी। सभी चारपाइयाँ और अस्पतालके भीतरकी एक-एक चीज़ सुदरतासे सजाई गई थी। घरसे बाहर हाथों मोटी बरफकी चादर बिछी थी; लेकिन गरम पानीके नलोंसे गरमाये हॉलोमे फूलोके गुलदस्ते सजे थे। राजमाताके कमरेमें आनेके साथ कितने ही रोगी अपनी चारपाइयोंसे खड़े होकर हाथ मिला रहे थे। देवराज तब तक अपनी चारपाईसे नही उठा, जब तक कि रानी अलेक्जेन्ड्रा उसकी चारपाईके बिलकुल पास नही पहुँच गईं। उसने उठकर साधारण शिष्टाचार दिखलाते हुए हाथ मिलाया। रानीने उसके स्वास्थ्यके बारेमे पूछा, फिर अपने देश और राजाके लिए बहादुरी दिखलानेकी प्रशसा करते हुए सर्वोच्च सैनिक पदक 'विक्टोरिया-क्रॉस' पानेकी ख़ुशख़बरी सुनाई। बाईस बरसके तरुण भारतीयके इस अद्भुत शौर्य और युद्धचातुर्य पर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ।

उन्होंने ख़ास तौरसे देवराजसे कहा—"यदि मैं कोई भी काम तुम्हारे लिए कर सकूँ तो तुम निःसंकोच मुझसे कहना। मैं तुम्हारे लिए एक पत्र भेजूँगी, जिसको दिखलानेसे तुम्हें मेरे पास पहुँचनेमें कोई रुकावट न होगी।"

रानीका सौजन्य-प्रदर्शन देवराजके ऊपर उल्टा असर कर रहा था—मानो भारतका शताब्दियोंका अपमान उत्तेजित होकर उसके हृदयसे फूट निकलना चाहता था—"मैं यहाँ राजसेवा करनेके लिए आया हूँ! मेरी गर्दनका मूल्य इन्होंने इतना सस्ता समझ रक्खा है!" उसके भीतर यद्यपि एक जबर्दस्त आग भड़क रही थी, लेकिन देवराज अपनेपर काबू रखनेकी असाधारण क्षमता रखता था। उसने कृपा-प्रदर्शनके लिए रानीको धन्यवाद दिया। कमरेसे उनके विदा होते ही वह चारपाईपर पड़ रहा। उसके बदनमें बड़ी थकावट प्रतीत हो रही थी; मालूम होता था कि जोजीलाका डाँडा पार करके अभी अभी आया है। कुछ देर तक उसके दिमाग़में विचारोंके ताँते ज्वालामुखी तैयार कर रहे थे, और उसे बड़ी ख़ुशी हुई, जब कि विचार-शृंखला टूटने लगी और मन खड्डों और खाइयोंमें गिरने और उभड़ने लगा। एक क्षण स्मृति जागृत होती, दूसरे क्षण शून्य सा बन जाती। स्प्रिंगपर झूलनेकी तरह उसकी चेतना 'अस्ति-नास्ति'में गोता मारने लगी।

थोड़ी देर बाद आकर जेनीने देखा—देवराज गंभीर निद्रामें सोया पड़ा है। दोपहरके वक्त देवराजका इस तरह सोना जेनीके लिए असाधारण बात थी।

× × ×

बाहर शामसे ही अँधेरा था। बरफ बड़े जोरकी पड़ रही थी। भीतर हॉलमें बिजलीके सफ़ेद चिराग़ोंसे दिन-सा मालूम होता था।

आज जेनी बहुत बन-ठनकर आई थी। उसके बदनपर सटी हुई गुलाबी फलालैनकी बॉडिस थी, जिसपर घुटनो तक लटकती संक्षिप्त चुनाइयोवाली नीले रंगकी स्कर्ट थी। उसके लम्बे सुनहरे बालोंकी दुहरी वेणियाँ बडी सुदरतासे गूँथी पीठपर लटक रही थी। जेनीके ओठो और गालोकी ललाईके लिए किसी कृत्रिम चूर्ण या रंगकी आवश्यकता न थी। देवराजने जेनीके मुखको अनेक बार घंटों देखा था, लेकिन, उसे अंदाज न लग सका था कि जेनी इतनी सुंदर है। उसपर नजर पड़ते ही देवराज सोचने लगा कि आज जेनीको किन शब्दोमे सम्बोधित करूँ। लेकिन, अभी किसी शब्दके पक्षमे वह अपना निर्णय नही दे सका था, कि जेनीने आकर उसकी ठुड्डीपर हाथ रखकर कहा—

"डेवी, क्यो, क्या सोच रहे हो ? आज बडी नीद लगी थी ?"

देवराज शब्दोके चुननेके प्रयासको छोड बोल उठा—"हाँ, जेनी, आज मुझे नीद आ गई थी; लेकिन चित्त बिल्कुल प्रसन्न है। और आज तो तुमने मुर्दोको भी जिदा करनेका साज सजाया है।"

जेनीने शर्मीली निगाहसे देखते हुए कहा—"क्या तुमको पसद नही है ?"

"पसद ! हिदुओके पुराणोमे एक कथा आती है—इन्द्रके हज़ार नेत्र थे। मुझे भी चाह होती है कि आज भरके लिए मै भी सहस्रनेत्र इन्द्र बन जाता, और फिर तुम्हारे इस लावण्यको पान करनेके लिए मेरी ये दो आँखे अपर्याप्त न रहती।.."

"हाँ, अब तक तो मै तुम्हे सिपाही और राजनीतिज्ञ समझती थी, लेकिन अब मेरी धारणामे एक नया इजाफा हो रहा है—तुम कवि भी हो।"

"लेकिन, इसका श्रेय मुझको हर्गिज नही; इसकी सरस्वती तुम्ही हो।"

"रहने दो, मुझे बनाओ मत"—लाल गालोको और भी लाल करते हुए जेनीने कहा।

"गुस्ताखी माफ, सरकार! जो हुक्म, उसके लिए बंदा तैयार है।"

"डेवी, रानी अलेक्जेन्ड्रासे मिलते वक्त मैने तुम्हारी चेष्टासे ताड लिया था, कि तुम्हारे मनमे कोई आवेग चल रहा है। यद्यपि, तुमने शिष्टाचारका कही उल्लघन नही किया, लेकिन, वह भक्ति-प्रदर्शनसे बिल्कुल शून्य था। मै लौटकर आई, देखा—तुम बेहोश सो रहे हो। मुझे दोनोमे सम्बन्ध होनेका सदेह हुआ। और, सच कहूँ, इससे मेरी चिन्ता भी बढ गई; क्योकि डाक्टर बतला रहे है, कि तुम्हारे शरीरमे शक्ति उसी परिमाणमे नही आ रही है, जिस परिमाणमे तुम्हारा वजन बढ रहा है। पापा ऑक्सफोर्डसे आए है, और मेरे चाचाके साथ रीजेन्ट-पार्कके पास ठहरे हुए है। उनके पास मुझे जाना था। मेरा शरीर उधर जा रहा था, लेकिन चिन्तित मन तुम्हारे इस कमरेमें था। पापाने नई पोशाक खरीदनेके लिए कहा और इच्छा तथा अनिच्छा, दोनोसे विरत रहते मैने इसे स्वीकार किया। पहन लेनेके बाद जरूर ख्याल आया कि यह असाधारणता शायद डेवीके लिए कुछ मनोरंजन पैदा करे।"

"स्वादिष्ट भोजन तो ऐसे भी मधुर होता है, लेकिन, भूख लगी रहनेपर उसका स्वाद सौ गुना बढ जाता है। तुम्हारा अनुमान ठीक है। रानीसे मुलाकात और मेरी निद्रासे सम्बन्ध जरूर था। मेरे शरीरमे जितने सेर मास, हड्डी और खून है, उतनी ही देशके परतंत्र करनेवालोके प्रति घृणा है। उस घृणाके अतिरिक्त भी मेरे शरीरमे कुछ है, इसका मुझे कोई भी पता नही। खास कर उस वक्त जब कि उत्तेजना पाकर मेरे आतरिक भाव खौलने

लगते है। रानीके मुँहसे राज-सेवाकी बात सुनकर मेरा आत्म-सम्मान भडक उठा। मेरे वे भाव तुमसे छिपे नहीं है। सच कहता हूँ, कर्नल ज्याॅफरेकी मृत्युके बाद समझ रहा था कि मै अब और स्वच्छन्द हो शासकोके प्रति अपनी घृणाको सौ गुना बढाकर प्रज्वलित कर सकूँगा। लेकिन, मेरे विचारो, मेरे भावो, मेरी आकाक्षाओके प्रति तुम्हारी सहानुभूति मेरे उस रास्तेमे नई बाधा आ खड़ी हुई। शायद, वह घृणाकी ज्वाला स्वय जलते जलते मेरे शरीरको भी खाक कर देती, लेकिन तुम्हे देखते ही उसका वेग मद हो जाता है।"

"डेवी, मै तुमसे कह चुकी हूँ। अग्रेजोके गुलाम हिदुस्तानी—यह आशिक सत्य है। हिदुस्तानको गुलामकी तरह रखनेवाले सभी अग्रेज नही है। इंग्लैडके चार करोड अग्रेज भी उसी तरह उन्ही चन्द अंग्रेजोके गुलाम है, जिन्होंने कि अपने स्वार्थके लिए हिदुस्तानको गुलाम बना रक्खा है। क्या हमारे यहाँके ग़रीबोकी जिन्दगीको नरक बनाकर ये हमारे धनी गरीबोके खूनकी होली नही खेल रहे है? फरक इतना ही है कि तुम्हारे देशको दूसरे देशके चंद आदमियोने दास बना रक्खा है, और हमारे देशमें लोग अपने ही अपने भाइयोके खूनको चूस रहे है।.. "

"हाँ, मै तुम्हारी बातसे इन्कार नही करता, लेकिन कलेजेकी आगका भड़कना भी तो स्वाभाविक है। खैर, यह तो बताओ, पापा दो-एक दिन लंदनमें ठहरेंगे?"

"कल शाम तक। और एक बात मैने तुमसे बिना पूछे ही कर डाली है। मैने उनको तुम्हारा परिचय दिया है। बूढ़ोंका अपनी कृतिके प्रति सन्तानसे भी अधिक प्रेम होता ही है। मैंने कह दिया—एक हिंदुस्तानी तरुण सैनिक वी० सी० आपकी पुस्तक 'आधुनिक अर्थशास्त्रकी कुछ असत्यतायें'का बहुत प्रशंसक है। नही, 'कृतिका प्रेम' ठीक शब्दार्थमें मत लेना। मेरे पिता डेवी,

तुम्हारी ही तरह भावुकतासे बहुत कम प्रभावित होते हैं। मैंने घुमा फिरा कर यह बात उनसे कही, सबसे अधिक तुम्हारे धैर्य, बहादुरी, बुद्धिप्राखर्य और आदर्शवादिताके बारेमें कहा।"

"अच्छा, यदि तुम्हारी प्रेरणासे मेरे जैसा शुष्क आदमी कवि बन सकता है, फिर उस वक्तके बारेमें क्या कहना, जब कि तुमने स्वयं वाग्देवीका रूप धारण किया होगा।"

"हाँ तो, वह तीन बजे शामको यहाँ आनेवाले हैं।"

"यहाँ ? जेनी, तुम्हे हजार धन्यवाद ! मुझे प्रोफेसर ब्राउन्से मिलनेकी बडी इच्छा थी।"

"एक बात और। श्रीमती ज्यॉफ़रे आज मिली थी। वह आने-वाली है। कर्नल ज्यॉफरेने अपने वसीयत-नामेमे तुम्हारे लिए अपनी सम्पत्तिका आधा लिखा है। तुमने शायद श्रीमती ज्यॉफरेसे उसे उन्हीको देनेकी इच्छा प्रकट की है; लेकिन् वे मुझसे कह रही थी कि डेवीके ऐसा करनेपर मेरा चित्त और मेरी समझमें कर्नलकी आत्मा दु:खी होगी। वह कल खुद आयेगी और इसके बारेमें बात करेगी। सम्पत्तिके आधेमें चार हजार पाउण्ड और मकानका आधा है। कह रही थी कि पेरिसमें कर्नलने कई बार जिक्र किया था—'लडाई से बच रहनेके बाद डेवीको उच्च शिक्षा दिलानी है।' श्रीमती ज्यॉफ़रे इसे अपने पतिकी पवित्र वसीयत समझती है।"

"कर्नल ज्यॉफ़रेका हृदय असाधारणतया उदार था, और मेरे ऊपर उनकी कृपा आजन्म एक प्रिय स्मृतिकी वस्तु है। आदर्शके लिए उपयोगी शिक्षाके निमित्त मेरे हृदयमें अपार भूख है, और उसके लिए मै किसी अवसरको हाथसे जाने न दूँगा। लेकिन, जेनी, मेरी प्यारी, तुम्ही बतलाओ कि श्रीमती ज्यॉफ़रे —जिनका अपने पतिसे कम मेरे ऊपर वात्सल्य नही है—को आधी सम्पत्तिसे वंचित करना क्या मेरे लिए उचित होगा ? मै तरुण हूँ।

हाथ-पैर चला सकता हूँ। लेकिन, श्रीमती ज्यॉफरे अपने लिए एक पैसा कमा नही सकती। मैने तो यही तै किया है कि अपने हिस्सेको भी मै उनके नाम लिख दूँगा। और, यदि उन्हें अधिक खिन्न होते देखूँगा तो उनकी वसीयतका अधिकारी होना स्वीकार करूँगा। उनके जीवन भर अपने लिए एक पैसा लेना मै अनुचित समझता हूँ।"

जेनीने बड़े प्यारसे देवराजके सिरपर हाथ रक्खा; अपनी आँखोको उसके चेहरेपर गडाए—"डेवी, तुम्हारा हृदय भी उतना ही सुन्दर है जितना यह मुख। मुझे आश्चर्य है कि गोलोंकी एक छीट भी तुम्हारे चेहरेपर क्यो नही पडने पाई।"—कहकर जेनीने गालपर एक गरम गरम चुम्बन दिया।

देवराजने जेनीके दोनो कपोलोपर हाथ रख उसके स्वाभाविक लाल ओठोको चूम लिया और भावाविष्ट हो कहना शुरू किया—

"प्यारी जेनी, तुम मेरे रास्तेमें सुनहली बेडी तो नहीं साबित होओगी ? क्या मेरा फौलादी हृदय तुम्हारे मधुर प्रहारके सामने परास्त होगा ?"

"नही डेवी, मै तुम्हे आदर्शसे विचलित न होने दूंगी। मैने भी अपने सामने एक आदर्श रक्खा है, और मुझे बडी प्रसन्नता है, कि हमारे आदर्श एक दूसरेके विरोधी नही बल्कि सहकारी हैं। पापा कितनी ही बार कहते है—'हमने अपने आदर्शोपर सिर्फ कागज़के कुछ पन्ने काले किए है। उस आदर्शको जीवनमे लानेके लिए हमने क्या किया ?' डेवी, सन्तान ही तो पिताके जीवनका चिर-क्रमागत प्रवाह है। युद्ध तकके लिए तो मैने यह काम अपने हाथमें ले लिया है, लेकिन उसके बाद तो मै श्रम-जीवियोंकी सेवामें ही अपना जीवन अर्पण करना चाहती हूँ। तुम यह मत समझो कि पक्षपातके कारण ऐसा कहती हूँ। सचमच, मै तुम्हारे बहुतसे गुणोंसे

परिचित हूँ; लकिन धनके लिए इतनी निर्लोभिता—खास करके तुम्हारे माता-पिताकी ग़रीबी और कष्टमय बाल्य-जीवनकी बात सुनकर मै तो समझती हूँ, धनिक ज्यादा लोभी और मक्खीचूस होते है। वे अपनी वासना-तृप्ति या प्रतिष्ठाके लिए भले ही पानीकी तरह रुपये बहाये; लेकिन मुक्तत्याग जितना गरीबोमें मिलेगा, उतना उनमे नही। डेवी ओठोको कंपित मत होने दो। आखिर, तुम अपने मनमे भी दो पक्षोके प्रश्नोत्तर करते हो। मुझे उसीकी एक वाह्य प्रतीक समझो। हाँ, आठ ही वर्षकी अवस्थामे मुझे भी माँका वियोग सहना पड़ा, लेकिन मै दुनियामे अनाथ न थी। माँके रहते ही पिताके प्यारकी मै सबसे बड़ी अधिकारिणी थी। लेकिन, तुम ग्यारह सालकी उम्रमें माँ और बहनका बोझ लादे निःसहाय छोड दिए गए! अपने आदर्शके लिए तुम्हारी साधना सबसे जबर्दस्त है।"

"लेकिन सभी साधनायें मैने स्वेच्छापूर्वक नही की। मेरी साधनाओमे कई हाथ सहायक हुए। यदि भाई मोहनलाल जैसा मित्र और पथप्रदर्शक नही मिला होता तो नही मालूम, मै अब तक कहाँ रहता?"

"कृतज्ञता मनुष्यके हृदयका सबसे सुन्दर गुण है। मै देखती हूँ, कैसे छोटेसे छोटे उपकारको तुम अपने लिए स्मरणीय चीज समझते हो।"

"ये स्मृतियाँ मेरे लिए भार नही है। जब मेरे हृदयमे अवसाद और शून्यताका विस्तार होता है, उस वक्त ये स्मृतियाँ आशा और सन्तोषका संचार करती है, हमेशा मेरे ऊपर नया उपकार करनेके लिए तैयार रहती है।"

जेनीका ध्यान उस वक़्त देवराजकी माँकी ओर था। वह सुन चुकी थी, देवराजके हिन्दुस्तान छोड़ते ही वह प्लेगकी शिकार हुई। सन्तानोंकी वरासतके बारेमे प्रोफ़ेसर ब्राउन्के मुँहसे उसने सुना था।

खुद देख रही थी कि वह अपनी रुचि और प्रज्ञामे अपने पितासे कितनी अधिक मिलती है। जेनीको विश्वास था कि देवराज भी अपनी माँका प्रतिबिम्ब होगा। लेकिन, उसे अफसोस होता था, कि वह उस असाधारण माँको न देख सकेगी।

जेनीने बात आरम्भ करते हुए कहा—"तुमने बहुतसी बातें अपनी माँसे पाई होंगी ?"

"सभी बातोंके बारेमे तो नही कह सकता। मेरी माँ आजन्म अनपढ़ रही। लेकिन किसीको शिक्षा पानेका अवसर ही नही मिला तो प्रतिभाका क्या दोष ? मै समझता हूँ, तुम्हारा कथन बिलकुल ठीक है। मेरा चेहरा तो माँसे इतना मिलता-जुलता था, कि बचपनमें मुझे साडी पहनाकर मेरी माँकी सहेलियाँ मुझे 'राधा' 'राधा' कहा करती थी।"

"ओह ! कितनी समानता ! मुझे भी पापाका फोटो कहते है। और तुम्हारी बहन पार्वती ?"

"सूरत और आदत, दोनोमे वह माँसे नही मिलती। माँको किसीसे झगडते नही देखा गया। लोग कहते थे कि वह मोहनी मत्र जानती है। लेकिन पार्वतीका मिजाज चिडचिडा है। खेलमें लडकोसे अक्सर झगड बैठती थी।"

"शायद मैं उसे कभी देख सकूँगी।"

"शायद।"

× × ×

शामको जेनीके साथ प्रो० ब्राउन् अस्पतालमे आए। देवराजने बडे हर्षके साथ उनका स्वागत करते हुए कहा—

"प्रोफेसर महाशय, आज आपका दर्शन पाकर मै अपनेको कृतकृत्य समझता हूँ। मै आपका अदृष्ट शिष्य हूँ। अर्थशास्त्र-

सम्बन्धी आपकी कई पुस्तकें मैने पढी है। कितने ही गम्भीर विषयोंको जितना सरल और सुबोध रीतिसे आप बतलाते है, वैसा करते मैने किसी आधुनिक ग्रथकारको नही देखा। बहुतसे ग्रंथकार तो स्पष्ट बातको भी शब्दोके जजालमे डालकर अज्ञेय बना देते है। 'अतिरिक्त मूल्य' या 'कमकरोके वेतन' की लूटको पूँजीका सम्मानित नाम दिया गया है—इस सिद्धान्तको मार्क्सके भावोमे स्पष्ट करते हुए आपने कितनी सुन्दरतासे अपने 'आधुनिक अर्थशास्त्रकी कुछ असत्यताये'मे लिखा है? मुझे अपने उद्गारको इस तरह धृष्टताके साथ आपके सामने प्रकाशित करनेके लिए क्षमा करे। कुमारी ब्राउन्से आपके स्वभावके बारेमे मै बहुत सुन चुका हूँ।"

"मै यह तो नही कहता कि अपने ग्रथोकी प्रशसा मुझे कड़वी लगती है, खास करके यदि वह प्रशंसा एक पारखी द्वारा की जाती हो तो किस लेखकको नापसन्द आएगी? लेकिन, मिस्टर सिंह मैं अपनी कमजोरियो और असफलताओको भी जानता हूँ। मुझे अपनी शैलीको और भी सरल और सुबोध करना था, क्योंकि अर्थशास्त्रकी उपयोगिता कुछ प्रतिभाशालियो तक ही परिमित नही है।"

"मै आपकी बातका विरोध नही करता। सम्भव है, आप जितना चाहते थे, उतना न कर पाए हो; लेकिन हमारे जैसे जितना चाहते थे, उन्होने उतना ही सरल और सुबोध आपके ग्रथको पाया; साथ ही सरलता और सुबोधताकी कीमत अदा करनेके लिए पदार्थोंके गम्भीर विवेचनमे भी कमी नही की गई।"

"खैर, आपकी सहृदयताके लिए धन्यवाद! बतलाओ मिस्टर सिंह, अब तुम्हारे शरीरमें बल और स्फूर्तिकी क्या हालत है?"

"बल और स्फूर्ति आ रही है और शीघ्रताके साथ। मुझे अफ़सोस है कि बायें हाथने धोखा दिया और अब मै सैनिकसेवाके योग्य नही रहा।"

"तो, क्या तुम मृत्युको लालसाकी चीज समझते हो ?"

"एकदम 'हाँ'-'नही'मे तो नही जवाब दे सकता; लेकिन सैनिकका कार्य बुरे और भले दोनो तरहके कामोमें इस्तेमाल हो सकता है।"

"तुम जानते हो, मै 'शान्तिवादी' नही हूँ। खास करके किसी भी क़ीमतपर शान्ति मुझे पसन्द नही। श्रमजीवियोको अपनी सेना तैयार करनी होगी। दूसरेका खून चूसनेवाली जोकोका कभी हृदय-परिवर्तन न होगा। अच्छा, मुझे खुशी है, कि एक सैनिक सेवासे वंचित होकर तुम दूसरी सेवामें भर्ती होओगे।"

"हाँ, इसकी मुझे भी खुशी है। सेना-विज्ञानको एक परिमित क्षेत्रमें मुझे उपयोग करनेका मौका मिला और वह भी, मै नही कह सकता, श्रमजीवियोके प्रत्यक्ष फायदेके लिए था। आप ऐसे विद्वानोकी कृतियोसे जो कुछ ज्ञान मुझे मिला है, उसे मै ज्यादा लाभदायक तौरसे कमकरो और अपने देशकी आजादीके लिए इस्तेमाल कर सकूँगा। खैर, आपकी मुलाक़ातसे मेरी चिर-पोषित अभिलाषा पूरी हुई। कुमारी ब्राउनने अस्पतालके इन चार महीनोंमे मेरे ऊपर बहुत-से उपकार किए है, और आज उन्हीकी कृपासे आपके दर्शनका सौभाग्य प्राप्त हुआ।"

जेनी तिरछी आँखोंसे देवराजकी ओर देखते हुए भौहोंके कम्पन द्वारा बतला रही थी—"शाबाश! बातोंके कलाकार! तुम मेरी तारीफके पुल बाँधो और मै तुम्हारी!"

प्रोफेसरने विदा होते हुए कहा—"तरुण, आदमी शरीरसे चिरंजीवी नही रहता, लेकिन विचारोकी चिरजीविता उसे बडी प्यारी होती है। मै समझता हूँ, हमारे परिचयका आज आरम्भ होता है। मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी, यदि अस्पतालसे निकलनेपर तुम मेरा आतिथ्य स्वीकार करो—कमसे कम तब तकके लिए, जब

तक कि तुम्हारा शरीर काम करने लायक़ न हो जाय। अच्छा, पुनर्दर्शनाय।"

"आपकी कृपाके लिए अत्यन्त आभारी। पुनर्दर्शनाय।"

२३

वृद्धाका वात्सल्य

देवराजको अब अस्पतालमे रहनेकी आवश्यकता न थी। सैनिकोंके लिए सुरक्षित एक सेनिटोरियम्मे उसे भेजा गया। जेनी भी एक महीनेकी छुट्टी लेकर उसके साथ गई।

उस दिनकी बातोंका ख्याल करके जेनी मुस्कराई और देवराजकी आँखोको छै अगुलसे देखते हुए उसने ताना मारा--

"हजरत, आँ जनाब बात करनेमें बडे उस्ताद है। 'कुमारी ब्राउन्'-'कुमारी ब्राउन्'की तो आपने झडी लगा दी थी। धन्य है कुमारी ब्राउन्, जिन्होने कि आपके ऊपर उपकारोका पहाड लाद दिया।..... "

देवराजने अचानक जेनीकी आँखोपर बोसा देते कहा--"तो, आप खफ़ा है क्या ?"

"खफ़ा होनेकी बात ही है। कृतज्ञता प्रकाशित करना था तो मेरे पीठ पीछे भी उसका मौका मिल सकता था।"

"और, उस वक्तकी प्रतीक्षा करते यदि मौक़ा ही हमेशाके लिए जाता रहता ?"

"मौक़ा कैसे जाता रहता ?"--प्यारका रोष दिखलाते हुए जेनीने कहा।

"यदि प्रोफेसर जान जाते कि उपकारोने चिरदासताकी माला पहना दी है......"

"अच्छा, मालूम हो गया, वाद-विवादमें भी तुम 'विक्टोरिया-क्रास' पानेके अधिकारी हो।"

"अधिकारी क्यो न होऊँगा जेनी, जब तुम्हारी कृपा. . . ."

"कृपा नही प्रेम।"

देवराजने जेनीका गाढालिगन करते हुए थोडी देर नीरवता धारण की।

"प्रेम बडी भयकर चीज है! मै इसे हमेशा हलाहल समझता रहा। लेकिन, तुम्हारे हाथोमे जेनी, हलाहल भी अमृत सिद्ध होगा।"

"नही, हम वह हलाहल प्रेम नही चाहते। हम उस प्रेमको चाहते है जो दुरारोह घाटियोपर चढनेवाले दो साथियोको हिम्मत न हारने दे; थकावटसे चूर चूर हुए उनके शरीरमे स्फूर्ति पैदा करे भारीसे भारी खतरे और अंतिम उत्सर्गके लिए उनके दिलोको मजबूत करे। यदि तुम्हे श्रमजीवियोके स्वतन्त्र युद्धमे जाना होगा तो जेनी रायफल हाथमें लिए कंधेसे कधा मिलाकर तुम्हारे साथ जायगी। वह तुम्हारी छातीको गोलीसे बचानेका प्रयत्न न करेगी; बल्कि तुम्हारे प्रतिशोधके लिए अपनी गोलियोको सँभाल रक्खेगी। अज्ञान और भावुकतापूर्ण त्यागको वह महत्त्व न देगी। आदर्शोके लिए मरना और आदर्शोके लिए जीना—यही हम दोनोके जीवनको एक सूत्रमें बाँधेगे।"

"ऐसे साथीकी उपयोगितासे मै इनकार नही करता। मै समझता हूँ, हम दोनो एक दूसरेके पूरक होगे; लेकिन प्रेमके नामसे जो अधेरखाता मचा हुआ है, जितने अरमान और आदर्श प्रेमकी वेदीपर बलि चढे है, जितने होनहार तरुण-तरुणियाँ अपने पथसे विचलित हुई है, क्रान्तिकी आगमे तपे जितने वज्रहृदय प्रेमके फूलोंके बाणसे चूर्ण चूर्ण हो गए है, उनको देखते हुए मेरी धारणा थी—धारणा क्या वह प्रतिज्ञाकी हद्द तक पहुँच चुकी थी—कि मै किसीसे प्रेम न करूँगा।"

"डेवी ! क्या सचमुच मैने प्रतिज्ञा तुडानेका अपराध किया ? यदि ऐसा हुआ है, तो मुझे बडा अफसोस है।"

"नही, जेनी, मेरी प्यारी, मैने भी प्रतिज्ञाएँ की है; लेकिन इतनी जल्दी प्रतिज्ञा करनेकी मुझे आदत नही। हाँ, मेरी धारणा ऐसी जरूर थी, और इसके लिए मेरे सामने बहुतसे ऐसे उदाहरण थे, जिनमें क्रान्तिको कितने ही आशावान् तरुण-जीवनोसे वंचित होना पडा। लेकिन, जेनी, तुम क्रान्तिकी प्रतिद्वन्द्वी नही हो। और, तुम उसके पथपर चलनेमे मेरे लिए बाधक नही हो सकती।"

जेनीके सुनहले बालोवाले सिरको अपनी गोदमे लिए उसकी ठुड्डीपर अपने दाहिने हाथकी उँगलीको रक्खे, उसकी नीली आँखोको गम्भीरतासे देखते देवराज कितने ही समय तक अपने हृदयको खोलकर रखता रहा। यद्यपि उनके वार्तालापने गम्भीरताका रूप धारण किया था, लेकिन मालूम होता था, वे दोनो इस धरतीको छोडकर किसी दूसरे लोकमें चले गए है—ऐसे लोकमे, जहाँ स्वार्थका नाम भी सुननेमे नही आता, जहाँ आत्मोत्सर्ग और सहृदयताका अखड राज्य है, जहाँ आदर्श और सद्भावनाके सूर्य-चाँद उगे रहते है. मेरा और तेराके लिए जहाँ कोई स्थान नही।

स्थान-परिवर्तनके कारण श्रीमती ज्यॉफरेको आज आनेके लिए सूचना दी गई थी। जेनीने देखा, उनके आनेका समय है, घड़ीमें १० बज रहे है। इसी वक्त घंटीकी आवाज आई। जेनीने दरवाजा खोला। श्रीमती ज्यॉफरेने हाथ मिलाते हुए कहा—

"हलो मिस् जेनी ब्राउन्, तुम्हारी बडी कृपा है जो डेवीके साथ तुम यहाँ आईं। मै तो बडी उत्सुक थी। उसे अपने घर ले जाना चाहती थी। तुम जानती हो, हमारा अपना घर है। छै कमरे किराएपर दे रक्खे है। लेकिन देवराज संकोचशील लड़का है, इसलिए मैने इतनी जल्दी उसपर जोर देना नही चाहा। मुझे

विश्वास है, कि तुम उसे वहाँ चलनेके लिए राज़ी करनेमें मेरी सहायता करोगी।"

"ज़रूर, श्रीमती ज्यॉफरे!"

दोनो हाथमे हाथ मिलाए बैठकखानेमे गई। देवराज स्वागतके लिए आगे बढा।

"सुप्रभातम्"—कहते हुए उसने श्रीमती ज्यॉफरेके बैठनेके लिए कुर्सी बढाई। श्रीमती ज्यॉफरेने देवराजके ललाटपर चुम्बन देते हुए कहा—

"सुप्रभातम्, डेवी, अब तुम्हारे चेहरेपर लाली आने लगी है।" और रुद्ध कंठसे बोली "आज जॉनीको तुम्हे देखकर कितनी ख़ुशी होती?" यह कहते कहते उनकी ऑखोमे ऑसू भर आए। जेनीको एक कुर्सीपर बैठनेका इशारा करके देवराज सामनेकी कुर्सीपर बैठते हुए बोला—"हॉ, माम्, उनकी बडी इच्छा थी कि मेरी छातीपर 'विक्टोरिया-क्रास' टँगा देखते। माम्, तुम बहुत चिन्ता करती हो, तुम्हारे शरीरपर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड रहा है।"

"हाँ, बेटा, चिन्ता तो जरूर होती है, लेकिन उसे दूर करनेकी बराबर कोशिश करती हूँ। शायद जॉनीको भुलाना मेरे बसकी बात नही है। जब कभी एकान्तमें होती हूँ, कितनी ही बार जॉनीका मुस्कराता चेहरा मेरे अश्रुपूर्ण नेत्रोसे ओझल हो जाता है। तुमसे एक बात कहना चाहती हूँ....

"माम्, क्या तुम उम्मीद करती हो, कि मै तुम्हारी आज्ञा..."

"नही बच्चा, मेरा यही कहना है कि तुम, अपने घरमें चलो। मैं किसी दूसरी बातके लिए जरा भी जोर नही दूँगी, लेकिन तुम्हारे साथ रहनेसे तुम खुद समझ सकते हो, मेर चित्तको बडी सान्त्वना मिलेगी। क्यों कुमारी ब्राउन्, तुम्ही बतलाओ, इसमे मेरा थोड़ा स्वार्थ जरूर हो सकता है, किन्तु बात ठीक तो है?"

"मैं आपसे सहमत हूँ।"—जेनीने देवराजकी आँख बचाते हुए कहा।

"माम्, आपकी आज्ञा मुझे शिरोधार्य है, किन्तु एक प्रतिज्ञा-के पालनमें मुझे पूरी उम्मेद है, आप मेरी सहायता करेंगी।"

"जरूर बेटा, वह क्या ?"

"सम्पत्तिमेंसे कुछ भी लेनेके लिए मुझसे आग्रह नही करेंगी।"

"लेकिन, जब तक तुम पूरे स्वस्थ नही हो जाते......।"

"उस वक्त तक आपकी सहायता मुझे उज्र न होगा।"

"और मेरे मरनेपर।"

"मै आपका बच्चा हूँ। लेकिन ख्याल रक्खे मेरे पास सम्पत्ति नही रह सकेगी।"

"साथ ही, मै यह भी जानती हूँ, कि तुम उसका बेहतर इस्ते-माल करना जानते हो। एक बात और—जॉनीको तुम्हारे पढानेका ख्याल था।"

"मै पढूँगा जरूर, मगर उसके लिए मुझे किसी कालेज या विश्वविद्यालयमे जानेकी जरूरत नही। माम, इस जगसे मतभेदके साथ तुम मुझे अपना आज्ञाकारी पुत्र समझना।"

श्रीमती ज्यॉफरेने आँखोंको गीली करते हुए कहा—"सो मुझे पूरा विश्वास है। कुमारी ब्राउन्, मै समझती हूँ, तुम भी हमारे घरको अपना घर समझोगी। डेवीपर तुम्हारी असाधारण कृपा रही है। जॉनीकी मृत्युको छिपानेके लिए मुझे बलात् उतने दिनों तक अपनेको रोकना पडा, लेकिन तुम्हारी उपस्थितिने मुझे निश्चिन्त कर दिया था।"

"आपकी कृपाके लिए आभारी हूँ। मै तो इसके लिए आपसे आज्ञा माँगनेवाली थी। हम दोनो स्वप्नचारी आदर्शवादी है। मेरे लिए अपने द्वारको खोलकर आपने बडा अनुग्रह किया।"

"नही, अनुग्रहकी कोई बात नही, तुम दोनोकी उपस्थिति मुझे अपने शोकको भूलने मे बहुत मदद देगी। और तुमने उस दिन कहा था—प्रोफेसर ब्राउन् देवराजके पास आनेवाले है।"

"पापा आए थे, डेवीसे बहुत प्रभावित हुए, असाधारण तरुण कह रहे थे।"

देवराजने पेशानीपर सिकुडन लाकर कहा—"मत झूठमूँठ मेरी मिट्टी पलीद करो। तुम जानती हो, मैं प्रोफेसर ब्राउन्का पहलेसे ही कितना भारी प्रशसक था, और उस दिन उनके व्यवहार और व्यक्तित्वने मुझे अपना भक्त बना लिया।"

श्रीमती ज्यॉफ़रेने हर्ष प्रकट करते हुए कहा—"सो डेवी, पहली ही मुलाकातने प्रोफेसर और तुमको बहुत नजदीक कर दिया?"

"हॉ, माम्, और आगे मेरे कालेज और विश्वविद्यालय, प्रोफ़ेसर स्टेन्ली ब्राउन्के चरण होगे। उनकी पुस्तकोमे मैने बहुत सीखा है, और जब कभी उनकी सेवामे उपस्थित होनेका मौका मिलेगा, मै उनके अथाह ज्ञानसमुद्रमें गोता लगाए बिना नही रहूँगा।"

"और गोता लगानेके लिए तुम्हे तरसना नही पडेगा"—जेनी ने कुर्सीसे उठते हुए कहा "मुझे आज्ञा दे, श्रीमती ज्यॉफरे, डेवीके लिए सूप ला दूँ। डाक्टरने इस वक्त चूजेका सूप देनेके लिए कहा है।"

"मै तुम्हारे काममे बाधा तो नही दे रही हूँ, डेवी।"

"नही माम, यह सारा समय तुम्हारा है। मध्याह्न-भोजन भी यही करके जाना होगा, कुमारी ब्राउन्ने इसका प्रबन्ध कर रक्खा है।"

"धन्यवाद, कुमारी ब्राउन्, तुम्हारी बडी कृपा है!"

"नही मा—माम् " आधा कहते जेनी शर्मा गई।

"नही, सकोचकी बात नही जेनी, मेरी बेटी, जानती नही हो, स्त्रियोको मम्मी कहलानेकी कितनी लालसा होती है। आजसे मै तुम दोनोके मुँहसे मम्मी ही सुननेकी आशा रक्खूँगी। जेनी, तुम्हारी माँ है?"

"नही मम्मी, उसकी मृत्युके समय मै आठ ही वर्षकी थी।"—कुम्हलाए चेहरेसे अवनत मुख हो जेनीने कहा।

"अबोध बच्ची, मुझे कितना दु.ख है। तुम तरुणोकी वात मैं नहीं कहती, मेरा भगवान्के अस्तित्वमे विश्वास है। लेकिन जिस वक़्त देखती हूँ, छोटे बच्चोको मॉकी गोदसे वंचित होते, या गुलाबी गालोवाले नन्होको माँकी गोद सूनी कर कुम्हलाते, उस वक्त मेरे विश्वासपर भारी धक्का लगता है। यह ईश्वरकी दयालुतापर भारी दोष है। मेरे भी एक बच्चा था, तीन ही वर्षकी उम्रमे जाता रहा। यदि जीता रहता तो आज डेवीकी उम्रका होता। सचमुच, डेवीको देखकर सजीव फ़िट्ज़ सामने आ जाता है। कर्नलको तो डेवीके दूसरे गुणोंने मोहा था, किन्तु मैंने चुपकेसे फ़िटजके प्रेमको डेवीके रूपमे परिवर्तित कर दिया।"- कहते कहते श्रीमती ज्यॉफरेकी आँखें तर हो गईं और गला रुँध गया।

उसी दिन तै हो गया कि मार्च भर देवराजको सेनीटोरियम् नही छोडना चाहिए, वहाँ डाक्टरोकी सेवा भी सुलभ और हर वक़्त प्राप्य है। लेकिन अगले अप्रैल माससे वह श्रीमती ज्यॉफरेके यहाँ रहेगा।

२४

मित्र-गोष्ठी

छै मासकी गम्भीर निद्राके बाद इग्लेंडकी प्रकृति जागने लगी थी। जलकर झुलस गए वृक्षोमे पत्ते कलियोके रूपमें आने लगे थे। ठिठुरकर सिमटे परोवाली गौरैया अब ज्यादा चंचल हो चह-चहाने लगी थी। तीन महीनेसे पडी टेम्सकी सफ़ेद चादरने अब नीला रूप धारण कर लिया था। निरन्तर कुहरा और धुध देखते देखते आजिज आए लंदनके नर-नारियोको अब सूर्यके सुनहले प्रकाशको देखकर अपार प्रसन्नता होने लगी थी। कमकरोके लिए सडकोसे लाखो मन बरफ हटाते रहनेकी परेशानी दूर हो गई थी। मनुष्य ही नही, पशुपक्षी तक वसन्तके आगमनमे आनन्दित हो रहे थे।

श्रीमती ज्यॉफरेका मकान रिजेन्ट-उद्यानके पास मध्यवित्तियोंके मुहल्लेमें था। तहखानेको लेकर चार तल्ले थे। तहख़ानेमे भंडार, भोजनागार, आदि थे। देवराजको बडी प्रसन्नता हुई, जब उसने देखा, श्रीमती ज्यॉफरेने सबसे ऊँचेके तलको अपने लिए सुरक्षित रक्खा है। श्रीमती ज्यॉफरेने देवराजको उसके कमरेको दिखाते हुए कहा—

"डेवी, मै जानती हूँ, तुम एकान्तता बहुत पसन्द करते हो। मुझे भी किरायेदारोकी स्वतन्त्रतामे बाधा देनी पसन्द नही है। मैंने पहले हीसे ऊपरके तल्लेको अपने लिए सुरक्षित रक्खा है। तुमको तो नही, पर मुझे सीढियोपर चढनेमें कुछ तकलीफ़ होगी,

लेकिन थोड़ेसे व्यायामकी हम बूढोको भी आवश्यकता है। है न ?"

"हॉ, मम्मी, और फिर तुम्हे ज्यादा नीचे ऊपर आनेकी आवश्यकता नही है। मै तो हूँ ही।"

"हॉ, डेवी, मै तुमसे और किसी बातका आग्रह नही करूँगी, लेकिन जबतक लदनमे रहना, तुम्हारा स्थायी निवास यही होना चाहिए। बस इतना ही।"

"मम्मी, तुम इसकी चिन्ता मत करो। लदन कई सालके लिए मेरा घर बनेगा, और तुम्हारी सेवाके किसी अवसरसे मै अपनेको वचित नही रक्खूँगा।"

"धन्यवाद बेटा, जेनीसे भी कह देना, वह इसे अपना ही घर समझे। बेचारी बच्ची, आठ ही वर्षकी उम्रमे मॉके प्रेमसे वंचित हो गई!! जेनी बडी लज्जालु लड़की है।"

"हॉ, मम्मी, लेकिन आपके साथ उसका सकोच नही है। उसके पितका घर भी यही पास हीमे ग्लौस्टर-रोडपर है।"

"ग्लौस्टर रोड! तब तो बिलकुल पासकी सडक है।"

"यहॉ उसके चाचा रहते है। पिता तो आक्सफोर्डमे प्रोफेसर है—आप जानती ही है।"

× × ×

जेनी अस्पतालकी ड्यूटीके बाद अब अपने क्वार्टरमें नही रहा करती थी, उसे प्रतिदिन १० मील भूगर्भी रेलसे आना जाना पसन्द था। कभी वह अपनी चाचीके यहॉ रहती, अक्सर श्रीमती ज्यॉफ़रेके कमरेमें सोती। जेनीके आग्रह करनेपर भी श्रीमती ज्यॉफरेने अपने शयनागारमें एक और चारपाई बिछा ली थी।

जेनी और देवराज घटों अपने भविष्यके प्रोग्रामपर विचार करते थे। दोनोकी मित्र-मंडलीका धीरे धीरे विस्तार हो रहा था।

बर्नार्ड सिफ्टन्, टॉम हार्डी, अगथा एन्डर्सन, एनी मूले आज देव-राजके कमरेमे जमा हुए थे। जेनी पहले हीसे वहाँ मौजूद थी। बर्नार्डने वार्तालापको गम्भीर रूप देते हुए कहा—

"डेवी, क्या तुम समझते हो, हिन्दुस्तानको गुलाम रखकर अग्रेज-जनता बहुत फायदेमे है? दुनियाके साम्राज्योके इतिहासमे देखा जाता है कि दूसरोको पराधीन करनेवाली जातियाँ स्वय अपनी भीतरी गदगीसे बच नही सकी। इससे हम इन्कार नही करते कि साम्राज्य कुछ व्यक्तियो और परिवारोको सुख और चैनकी बसी बजाने देता है; लेकिन जातीय नैतिक बलपर उसका बडा बुरा असर पड़ता है।"

टॉमने बर्नार्डकी वक्तृताका समर्थन करते हुए कहा—

"क्षमा करो, बीचमे बोलनेके लिए। हिन्दुस्तानमे गया अग्रेज कितना नीच हो सकता है, इसका व्यक्तिगत उदाहरण मै देना चाहता हूँ। अभी कलकी बात है। मै और मेरे एक बहुत सम्माननीय भारतीय दोस्त कैन्सिगटन्-म्यूजियम देखने गए। मेरे भारतीय दोस्त प्राचीन भारतके इतिहास, पुरातत्वके अच्छे जानकार है। म्यूजियमके क्यूरेटर मिस्टर कैम्‌रान् उनसे मिलकर बडे प्रसन्न हुए और उन्होने खुद लेजाकर सभी दर्शनीय चीजोको बडे उत्साहके साथ दिखलाया। जब वह आफिसमे आए, तो भारत-सरकारके राजनैतिक विभागका एक उच्च पदस्थ अग्रेज मि० कैम्‌रान्‌का इन्तिजार कर रहा था। उन्होने अविकृत सरल अग्रेजके तौरपर मेरे भारतीय दोस्तका भी उक्त अधिकारीसे परिचय कराया, लेकिन, मुझे यह देखकर वड़ा आश्चर्य और खेद हुआ कि उस आदमीका हाथ मानों पत्थर हो गया था, और बहुत रुक रुक कर उसने अपने हाथोको आगे बढाया। मालूम होता था, उसके हाथमे लकवा मार गया है। हिन्दुस्तानको गुलाम रखनेका यह साफ़ परिणाम है, जिसने कि उस मनुष्यमें साधारण शिष्टाचारकी योग्यता भी नही रहने दी।"

एनीने उतावली हो कहना शुरू किया—

"मैं ऑक्सफोर्डकी एक घटना सुनाऊँ। एक भारतीय विद्यार्थी एक अंग्रेज़के साथ रेस्तोरॉमे गया। अंग्रेज़ उक्त तरुणके बापका दोस्त था। और कहना चाहिए कि वह उतना बुरा न था। अंग्रेजने रेस्तोरॉके परिचारकको आवाज देते हुए कहा—'लडके (Boy), पानी लाना'। परिचारकने उस वक्त अपने ऊपर सयम रक्खा, लेकिन भीतर ही भीतर जल-भुन गया। उसने मुझसे कहा—'हिन्दुस्तानकी आबोहवा भी बहुत खराब होगी, जिसने इस अंग्रेज़को इतना अशिष्ट बना दिया'। मैंने उसे समझाया—'हमने हिन्दुस्तानियोको गुलाम बनाया है, और वहाँ, शेखीमे आकर हमारे भाइयोको ऐसा बोलनेकी आदत हो जाती है, जिसका परिणाम हमे यहाँ भोगना पडता है।"

बर्नार्डने अपने सरको पेन्सिलसे कुरेदते हुए कहा—"हम लोग मानसिक गुणोमे ही इस तरह दीवालिया बनते नही जा रहे है, बल्कि आर्थिक तौरसे साधारण जनताकी हानि भी अधिक हो रही है। कहनेका मतलब यह नही कि मानसिक हानि कम महत्त्वकी चीज़ है। एक अंग्रेज हिन्दुस्तानमे रहकर वहाँके गरीब, मजदूर, नौकरको जैसी हिकारतसे देखनेकी आदत डाल लेता है, उसे वह इंग्लैडमें आकर भूल नही सकता। चाहे बडेसे बडे लार्ड हो या मंत्री, रुपया किसीके लिए कडवा नही। पूँजीवादमे रुपयेसे बढकर कोई देवता नही। हमारे पूँजीपति चाहते है कि कैसे अधिकसे अधिक रुपया कमाएँ। वे देखते है—जबकि हिन्दुस्तानमे मजदूरोकी तनख्वाह दस-बारह रुपये मासिक है, यहाँ इंग्लैडमे एक मजदूरको प्रति दिन चार-पॉच रुपये देने पडते है। इसलिए वे अपनी पूँजीको हिन्दुस्तानमें कारखाना खोलकर लगाना अधिक पसन्द करते है, क्योकि इस प्रकार वे अपने मालको काफी नफ़ापर बहुत सस्ते दरसे बेंच सकते

है। इस तरह जिस पूँजीको देशमे रखकर अपने आदमियोंको काम मिलता, वही बाहर चली जाती है।"

टॉमीने बर्नार्डकी बातकी पुष्टि करते हुए कहा——

"साम्राज्यवादी देश अपने कमकरोंके साथ कभी न्याय नहीं कर सकता। एक अंग्रेज पूँजीपति——जिसके कारखाने हिन्दुस्तानमें हैं——इंग्लैंडमें अपने मज़दूरोंकी शिकायत दूर करते वक्त अपने हिन्दुस्तानी कारखानोंसे तुलना करता रहेगा। जब तक हिन्दुस्तानी मज़दूरोंका वेतन काफी ऊँचा नही हो जाता, तब तक अंग्रेज मजदूरोंका वेतन कैसे बढने पायेगा ? जब कि दोनों जगहोंमें तैयार हुए मालका बाज़ार एक है। हमारे शिक्षित होनहारोको हजारोंकी तादादमें बेकारीका सामना करना पडता और उसके फलस्वरूप वे क्रान्तिकी आग सुलगाते; लेकिन हिन्दुस्तानकी ज़रूरतसे अधिक तनख्वाहोंवाली नौकरियोंको रिश्वतमें देकर उनके मुँह चुप कर दिए जाते है। हिन्दुस्तानकी लूटसे इंग्लैडके गरीबों और मजदूरोंको कोई फायदा नही, हमारे यहाँकी बेकारी तो और असह्य है। सिवाय आत्महत्याके उससे छुटकारा पानेका कोई रास्ता ही नहीं।

देवराजने कहा——

"मुझे तो मालूम होता है, हिन्दुस्तान और इंग्लैडके श्रमजीवियोंका भाग्य एक सूत्रमें बँध गया है। एककी परतन्त्रतासे दूसरेकी परतन्त्रता स्थायी होती है। एककी स्वतन्त्रतासे दूसरेकी स्वतन्त्रतामें बडी मदद मिलती है। दुनियाके शोषितोंकी जाति एक है। फिर जो राजनैतिक तौरसे एक दूसरेसे बँधे हुए हैं, उनके बन्धुत्वका कहना ही क्या ? मेरी समझमें इंग्लैडके मज़दूरोंको हिन्दुस्तानी मजदूरोंके संगठन और आन्दोलनमें उतनी ही दिलचस्पी लेनी चाहिए जितनी कि अपने यहाँ वे लेते हैं। यह महायुद्ध हमें बतला रहा है कि मौक़ा पड़नेपर साम्राज्यवादी शक्तियाँ काले-गोरेके भेदभावको

१३

ताक़पर रख देती है। आज आप देख रहे हैं कि इंग्लैंड और फ्रांस कितने ही एसियाई सैनिकोंको यहाँ बुलाकर लड़ा रहे हैं।"

टॉमीने पेन्सिलपर उँगली मारते हुए कहा—

"मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि यदि किसी वक्त इंग्लैंडके मजदूर क्रान्तिके लिए उठ खड़े होंगे, तो इंग्लैंडके धनी हिन्दुस्तानी पल्टनोंको उनके खिलाफ इस्तेमाल करनेसे बाज नहीं आएँगे। सच-मुच, हमें हिन्दुस्तानी श्रमजीवियोंके साथ कंधेसे कंधा मिलाकर चलना है।"

अगथा स्वभावसे ही बहुत मित-भाषिणी लड़की है। लेकिन, भाषणकी कमी वह चिंतनसे दूर कर देती है। उसने कहा—"हमें बन्धुत्व सिर्फ मानसिक और वाचिक रूपसे ही स्थापित नहीं करना है। हमारे सैकड़ों तरुण-तरुणियोंको हिन्दुस्तानमें जाकर काम करना है, और उसी तरह हिन्दुस्तानी तरुण-तरुणियोंकी हमारे मजदूर-संगठनमें आवश्यकता है। हमारी जातिके नौकरशाह हिन्दुस्तानी श्रमिक-जनताके दिलपर हमारे प्रति बहुत बुरा प्रभाव डालते हैं। यह प्रभाव तभी दूर हो सकता है, जब कि हम लोग काफी संख्यामें हिन्दुस्तानके मजदूरोंमें काम करें। मैंने तो अपने लिए कार्यक्षेत्र चुन लिया है, और शायद आप लोग मेरा हिन्दुस्तानमें जाकर काम करनेका मतलब मैदानसे भागना न समझेंगे।"

जेनीने अगथाकी पुष्टि करते हुए कहा—"भागना! तुम तो बल्कि और अधिक ज़िम्मेवारी अपने ऊपर ले रही हो। मजदूरोंमें उस प्रकार काम करते देखकर हमारे देशभाई तुम्हें फूटी आँखों भी देखना पसन्द नहीं करेंगे। वे कहेंगे, ऐसा करनेसे अंग्रेजोंकी इज्जत हिन्दुस्तानियोंकी निगाहमें गिर जायेगी।"

एनीने जोशमें आकर कहा—"ऐसी इज्ज़तने ही इंग्लैंडके करोड़ों नर-नारियोंको मनुष्यके जीवनसे गिराकर नरकका जीवन बितानेके

लिए मजबूर किया है; इसके कारण हमारे देशके ग़रीबोंकी इज़्ज़त कौड़ी भर भी हमारे देशके धनियोंके सामने नही रह गई, ऐसी इज्जतको लेकर क्या करना है ? क्या हमारी सन्तान सिर्फ़ इसी अपमानके सहने और धनियोंकी स्वार्थ-रक्षाके लिए करोड़ोंकी तादादमे कटनेके लिए बनी है ? आज हमारे द्वारा परतन्त्र किए गए देशोकी लटका सवाल अगर न होता, तो क्या जर्मनी हमसे लड़ने आता ? यदि हिन्दुस्तानको लेकर हमने सच्चे मानेमे उसे अपने बराबर बनानेका प्रयत्न किया होता और सैनिक, आर्थिक एवं राजनैतिक जीवनको समयके अनुसार नए साँचेमे ढालनेके लिए हिन्दुस्तानियोंको प्रेरित किया होता, तो हिन्दुस्तान खुद ही इतनी मज़बूत शक्ति होता, कि उसपर ललचानेकी किसीको हिम्मत न होती ।"

देवराजने मेज़पर दोनो हाथोंको रख, कुर्सीको आगे झुकाते हुए कहा—"हिन्दुस्तानियोको शक्ति-सम्पन्न करना ! आश्चर्य ! ! हिन्दुस्तानकी बची-खुची ताकतको भी पामाल करना अंग्रेज़ प्रभुओंने अपना कर्तव्य समझा । समय और संयोगके कारण उत्पन्न जातीय मत-भेदोंको अंग्रेजोंने हमेशा बुरी तरहसे प्रोत्साहन दिया । धार्मिक तटस्थताका ढोंग रचकर उन्होंने धार्मिक रूढियोंको खूब दृढ किया । बीसवी शताब्दीका भी हिन्दुस्तान जो आज अठारहवी शताब्दीमे है, इसकी ज़िम्मेवारी अंग्रेज़-शासकोंपर है । धार्मिक और जातीय संकीर्णताएँ हिन्दुस्तानकी राष्ट्रीयताके लिए घुनकी तरह है; और, धार्मिक निष्पक्षपातकी नीति द्वारा अंग्रेज़ोने उन्हे चिरस्थायी बनाया ।"

टॉमीने उत्तेजित हो कहा—"धार्मिक तटस्थता क्या ख़ाक-पत्थर है । हिन्दुस्तानमे कितने ईसाई है, जो कि हिन्दुस्तानी ख़ज़ानेका लाखो रुपया ईसाई गिर्जो और उनके पादरियोके ऊपर खर्च किया जा रहा है । निष्पक्षता तब होती, जब कि हिन्दू मुसलमान तथा दूसरे धर्मावलम्बियोको उसी प्रकारकी सहायता दी जाती ।"

एनी—"शायद, दुनियाकी आँखोंमें धूल झोंकनेमें हमारी जाति बहुत पटु है—जाति नही, हमारा धनिक वर्ग। लेकिन, वस्तुतः हम खुद अपनी आँखोंमें धूल झोंक रहे है।"

अगथा—"कोई साम्राज्य सदाके लिए स्थायी नही हो सकता; लेकिन जाति स्थायी चीज है। हमारी जातिके भी भीतर-बाहर ऐसे लक्षण पैदा हो गए है, जिससे उसकी भी गति पुराने ईरान और यूनान तथा आधुनिक स्पेन और पुर्तगालकी-सी होने जा रही है। लुटेरोका शासन-प्रबन्ध कभी स्थायी दृष्टिकोणसे नही होता, यह दोष हमारे शासनपर भी लागू है। शोषण हानिकारक है, लेकिन जातियोंका सहयोग बड़ी लाभदायक चीज है। हिन्दुस्तान और इंग्लैडमें पारस्परिक सहयोगकी बड़ी आवश्यकता है। उस सहयोगसे दोनों देशोंको बहुतसे राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक फायदे हो सकते हैं। हमारे देशवासी अब कभी कभी दबी ज़बानसे सहयोगका जिक्र करने लगे है, तो भी वे शोषण हीका दूसरा नाम सहयोग रखना चाहते है। लेकिन, हिन्दुस्तानी इस भुलावेमें नही आ सकते। हिन्दुस्तानी न कायर है न निर्बुद्धि।"

गम्भीरताको भंग करते टॉमीने मुस्कराते हुए जेनीसे कहा—"और, मै समझता हूँ कि एनीकी इस रायसे कुमारी जेनी भी असहमत न होंगी।"

२५

मोटर-ड्राइवर

देवराजके स्वास्थ्यको अपना पूर्वरूप धारण करनेमें देरी हुई, कारण ?—देवराज अपनी शारीरिक और मानसिक क्रियाशीलताको छोड़नेके लिए तैयार न था। इंग्लिश, फ्रेंच और अमेरिकन पत्रों-द्वारा वह बराबर युद्धकी प्रगतिको देख रहा था। वह यह भी देख रहा था कि अंगरेज-पत्र सभ्य और संयत भाषा द्वारा झूठके प्रचारमें सबका कान काटते हैं। अंगरेज-पत्रोंके पढनेसे मालूम होता था कि जर्मन दानव है और अंगरेज देवता। यह सब होते हुए भी युद्धके हरेक भागमे जर्मनी आगे बढ रहा था, यद्यपि उतनी तेज़ीसे नही जितना कि आरंभमें। जर्मन-पनडुब्बियोंने दो लाख टन जहाज़ प्रति सप्ताह डुबाने शुरू किए थे, जिससे अंगरेजोंकी अक्ल खप्त हो रही थी। लंदनके ऊपर कितनी ही बार ज़ेप्लिन-विमानोने हमले किए, जिससे नागरिकोंपर बहुत आतंक छाया हुआ था। अंग्रेज़-पत्रों और राजनीतिज्ञोंने जिस तरह जर्मनीको संठेका मुट्ठा चित्रित किया था, वह बात सोलहो आने झूठी साबित हो चुकी थी। और, अब तो कितने ही निराश होते जा रहे थे।

देवराजको मोटर-ड्राइवरी मालूम थी। जून १९१६में, स्वास्थ्य सुधर जानेपर, उसे आशा हुई—शायद ड्राइवर बनकर युद्ध-क्षेत्रमें जानेका मौक़ा मिले; लेकिन, डाक्टरोंने 'शरीरसे अयोग्य'का फ़तवा दे दिया था; और, इस प्रकार सैनिक-सेवाकी आशा जाती रही। अब उसे जीविकाकी फ़िक्र हुई, क्योंकि स्वस्थ रहते वह किसी

तरह भी अपना बोझ श्रीमती ज्यॉफरेपर डालनेको तैयार न था। वह रोज पत्रोंके विज्ञापनोको पढा करता था। एक दिन किसी लेडी मेन्लीका विज्ञापन उसने 'टाइम्स'में देखा—"चाहिए। एक मोटर-ड्राइवर। काफी तनखाह। स्वस्थ भूत-पूर्व सैनिकको तर्जीह दी जायेगी। इच्छुकको स्वयं १७, गोल्डर्स-ग्रीनपर मिलना चाहिए।"

यह वह समय था, जब कि बेकारी एक तरह बिलकुल खतम हो गई थी। और, यह क्यों न होता, जब कि स्वय मृत्युराजने खुले हाथ काम बाँटना शुरू किया था। युद्ध-क्षेत्र, गोला-बारूदके कारखाने, नगरोकी हिफाज़त, खाद्य-पदार्थोंका वितरण, यातायात-का प्रबन्ध . आदि आदि हजारों कामोंमें बहुत बड़ी संख्यामे स्त्री-पुरुषोकी माँग थी। कितने ही व्यवसाय—जिनमें स्त्रियोंका प्रवेश निषिद्ध था—मुक्तद्वार हो गए थे। देवराजने 'विक्टोरिया-क्रॉस'को अपने सीनेपर लटकाया। रानी अलेक्जेन्ड्राका परिचय-पत्र लिया और जाकर लेडी मेन्लीसे मुलाकात की। लडन ऐसे मँहगे शहरमें भी उसने देखा कि लेडी मेन्लीका मकान एक विशाल प्रासाद है। पच्चीसो बडे बडे सुसज्जित कमरे, नाचघर, भोजन-शाला है। सामने हरी मखमली घाससे बिछा एक विस्तृत लॉन है, जिसमें टेनिस खेलनेका इन्तिज़ाम है। दर्जनो माली फूलो और बागमे लगे हुए हैं। परिचारक अपनी ज़र्क़-बर्क़ वर्दियोसे बड़ा प्रभाव डालते है। परिचारिकाओकी संख्या भी आधे दर्जनसे कम न होगी। देवराजने जाकर लेडीके प्राइवेट-सेक्रेटरीसे मुलाकात की। वह एक पच्चीस बरसका तरुण था। उसकी बाईं बाँह लड़ाईमे गोलेसे उड़ गई थी। देवराजको उसे अपने पक्षमें करनेमे बड़ी दिक़्क़त न हुई। 'विक्टोरिया-क्रॉस' पानेवाले प्रथम भारतीयके बारेमें पत्रोंमें काफी सचित्र लेख निकले थे। तरुणने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की

और जाकर पहले ही अपनी गर्मागर्म सिफारिशके साथ लेडीको नये उम्मीदवारकी ख़बर दी।

देवराजको लेडी मेन्लीके सुसज्जित बैठकखाने—ड्राइंग-रूम—में ले जाया गया। कमरा नही उसे हॉल कहना चाहिए। उसमें एक-सौ आदमी अच्छी तरह बैठ सकते थे। फ़र्शपर एक बहुमूल्य ईरानी कालीन बिछा हुआ था, जिसके ऊपर कितने ही सोफ़े, गद्दीदार कुर्सियाँ लगी हुई थी। काठके बहुतसे छोटे-छोटे मेज पड़े हुए थे। ऊँची तिपाइयोपर दो-तीन सुंदर यूनानी प्रतिमाएँ रक्खी थी, जिनमे एक मिस्रकी यूनानी रानी क्ल्योपेत्राकी थी। क्ल्योपेत्रा, सौन्दर्यकी रानी, वैसे होता तो अपने उच्छृङ्खल प्रेमके कारण इस तरह ड्राइंग-रूममे न स्थापित की जाती, लेकिन, यह प्रतिमा असल प्रतिमा थी, जिसे कि लॉर्ड मेन्लीके परदादाने डेढ लाखमे खरीदा था, और वह परिवारकी अनर्घ निधि समझी जाती थी। दीवारोपर बहुतसे अच्छे अच्छे कलाकारो द्वारा चित्रित कितने ही चित्र लटक रहे थे। प्रथम लॉर्ड मेन्ली—जो कि विजयी विलियमके सामन्त थे—से लेकर वर्तमान छत्तीसवें लॉर्ड मेन्ली तक, सभीके तैलचित्र या साधारण चित्र वहाँ मौजूद थे। छतसे कीमती फानूस लटक रहे थे। दरवाजे लाल मख़मलके पर्दोंसे शोभित थे।

देवराजको एक कुर्सीपर बैठाकर तरुण प्राइवेट सेक्रेटरी लेडी मेन्लीके साथ उपस्थित हुआ। देवराजकी दृष्टि लेडी मेन्लीके चेहरे-की तरफ़ देखते वक्त बराबर क्ल्योपेत्राकी संगमरमरकी मूर्तिकी तरफ आकृष्ट होती थी। लेडी मेन्लीकी उमर तीस या बत्तीस सालकी थी। उनकी नाक, आँख, ठुड्डी, हाथ, अँगुलियाँ और नाखून तक साँचेमे ढले मालूम होते थे। वह वस्तुतः सजीव क्ल्यो-पेत्रा मालूम पड़ती थी। एक लम्बा सफ़ेद शॉटनका गाउन उनके

बदनसे सटा हुआ था। उनकी सूक्ष्म कमरको देखनेके लिए, शायरों-की भाषामें, दूरबीनकी ज़रूरत थी। केश मालूम होते थे सोनेके सूक्ष्म-कोमल तार है। आँखोके ऊपर क्रमसे जमी नरम भौहोकी धनु-षाकार पाँती थी। पपनियोके बिखरे रोएँ स्वयं ऊपर-नीचेकी ओर मुड गए थे। आँखोकी दुधिया-सफ़ेदीके बीचमें गहरी नीली पुत-लियाँ, अन्तर्गर्भित हँसीके कारण दुगनी चमक रही थी। मक्खन जैसे श्वेत और कोमल गालोपर छलकती लाली दर्शकको विस्मित किए बिना नही रहती। ओठोकी लालीको देखकर ताजी लाल मिर्चोंका भ्रम होता था। गर्दन और अधखुली छातीके उभारमें मालूम होता था, सौन्दर्यकी राशि जमा कर दी गई है।

देवराजने खडे होकर 'सुप्रभातम्' कहा। लेडीके बढ़ाए हुए हाथसे हाथ मिलाया। लेडी मेन्लीने अत्यन्त कोमल और दुःश्रव्य क्षीण स्वरमे पूछा—

"कैसे हो, मिस्टर सिह ?"

"बहुत अच्छा, आपकी कृपासे"

"मैंने तुम्हारे प्रमाणपत्रको देखा। महारानी अलेक्जेन्ड्राने तुम्हारे लिए बहुत अच्छा लिखा है। तुम्हारे जैसे बहादुर सैनिक से मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।"

"धन्यवाद, आपकी कृपाके लिए।"

"तुम जानते हो, आज हमारा देश अपनी सारी शक्ति लगाकर स्वतत्रता और जीवनके लिए लड़ रहा है। हमारे देशके हरेक नागरिकका कर्त्तव्य है कि देशके लिए बड़ीसे बडी कुर्बानी करे। और, तुम देख ही रहे हो कि इस कुर्बानीमें इंग्लैडके छोटे और बड़े सब होड लगाए हुए हैं। महारानी अलेक्जेन्ड्रा, महारानी मेरी, राजपरिवारकी सभी महिलाएँ तथा लॉर्ड-परिवारकी स्त्रियाँ अपने बहुमूल्य समयको घायलोकी देख-रेख, अस्पतालोंके प्रबंधमें

लगा रही है। युद्धके किसी भी आहतको देखकर मेरा हृदय श्रद्धासे भर जाता है। मैं रोज नियमसे तीन घंटे अस्पतालमे नर्सका काम करने जाती हूँ। तुम इसे क्या समझते हो?"

"बहुत उत्तम। देश प्रेमके लिए आप इतना कष्ट उठाती है!"

"नही, मिस्टर सिह, कष्ट उठानेकी कोई बात नही। मुझे इसमें बड़ा आनन्द आता है। अपने मकानपर भी सैनिकोंके त्याग को साकार देखकर मुझे बहुत खुशी होती है। इसीलिए मेरे परिचारकोंमेंसे अधिकाशको भूतपूर्व सैनिक—जिनके सीने अनेक पदकोसे अलंकृत है—देखोगे। हाॅ वे 'विक्टोरिया-क्रॉस' वाले नही है। मुझे बडी खुशी हुई कि तुम मेरे यहाॅ रहना चाहते हो। काम—चार घंटा, जब कि मै नर्सका काम करने जाती हूँ—यह नियमसे प्रतिदिन, एतवारको छोड़कर; और, कभी कभी पार्टीमें जाना, वहाॅपर भी तीन या चार घंटे। लेकिन, यह हफ्तेमें अधिकसे अधिक तीन दिन। यह काम तुम्हे पसद है न?"

"पसंद है। मै समझता हूँ कि हर रोज दोपहर तक मेरे लिए काम नही रहेगा और एतवार मेरा अपना है।"

"हाँ, बिलकुल ठीक। मैं जानती हूँ, तुम नौजवान हो (मुस्कराते हुए) तुम्हारे लिए अपना समय भी जरूरी है।"

देवराजने अपने भावको चेहरेपर बिना झलकाए, कहा—"नही, अवकाशका समय निश्चित रहनेपर हम उसके उपयोगकी निश्चित व्यवस्था कर सकते हैं। आप जानती हैं, हम नौजवानोंके लिए यही समय है, जब कि हम कुछ सीख सकते हैं।"

"और वेतन चालीस शिलिंग (बत्तीस रुपये) प्रति सप्ताह ठीक तो है?"

"इसमें कुछ नही कहना है। मुझे इससे बडी प्रसन्नता है कि मेरा अवकाशका समय निश्चित है।"

लेडी मेन्ली देवराजके चेहरेपर नजर गडाए क्या क्या सोचती रही और उनकी विचार-शृंखला एक विंदुसे दूसरे विन्दुपर हो-दूर चली गई थी, जब कि उन्होंने कहा—"मिस्टर सिह, तुम भारतीय हो, स्पेनिश् तो नही ?"

"नही, स्पेनिश् नही, मै भारतीय हूँ ।"

"लेकिन तुम्हारा चेहरा स्पेनके दक्षिणी निवासियोसे ज्यादा मिलता है ।"

"वे भी हम लोगोकी भाँति मिश्रित जातिके होगे ।"

"मिश्रित !"

"हाँ, मिश्रित । भारतमे तीन चार जातियोका सहस्राब्दियोसे समिश्रण हो रहा है ।"

लेडी मेन्लीने गराजमे ले जाकर स्वय देवराजको अपनी सुन्दर छैसीटर सीडन कार दिखलाई । देवराजने इधर खास तौरसे नई कारोके बारेमे अध्ययन किया था, क्योकि वह सैनिक ड्राइवर बननेकी टोहमे था ।

× × ×

लेडी मेन्लीका नौ बजेसे बारह बजेका सारा समय अपने सौन्दर्यको सजानेमे लगता था । उनकी तीन परिचारिकाये सिर्फ इसी कामके लिए थी । भौहोपर रग बत्ती फेरना, अनपेक्षित रोमोंको उखाड़ना; गालो, ओठोको बड़ी निपुणतासे स्वाभाविक रक्तिमा प्रदान करना, नाखूनोको तिकोना काटकर उनमें खून उछालना; बाँहो, गर्दन और शरीरके अन्य खुले भागोंको हल्के हाथों सुगन्धित रसायनोमे मालिश करना, लम्बे लम्बे केशोंको बल देते हुए सजाना, निन नई टोपी और पोशाकका पहिनाना । अँगुलीमें हीरा जटित चमचमाती प्लेटिनम्की अँगूठी, और कानोंमें पन्ना, पद्मराग तथा दूसरे

रत्नोंके बारी बारीसे नये कुंडल पहनाए जाते थे। बड़े बड़े मोतियोंका एकलरा हार बड़ी सादगीके साथ कभी कभी गलेमें पड़ा दिखाई देता था। शृंगार हो जानेपर लेडी मेन्ली भोजन करती, और तब तक देवराज भी वहाँ पहुँचा रहता।

कहनेके लिए लेडी मेन्ली जैसी अमीरानियाँ अस्पतालमें नर्सका काम करने जाती थीं, किन्तु वहाँकी नर्सें और डाक्टर उनकी जानको कोसते थे, जब वह देखते थे कि उनकी बाँधी एक भी पट्टी बिना दुबारा बाँधे चल नही सकती थी। पट्टी, रुई, और दवाइयोंको वह वैसीही बेदर्दीसे बर्बाद करती थी, जैसे अपने भोजन-टेबुलपर कीमती शम्पेनकी बोतलोंको। दूसरी नर्सोंको भी फजूलकी बातो और फरमाइशोसे वह परेशान करती थीं। उनके व्यवहारसे मालूम होता था कि, वह एक उद्यानभोज (पिक्निक्) या सौन्दर्य-प्रदर्शनीके लिए निकली है।

देवराज लेडी मेन्लीके प्रथम वार्त्तालापमे बहुत प्रभावित हुआ। वह सोचने लगा, शायद उच्च श्रेणीके नर-नारियोंके प्रति उसकी बुरी धारणा निर्मूल थी। लेकिन हफ्तेके भीतर ही उसे मालूम हो गया, कि वहाँ चारो ओर कृत्रिमताका साम्राज्य है। लेडी मेन्लीका सारा सौन्दर्य, बालों और नाक-मुँहके नक़्शके अतिरिक्त—जिस प्रकार कृत्रिम है, वैसे ही उनके महलकी जड-जंगम सभी वस्तुएँ कृत्रिम है। एक दिन उसे कार्यवश ऐसे मौकेपर वहाँ पहुचाना पड़ा, जब कि लेडी मेन्ली अभी अभी पलंगसे उतरी थी। उस वक्तके उनके चेहरेका उसे विश्वास नहीं होता था, कि यह वही क्ल्योपेत्रा है। उसके बाद तो रंगों, चूर्णोंके भीतरसे भी लेडीका वास्तविक सौन्दर्य उसे झलकता था। हाँ, उस दिनकी एक बात जरूर ठीक उतरी। लेडी मेन्ली वस्तुतः क्ल्योपेत्रा थीं। उनके प्रेमियोंकी गिनती न थी। देवराजको पहिले लेडी मेन्लीके इस सीमा-

तिरुमसे उनके प्रति घृणा हुई; भोज और नाच-पार्टियोंमें हर सप्ताह ही तीनसे अधिक बार जाना पडता था। लेकिन अतिरिक्त समयके लिए वह बड़ी उदारतासे प्रतिवार एक पौड दिया करती थी। वहाँ देवराजको दूसरे लॉर्डों और लेडियोके ड्राइवरोके साथ घंटों रहना पड़ता था। ड्राइवरोकी मडली खुलेतौरसे हर एक लेडी और लॉर्डके संबधमे टीका-टिप्पणी करती थी। अमुक लार्डकी प्रेमिकाओंमें अमुक लेडी, अमुक नर्त्तकी और अमुक अभिनेत्री है। उनकी लेडी महाशया भी पतिसे एक कदम पीछे नही है। वह नित नये सहयात्री प्रेमियोके साथ पेरिस, रिवेयरा, स्विट्जरलैंड, अटलाटिक और पैसिफिककी सैर किया करती है। उसे मालूम हुआ कि वहाँ एकपतित्व और एकपत्नीत्व सिर्फ कानूनी किताबों और बाहरी दिखावेमें है।

× × ×

देवराजके साथ लेडी मेन्लीका बर्ताव अच्छा था, उनमें क्रोध और चिड़चिड़ापन न था। जो दोष उनमें देवराजने देखे थे, उन्हें उस श्रेणीमे आम तौरसे देखा जाता था, इसलिए लेडी मेन्लीके प्रति खास शिकायतकी कोई गुजायश न थी। तो भी उस कृत्रिम वायुमंडल और गरीबोके खूनकी कमाईकी होलीको देखकर वहाँ देवराजका दमसा घुटता मालूम होता था। उसने अपनी आँखों उन किसानोके जीवनको देखा था, जिनसे लेडी मेन्लीको दस लाख सालानाकी आमदनी थी। उसने उन मजदूर-घरोंको भी देखा था, जिनके लड़के लॉर्ड मेन्लीकी कम्पनीके जहाज़ोंमें काम करते सातो समुदर पार करते थे और उन्हीकी कमाईसे मालिक करोड़ोंका मुनाफा उठाते थे। उन घरोकी बे-सरो-सामानी और निर्धनताको देवराज लेडी मेन्ली द्वारा हर बार मिलनेवाले एक पौंडसे भुला नही सकता था।

देवराजके पास माहवारी टिकट था; वह रोज कामसे छुट्टी पाते ही भूगर्भी रेल द्वारा ज्यॉफ़रे-निवासमें चला आता। मकानकी देख-रेख और कियायेकी वसूलीका काम उसने अपने जिम्मे लिया था। यद्यपि श्रीमती ज्यॉफरेका स्नेह उससे बदलेमें किसी चीजके पानेकी अपेक्षा नहीं रखता था, लेकिन इतना करनेसे देवराजके मनको बहुत संतोष होता था। जिस दिन किसी पार्टीमें जाना नहीं होता, उस दिन पाँच बजे तक या तो वह घरपर चला आता या जेनीके पास पहुँच जाता।

सन् सोलह समाप्त हो रहा था, और अब भी युद्धका देवता अंगरेजोंसे प्रसन्न मालूम न होता था—खास कर अंग्रेजोंके मित्र रूसकी सेनाओंको हिंडेनबर्ग हारपर हार देता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था।

२६

कोयलेकी फेरी

नववर्ष (जनवरी, १६१७) के बाद जब देवराजने लेडी मेन्लीसे विदाई माँगी, तो उन्हे बहुत खेद हुआ। उन्होने भरसक देवराजको विरक्त होनेका कोई मौका नही दिया था; लेकिन, उनको क्या मालूम था कि खरचके सम्बन्धकी मेरी उदारताएँ ही इस तरुण-के कलेजेपर बिच्छू जैसा डक मारती है। उन्होने कहा——

"तुम्हे वेतन, शायद, कम मिलता है। मै पचास शिलिग दूँगी।"

"नही, धन्यवाद। वेतनकी कमीकी मुझे बिलकुल शिकायत नही।"

"तो, क्या, अवकाशके समयकी कमी है या उसकी अनिश्चयात्मकता ?"

"नही, मेरा मन ऐसे ही नही लग रहा है।"

लेडी मेन्लीने खेदके साथ, किन्तु अच्छा प्रशसा-पत्र और इनाम देकर, देवराजको छुट्टी दी और कहा——मेरे यहाँ जब भी कोई काम होगा, मै उसे खुशीसे तुम्हे देनेको तैयार रहूँगी।

देवराजने जब पहले पहल पत्थरके कोयलेकी फेरीका प्रस्ताव श्रीमती ज्यॉफ़रेके सामने रक्खा, तो उनको बुरा लगा। उन्होंने कहा भी——तुम्हें ऐसा करनेकी क्या आवश्यकता है ? दो जनों के खर्चके लिए हमारे पास जरूरतसे ज्यादा आमदनी है। देवराजने कई बार अपने हृदयको खोलकर मम्मीके सामने रक्खा था। वह जानती

थी कि दलितो और उत्पीडितोको उठानेके लिए देवराजका आदर्श-वादी तरुण हृदय अपने आपको उनमें खपा देनेके लिए तैयार है। इसीसे दो-चार बार कहनेपर उन्होने देवराजके प्रस्तावको स्वीकार कर लिया। देवराजने लेडी मेन्लीकी जमीदारीके एक किसानसे तीन महीनेके लिए किराएपर घोडेवाला छकडा ठीक कर रक्खा था। किसानने अपने सोलह बरसके लडके विल्लीको भी दे दिया था। जाडोका मौसम था। अप्रैलसे पहले खेतोपर उनकी आवश्यकता न थी, इसलिए आमदनीका एक जरिया समझकर किसानने देवराजकी बात मान ली थी।

देवराज रोज विल्लीके साथ छकडेपर कोयला लादे "कोल, कोल, सस्ता कोल" कहता लदनके मुहल्लोमे घूमता था। उस वक्त मजदूरोंकी ढीलढाल गर्दखोरा पोशाक पहने वह फूला नही समाता था। धनिकों और शिक्षितोके जीवनका उसको नजदीकसे काफी परिचय था। ऊपरकी तडक-भडक और सफेदपोशीके भीतर कितनी ईर्ष्या, असतोष और कृत्रिमताकी भट्ठी धधक रही है, यह उससे छिपी नही थी। श्रमजीवियोकी गरीबीको वह आसमानपर उठाना नही चाहता था, और न उसे पूजाकी चीज समझता था, लेकिन, वह जानता था कि दरिद्रता और बेबसीके बोझसे इतने दबे होनेपर भी श्रमजीवी अपनेको कितने मानवोचित गुणोके धनी बनाए हुए है। इसलिए जो भी तरीका अपनेको उस श्रेणीमें विलीन करनेका मौका देता, उसे देवराज आतरिक आनदकी चीज समझता। उसने अंगरेज-श्रमजीवियोंके हृदय उतने ही सरल और उदार पाए जितने कि भारतीय गरीबोंके। इंग्लैडमें भीख माँगना अपराध समझा जाता है, लेकिन गरीबी अपराध नही; जहाँ गरीबी है, वहाँसे भीख माँगना बिलकुल दूर कैसे हो सकता है? उसने कितनी ही बार नर-नारियोंको लदनकी सडकोंपर दियासलाई और फूल बेचनेके बहाने

भीख माँगते ही नहीं देखा, बल्कि फेरीका काम खतम करके कितनी ही बार वह दिनमें रिजेन्टपार्कमें चला जाता, और वहाँ सड़ककी पैड़ियोंपर घूम घूमकर सारी रात काटनेवाले स्त्री-पुरुषोंको घासपर सोये देखता। उसने कई भिखमंगोंकी आत्म-कथाओंको सहानुभूतिके साथ सुनकर उन्हें अपना मित्र बना-लिया था। उसे मालूम हुआ कि सभी भिखमंगे कामसे बचनेके लिए भीख नही माँगते। इन अभागोके साथ सहानुभूति दिख-लानेवाले मजदूर या साधारण श्रेणीके लोग ही होते हैं। कुत्ता छोडने या पुलिसके बुलानेके डरसे भिखमंगे धनियोंके मुहल्लेमें नही जाते; वे किसी साधारण गृहस्थके दरवाजेपर जाते है और दस्तक लगाते है। किसीके दरवाजा खोलनेपर एक प्याला चाय और एक टुकड़ा रोटीके लिए कहनेपर 'नही' में उत्तर शायद ही मिलता है। इंग्लैडके धनियोंकी सरकार भले ही डींग मारती हो कि उसने गरीबोंके लिए कार्यगृह और शयन-गृह स्थापित किये हैं। लेकिन, ये कार्य-गृह तो जिन्दा कब्र हैं। बहुत कम बेकार कार्य-गृहोमें जाना पसंद करते है; क्योंकि बाहर रहनेपर ढूंढनेसे शायद कोई नौकरी भी मिल जाय; लेकिन, कार्य-गृहमें घुसते ही वे अपनेको कैदखानेमें समझते है। वहाँ सडा सूप, फीकी लप्सी और सूखी रोटी प्राण-धारणके लिए भलेही मिल जाय, लेकिन साथ ही उनका भविष्य भी कार्य-गृहकी चहार-दीवारीके भीतर ही बंद हो जाता है। और, शयन-गृह? बारह आने दीजिए तब रातभरके लिए चारपाई, बिछौना और बहुत मोटा कलेऊ मिलता है। जिसके पास बारह आने नहीं, उसके लिए शयन-गृहका दरवाजा बंद।

कोयलेकी तीन महीनेकी फेरीमें देवराजको लंदनकी गरीबी का बहुत अच्छा अनुभव हुआ; साथ ही उसके पास अपना समय

भी काफी रहता था। किराया, लड़का और घोडेका खर्च देकर रोज दो-तीन रुपये उसके पास बच जाते थे। घरपर आते ही अपने गर्दखोर कपडेको उतार देता और नहा-धो साफ कपडे पहन वह फिर एक शिक्षित-सम्भ्रात तरुण बन जाता। जेनीको उस वक्त बहुत रश्क आता, जब सडकपर वह नर्सके कपडोमे और देवराज अपने फेरीवाले लिबासमे रहता। वह 'मिस, मिस' कहते गँवारू बोलीमे बातोकी झड लगा देता। जेनी अक्सर हँसती और कितनी ही बार चिढ भी जाती। शामके वक्त जब दोनो प्रेमी अपने प्रकृत वेषमे इकट्ठे होते तो फिर स्वप्नोकी दुनियाका निर्माण शुरू होता।

× × ×

देवराज देख रहा था कि मित्र-शक्तियोका सबसे निर्बल स्थान रूसी युद्ध-क्षेत्र है। पिछले दिसम्बरसे ही खबरे ज्यादा चिन्ताजनक आ रही थी और देवराजने जेनीसे कहा था—यदि इग्लैड और फ्रास जर्मनीको एक करारी हार देनेमे सफल न हुए तो रूसकी हालत अबतर हो जायेगी। लदनमे कितने ही निर्वासित रूसी क्राति-कारियोसे उसका परिचय था, इसलिए वहाँके किसान-मजदूरोमे भड-कती असतोषकी आग—जिसे युद्धक्षेत्रकी अनेक पराजयोने कई गुना बढा दिया था—का उसे खूब पता था। देवराजको आश्चर्य नही हुआ, जब कि फरवरीमे एक-ब-एक रूससे क्रान्ति होनेकी खबर आई; और मालूम हुआ कि ज़ारने सिहासन त्याग दिया। निर्वासित क्रान्तिकारियोंमेसे बहुतेरे बडे उत्साह से रूस लौटने लगे। उन्होने बतलाया, कि यह असली क्रान्ति नही है। मजदूर और किसान जिस क्रान्तिका आवाहन कर रहे है वह अभी आनेवाली है।

देवराजको एक चीजका हमेशा डर लगा रहता था—कही

अंग्रेज तुरत जर्मनीपर विजयी न हो जायँ, ऐसा होनेपर रूसी क्रान्ति पूर्ण न हो सकेगी।

रूसकी क्रान्तिसे उसे आशाकी एक झलक आती दिखाई पड़ी लेकिन, वह जब तक सात नवम्बरकी बोल्शेविक-क्रान्तिके रूपमें परिणत न हो गई, तब तक उसकी चिन्ता दूर न हुई। बोल्शे-विक क्रान्तिकी खबर पाकर देवराज और जेनीकी मित्रमंडली बड़ी प्रसन्न हुई। उन्होंने इसके उपलक्षमें एक भोज दिया।

× × ×

अप्रैलमें देवराज एक लोहेके कारखानेमें काम करने लगा। वह मजदूरोंके जीवनका भीतरी अनुभव लेना चाहता था। लोहेके कारखानेका जीवन देवराजको बहुत पसंद आया। उसमें हथौड़ा चलानेसे लेकर पुर्जोंकी ढलाई तथा उन्हें मशीनोंकी शकलमें फिट करने तकका काम था। देवराजको लोहारकी भाथीपर काम मिला था। उसे अपने मजबूत हाथोंमें घनको उठानेमें बड़ा आनंद आता था। जिस वक्त अधबाही कुर्त्ता और जाँघिया पहिने पसीनेमें तर अस्तव्यस्त-केश देवराज भारी घनको दोनों हाथोंमें आकाशमें उठाता, उस वक्त उसकी आकृति दर्शनीय हो जाती थी। वह कहा करता—इसके सामने दंड-कसरत फजूल है, घन चलानेवालेके बदनकी चर्बी गल जाती है, उसके बदनपर सिर्फ माँस, रग, पुट्ठे ही बँच रहते हैं। देवराजके साथी लोहार उससे बहुत प्रेम करते थे। देवराज उनकी गँवारू इंग्लिश उतनी ही आसानीसे बोल सकता था, जिस तरह किसी वक्त रामपुरकी बोलीको। दूसरे मजदूरोंकी तरह देवराजके साथियोंको भी शराबकी आदत थी। हफ्तेकी तनख्वाह जिस दिन मिलती, उसी दिन वे सीधे भट्ठीमें चले जाते। देवराज भी कितनीही बार भट्ठी तक उनका

साथ देता, यद्यपि एक चुस्की भरते ही उसे कभी शिरमें दर्द कभी मिचली और कभी पेटमें पीडा होने लगती। उसके साथियोंको यह पता लगनेमें बहुत देर न लगी कि देवराज सिर्फ उनकी खातिर भट्ठीमें आता है। उसने कभी शराबके विरुद्ध उपदेश नहीं दिया। वह कहता था—अधिकांश लोग अपनी चिन्ताओंको भूल जानेके लिए नशा इस्तेमाल करते है। साधारण जनताकी चिन्ताएँ अधिकतर आर्थिक कठिनाइयोंके कारण हुआ करती है। ये कठिनाइयाँ इसलिए उठ खडी हुई कि बहुतसे निठल्ले दूसरोंको भूखा रखकर उनकी कमाईको खुद उडाते है। इन सामाजिक जोंकोंको हटा दीजिए और सम्पत्तिपर कमाने वालोंका अधिकार कर दीजिए, फिर अपने ही सारी बुराइयाँ दूर हो जायेंगी।

देवराज एक सुशिक्षित और सुसंस्कृत तरुण था, लेकिन, जिस वक्त वह अपने मजदूर साथियोंके साथ बैठा या बातचीत करता होता, उस वक्त कोई कह नही सकता था कि वह उनसे अलग है—यद्यपि उसकी चमकीली आँखे चौडी पेशानी और चेहरेपर आत्म-विश्वासकी छाप कभी कभी भेद खोल देते थे। रामपुरमें देवराजने अहीरोंका नाच सीखा था। यहाँ उसने और कई अंग्रेजी ग्रामीण नृत्योंमें दक्षता प्राप्त की। नाचमें उसकी रुचि बहुत अधिक थी, उसका कारण यह भी था कि वह अपने साथियोंको इसके द्वारा अपनेसे बिलकुल अभिन्न कर सकता था। मजदूर-वर्गके नाचोंमें 'डेवी'की बडी माँग थी। बाज वक्त उसके साथ नाचनेकी इच्छा रखने वाली तरुणियोंकी सख्या इतनी अधिक हो जाती, कि थका-वट न होनेपर भी सबके साथ नाचनेके लिए वह समय नही निकाल सकता था, तो भी कोई तरुणी उससे नाराज न होती थी, क्योंकि वह जानती थी कि दूसरे दिन देवराज उसको पहला मौका देगा। देवराजके अहीर-नृत्यको उसके मजदूर साथी ही नही,

बल्कि शिक्षित मित्र भी बहुत पसंद करते थे। जेनीने उसे बड़े परिश्रमसे सीखा था और देवराजकी शिक्षित तरुण मित्र-मंडलीका उस नृत्यमे बडा मनोरजन होता था। सालभरमे उसका स्वास्थ्य पूर्ववत् और शरीर अधिक बलिष्ठ हो गया था, लेकिन, बायाँ हाथ अब भी दाएँकी अपेक्षा कुछ कमजोर था। बाएँ हाथमे इधर जो अधिक बलका सचार हुआ, उसे वह घन चलानेके कारण बतलाता था।

कारखानेके मालिक अपने दूसरे सजातियोकी तरह, इस नीति-के माननेवाले थे कि काम करानेमे मजदूरके शरीरमे एक बूँद भी खून नही छोडना चाहिए; और वेतन देते वक़्त सिर्फ प्राण-रक्षाका ख्याल रखना चाहिए। जरा जरासी भूलपर और कभी कभी ओवर्सियरोके लगाए झूठे इल्जामपर, मजदूरोकी तनखाह कट जाती, नौकरीसे जवाब तक दे दिया जाता। देवराजने ऐसे हरेक अन्यायका मुकाबिला करनेके लिए मजदूरोको, सगठित रूपमें तैयार किया। पहले ढाई महीने कारखानेवालोको मालूम न हुआ कि मज़दूरोंके सघर्षका सचालन यह इडियन डेविल (भारतीय शैतान) कर रहा है; लेकिन, जब उन्हे यह बात मालूम हुई, उस वक्त देवराज फैक्टरीके मजदूरोंका सर्वमान्य नेता था। उसके भट्ठीकी गप्पोमे शरीक होनेमें एक फायदा हुआ कि कितने ही तरुण मजदूर अध्ययन-क्लबमें अधिक समय देने लगे। उसने उनमे राजनीतिक और सामाजिक अन्यायके प्रति बगावतके ज़बर्दस्त नशेकी आदत डाली। शराबको न छूनेकी क़सम खानेवाले कार्य-कर्त्ताओंसे वह कहता था—इससे तुम्हारे मनमे अभिमान होता है और वह अपने साथियोसे बिलगावका भी कारण बन सकता है। चाहोगे तो मेरी तरह तुम्हे भी प्यालेके मुँहमे लगते ही सर-दर्द, मिचली, और पेट-दर्द पैदा हो सकता है।

× × ×

प्रोफेसर ब्राउन्से देवराजको कई बार मिलनेका मौका मिला और बारबार उनके ऊपर इस भारतीय तरुणका प्रभाव बढ़ता ही गया। उन्हे मालूम होता था कि जैसे उनकी अपनी चिर-पोषित, परन्तु मुमूर्ष लालसाएँ इस तरुणके हृदयमें नये वेगसे सजीव हो उठी है। उन्हे यह भी पता लग गया था कि जेनी और देव-राज एक दूसरेके प्रणय-सूत्रमें बद्ध हो चुके है। प्रोफेसरने यद्यपि इस बातको कभी उनके सामने जाहिर नही की, तो भी वह यह विचार करके बडे खुश थे, कि अब उनके विचारोके दो प्रति-निधि तैयार हो गए है। अबकी क्रिस्मस (दिसम्बर १९१७ ई०) की छुट्टियोको अपने यहाँ बितानेके लिए प्रोफेसर ब्राउन्ने देवराज और जेनी दोनोको ऑक्सफोर्ड बुलाया था।

देवराजको पहिली बार ऑक्सफोर्ड जानेका मौका मिला था, तो भी उसकी बहुतसी स्थान-सम्बन्धी उत्सुकताये शान्त हो चुकी थी, क्योकि लेडी मेन्लीके साथ एक बार वह केम्ब्रिज हो आया था। प्रोफेसर ब्राउन् इस स्वनिर्मित हिन्दीके बारेमे अपने विशेष विद्यार्थियोको बतला चुके थे। प्रोफेसर और उनकी लडकी दोनो ईश्वर और धर्मपर विश्वास नही रखते थे, तो भी बैठकखानेमे एक बड़ी देवदारु-शाखा अनेक प्रकारके लट्टुओ, गुडियो और मोमबत्तियोसे सजाकर रक्खी थी। प्रोफेसर इसके लिए अपनी खास व्याख्या रखते थे। देवदारुके नित्यहरित सौन्दर्यपर वह मुग्ध थे, और उनको यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई, कि देवराज भी सिर्फ देवदारको ही वृक्षराजकी उपाधि देनेके लिए तैयार है। प्रोफेसर कहते थे—क्रिस्मस ईसाइयोंका त्योहार है, जो कि पहिले चान्द्रमासके हिसाबसे पड़ता, और जाड़ा गर्मीके ६ महीनोमे किसीमें डोला करता था; किन्तु यह हमारा त्योहार सौरमास लेकर ऋतुपरिवर्त्तनके उपलक्षमें है।

२५ दिसम्बरकी रातको प्रोफेसर ब्राउनकी छोटीसी मित्र-मडली बैठकमे जमा हुई। कुछ गप, फिर बड़े दिनका भोज—रोटी, केक, काफी। मडली एक तरह ऑक्सफोर्डके साम्यवादी अध्यापको और उच्च श्रेणीके छात्रोकी मज्लिस थी। बातचीत बहुत रात तक चलती रही। सबने अपने अपने विचार खुलकर प्रकट किए, और जेनी तथा देवराजने भी उसमे भाग लिया। सबकी जीभपर रूसकी बोल्शेविक क्रान्ति थी। अभी तक ब्रिटिश पत्रोको चित्रित करनेके लिए जर्मन 'हून' ही थे, किन्तु अब उन्होने 'नर भक्षक बोल्शेविक लुटेरो'की ओर भी नजर दौड़ाई।

जर्मन-सेनाओकी प्रगति कही भी रुकी न थी। तीन बरससे अधिक हो गए, बराबर राजनीतिज्ञ और पत्रकार यही भविष्यद्वाणी करने चले आ रहे थे, कि जर्मनी आर्थिक और सैनिक दृष्टिसे इतना निर्बल हो गया है, कि वह अधिक दिनो तक ठहर नही सकता। यह भविष्यद्वाणियाँ तो झूठी साबित हुई ही, साथ ही, पूरबकी ओरके प्रहारसे जर्मन-सेनाएँ बिलकुल मुक्त हो गई थी। इसके कारण अग्रेजोके दिमाग और भी फाखता हो गए थे। रूसकी फरवरीवाली क्रान्तिसे अग्रेज असंतुष्ट नही हुए, क्योकि अब उन्होने व्याख्या कर ली थी—'जार और उसके दरबारी अयोग्य आदमी थे और जनताकी पूरी शक्ति तथा सहानुभूतिसे फायदा नही उठा सकते थे। नई सरकार जनताकी गवर्नमेन्ट है और सबसे बड़ी बात यह है कि वह जारसे भी अधिक युद्धके पक्षमे है।' लेकिन, बोल्शेविक-क्रान्तिकी खबर सुननेपर वे दग रह गए। और जब ब्रेस्त—लितोव्क—सधि द्वारा जर्मनोकी कड़ी-से-कड़ी शर्त्तोंको मानकर लेनिनकी सरकारने उनसे सुलह कर ली, तो अंगरेज दाँतो तले अगुली दबाने लगे। इसमे शक नही कि इस क्रान्तिने मित्र-शक्तियोके बलको बहुत कमजोर कर दिया। फिर,

अंग्रेजी अखबार बोल्शेविकोके ऊपर पागल कुत्तोकी तरह टूट न पड़ें तो क्या करें ?

प्रोफेसर ब्राउनकी अपनी दृढ सम्मति थी—"मेरी बहुत दिनोसे धारणा है, कि श्रमजीवी-क्रान्ति सिर्फ मजदूर-सभाओके पूर्ण सगठनमे नही हो सकती। खासकर इग्लैडमे तो उसका होना बिलकुल असभव है। शान्तिके समय सरकार अपनी सारी शक्तिको इस आन्तरिक विद्रोहको दबानेके लिए इस्तेमाल कर सकती है। उस समय जनताको हथियारोका उतना सुभीता नहीं होता जितना कि युद्धके समय। परतत्र राष्ट्रोकी तरह श्रमिक क्रान्तिकी भी सफलता युद्धके समय ही हो सकती है। मेरी समझमे इस युद्धका सबसे सुन्दर परिणाम रूसकी यही साम्यवादी क्रान्ति है। क्रान्ति कही भी होगी, उसमे अपार जनधनकी हानि तथा विपत्तियोके प्रचड प्रहार होगे ही। इसमे लोग भूले भी कर सकते है, क्योकि क्रान्तिकी शिक्षाके लिए बाकायदा कालेज और विश्वविद्यालय थोडे ही स्थापित हो सकते है। मुझे विश्वास है, रूस हीमे प्रथम और स्थायी साम्यवादी शासन स्थापित होके रहेगा। मार्क्सने श्रमजीवी-क्रान्तिका सफल क्षेत्र उद्योगप्रधान देशोको बतलाया था। उसका ख्याल था कि उन देशोके श्रमजीवी संख्या और सगठनमे बहुत बढे हुए है और वहाँ अधिक जनतत्र है, जिसके कारण विचारोके प्रचारमें बहुत सुभीता है। उस वक्त उसकी दृष्टि अत्याचारोके प्रतिशोधमे हार खाकर भी न हारने वाली, रूसकी जैसी जनता तथा उसके निर्भय आदर्शवादी सगठनपटु नेताओकी ओर न थी। सबसे बढकर श्रमजीवी-क्रान्तिके सम्बन्धमे युद्धके महत्त्वकी ओर उसका पूरा ध्यान नही गया था। पूँजीवादी स्वार्थोके लिए भयानक युद्धोकी उपस्थिति उसके सामने आईनेकी तरह झलक रही थी; लेकिन वर्तमान साम्राज्यवादी युद्धकी तैयारियो और उसके

प्रभावोंको उनके सूक्ष्मतम अंशोंमें देखना, उस वक्त सम्भव नही था। १९०५ तकके पूँजीवादके विकास, अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष तथा रूसकी प्रथम क्रान्ति यदि उसके सामने होती तो मार्क्सका निर्णय जरूर रूसी क्रान्तिके पक्षमे होता।

डाक्टर स्मिथने आन्तरिक निराशाको दबाते हुए कहा—"पेरिस्-कम्यून् (१८७१ ई०)के बाद यह दूसरी साम्यवादी क्रान्ति है। जिस तरह अधिकवयस्क माता—जिसको एक बच्चा होनेका अनुभव है—को नये बच्चेके पैदा होनेपर मनमे बडी उत्सुकता होती है, वही हम लोगोकी हालत है। पेरिस कम्यूनने सफलता-पूर्वक एक साल तक अपने अस्तित्वको कायम रक्खा। उसके नाशके साथ उसकी उपयोगिता खतम हो गई, यह बात मै नही मानता; लेकिन उसका नाश निःसन्देह एक शोचनीय घटना है। रूसी क्रान्तिकारी नेताओकी सुन्दर योग्यतापर मेरा विश्वास है; मुझे यदि शिकायत है तो सिर्फ यही कि उनमे भावुकताकी मात्रा आवश्यकतासे अधिक होती है ..."।

"क्षमा कीजिए बीचमें बोलनेके लिए," देवराजने दाहिने हाथकी अँगुलीसे बायें हाथको थपथपाते हुए कहा "आखिर क्रान्ति-कारीकी भावुकता आदर्शके वास्ते सर्वस्व-त्यागके लिए अधीर होनेके सिवा और है ही क्या? फिर, ऐसी भावुकता बिना कोई आदर्श, कोई स्वप्न साकार हो कैसे सकता है?"

"नही, मिस्टर सिंह," डाक्टर स्मिथ्ने अपने बिना कमानीके चश्मेको नाक परसे हटाते हुए कहा, "मै भावुकताको एकदम त्याज्य नही समझता, लेकिन, वह एक खास मात्रामे होनी चाहिए। खैर, मात्राके तौलके बारेमे भी मै कोई नाप नही पेश करता। जो भी हो, यह मेरा निजी मत है, कि रूसी क्रान्तिकारियोंमें यदि कोई त्रुटि है तो यही अधिक मात्रामें भावुकता। इसमें मतभेद

की गुंजाइश है, किन्तु, उन नेताओंकी योग्यतामें किसीको सन्देह नही हो सकता। हाँ, जब हम उस जनतापर विचार करते है, जिसके बलपर उन्हे क्रान्ति सफल करनी है, तो बहुतसी आशंकाएँ उठती है। आशंकाएँ इसीलिए उठती है, कि रूसी क्रान्ति हमारे लिए एक बड़ी प्रिय चीज है। हाँ, प्रोफेसर ब्राउन्की राय बिलकुल दुरुस्त है। इस क्रान्तिने पेरिस-कम्यून्की अपेक्षा अधिक शुभलग्नमे जन्म लिया है। उसका जन्म शान्तिकाल मे हुआ और इसका ससारके एक अद्वितीय महान् युद्धके कालमे। शान्तिका वातावरण क्रान्ति-शिशुके प्रतिकूल होता है। युद्धने लाखो रूसी किसानोकी हत्या करके जहाँ एक ओर उनके मनमे मृत्युके भयको कम कर दिया है, वहाँ कुछ सैनिक और सामरिक जीवनकी भी शिक्षा दी है। मुझे प्रसन्नता है कि हम लोग स्वय ऐसी आफ़तमें उलझे हुए है, कि हमारे पत्र और नेता बाल्शेविकोके खिलाफ सिर्फ़ भूँक भर सकते है।

× × ×

देवराजको मेडलिन्-कॉलेज दिखलाती हुई जेनीने बिछोहका कुछ दर्द ज़ाहिर किया; लेकिन, दोनों इस बातसे सहमत थे, कि जब तक युद्ध है, तब तक जेनीके लिए उपयुक्त स्थान कॉलेज नहीं अस्पताल है।

२७

प्रेम और आदर्श

देवराज इस साल (१९१८) भी उसी कारखानेमे काम करता था। रूस-सम्बन्धी हरेक घटनाको वह गौरसे पढ़ता और उसे यह देखकर प्रसन्नता होती थी कि इग्लैडके मजदूर भी उसे अपनी चीज समझते है। सभी जगह उनमे रूसी क्रान्तिकी चर्चा रहती थी—वर्क-शॉप हो या रेस्तोरॉ, भट्ठी हो या विश्रामगृह, सर्वत्र रूसी क्रान्तिका हल्ला था। लदनके जिन मजदूरोने कभी लेनिन्को देखा था, वे बड़े गर्वसे उस ठिगने, चँदुले आदमीकी बात सुनाते थे।

जेनीका मन अब अस्पतालमे नही लगता था। अक्सर युद्धके अन्तकी प्रतीक्षाकी बात करनेपर देवराजसे बिगड पडती थी—

"तुम तो अपना काम कर रहे हो और चाहते हो कि मै तितली बनी रहूँ।"

"नही, रानी, तितली कौन बनाता है?"

"रहने दो अपने रानी-राजाको। तुम्हारी फौलादी हथेली देखकर मुझे रश्क आता है।"

"रश्क क्यो आता है? मुझे तो तुम्हारे मक्खन जैसे हाथो पर रश्क नही आता।"

"तुम्हे चिढानेमे बहुत मजा आता है, डेवी!"

जेनीके गालोपर लाली उछल आई थी और उसके चेहरेपर विकलताके लक्षण दिखलाई पड़ रहे थे। देवराजने उसके दोनो

कपोलोपर अपने हाथ रक्खे और वह उसकी आँखोकी ओर तन्मयतासे देखने लगा। जब कभी देवराज जेनीकी अनर्घ मुस्कुराहटकी चाह करता, उस वक्त इस मुद्रासे उसे निराश न होना पड़ता।—जेनीने मुस्करा दिया और दोनोके कपोल एक दूसरेसे मिल गए।

"जेनी,"

"डेविल (शैतान) हो तुम! मै भी चाहती हूँ कि तुम्हारी जैसी बनू। अपने लिए तो तुमने कहा कि मुझे कालेजकी पढाईकी आवश्यकता नही और मेरे वास्ते कहते हो—लड़ाई खतम हो जाने दो, फिर कालेजमे जाकर पढाई समाप्त कर लो, तब कार्यक्षेत्रमे उतरना।"

देवराजने जेनीके कोमल हाथको अपने हाथोमे लेते हुए कहा—"चाहे तुम घंटे भर क्यो न दुहराओ, मेरी प्यारी जेनी, तुम्हे ज्यादा घबरानेकी जरूरत नही। लड़ाई अब और अधिक दिनो तक नही चलेगी। अबके हिम-पातको न जर्मन बर्दाश्त कर सकेगे न अंग्रेज ही। और पढाईमे तुम्हारे चार महीनेसे अधिक लगनेवाले नही है? बी० ए० हो गई; और एम० ए० तो फीस जमा कर देने भरसे हो जाना है।"

"क्या, मेरे लिए एम० ए० होना जरूरी है? डेवी, तुम चकमा देना चाहते हो।"

देवराजने फिर जेनीकी मुस्कराती आँखोकी ओर नजर गड़ाकर कहा—"चकमा! मेरी प्राण, तुम्हे न चकमा दूँगा तो किसे दूँगा? मै जानता हूँ, तुम लोहारिन बननेपर उतारू हो। मै तुम्हारे हाथोंके बारेमें सोचता हूँ—कही दो पत्थरोके बीचमे पडे [illegible] तरह वे मसले न जायँ। लेकिन विश्वास रक्खो, मै अपनी लोहारिनको प्रोफेसरकी लड़कीसे ज्यादा प्यार करूँगा। !"

"यह बात! लोहारिनके लिए इतना आदर! और, साथही चाहते हो एम० ए० पास लोहारिन!!"

"मै तुम्हे पढ़नेकी सलाह न देता, अगर वह दो-चार महीनेकी बात न होती। जेनी, क़लमकी ताक़त भी जबर्दस्त ताक़त है। हथौडेकी बेटमे तुम कलमको छिपा सकती हो। हमे एक नया साहित्य तैयार करना है। कलमके धनियोके दरबारमे पहले पहल जाते वक्त यह डिग्री परिचय देनेका काम देगी। बस, इतना ही मेरी जेनी, मै कहना चाहता हूँ।"

× × ×

सालके मध्यमे पहुँचते पहुँचते जर्मनीमे युद्धके बुरे प्रभाव दिखलाई पडने लगे। जनता जितनी ही निराश होती जा रही थी उतना ही उसके नेताओ और युद्धके संचालकोने विवेकसे काम लेना छोड़ आँख-मूँदकर प्रहार करना शुरू किया। मित्र-शक्तियोने जर्मनीके चारो ओर आर्थिक घेरा डाल दिया और उसे बाहरसे माल मिलना असंभव हो रहा था। जर्मनीने भी मित्र-शक्तियोके जहाजोको बेतहाशा डुबाना शुरू किया। जर्मन कैसर और दूसरे नेताओके गर्वपूर्ण चिढानेवाले भाषणोने जहाँ अपने मित्रोकी सख्याको एकदम सीमित कर दिया था, वहाँ अंग्रेज़ोने अपनी चिकनी-चुपडी बातो और कूटनीतिक मायाजालसे ससारकी सबसे बडी औद्योगिक शक्ति, अमरीकाकी सहानुभूतिको अपनी ओर कर लिया। कैसर जनताकी मानसिक अवस्था और देशकी निर्बलताकी ओर ध्यान देनेको तैयार न था; उल्टा वह युद्धकी सीमाको और बढाना चाहता था। जर्मन पनडुब्बियोंने कितने ही अमेरिकन व्यापारिक जहाजोंको डुबाया, जिसका परिणाम हुआ अमेरिकाका भी जर्मनीके खिलाफ युद्ध घोषित करना।

जर्मन सेनाएं अपार जन और सामग्रीकी हानि सहकर लड़ते लड़ते थक चुकी थीं। इधर मित्र-शक्तियोको मददके लिए टिड्डी-

दलकी तरह अमेरिकन सेनाएँ नये-नये अस्त्र-शस्त्रोसे सुसज्जित हो चली आ रही थी। साथ ही, राष्ट्रपति विल्सन्‌ने बिना दडके सुलहनामेकी घोषणा प्रकाशित कर दी। इस दोहरी मारने जर्मन जनताके दिलसे युद्धके मनसूबेको पस्त कर दिया। उसने जगह जगह युद्धके खिलाफ प्रदर्शन शुरू किए। पश्चिमी युद्ध-क्षेत्रमें कैसरके शिविरमें यह खबर पहुँचने लगी, लेकिन, अभी भी वह सुननेके लिए तैयार न था। तो भी प्रधान सेनापति हिडेन्बर्ग और दूसरे सेनानायक परिस्थितिको अच्छी तरह समझते थे। आखिर ९ नवम्बरका दिन आया, जब कि जर्मन तोपोने आखिरी बार अपने मुँहसे आग उगली। ११ नवम्बर (१९१८)के ११ बजे दिनको युद्ध बन्द हुआ। कैसरको हॉलैंड भागना पड़ा और अपनी निर्बलता तथा राष्ट्रपति विल्सन्‌के आश्वासनपर जर्मन सेनाओंने हथियार रख दिए।

इंग्लैंडमें चारो तरफ खुशियाँ मनाई जा रही थी। दिलसे भारी बोझ उतर गया मालूम होता था। धनिक वर्ग विजयोन्मादसे पागल-सा हो गया था; लेकिन, निर्धन वर्ग नही कह सकता था कि चार वर्षके भीषण नर-सहारके बाद उसे क्या मिला है। जेनीको इसकी खुशी हुई कि अब वह अपने समयको मन लायक काममें लगा सकेगी। देवराजने जब अपने देशके जमाखर्चको उठाया तो उसे मालूम हुआ—हमने इस दुर्लभ मौकेसे फायदा नही उठाया। वह बराबर बंगाल और पंजाबके छोटे-मोटे विद्रोहोके बारेमें पढता रहता था। वे विद्रोह अभी गर्भ हीमे थे कि कुचल दिए गए; इसलिए वह यह कहनेमें असमर्थ था कि जनतापर उसकी क्या प्रतिक्रिया होती। लंका जैसे छोटेसे टापूके एक साधारण साम्प्रदायिक सशस्त्र विद्रोहसे ब्रिटिश गवर्नमेण्ट जितनी डरी थी, उससे देवराजको विश्वास होता था कि भारतका विद्रोह भी हल्का असर

नही रखे होता। उसे यह देखकर झँझलाहट आती थी कि जिस वक्त भारतके राष्ट्रीयतावादियोको कडा रुख अख्तियार करना चाहिए था, उस वक्त वे भक्तिभाव दिखलाकर अंग्रेजोके पत्थर-हृदयको पसिजवाना चाहते थे। भारतको भीतरकी ओरसे देखनेसे मालूम होता था कि युद्धने उसे उतना फायदा नही पहुँचाया, तो भी वह समझ रहा था कि इस चार वर्षके युद्धने रूसमे साम्यवादी शासन और पोलैड, चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया, हगरी आदि स्वतंत्र राष्ट्रोकी स्थापना ही नही की, बल्कि वह अपने पीछे एक बहुत भारी तूफान छोडे जा रहा है, जिसके प्रभावसे भू-मडलकी कोई भी वस्तु अछूती न रहेगी। उसने अपनी आँखो जेनीके लम्बे सुनहरे बालोकी दो वेणियाँ देखी थी, आज अपने कटे बालोमे जेनी कम सुन्दर नही मालूम होती थी। उसकी पेटीमे कसी कमरभी छातीकी ही तरह उन्मुक्त थी। पिछले चार वर्षोमे ही जो परिवर्तन उसके सामने हुए, वे बतला रहे थे कि युद्धका प्रभाव बहुत व्यापक होगा।

एक तरफ युद्ध समाप्तिकी ओर पहुँच रहा था, और दूसरी ओर, देवराज देख रहा था, अंग्रेज हिन्दुस्तान पर अपना पंजा और मजबूत करना चाहते है।

× × ×

दिसम्बरके शुरू हीमे जेनीको अस्पतालसे छुट्टी मिल गई थी। अभी भविष्यपर उसने सिर्फ कल्पनाये की थी, अब उसे उसपर ठोस कदम रखना था। देवराज और प्रोफेसर ब्राउन्की रायसे सहमत होकर जेनीने विश्वविद्यालयकी पढाई समाप्त करना तै कर लिया। रविवारका दिन था, देवराज और जेनी युद्धके भँवरसे निकली सारी दुनियाकी तरह आगेके कार्यक्रमपर विचार कर रहे थे।

देवराजने कहा—"जेनी, मालूम होता था, अब तक हम एक प्रवाहमें हैं, और उससे इधर-उधर होनेका हमारा अधिकार बहुत सीमित है। अस्पतालसे निकलनेके बाद मैंने इतने समयका दुरुप-योग नहीं किया है। अपने कारखानेके साथियों, और ईस्टएण्डके गरीबोंमें मैंने कुछ काम किया है, और उससे जितना उन लोगोंको फायदा हुआ, उससे कई गुना लाभ मुझे इन अनुभवोंके रूपमें मिला है, तो भी मुझे इतनेमें सन्तोष नहीं। मैं समझता हूँ, मेरा कार्यक्षेत्र भारत है। इंग्लैंडमें भी कार्यकर्त्ताओंकी बड़ी जरूरत है, इसे मैं मानता हूँ। यहाँके मजदूर-नेताओंमें अवसर-वादिता अधिक है, इसलिए निर्भीक क्रान्तिकारियोंको यहाँके श्रमिकोंमें बहुत काम करना है, तो भी भारतीय श्रमजीवी-जनता दुहरी चक्कीमें पिस रही है। धनिकों और जमींदारोंका शोषण यहींकी तरह वहाँ भी है, साथ ही हम ब्रिटिश-साम्राज्यवादके शिकार होकर राजनीतिक दास हैं।"

"मैंने भी, डेवी," जेनीने देवराजके कठोर हाथको अपने हाथोंमें लेते हुए कहा, "तुम्हारी बातोंपर बार बार विचार किया और अपने निजी भावोंको दबाकर जब तटस्थ हो सोचती हूँ, तो उसी नतीजेपर पहुँचती हूँ—भारत ही तुम्हारे लिए योग्य कार्यक्षेत्र हो सकता है। लेकिन, क्या मैं वहाँ कुछ काम नहीं कर सकती?"

जेनीने देवराजके दोनों हाथोंको खींचकर सीनेसे लगा लिया। देवराजने जेनीकी पेशानीपर हाथ रखकर उसके मुँहको अपनी ओर करके उसकी आँखोंकी ओर देखा—नीलम जैसी नीली पुतलियाँ पारदर्शक अश्रु-स्तरसे ढँकी मालूम देती थीं, उसके चेहरे-पर दबी वेदनाका चिह्न था। देवराजने जेनीके सिरको गोदमें रखके परिवर्तित स्वरमें कहना शुरू किया—

"प्यारी जेनी, मै तुम्हे कितना प्यार करता हूँ, यह कहना उस प्यारका अपमान करना है; लेकिन, हमने प्रतिज्ञा की है कि हमारा प्रेम हमेशा हमारी आदर्शवादिताका दास बनकर रहेगा। एक दूसरेसे बिछुडनेपर हमारे मनमे बहुत चोट लगेगी, लेकिन उसे हम यह ख्याल करके भुला देगे, कि हम यह अपने प्राणोसे प्रिय आदर्शके लिए कर रहे है। . ."

जेनीने देवराजके दाहिने हाथको अपने हाथसे छातीपर लेकर कहा—"डेवी, मै तुम्हे कभी अपने आदर्शसे विचलित न होने दूँगी। प्रेमीके वियोगसे दिल पिघलकर आँखोको तर न करे—यह अस्वाभाविक है। मेरी आँखे तर हुई है तुम्हे अधीर बनानेके लिए नही, बल्कि अपनी सहानुभूति प्रदर्शित करनेके लिए। मेरे भावा-वेशका कभी दूसरा अर्थ न लेना," जेनीने अपने स्वरको ऊँचा करते हुए कहा, "बल्कि मै यहाँ तक कहती हूँ कि जिस दिन तुम अपने आदर्शसे गिरे, उसी दिन मेरे प्रेमका भी खात्मा समझो। मैंने सिर्फ तुम्हारी सम्मति चाही थी।"

"मै यह नही कहता, कि अग्रेज तरुण-तरुणियोके लिए भारतमे कार्यक्षेत्र नही है। उल्टा मै तो समझता हूँ, कि वह वक्त आयेगा जब कि काफी सख्यामें यहाँसे कार्यकर्ताओको भारत जाना पड़ेगा और भारतीयोंको भी इग्लैडके श्रमजीवियोंमे काम करना होगा। एक ही चक्की दोनो देशोके गरीबोको पीस रही है। साम्राज्य-वाद है ही पूँजीवादका चरम विकसित रूप। मै नही समझता कि भारतमे पिछले चार वर्षोमे परिवर्तन नही हुआ होगा; लेकिन तो भी अभी अवस्था ऐसी नही है, कि तुम वहाँ चलकर अपनी कार्यक्षमताका अधिक उपयोग कर सको। जो भी हो, इसे मुझपर छोड दो।"

"डेवी, मैं कह चुकी हूँ कि हमारा प्रेम आदर्शसे विचलित नही

कर सकता। मै मानती हूँ, कि जहाँ मै अपनी योग्यताका अधिक उपयोग कर सकूँ, उसे ही मुझे अपना कार्यक्षेत्र बनाना चाहिए। अपने कर्तव्य-पालनमे हम दोनो एक दूसरेसे ६००० मीलपर रहेंगे। उस समय मेरा सिर डेवीकी गोदमे नही रहेगा। लेकिन, प्रेम हमारे हृदयोका स्पर्श करके उन्हे कम प्रफुल्लित न करेगा। खाली वक्तमें जब तुम्हारी स्मृति जागृत होगी, उस समय मै तुम्हें अपने सामने मूर्तिमान देखूँगी। हम अपने पत्रोमे अपने कार्य-विवरण-को लिखेगे, हृदय खोलकर अपने कटवे-मीठे अनुभवोको रख देगे। वे पत्र हमारे लिए मिलनसे कम सुखद न होगे। जीनेके लिए संग्राम, जीनेके लिए मृत्युको हमने निमन्त्रित किया है। यह जीना हमारे लिए मधुर वस्तु है, लेकिन, इसीलिए कि यह बंधन नही है। इस युद्धमे यदि हममेसे एकको मौतने अलग कर दिया, तो भी दूसरेको वह मौत दुगना उत्साह प्रदान करेगी।"

देवराजकी आँखे जेनीके मुँहपर थी, लेकिन, उसका ख्याल कही दूर घूम रहा था। बातको फिरसे आरंभ करते हुए उसने कहा—"भारत जाना होगा, इतना ही मै जानता हूँ, लेकिन, अभी वह समय नही आया है। वहाँकी एक एक राजनैतिक घटना-पर मेरा ध्यान है। राष्ट्रीय शक्तियाँ सुप्त नही हुई है, वे किसी वक्त भी प्रचंड रूप धारण कर सकती है। मै कुढता रहता था जब कि देखता था कि हमारे गरम नेताओके प्रोग्राम भी अधिक तर ऐसे होते थे, जिनका साधारण जनताके रोज-बरोजके जीवनसे कोई संबंध न होता था। जनता लम्बे लम्बे शब्दोंको नही समझ सकती। लखनऊ-कांग्रेसने नरम और गरम दलको मिला दिया; लेकिन मुझे इस गंगा-जमुनी वर्गसे कोई आशा नहीं। नरमदली सिर्फ वैयक्तिक महत्त्वाकांक्षाओंसे प्रेरित होकर तथा कभी कभी अंग्रेज अधिकारियोंके दुर्व्यवहारसे खिन्न होकर राजनैतिक मैदानमें

आए हुए है। अग्रेज शासक उनको तभी तक महत्त्व देते है, जब तक उन्हे उग्रदलका भय रहता है। लेकिन, गांधी—हज़ारो भूलें भले ही करे, फिर भी—इस बातको वह अच्छी तरह जानते है कि हमारी शक्ति जनता है।"

"सो ठीक, डेवी, किन्तु अतीतके सुनहले स्वप्नको मै गाधीकी प्रतिक्रियावादिता ही कहूँगी। उसके धर्म-सम्बन्धी विश्वासपर तो मै बिलकुल ही विश्वास नही करती, पर वह जनताके महत्त्व को समझता है, और यह भी जानता है, कि जब तक उसकी दैनिक कठिनाइयोंके हल करनेका प्रोग्राम सामने न रक्खा जायेगा, तब तक वह जागृत न होगी। निलहोके खिलाफ़ चम्पारनका आन्दोलन क्या था? बस इसी सूत्रकी व्याख्या।"

"और खेडा भी।"

"हाँ, खेड़ाके किसानोकी जागृति भी। मै तो समझती हूँ यदि गाधी धर्म और ईश्वरके प्रपचमे न पड़ता तो उसका प्रोग्राम और भी दृढ होता।"

"यही नही, हिन्दुस्तान धर्मोके मारे पामाल है। राष्ट्रीय एकता और नवजागरणके लिए धार्मिकताको हटाना बहुत ज़रूरी है। गाधीकी धार्मिकता जनताको आकर्षित करनेमे कुछ सहायक भले ही हो सकती है; लेकिन, आगे चलकर इसका परिणाम देशके लिए हानिकारक होगा।"

"तुम्हारी समझमे निकट भविष्यमें भारतीय राजनीतिका रूप क्या होगा?"

"मै जोतिसी तो नही हूँ, लेकिन, एक बात ज़रूर कहूँगा; महायुद्धका व्यापक प्रभाव भारतपर पड रहा है। पिछले चार वर्षोंमें इंग्लैडके कारखाने गोला-बारूद बनानेमें लगे हुए थे और अग्रेज़ोने भारतीय उद्योग-धंधोपरके कितने ही प्रतिबन्ध हटा

दिए। इस प्रकार उसे नये कल-कारखानोको स्थापित करनेका अवसर मिला। मोहनलाल खन्ना जैसे कितने ही निरपराध और कितने ही अपराधी आतकवादी भी फाँसीपर चढाए गए; लेकिन, राजनीतिक हत्याओं और सरको हथेलीपर रखकर फिरनेवाले क्रान्तिकारियोकी कमी नही हो रही है। रोलट्-रिपोर्टको तो तुमने पढा है ?"

"रोलट-रिपोर्टमे वैसे चाहे कितनी ही गलत-बयानियाँ हों लेकिन एक बात उससे स्पष्ट हो जाती है—भारतमे आतंकवाद अधिक सगठित और बलशाली होता जा रहा है।"

"लेकिन. साथ ही यह भी मानना पडेगा कि जनताका उससे कौतूहल मात्र भर सम्बन्ध है। और ब्रिटिश-गवर्नमेन्टने इधर जर्मनीसे हथियार रखवाया और उधर भारतीयोंको कुचलनेका आयोजन किया है।"

———

२८

उत्तराधिकार

जेनी दिसम्बर हीसे अपनी परीक्षाकी तैयारीमें लगी हुई थी। राजनैतिक अर्थशास्त्रमें बहुत अच्छे नम्बरोसे उसने बी० ए० पास किया और एम्० ए० होनेका भी इन्तज़ाम हो गया। मार्च (१६१६)के आखिरी सप्ताहमे देवराज ऑक्सफोर्ड पहुँचा। प्रोफेसर और जेनीके साथ अधिकतर राजनीतिकी ही बातोकी चर्चा थी। प्रोफेसर ब्राउन् कह रहे थे—

"देखिए अग्रेज पूँजीपति रूसके शिशु साम्यवादी शासनका गला घोंट देना चाहते है। लडाईसे बचे हुए गोले-बारूदको ही नही, सिपाहियो तकको रूसके बाग़ी पूँजीपतियोकी मददमे भेजा जा रहा है। अब देश-रक्षाका सवाल नही रहा और हम इस अन्यायको चुपचाप नही सह सकते।"

देवराजने प्रोफेसरकी रायका समर्थन करते हुए कहा—

"हम कुछ नौजवानोने डॉक्के मज़दूरोमे काम शुरू कर दिया है। हम उन्हे बतला रहे है, कि सोवियत-शासनको रूसी मज़दूरोंका ही मत समझो, रूसमें साम्यवादकी विजय सारे ससारके मज़दूरोकी विजय है; रूसके पूँजीपतियोंकी पराजयको दुनियाके सभी पूँजीपति अपनी पराजय समझ रहे है। आप, प्रोफ़ेसर साहब, यह सुनकर ख़ुश होगे कि मज़दूर अब इस बातको समझने लगे है। अभी पिछले ही सप्ताह लिवरपोलमें उन्होंने जहाज़पर लड़ाईका सामान लादनेसे साफ़ इन्कार कर दिया, जब कि उन्हें

मालूम हुआ कि उसे क्रान्तिविरोधियोके पास भेजा जा रहा है।"

जेनीने जोश भरे शब्दोमें कहा—

"मैं भी अब पढाईसे मुक्त हूँ। मै समझती हूँ श्रमजीवियोंमे जाकर सोवियत्के पक्षमें प्रचार करना इस वक्त सबसे ज़रूरी काम है।"

देवराज अब तक हिन्दुस्तानकी ताजी घटनाओके बारेमें चुप था। प्रोफेसरने यह कहकर उसे मौका दिया—"जर्मन पूँजीवादपर ब्रिटिश पूँजीवादकी विजय हुई; अब कुछ दिनोके लिए उसका प्रतिद्वन्द्वी चुप हो गया। दोनो पूँजीवादियोके संघर्षके कारण जनताको कुछ स्वतंत्रतापूर्वक साँस लेनेका मौक़ा मिला था; लेकिन अब उसे इंग्लैंड बर्दाश्त करनेको तैयार नही है।"

"आपने सुना है लोगोके एक स्वरसे विरोध करनेपर भी भारत-सरकारने रोलट-क़ानून बना दिया? गांधीने उसका विरोध, कोरी लफ्फ़ाजीसे ही नही, बल्कि ठोस तरीकेसे करना तै किया है।."

"गाधीके विरोधका तरीका ज्यादा मजबूत होगा, इसमें शक नही; क्योकि वह अपने हरेक कामके लिए शक्तिका बरदान जनतासे माँगता है।"

× × ×

६ अप्रेलको रौलट-क़ानूनके विरुद्ध सारे हिन्दुस्तानमें उपवास रक्खा गया, बडी सभायें हुईं। देवराजको पता था कि उसका क्या असर होगा। वह बड़ी उत्सुकतासे भारतीय पत्रोके विवरणकी प्रतीक्षा कर रहा था, लेकिन, इसके लिए सारे अप्रेल भर इन्तज़ार करना था। किन्तु, इसी बीच १२ अप्रेलको रूटरने खबर दी कि जलियाँवाला-बागमें भीड़पर पलटनको गोली चलानी पड़ी, कुछ लोग हताहत हुए। देवराजने जेनीसे कहा—

"कूचका बिगुल बज गया। भारतीय जनता मार्च शुरू कर रही है।"

इंग्लैंडके अखबार भारतीय अशान्तिकी बहुत कम खबरें छपते थे। रूटरने युद्धके जमानेमें अपनेको साम्राज्यवादी इंग्लैंडके प्रोपेगेंडाकी मशीन सिद्ध किया था। उसकी ख़बरोंसे भारतीय वस्तुस्थितिपर ठीक प्रकाश पड़ेगा, इसकी उम्मीद कहाँ हो सकती थी? लेकिन देवराज भारतीय समाचारपत्रोंमें जो कुछ पढ़ता था, उसकी सहायता द्वारा रूटरके संक्षिप्त और भ्रामक तारोंसे भी बहुत-सी बातोंकी तह तक पहुँच जाता था। पंजाबमें मार्शल-ला, और कई स्थानोपर हवाई जहाजोंसे जनतापर बम फेंकना आदि एक एक बातसे देवराजका खून खौलने लगता था—

"हमने अंग्रेज़ोंके लिए खून बहाया, अब वह हमारा खून उसी तरह बहा रहे है, जैसे उन्होने जर्मनोंका बहाया था।"

"शर्म, शर्म! लेकिन, डेवी! पूँजीवाद या साम्राज्यवादमें हृदय कहाँ? उसे शर्म और सन्मानसे क्या मतलब?"

"कुछ भी हो, अब भारतकी आत्मा कुचली नही जा सकती; उसी तरह जैसे अंग्रेज़ पूँजीवादी रूसके श्रमजीवियोंको कुचल नही सकते।"

× × ×

देवराज और जेनीका सारा समय श्रमजीवियोंको सोवियत्‌के पक्षमें तैयार करनेमे लग रहा था। उन्हे यह भी मालूम हुआ कि फ़्रांस, अमेरिका आदिके मज़दूर भी अपनी अपनी सरकारोंकी सोवियत्-विरोधी नीतिकी कड़ी आलोचना कर रहे हैं; और उनके रोषको देखकर उनकी सर्कारें डर रही हैं। जिस वक़्त देवराज सोवियत-विरोधी अंग्रेज़ शासकोंके खिलाफ लोगोंको उभाड़ता था,

उस वक़्त उसके शब्द बहुत पैने हो जाते थे। बाहर वह रूसी मज़दूरों तथा उनके बाल-बच्चोपर होते सफेद रूसियो और उनकी सहायक अंग्रेज और फ्रेंच सर्कारोंके अत्याचरको कहता था, किन्तु उसके मनके सन्मुख होती थी, पंजाबके फौजी क़ानूनके शिकार नर-नारियाँ बूढेबच्चोकी तस्वीर।

१९१९ का अन्त आया। अमृतसरकी काग्रेस समाप्त हुई। देवराजको यह देखकर प्रसन्नता हुई, कि नर्मदली गिर्गिटोंका ज़माना लद गया। काग्रेस गर्मदलियोके हाथमे ही नही आगई, बल्कि अब वह जनताकी समझमे आनेवाले शब्दोका भी व्यवहार करने लगी है।

जेनी और देवराज बराबर साथ रहा करते थे।

श्रीमती ज्यॉफरेका स्वास्थ्य ऐसे भी बहुत अच्छा नही था, किन्तु पिछले जाडोसे वह अधिक बिगडने लगा था। उनकी देखभालके लिए दोनोमेंसे एक घरपर ज़रूर रहता था। अप्रेल पहुँचते-पहुँचते श्रीमती ज्यॉफरे चारपाईसे उतर न सकती थी, न उन्हे रातको नीद आती थी। एक रात श्रीमती ज्यॉफरेने देवराजसे कहा—

"बेटा डेवी, मेरा अपना लडका भी होता, तो भी क्या वह तुमसे अधिक मेरी सेवा करता?"

"नही, मम्मी, मै तुम्हारी सेवा उतनी कहाँ कर पाता हूँ? चाहता हूँ, हर वक़्त तुम्हारी चारपाईके पास रहूँ, किन्तु एकाध सभाओमें मजबूरन् जाना पड़ता है।"

"नही, बेटा, सभाओसे कभी ग़ैरहाजिर न होना। तुम नए ज़मानेके तरुण-तरुणियोंकी भाषा और भेदको हम बूढे-बूढ़ियाँ भले ही न समझे; किन्तु, मै इतना ज़रूर मानती हूँ, कि हमारा डेवी जिस काममें हाथ डालेगा, वह जरूर अच्छा होगा। हाँ, मालूम होता है, मेरा समय आ गया है। तुम्हारे दवा-दारू [illegible] मैं इन्कार नहीं करती, किन्तु अब तुम इस शरीरकी साँसोंको और

लम्बी नहीं कर सकोगे। जेनी, सोती होगी? चार ही घंटे तो हुए हैं, जाने दो। इसीको कहते हैं—सपत् भी विपत्की तरह अकेली नही आती। कैसी भली लड़की। डेवी, तुम और जेनी दोनोकी कैसी एक-सी जोडी है। बीमारीके पिछले चार महीनोंमें तुमने और जेनीने मेरी जैसी सेवा-शुश्रूषा की है, इग्लैडकी कोई भी सौभाग्यवती माँ अपने लडके-लडकीसे उससे अच्छी सेवाकी आशा नही रख सकती थी। मेरी दो अन्तिम इच्छायें है, क्या तुम उन्हे पूरा करोगे?"

"मम्मी, तुम जानती हो, कि एक अपने जीवन-आदर्शको छोडकर बाकी कोई ऐसी बात नही है, जिसके बारेमे मैं आपकी आज्ञाको टाल सकूँ।"

"सो तो मै जानती हूँ। मै चाहती हूँ, तुम्हारा और जेनीका ब्याह हो जाय, और, दूसरी मेरी इच्छा है कि मेरी सम्पत्तिके उत्तराधिकारको तुम स्वीकार करो। जीवन-भरके लिए तुमने रुकनेको कहा था; मेरे मरनेके बाद, शायद, उसके लिए आग्रह न करोगे।"

"ब्याहके बारेमे, मम्मी, तुम जानती हो, कि हम विवाहित हैं, यद्यपि वर्तमान समाजकी दृष्टिमें नही—हम समाजके बागी हैं, इसलिए, तुम उसके नियमोकी पाबंदीके लिए, आशा है, आग्रह न करोगी। मम्मी, यदि आज्ञा दो तो मै जेनीको भी बुला लाऊँ, क्योंकि जो बात हो रही है, उसका सम्बन्ध उससे भी है।"

"मै तो नही चाहती थी कि जेनीको जगाओ, खैर।"

जेनीकी नीद खुल चुकी थी। देवराजने जेनीके शिरपर हाथ रखा। जेनी बोल उठी—"क्यो?"

"मम्मी अन्तिम समयमें दो बातोंके लिए आग्रह कर रहीं हैं—हम दोनों ब्याह कर लें।. "

जेनीके गुलाबी गाल और भी लाल हो गए। उसने मुस्कराते हुए कहा—"तो क्या, अभी हम विवाहित नही है ?"

"मैने कह दिया, हम सच्चे अर्थोमे विवाहित है। हां, समाजकी रूढिको माननेके लिए तैयार नही है। और, जब, जेनी, हमें सन्तान नही पैदा करनी है, तो रूढियोसे डरनेकी आवश्कता ?"

'लेकिन, डेवी, यहा तुमसे मेरा मतभेद है। मै एक संतान जरूर चाहती हू, जो कि हम दोनोके आदर्शोका शारीरिक उत्तराधिकारी बने।"

देवराज चारपाईके किनारे बैठ गया और जेनीके सिरपर हाथ फेरते हुए बोला—"खैर यहाँ हम लोगोका मतभेद रहे; लेकिन, जहाँ तक विवाहका सम्बन्ध है, मैने तुम्हारी भी रायको ठीक प्रकट किया न ?"

"बिल्कुल ठीक। और मम्मीकी दूसरी इच्छा क्या है ?"

"यह कि, मै मम्मीकी सम्पत्तिका उत्तराधिकारी बनना स्वीकार कर लूं।"

"तुमने क्या जवाब दिया ?"

"जवाब दिया नही, देने जा रहा हूँ। एकदम इन्कार करना निष्ठुरता प्रकट करना होगा। मै कहूँगा, उत्तराधिकार स्वीकार है, लेकिन, जेनीके नाम..."

"मेरे नाम ? डेवी, तुम जानते हो, जीविका चलानेके लिए मेरे पिताकी सम्पत्ति काफी है।"

"मेरे लिए सम्पत्तिकी आवश्यकता क्या रहेगी। इंग्लैडमे कुछ जरूरत भी पड़ती लेकिन, अब मेरा यहाँका प्रवास समाप्त सा हो रहा है—ज्यादासे ज्यादा एक साल और। जहाँ कांग्रेसने कोई नया गरम प्रोग्राम अख्तियार किया. कि मै भारत चला।" देवराजने जेनीके म्लान मुखको चूमकर कहा, "जेनी,

बिना एक पैसा पास रक्खे काम शुरू करना मेरे लिए अच्छा होगा।"

जेनीके दिलसे देवराजके वाक्य 'यहाँका प्रवास समाप्त'का असर गया नही था। उसकी आँखोमे नमी न थी, लेकिन, दिलमें सूनापन-सा मालूम देता था, मुखाकृति गभीर थी। जैसे अक्सर देवराजकी आँखोंकी तरफ देखनेसे वह मुस्करा दिया करती थी, आज उस मुस्कराहटका पता न था। उसने स्पष्ट पर धीमे स्वरमे कहा—

"तो मम्मीका उत्तराधिकार तुम्हारे लिए मुझे स्वीकार है। तुम समझते हो, मै उसका अच्छा इस्तेमाल कर सकती हूँ, लेकिन, एक शर्त—जब तक इग्लैडमे तुम्हें रहना है, जीविकोपार्जनका ख्याल छोड़ देना होगा। तुम अपने समयको सिर्फ़ राजनैतिक कार्योंमे लगाओ।"

देवराजने जेनीको गलेसे लगाकर कहा—"तुम्हारी आज्ञा शिरोधार्य।"

दोनों श्रीमती ज्यॉफ़रेकी चारपाईके पास पहुँचे। देवराजने कहा—"मम्मी, तुम्हारी दोनों इच्छाएँ हम शिरोधार्य मानते है। लेकिन, दो बातोंकी तुमसे इजाजत माँगते है।"

"कहो बेटा!"

"ब्याहके लिए सामाजिक रूढिकी पाबंदीके लिए हमपर ज़ोर न दोगी।.."

"मैं ज़ोर न दूँगी। और?"

"उत्तराधिकार जेनीके नामसे होना चाहिए।"

श्रीमती ज्यॉफरे कुछ देर तक देवराजकी तरफ़ एकटक देखती रहीं, फिर जेनीकी ओर नज़र करके, प्रसन्नताके स्वरमें बोली— "मुझे यह शर्त भी मंज़ूर है। मै जानती हूँ तुममें और जेनीमें

कोई अंतर नही है। डेवी, पहिले-पहिल जब मैने साधारण सिपाहीके तौरपर तुम्हें देखा था, तबसे बराबर तुम्हारे हृदयपर मेरी नज़र रही। मैंने उसे बहुत विशाल पाया। किन्तु कितना विशाल, इसकी सीमा अभी तक मै निर्धारित न कर सकी!" आँखोंमे आँसू भरते हुए, "जॉनी तुम्हें कितना प्यार करता था! कितना सम्मान करता था! तुम वैसे प्यार और सम्मानके योग्य हो..."

—कहते कहते उनका गला रुँध गया और फिर आगे न बोल सकी।

देवराजने घुटने टेक श्रीमती ज्यॉफरेके हाथोको अपने हाथोंमें लेकर कहा—"मम्मी, तुम अपने स्नेहके कारण यह कह रही हो। निश्चय ही तुम्हारे स्नेह, और कृपाका बदला मै नही चुका सका और न पूरा चुकाना चाहता हूँ। मै चाहता हूँ आजीवन उनके लिए तुम्हारा ऋणी बना रहूँ और एकान्त घड़ियोमे उनकी स्मृतिसे शान्ति और सन्तोष प्राप्त करूँ।"

श्रीमती ज्यॉफरेने इशारेसे जेनीको पास बुलाकर उसके शिर पर हाथ फेरते हुए कहा—"ऐसा बहुत कम देखा जाता है, बेटी, जब कि तुम दोनो जैसी जोडियाँ किसी स्नेह और वात्सल्यकी भूखी माताको मिले। तुम दोनोने काँटोका रास्ता पकडा है, इसमें सुखकी कामना फजूल है; हाँ, मै यह दिलसे चाहती हूँ कि तुम अपने आदर्श और उद्देश्यमें सफलता प्राप्त करो।"

देवराज और जेनीने श्रीमती ज्यॉफ़रेकी अन्तिम समय तक, सेवा करनेमें कोई कसर न उठा रक्खी। उन्होंने अपनी वसीयत जेनीके नाम लिखी और शान्तिपूर्वक शरीर छोड़ा।

२६

स्वदेशमें

महायुद्धको समाप्त हुए दो सालसे ऊपर हो गए थे; लेकिन, अभी भी युद्धकी अग्नि सब जगह बुझी न थी। रूसका जार सपरिवार खतम हो चुका था और शासनकी बागडोर साम्यवादियोंके हाथमें आ गई थी; लेकिन, वहाँके धनी अपने मनसे इस पराजयको स्वीकार करनेके लिए तैयार न थे। अंग्रेज मध्य-एसिया और बाकूके तेलकी ताकमें बागियोंको मदद दे रहे थे। कालासागरके पासवाले प्रदेशमें फ़ासीसी हाथ बँटा रहे थे। इसके अतिरिक्त पेत्रोग्राद्के उत्तरसे भी दुश्मनोंको मदद पहुँचाई जा रही थी। युद्धके समय ब्रिटिश समाचारपत्र और समाचार-एजेन्सियाँ रूसके साम्यवादी प्रजातंत्रके खिलाफ जोर-शोरसे प्रचार कर रही थीं। रोज प्रजातंत्रके टूटनेकी भविष्यद्वाणियाँ होती थीं; लेकिन, उन भविष्यद्वाणियोंको झूठा करते हुए बोल्शेविक आगे बढ रहे थे। इंग्लैंडके मज़दूरवर्ग रूसी क्रान्तिके प्रति बडी सहानुभूति पैदा हो गई थी, इसी डरके मारे खुलकर क्रान्ति-विरोधियोंकी मदद करनेमें अंग्रेज सरकारको डर हो रहा था। परास्त और बर्बाद तुर्कीको सर्वनाशसे बचानेके लिए कमालने तलवार उठाई थी। मित्र-शक्तियाँ जर्मनीकी पराजयके बाद मनमाने तौरसे यूरोपका फिरसे बँटवारा कर रही थीं।

लेकिन, देवराजकी नज़र सबसे अधिक भारतपर थी। जलियाँवाला-काण्ड और पंजाबके फ़ौजी क़ानूनके अत्याचारने सारे भारतके

शरीरमे बिजली दौड़ा दी थी। लड़ाईके वक्त अंग्रेज़ोंने कहा था, तलवारके शासनको हटाकर न्यायका शासन स्थापित करने तथा सभी जातियोको आत्मनिर्णयका अधिकार देनेके लिए हम लड़ाई लड रहे है। लार्ड हार्डिंजके शब्दोमे युद्धके लिए भारतके खूनको दुह कर उसे सफेद कर दिया गया। लाखो आदमियोने बहादुरीके साथ अंग्रेजोके लिए अपनी जानें दी; लेकिन इन सभी सेवाओंका पारितोषिक मिला रोलट-एक्ट, जलियाँवाला-काड, फौजी क़ानून! काग्रेसने पंजाबके अत्याचारोकी जाँचके लिए जाँच-कमीटी बनाई। अमृत-सरमे काग्रेस हुई और उसने कई गरमागरम प्रस्ताव पास किए; तिलक, मोतीलाल नेहरू, चित्तरंजन दास आदि नेताओंने क़दम आगे बढानेके लिए कहा। गाँधीजीका नेतृत्व स्थापित होता जा रहा है। भारत किस रूपमें कदम आगे बढायेगा, इसका अभी निर्णय नही हो पाया, तो भी इसमें संदेह नही कि देश दक्षिणी अफ़्रिकाके सत्याग्रही विजेता गाँधीसे किसी बड़े राजनैतिक प्रोग्रामकी आशा रखता है।

महायुद्धमे इंग्लैड विजयी हुआ। उसने जर्मन-जैसे अजेय शत्रुको कुचलकर उससे क्षतिपूर्तिके रूपमे भारी रकम वसूल करना तै किया। जर्मन-उपनिवेश और तुर्क-साम्राज्यके बहुतसे प्रदेशोको मित्र-शक्तियों—विशेषकर अंग्रेजों—ने अपने उपनिवेश और प्रभावक्षेत्र बनाए। लेकिन, जितनी खुशी इंग्लैडके शासक-वर्गमें थी, उतनी साधारण जनतामें नही थी। युद्धके समय रातदिन गोला-बारूद तैयार करनेमे लगे लाखो आदमी अब बेकार हो गए थे। फौजे दनादन तोडी जा रही थी, और लाखों सैनिक घर भेजे जा रहे थे। कितनी ही माताओके लडके मारे गए थे, कितनी ही पत्नियोंके पति और कितने बच्चोके पिता मारे जा चुके थे; इनके अभावको परिवार आसानीसे भुला न सकता था, विशेषकर जब कि

उन्हीके ऊपर उसकी परवरिश निर्भर थी। युद्धने सबसे अधिक संख्यामें नौजवानोकी ही बलि ली थी, इससे विवाह-योग्य लाखों तरुणियोके लिए पति मिलने मुश्किल हो गए थे। अपार जन-धनकी हानिसे राष्ट्र प्रसूता स्त्रीकी भाँति अशक्त और श्लथ था। इंग्लैंडकी साधारण जनता युद्धकी भयानकताका अनुभव कर चुकी थी, और उसे दूसरे पथकी जरूरत थी, किन्तु आरामकी ज़िन्दगीके आदी होने तथा दब्बू स्वभावके कारण वहाँके मजदूर नेता उनका पथ-प्रदर्शन नही कर सकते थे। जेनीका कहना था—"हमारे मजदूर-वर्गके नेता जितने ही अधिक मूर्ख और दब्बू है, शासक धनी-वर्ग उतना ही अधिक चतुर और मौका-शनास है।"

× × ×

१९२१ का पूर्वार्ध समाप्त हो चुका था। भारतकी राजनीतिक अवस्था गरम थी। फौजी कानून और जलियाँवालाबाग़-कांड भले ही हुए, लेकिन साथ ही गवर्नमेन्टको रौलेट-ऐक्ट जिन्दा ही दफ़ना देना पडा। जेनी और देवराज अपना सारा समय मजदूरों और बेकारोके भीतर राजनीतिक जागृति लानेमें खर्च कर रहे थे; तो भी देवराजकी नजर भारतपर लगी हुई थी। गाँधीजीने स्कूल और कॉलेजके विद्यार्थियोको शैतानी पढ़ाई छोड़कर निकल आनेके लिए आह्वान किया। जेनीने पूछा—"स्कूलोके बहिष्कारके बारेमें तुम्हारी क्या राय है?"

"मै इस तरहके बहिष्कारसे सहमत नही हूँ। जो नौजवान पढाई छोड़कर राजनैतिक क्षेत्रमें काम करना चाहें, वे भले ही वैसा करें; लेकिन सभी विद्यार्थियोंको पढाई छोड़नेके लिए कहना कभी ठीक नही हो सकता। और, फिर आजकलके ज्ञान-विज्ञानको शैतानियत कहना तो अत्यत अनुचित है।"

"हाँ. डेवी, देखो, इस ज्ञान-विज्ञानके युगको लानेके लिए पोपों और पुरोहितोंने गेलेलियो-जैसे कितने ही विद्वानोको मौतके घाट उतारा। सहस्राब्दियोके अज्ञानपूर्ण निबिड अधकारको चीरकर हम इस प्रकाशमे आए है। इसके अस्तित्वको अस्वीकार करनेका मतलब है, हम पूर्वकालीन अन्धकारका आवाहन करते है।"

"मै समझता हूँ, इस निर्बलताका कारण गाँधीजीमे धर्मका अनुरागातिरेक है। युरोपमें सैकडो वर्षोके कटु अनुभवोके बाद स्वीकार किया गया कि धर्मको राजनीतिमे दखल देनेका अधिकार नही होना चाहिए, लेकिन गाँधीजी फिर ख़िलाफतकी दुहाई देकर हिंदू-मुस्लिम-एकता स्थापित करना चाहते है। मेरी समझमें ऐसी एकता कभी चिरस्थायी नही हो सकती।"

"तो क्या, तुम समझते हो, गाँधीका प्रोग्राम ठीक नही है ?"

"गाँधीकी विचारशैली चाहे कितनी ही त्रुटिपूर्ण हो, लेकिन जनतामे जो जोश, जो चेतना फैल रही है, और जिस तरह वह आगे बढ रही है, उसे देखते हुए हमे साथ चलनेके लिए तैयार होना चाहिए।"

× × ×

नागपुरकी काग्रेस खतम हुई। सत्याग्रहकी तैयारीके लिए गाँधी-जीने 'तिलक स्वराज्य-फड'के नामपर एक करोड रुपएकी अपील की। देवराजको यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई, कि जनता बड़े उत्साह के साथ सहायता प्रदान कर रही है। जनवरी-फ़रवरी (१९२१)के भारतीय समाचार-पत्रोंको देखकर उसे खूब मालूम हो गया, कि भारतमें एक अभूतपूर्व राजनैतिक तूफ़ान आया है। भारत लौटनेकी बात जेनीके साथ कई बार हो चुकी थी, अब प्रस्थानका समय आ पहुँचा था। देवराज कई दिनोसे अपने निर्णयको जेनीके सामने

रखना चाहता था, लेकिन, कुछ और सोचनेके लिए उसे कलपर छोड़ देता था। आज जेनी मैंचेस्टरके मजदूर-संघमे व्याख्यान देने गई थी। रातको जेनीके लौटनेपर देवराजने अपने निश्चयानुसार बात छेडी—

"जेनी, तुमने देखा, 'तिलक स्वराज्य-फंड'के लिए लोग किस तरह जोश दिखला रहे है। अभी मार्च समाप्त नही हुआ, तीन महीनेके भीतर पचास लाख रुपये जमा हो गए। ज़रा ख्याल तो करो, हिन्दुस्तानी जनताके लिए इस तरहका सर्वव्यापी आन्दोलन एक नई बात है। और, फिर, तुमको मालूम होना चाहिए, कि इस फ़ंडमे देनेवाले लोगोमे अधिकाश गाँवोकी अनपढ जनता है।"

"तो, इसका मतलब यह है कि राष्ट्रीय जागृति साधारण झोंपडों तक पहुँच रही है।"

"तुम तो, जेनी, हिंदी-पत्रोको पढ नही सकती और अंग्रेज़ी पत्रोमे निरी देहाती जनताके सम्बन्धमे बहुत सी खबरें आती नही। मद्य-निषेध, विलायती-वस्त्र-वहिष्कार, कचहरियो-स्कूलोंका त्याग आदि प्रोग्राम कांग्रेसने स्वीकार किए है, इनमेंसे कितनोकी सफलताके बारेमें संदेह किया जा सकता है; लेकिन इनके कारण जो अपूर्व जागरण जनतामे देखा जाता है, वह भविष्यके लिए स्थायी परिणाम छोडेगा। जिन विद्यार्थियो, वकीलो और सरकारी नौकरोने अपना काम छोडकर राजनीति मे प्रवेश किया, वे अपने पीछे एक स्थायी कार्यकर्ताओकी जमात छोडे बिना नही रहेंगे। मुझे तो देखनेमें आता है, भारतके राजनीतिक इतिहासमें एक नया अध्याय शुरू हो रहा है। ऐसे अवसरको कोई विचारशील आदमी हाथसे जाने कैसे दे सकता है ?"

जेनीने देवराजके कंधेपर अपना सिर रखकर उसके हाथको अपने हाथोमे लेते हुए कहा—"डेवी, मै कई दिनोसे देख रही थी

कि तुम किसी बातको मुझसे कहनेमे झिझक रहे हो। भारतीय समाचारोंके सम्बन्धमें हम दोनोंके बीच जो बातचीत होती थी, उनसे मुझे इसके जाननेमें कोई दिक़्क़त न थी कि तुम्हारा दिमाग़ आजकल किस चिंतनमें है। मैंने तुम्हारे चेहरेको अक्सर गम्भीर देखा; यद्यपि मेरे सामने आनेपर तुम्हारी आँखे मुस्कराये बिना नही रहती। मै तुमसे कह चुकी हूँ, और तुम अच्छी तरह जानते भी हो, कि मेरा प्रेम तुम्हारे ऊपर असाधारण है, तो भी, उसे आदर्शमें बाधा डालनेका अधिकार नही है।" अन्तिम शब्द कहते कहते जेनीकी आँखोमें आँसू छलक आए।

देवराजने जेनीकी ठुड्डीको ऊपर उठाकर दो बार उसके मुँहको चूमा, फिर दाहिने हाथसे उसकी कमरको परिवेष्ठित करते भीगी आँखोंसे उसकी आँखोकी ओर देखते हुए कहा—"मेरी जेनी, तुमसे यही आशा थी। तुम्हारा प्रेम मेरा सम्बल है स्थायी सम्पत्ति है। कठिनाइयों, निराशाओसे घिरे होनेपर वह मुझे आन्तरिक शक्ति प्रदान करेगा। जितने ही देश और कालसे हम दोनो दूर होते जायँगे, उतना ही वह अधिक दृढ और मनोरम होता जायगा। मैने कई बार सोचा कि क्या तुम्हे भी अपनी सहकारिणी बना सकता हूँ। . "

जेनीका चेहरा चमक उठा और उसने देवराजके सिरके अस्त-व्यस्त बालोको सुलझाते हुए कहा—"हाँ, प्यारे डेवी, मै भी ऐसा सोचती रही; लेकिन, यदि तुम्हें अपने कार्यमे कुछ भी अड़चन मालूम हो—और अड़चन होगी जरूर—तो मेरा उसके लिए कोई भी निर्बन्ध नही। समय समयपर अपने कार्योंके बारेमे जो कुछ तुम लिखोगे वह पंक्तियाँ मुझे काफी संतोष देंगी। हम दोनो अपने अपने कार्यक्षेत्रमे जितनी ही अधिक तन्मयताके साथ कार्य करेंगे, उसीको हम अपने प्रेमका प्रतीक समझेंगे। और, फिर, डेवी, तुम

अपनी साक्षात् प्रतीक भी तो मुझे दिए जा रहे हो।" कहते कहते जेनी जरा रुक गई।

देवराजने गाढ़ालिंगन करते हुए कहा—"मेरी जेनी, मुझे आशा है, वह पुत्री......"

"और मेरी आशा और अभिलाषा है कि वह पुत्र होगा। मानसिक तौरसे होगा वह मेरा और पापाका उत्तराधिकारी..."

"और शारीरिक तौरसे देवराजसिंह, सिपाही, पहलवानका ....." देवराजने ताना देते हुए कहा। जेनी उसके गलेसे लिपटकर बोल उठी—"नही, नही, नाराज़ मत होओ। पापा कहते थे कि डेवी और मेरे विचारोंमें ग़ज़बकी समानता है। फिर, हमारा बच्चा तुम्हारे मानसिक उत्तराधिकारसे भी वंचित नहीं रहेगा।"

बड़ी रात तक जेनी और देवराज अपने भविष्यके जीवन और कार्यक्रमपर बातचीत करते रहे। जेनी सो गई। लेकिन देवराजको नींदका कही पता न था। वह रह रहकर गाढ निद्रामें निमग्न जेनीके चेहरेकी ओर देखता था। उसके आरक्त पतले ओंठ बन्द थे। साँसकी गति सम थी। बाईं आँख बिखरे केशोंसे कुछ ढँक गई थी। देवराजने धीरेसे उन्हें हटाया और वह प्रशस्त पेशानीकी ओर देखते हुए प्रथम मिलनसे आज तककी घटनाओंकी आवृत्ति करने लगा। यद्यपि पहली घटनाको हुए पाँच बरससे ऊपर हो गए थे। उस वक्त जेनीमें शैशव अधिक था। लेकिन, उसके मुखका माधुर्य उसके सौंदर्यकी सुवास, उसका स्वाभाविक आकर्षण अब भी वैसा ही था। देवराजको वह दिन भी याद आया, जिस दिन जेनी उसके गम्भीर चेहरेको प्रफुल्लित करनेके लिए नई पोशाक पहनकर अस्पतालमें आई थी। उसे रह रहकर ख़्याल आता था—अब जेनी आँखोंसे देखनेकी चीज़ नहीं रह जायगी। उसके स्पर्शसे शरीरको शीतल नहीं किया जा सकेगा। वह स्मृतिकी विषय

होगी। लेकिन, तो भी उसका सौंदर्य, उसका प्रेम और भी अधिक प्रशस्त रूपमें मनके सामने रहेगा। वर्ष बीतते जायँगे, लेकिन स्मृति मेरे आगे जेनीके चिरयौवन और चिर-सौंदर्यको अक्षुण्ण स्थापित करती रहेगी।

× × ×

अप्रेलका मध्य था। जाड़ोंकी चिर-सुप्त प्रकृति जागृत हो उठी थी। बाग़-बग़ीचे, मैदान सब जगह रंग-बिरंगे फूल खिल रहे थे। जेनी और देवराजने बसन्तके इन आरम्भिक दिनोंको अपने मिलनका अन्तिम समय समझकर अधिकतर उद्यान-विहार, वन-विहार और आमोद-प्रमोदमें व्यतीत किया। जेनी कहती थी—"जीवनके ये अन्तिम सरस दिन हैं।"

आखिर अप्रेलकी पच्चीसवी तारीख़ भी आ गई। जेनीने यात्राके लिए सारे सामान तैयार किए। ट्रेन बारह बजे रातको विक्टोरिया स्टेशनसे खुलनेवाली थी। धड़कते हुए कलेजेसे देवराजको साथ लिए जेनी ज्यॉफ़रे-भवनसे बाहर हुई। टैक्सीकी तेज़ चालपर उसे मन ही मन क्रोध आ रहा था—"क्यों नहीं वह विक्टोरिया स्टेशन पहुँचनेमें ही दो बरस लगा देती?"

ट्रेन प्लेटफ़ार्मपर खड़ी थी और अभी उसके खुलनेमें घंटे भरकी देर थी। जेनी और देवराज हाथ पकड़े प्लेटफ़ार्मपर इधरसे उधर टहल रहे थे। उनके वार्तालापमें कोई क्रम न था। रह रहकर चित्त श्रान्त होने लगता था। पहली घंटीकी आवाज़ जेनीके कलेजेमें तीरकी तरह लगी। देवराजने गाड़ीपर चढ़कर जेनीको बार बार चुम्बन किया। जिस वक़्त गाड़ी प्लेटफ़ार्मसे सरकने लगी, उस वक़्त उसने देखा—जेनी आँसू भरी आँखोंसे उसकी तरफ़ देख रही है। उसने रुमालको ऊपर हिलाते हुए कहा—"चियरो डेवी, मेरे प्रेम!"

देवराज भी तब तक अपनी रुमाल हिलाता रहा, जब तक कि एक लम्बी पतली मूर्तिके हाथोसे कपड़ेका वह टुकडा हिलता रहा।

डोवरसे जहाजजर चढते वक्त देवराजने कहा—"अलविदा, भले इंग्लैड!"

३०

एक बार फिर गाँवमें

देवराजके दिलमें बड़ी उमंग थी। छै साल बाद वह अपनी मातृभूमिको देखेगा और साथ ही अपने देशके लिए कार्य करनेका उसे मौक़ा मिलेगा। उसका सारा समय अपने आसन्न भविष्यकी योजनाओंमें बीत रहा था। कभी कभी मालूम होता था, जहाज़के बग़लके गोल छिद्रसे जेनीका चेहरा झाँक रहा है। उस वक़्त देवराजका खिला हृदय क्षण भरके लिए मुरझा जाता था।

काम करनेके तरीक़ेके बारेमें देवराजने तय किया, कि उसे अपनी विद्या और योग्यताको बिलकुल छिपाकर एक साधारण स्वयंसेवकके तौरपर रहना है। जेनीका पत्र-व्यवहार शायद रहस्यको खोल दे, इसीलिए पोर्ट-सईदसे जेनीके लिए भेजे पत्रमें लिख दिया—मुझे जिन परिस्थितियोंमें काम करना है, उनके कारण शायद कुछ समयके लिए हमें पत्र-व्यवहारको रोक रखना होगा। इसके बारेमें मै फिर सूचित करूँगा।

१७ मई (१९२१) शामको जहाज़ बम्बई पहुँचनेवाला था। अभी अँधेरा नहीं हुआ था, जब कि भारतभूमिकी काली घाट और वृक्षोका विषम-तल दिखाई पड़ने लगा। देवराज डेकसे यह जानते भी बड़ी उत्सुकतासे देख रहा था कि कुछ ही समयमें वह स्वयं तटपर पहुँचनेवाला है।

कस्टमके अधिकारियोने देवराजकी चीज़ों—जिनकी तादाद बहुत अधिक नहीं थी—को बड़े ग़ौरसे देखना शुरू किया; लेकिन, जिस

वक़्त 'विक्टोरिया-क्रास' पदकपर उनकी नज़र पड़ी, वे क्षमा माँगने लगे। देवराजको फ़ायदा यह हुआ, कि कोई ख़ुफ़िया उसके पीछे न पड़ा। वह एक भारतीय होटलमें ठहरा।

बम्बईमें ज्यादा दिन रहनेकी ज़रूरत न थी। देशकी स्थितिको विशेष तौरसे वह जानना चाहता था और बम्बईमें दो चार दिन रहकर वहाँकी सभाओं, व्याख्यानों, समाचार-पत्रोंको देखनेसे उसका यह मतलब सिद्ध हो सकता था। फिर, उसे अपने पदक वायसरायके पास लौटाने थे। वह वहाँ चौपाटी और दूसरी जगहोंकी कई सभाओ में उपस्थित होता रहा। जहाँ पहले हरेक राजनीतिक बातको बहुत नरम और अस्पष्ट करके कहा जाता था, वहाँ अब खुले आम राजद्रोहका प्रचार किया जा रहा था। उसने मनमें कहा—यदि इस आन्दोलनने और कुछ न करके सिर्फ़ देशकी स्वतन्त्रताका संदेश खुले तौरसे जनताके पास पहुँचानेका काम किया होता, तो भी वह इसकी बहुत भारी सफलता समझी जाती। जिस खद्दर और गाँधी टोपीका नाम भर उसने अख़बारोंमें पढ़ा था, उन्हें वह अब बम्बईके गली-कूचोंमें हर जगह देखता था। बम्बई पहुँचनेके दूसरे दिन सबसे पहला काम उसने किया था खद्दरकी लुंगी, कुर्ता और गाँधी टोपीसे अपनी अंग्रेज़ी पोशाकको बदलना। होटलके नौकरोंको कुछ आश्चर्य सा हुआ, जब वह अपने कपड़ोंको उनमें बाँट रहा था। खादी साफ़ थी और उसे खटक रहा था कि इस वेशमें उसे कोई गाँवका आदमी नहीं कह सकता। लंदन छोड़नेके बाद हीसे उसने अपनी मूछोंको साफ करना छोड़ दिया था और अब वह कुछ बढ़ आई थीं। उसे पूरी आशा थी कि एक दिन वह ठेठ रामपुरका देवराज बनकर रहेगा। बम्बई छोड़नेसे पहले उसने अपने दोनों तमग़ोंको रजिस्टर्ड पार्सलसे वायसरायके पास भेज दिया; साथमें यह चिट्ठी थी—

"बम्बई,
२४ मई, १९२१

. . . .

"इन तमगोसे आपको मालूम होगा कि मैंने अंग्रेज सरकारकी कुछ सेवा की है। लेकिन, हमारी सेवाओंके बदले ब्रिटिश सरकारने जलियाँवाला-बाग़ जैसे हत्याकाण्ड किए और वह वैसे अत्याचारोंको हर वक़्त दुहरानेको तैयार है। ऐसी अवस्थामें इन पदकोंको रखनेमें मेरे दिलको चोट पहुँचती है......

देवराज सिंह
गाँव—रामपुर
......."

एक दिनके लिए वह नासिकमे उतरा। वह देखना चाहता था कि बम्बईके बाहर असहयोग-आन्दोलन कैसा चल रहा है। उसने देखा—बम्बई जैसी चहल-पहल चाहे न भी हो, लेकिन राष्ट्रीय जागृति वहाँ भी है। वह जिस धर्मशालामें ठहरा, वहीं छपरा ज़िलेका एक तीर्थाटक मिला। देवराजने बडी उत्सुकताके साथ वहाँकी राजनीतिक स्थितिके बारेमें प्रश्नोत्तर किए—

"आपके यहाँ असहयोग-आन्दोलन खूब ज़ोरसे चल रहा है?"

"क्या बाबू, क्या पूछते हे?"

"असहयोगका आन्दोलन, सभा-व्याख्यान, ताड़ी-शराबकी बंदिश कैसी चल रही है?"

"सुराजके बारेमें पूछते हैं न बाबू? हमारे ज़िलेमें जैसा लोगोंने सुराजको माना है, वैसा तो मुझे कहीं और नही दिखाई पड़ा। भट्ठी और ताडीकी दूकानपर सेवासन्ती (स्वयंसेवक) पहरा देते हैं। यहाँ तो खुले आम गाँजा बिक रहा है। हमारे यहाँ तो देवतापर

भी चढ़ानेके लिए गाँजा नही लेने देते। कहते हैं—देवता भी गाँधी बाबाकी बात मान गए है।"

"तो, गाँधी बाबाकी बात छोटे-बड़े सभी मान गए है न?"

"छोटे तो सभी मान गए है। शराब-ताड़ीकी बात क्या पूछते है? आप हमारे जिलेके गाँवोंमें जायँगे, तो देखेंगे कि पचासों हुक्के वृक्षोंकी चोटियोपर टँगे है? हमारे कुग्राड़ी परगनामे चार थाने हैं—कटया भी उनमें एक है। सारी कुग्राडीके एक ही ज़मीदार महाराजा हथुश्रा है। उनके ऊपर कुछ असर नही। राजके नौकर चाकर गाँधीबाबा और सुराजको गाली देते है। लेकिन बाबू सुराज तो हम ग़रीबोको चाहिए न?

"तो तुम्हारे यहाँ गाँव गाँवमे पचायत है?"

"गाँव गाँवमें पंचायत है। घर घरसे सेवासन्तीके लिए मुठिया निकाली जाती है। सेवासन्ती रातको पहरा देते है। पच लोग मुक़द्दमोंका फैसला करते है। अब कचहरीकी रौनक़ नही रही। वकील लोग बैठे बैठे मक्खी मारते है। कोई कोई वकील सुराजमें भी है।"

"तुम्हारे थानेमें सुराजका काम कौन करता है? बडे बडे सुराजी लोग भी आते है न?"

"हमारा थाना, बाबू, बहुत एकान्तमे है। ६-७ कोससे नज़दीक कोई स्टेशन नही। बडे नेता बहुत कम आते है। लेकिन हमारे यहाँके सुराजी दरोगा (थाना कांग्रेस कमेटीके मन्त्री)का अच्छा ही नाम था, मूँछ जरा ज़रा उठ रही थी, स्कूल छोडकर सुराजमें काम करते थे; लेकिन, अब वह बदल गए हैं। मुझे नाम नही मालूम।"

तीर्थयात्रीकी बातसे देवराजको बडी प्रसन्नता हुई। अभी तक वह निश्चय नहीं कर पाया था, कि किस जगह अपने कार्यका आरम्भ करे। वह अपनेको छिपाकर, बिल्कुल साधारण स्वयंसेवककी तरह काम शुरू करना चाहता था। और, उसके लिए अब तक

कोई स्थान उसकी नज़रपर नही चढ रहा था। उसने कटयाके बारेमें कुछ और भी प्रश्न किए और अन्तमें तय किया कि यही उसके लिए उपयुक्त स्थान होगा। उसने स्टेशन आदि नोट कर लिए।

रास्तेमें देवराज दो-तीन जगह और उतरा और वह भी सिर्फ राष्ट्रीयताकी बाढका अन्दाज़ा लगानेके लिए। बनारस पहुँचते पहुँचते उसके कपडोंकी सफाई और नयापन बहुत कुछ कम हो गया था। उसे बड़ी प्रसन्नता हुई, जब एक स्टेशनपर टिकट देखनेवालेने जल्दीमें टिकट देकर आगे बढ़ते देखकर उसे 'गवाँर' कहकर सम्बोधित किया।

आठ नौ बरस बाद वह जखिनिया स्टेशन उतरा। फिर उसी पुराने रास्तेसे रामपुरकी ओर चला। उसने छै-सात बरस तक फ्रांस और इंग्लैडके किसानो, मज़दूरोको नजदीकसे देखा था। उससे पहले अपने यहाँकी गरीब जनताको भी उसने देखा था; लेकिन उनकी ग़रीबीका अन्दाजा लगानेके काबिल वह अपनेको अब समझता था। संसारमें—कमसे कम जिन देशोंको उसने देखा था, वहाँ—इतनी गरीबी देखनेको नही मिली थी।

उसका पैर रामपुरकी ओर पड रहा था लेकिन उधर कोई आकर्षण नही था, सिवाय इसके कि वह वहां पैदा हुआ था। उसकी माँको मरे बहुत साल हो गए थे। शायद वे दोनो कोठरियाँ भी अब मौजूद न होंगी, जिनसे कि आँख खोलते ही उसका परिचय हुआ था। अपने चचेरे भाइयोके बारेमे भी वह नही कह सकता था कि कोई घरपर मिलेगा। हाँ, भौजी लक्ष्मीके होनेकी उम्मीद थी। उसके मनमें सवाल उठ रहे थे—'गाँववाले पूछेंगे, देवराज तुम इतने दिनों तक कहाँ रहे ?—बिलायतमें ? जात-पाँत रक्खे हो कि नहीं ? क्या जवाब देना होगा ?' बम्बईसे उसने दो रेशमी साड़ियाँ ले ली थीं और लड़कों—जिनकी संख्या आदिके बारेमें उसे कोई निश्चित ज्ञान न था—के लिए कुछ रेशमी थान। पुलिसके

लोग हैं, शायद खद्दर पहननेमें उन्हें डर लगे; साथ ही वह हाथके कते-बुनेको छोड़ दूसरा कपडा खरीदना नही चाहता था, इसलिए उसने सभी कपड़े रेशमी खरीदे थे।

गाँवपर नज़र पडते ही देवराजने अपनी दोनों कोठरियोंकी ओर निगाह दौडाई। वे गाँवसे बाहर थीं। उसे वे दिखलाई न पड़ीं। स्मृतिपर बहुत जोर दिया तब पता लगा कि उन कोठ-रियोंकी जगह तीन तीन हाथकी दीवारें खड़ी है। एक बार उसके हृदयको धक्का लगा—इन्ही कोठरियोंमेंसे एकमें उसने अपनी माँको बीमारीमें घुलते देखा था। यही उसके पिता मौतके शिकार हुए। इसी आँगनमें पार्वतीके साथ वह खेला करता था। चटाईपर बैठा वह हिसाब लगाता और बकरीके छोटे छोटे बच्चे उसके कान और गर्दनको सूँघते थे। उसके पैर आगेको बढ रहे थे, लेकिन आँखें उन्हीं दीवारोंपर गडी थी। उसके चचेरे भाइयोंके दरवाज़े अधिक गुलज़ार थे। खुली चरनमें बैल बँधे हुए थे। उसे आश्चर्य नहीं हुआ; जब कि उसी वक़्त उसने सुक्खू भैयाको दरवाजेसे बाहर निकलते देखा।

देवराजके पास बिछानेका कम्बल और मामूली कपड़ोके अति-रिक्त वही कपड़े और मिठाइयाँ थी, जिन्हें कि वह अपने बन्धुओंके लिए लाया था। इन चीज़ोंको उसने अपने कन्धेपर डाल लिया था। सुक्खूने दूरसे कुर्ता-टोपी लगाए एक लम्बे गठीले जवानको आते देखा। थोड़ी देर तक अपनी स्मृतिको ताज़ी करके वह ठमक गए। उसी वक़्त देवराजने दौड़कर सुक्खूका पैर छुआ। अब पहिचाननेमें दिक़्क़त नहीं हुई। सुक्खूने आँखोंमें आँसू भरते हुए देवराजको छाती-से लगा लिया। शामके पाँच बज रहे थे। गर्मी कम थी। बाहर बड़ा सुहावना लगता था। द्वारपर आठ बरससे कम उम्रके दो तीन लड़के आम चूस रहे था। सबसे छोटा, चार बरसका संतू, जितना

आम चूस नही रहा था, उतना अपने मुंह और देहमें पोत रहा था। देवराजको देखते ही वह सहम गया। सुक्खूने उत्साह बँधाते कहा--"सलाम करो सन्तू, चाचा देवराजको।" सन्तू देवराज चाचाका नाम लक्ष्मीके मुँहसे कई बार सुन चुका था; लेकिन, अभी उसकी हिम्मत उधर देखनेकी न होती थी। देवराजने लड़कोंके हाथमें दो दो लड्डू दिए और भाभियोके चरण छूने भीतर चला गया। सुक्खूकी स्त्रीके बाल बहुत सफ़ेद हो गए थे। आठ बरसमें इतना अन्तर हो जायगा, इसकी आशा न थी। सभी भाभियोंको पाँच-पाँच रुपये देकर उसने पैर छुए। सुक्खू बाहर इन्तज़ार कर रहे थे, लेकिन, यहाँ आँगनमें ही चारपाई बिछकर कचहरी लग गई। भाभीने ठंडा शर्बत बनाना चाहा, लेकिन, देवराजने कहा—"बड़की भौजी, शर्बतसे अच्छे मेरे लिए आम हैं। सात बरस ऐसे देशमें रहा, जहाँ आमका दर्शन भी दुर्लभ है।"

बड़ी भौजीने देवरानियोंकी ओर इशारा करते हुए कहा—"देखा, देवराज अब भी वही नन्हासा देवराज है। आमोंको भूला नही......"

"बड़की भौजी, यदि करियवा (काला)का आम हो, तो बहुत अच्छा।"

"करियवा आम, बाबू, अबकी साल खूब आया है। तीन साल बाद ऐसी आमकी फ़सल आई है। आमका कौन दुख है, इस साल तो उसे कुत्ता-सियार भी नहीं पूछते।"

पानी डालकर एक बटली भर आम देवराजके सामने रख दिया गया। बड़ी भाभी और लक्ष्मी चुन चुनकर उसे देने लगीं—"यह देखो, बड़ा मीठा है, बाबू।"

सन्तू दरवाज़ेसे झाँककर देख रहा था—अपनी माँ और चाचियोंको एक अजनबीके सामने इस तरह हँसते बोलते देखकर उसे

अचरज हो रहा था, और कभी कभी उसके मनमें होता भी था कि चलनेमें कोई हर्ज नहीं; तो भी, हिम्मत नही होती थी। बड़ी भौजीने एक आँखसे झाँकते सन्तूको देख लिया। सन्तू अपनी माँसे भी अधिक बड़ी माँको प्यार करता था। वह जितना बड़की माँके पास रहता, उतना लक्ष्मीके पास नही। बड़ी माँने सन्तूको गोदमे उठा लिया और उसका मुँह चूमकर कहा—"क्या सन्तू, मेरे बेटे होकर लजाते हो? देवराज चाचा है, तुम पहचानते नही?"

सन्तूने आँचलमे मुँहको छिपाकर कानमे कहा—"बड़की माँ, यही देवराज चाचा है?" उसने जेबसे लड्डू निकालकर दिखलाया—"यह देखो, देवराज चाचाने दिया है।"

"अच्छा सन्तू, मेरे बचवा, तुमने कितना मुँहमे रस लिभेड लिया है। मुँह धो दूँ और जाओ, भौजीसे नया कुर्ता पहन आओ।"

"तो, देवराज चाचाकी गोदमे बैठूँगा।"

"हाँ, जरूर बैठना।"

सन्तू मुँह धुलाने एक कोठरीकी ओर भाग गया। देवराजने बड़ी भौजीसे हँसते हुए कहा—"तो, भौजी बहू आ गई?"

"हाँ, बबुआ, रामप्रसादकी शादी इसी साल हुई है। अभी तो महीना भर ही हुआ है। रामप्रसाद तीनों चाचाके साथ छुट्टी लेकर आया था। अच्छे घरकी पढ़ी-लिखी लड़की है। सासुओंको बड़ा मानती है। आखिर खानदान......"

"बहुत तारीफ मत करो भौजी, पहले तो सास लोग तारीफ़का पुल बाँधती हैं, और पीछे बेचारी बहुओंको ज़रा ज़रासी बातपर झिड़कती हैं।"

"नहीं, बाबू, तुम तो जानते हो। कहनेको तो ये तीनों देव-

रानियाँ है, लेकिन, आज तक किसी सासका भी क्या इतना मान हुआ होगा। मेरे सामने किसीने कभी मुँह भी नही खोला।"

"भौजी, इसमें कारण तुम्हारा गुण है।"

बडी भौजीने ठंडी साँस लेते हुए आँखोको तर करके कहा--गुनकी बात करते हो बाबू, गुन तो छुटकी ऐय्या (देवराजकी माँ) में था। आज उनके मरे आठ साल हो गए, लेकिन, कोई दिन नही जाता, जिस दिन टोले-मुहल्लेमें उनकी चर्चा न होती हो। सारे गाँवमे उनका शत्रु नही था।"

लक्ष्मीकी आँखे डबडबा आई थी; और वह एक-ब-एक उदास हो गए देवराजकी मुँहकी ओर ताक रही थी। देवराजने प्रसगको बदलते हुए कहा--"बड़की भौजी, रामप्रसादको क्या कोई नौकरी मिली है?"

"दरोग़ा है, बाबू, दरोगा! अब वही छोटा रामप्रसाद नही है। अब तो फूलकर गभरू जवान हो गया है।"

"तो तुम चाहती हो कि हम लोग हमेशा बच्चे ही बने रहे?"

"नही, बाबू, मुझे बच्चा बनाए रखनेकी लालसा नही है। कई सालसे कहते कहते अबकी साल जाकर शादी हुई है। देवराज बबुआ, अब तुमको भी शादी कर लेनी है। मेरे नैहरमें एक बड़ी सुघड़ लडकी है। रोटी-पानी, चौका-बासन सब अच्छी तरह जानती है। गऊ है, गऊ लक्ष्मीकी तरह।"

लक्ष्मीने भी अबकी बार चुप रहना पसन्द न किया--"हाँ, बाबू, बहिनी ठीक ही तो कहती हैं। बुआ इतने दिनों तक क्या तुम्हें बिन-ब्याहा रहने देती?"

देवराजने अपनेको प्रतिकूल परिस्थितिमे घिरा देखकर जान छुडाते हुए कहा--"भौजी, मैं शादी नही करूँगा।"

"क्या बोलते हो बाबू, वंश-वरखाके लिए ब्याह करना होता है कि....."

"सन्तू और रामप्रसाद हमारे वंश-वरखा नही है ?"—कहते हुए देवराजने नया कुर्ता पहनकर बड़ी माँकी पीठपर झुके सन्तूको अपनी गोदीमें ले मुँह चूमकर कहा—

"भौजी, तुम लोग शादीकी बात मत करो।"

"क्यों बाबू ? . . . . . ."

"शादी करनेपर मेरा घर अलग होगा; नही करनेपर यही मेरा घर, यही मेरा परिवार है।"

बड़की भौजी और तीनों देवरानियाँ आँचलसे आँसू पोंछने लगीं। लक्ष्मीने सबसे पहले मुँह खोला—

"तुम्हारा ब्याह हो जायगा तो देवराज बबुआ, तुम आते-जाते रहोगे; नहीं तो जहाँ जाओगे, वहीके हो जाओगे।"

"नही भौजी, जन्मभूमि भी कही छूटती है ? रामपुरको मैं नहीं भूल सकता।"

भौजाइयाँ अपने विषयपर आ गई थी, इसलिए वहाँ बातचीतके समाप्त होनेकी संभावना नही थी। देवराजने भी उसे संक्षिप्त नही करना चाहा। बड़की भौजीने अपने. पतिके पास कहला भेजा— "पहले भौजाइयोंका हक़ होता है तब भाइयोंका।" सुक्खू बेचारे अपनी उत्सुकताको दवाए बाहर बैठे रहे।

देवराजने बडी भाभीसे कहा—"भौजी, तुम लोग कैसा कपड़ा पसन्द करोगी, यह मुझे मालूम न था; इसीलिए यह छै-छै रुपये तुम तीनों भौजियोको देता हूँ; और ये दो साड़ियाँ है, इनमेंसे एक बहूके लिए और एक लक्ष्मी भौजी. . . . . ."

बड़ी भौजीने दूसरी दोनों देवरानियोकी ओर मुस्कराते हुए देखकर कहा—"हाँ, बबुआ, काहे न ? मुँह देखकर न सब कुछ ? अब हम बूढियोंको कौन पूछता है।"

लक्ष्मी शरमा गई। देवराजने हँसते हुए कहा—"तो बड़की

भौजी, इस तड़क-भड़क किनारेवाली साड़ीको तुम्ही पहनो। मैंने तो समझा था कि तुम इसे पसन्द न करोगी।"

तीनों भाभियाँ एक साथ बोल उठी—"हाँ, रहने दो, अब बहाना करनेसे काम न चलेगा।"

× × ×

देवराजका इरादा, रामपुरमें सिर्फ चार दिन ठहरनेका था; लेकिन, कई वर्षोंके बाद उसे अपने बाल-संघतियोंसे मिलनेका मौक़ा मिला था; आगे भी पता नही, वह कब रामपुर आए। फिर भाई-भौजाइयोंका आग्रह भी कम न था। सन्तू तो दूसरे ही दिनसे देव-राजके कन्धेपर चढ़ा गाँव भर घूमा करता था। भौजाइयोंकी तरह सुक्खूका भी आग्रह ब्याह और घरको फिरसे बना लेनेके लिए था; लेकिन देवराजने जिन शब्दोसे जैसे भाव प्रदर्शित करते हुए उसे इन्कार किया, उनसे सुक्खूको पूरा सन्तोष था। वह अपने मनसे जानते थे कि कैसे उन्होंने अपने भाइयोंको बिलकुल अपना शरीर समझा। उन्होने सोचा—"आख़िर हमारे पिता और चाचा भी सगे भाई थे।"

देवराज १५ दिन बाद रामपुरसे रवाना हुआ। जानेसे पहले उसने अपने दो बीघे खेतको भाइयोंके नाम लिख दिया, और सिर्फ़ वही एक बिस्वा खेत अपने नाम रहने दिया, जिसपर कि खँडहरकी वे दीवारें खड़ी थी।

३१

स्वयंसेवकको सज़ा

सवेरे आठ बजेका वक्त था, जब देवराज हथुआ स्टेशनपर उतरा। उसके पास एक देहाती कम्बल, लोटा-डोरीके साथ एक झोला तथा पहननेके दो तीन कपड़े थे। झोला और सब सामानको उसने लाठीके सिरेपर रखकर कन्धेपर लटका लिया था। गांधी-टोपी पर उसे सन्देह हो रहा था, लेकिन उसने देखा कि इधरके गाँवोंमें भी उसका बहुत प्रचार है—यद्यपि गांधीटोपीवाला कुछ अधिक सभ्य समझा जाता है। स्टेशनके पास मीरगज बाजारमे उसने नमकके साथ सत्तू खाया। /

रास्ता पूछकर देवराजने फिर सामानको लाठीसे लटकाया और कटयाका रास्ता पकड़ा। जूनका मध्य था। वर्षाके नामपर एक हल्कीसी फुहार पडकर रह गई थी, इसलिए उस नौ-दस बजेके समयमे भी धूप बहुत तेज थी। देवराजने सुन रक्खा था, कि धूपमे देहाती कम्बल ठंडक पहुचाता है, इसलिए उसने कम्बलकी घोघी सिरपर डाली। पुराने बिरहोमेसे कुछको रामपुर यात्रामे उसने फिरसे ताजे कर लिए थे। कईबार मनमें आया कि एक तान छोड़दे और एक मील पार हो जाये; लेकिन, वह देख रहा था कि रामपुर और कुआडीकी भाषामे कुछ अन्तर है, और बिरहेकी लयमें शायद और अन्तर हो।

मुश्किलसे वह बड़कागॉव तक पहुँच सका, और उसे उस धूपमें आगे चलनेकी हिम्मत न हुई। मालूम हुआ, पैदल चलनेपर आज

वह कटया नही पहुँच सकता। उसने डेढ़ घंटा विश्राम किया होगा कि मीरगंजसे कटया जानेवाला एक एक्का दिखाई पड़ा। देवराज भी उसपर सवार हो गया और शामके पहले कटया पहुँच गया। कटयाके छोटे बाज़ारमें स्वराज-आश्रमका पता लगाना मुश्किल न था। लेकिन वहाँ जानेपर सिर्फ एक बूढा आदमी मिला। वह कई गाँवोंसे मुठिया वसूल करनेका काम करता था। नासिकमे मिले यात्रीकी बात ठीक निकली—कोई सुराजी दरोगा आजकल कटयामें नहीं था।

कटया और भोरेके लोग तेज स्वभावके हैं, और मार-पीटके लिए जल्द तैयार हो जाते है। साथ ही यहाँके ग़रीब, भूखकी पीड़ा असह्य हो जानेपर जैसे भी हो तैसे पेट भरनेकी कोशिश करते है। रेलसे बहुत दूर तथा गोरखपुरकी सरहदपर होनेके कारण ज़िलेके बड़े अफ़सर यहाँ बहुत कम आया करते है। पुलिसके थानेदार तो बादशाह है। हरेक थानेदार चाहता है कि उसकी बदली कटया और भोरेमें हो; करम भी फूट जाय, तो भी दो-तीन सालमें तीस-चालीस हज़ार रुपया घरमें रख देना बाएँ हाथका खेल है। पचासों वर्षोंसे थानेदार लोग चोरों और बदमाशों-की ज़बर्दस्त सूची बनाते आए है। चोरियों और सजाओंकी सूची दिखा करके उसे ज़िलेके सबसे अधिक चोर और बदमाश लोगोंका थाना क़बूल करवा लिया गया है। फिर कौन अपराधी और कौन निरपराध है, इसकी कौन पूछताॅछ करता है। थानेदारकी इसीमें बहादुरी है, कि हर साल कितनोंको चोरी और डकैतीके अपराधमें सज़ा कराए। पीढ़ियोसे यहाँके लोगोंने सिवाय रिश्वतके अपने बचावका कोई रास्ता नही देखा। वस्तुतः पुलिसका थानेदार ही यहाँकी जनताका न्यायाधीश है। ७५ फीसदी वास्तविक अपराधियोंको, वह रुपए लेकर छोड़ देता है, लेकिन इसे कौन जानता है।

देवराजने बूढ़ेसे नाम पूछकर कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओंकी सूची तैयार की और फिर उनसे जाकर मिला, उनसे थानेकी वास्तविक अवस्थाका पता लगाया। उसे यह भी ख्याल था, कि उसके जैसे अज्ञात अन्य-स्थानीय आदमीको पुलीस आवारापनमें जेल भेज सकती है; इसीलिए उसने एक साधारण स्वयंसेवककी भाँति जगह-जगह घूमकर कांग्रेसका सन्देश छपी नोटिसों द्वारा पहुँचाना तै किया। उसके व्यवहारने थानेके कार्यकर्त्ताओको अपनी ओर आकर्षित किया, और उनमेंसे कुछने ज़िलाके नेताओंसे अच्छी लगनवाले स्वयंसेवकके तौरपर उसकी तारीफ की; इस प्रकार ज़िला कांग्रेसकी ओरसे छपनेवाली नोटिसे और सूचनाये उसे मिलने लगी।

कई वर्षोंसे देवराजको अपने देशकी गर्मीका अनुभव नही था, और वह उसे असह्य मालूम हो रही थी। लेकिन उसके सौभाग्यसे कटया आनेके एक सप्ताह बाद ही वर्षा शुरू हो गई। देवराजके प्रचारका ढंग था—नोटिसें बाँटना, फिर दस-बीसकी टोलीमें बात-चीत करना। उसकी पूरी कोशिश थी, कि श्रोताओकी ही भाषा और योग्यताके अनुसार बातोंको समझावे। शायद वह कभी अपनी उडानमे आगे भी बढ़ गया हो, लेकिन साथ ही जब दोनो कानोंमें अँगुली डालकर वह बिरहा गाना शुरू कर देता, तो कौन समझ सकता था, कि यह उन्ही जैसा गँवार नही है। कटयाका कोई गाँव न था, जहाँ देवराज उस बरसातमें—जब कि गाँवोमें पानीके कारण पहुँचना आसान न था—न पहुँचा हो, और जहाँ उसने एक।ध साथी न बन।ए हों। वह कहा करता था—सर्कारके लिए सिपाही बनकर मै लड़ाईमें गया, और उसका फल शरीरमें सिवाय दस-पंद्रह घावके दाग़ोंके और कुछ नहीं हुआ। अब मैं अपने देशके लिए सिपाही बना हूँ, जिसके लिए मर जाना भी सन्तोषकी बात है।

देवराजको खुद भी मालूम न था, कि वह कितना जनप्रिय है। इसका पता उसे तब लगा, जब कि अगस्तमें छपरामें भयंकर बाढ़ आई। संयोगवश वह उस वक़्त वहीं था। वह तुरंत कटया पहुँचा; अपने साथियोंकी मददसे दो ही दिनमें सत्तू चना, चावल, आदि खानेकी चीज़ोंकी दो गाड़ियाँ भरकर मीरगंज पहुँचा; और फिर वहाँसे रेल द्वारा छपरा। कटया जैसे पिछड़े हुए थानेसे इतनी जल्दी इतनी सहायता आती देख ज़िलाके नेताओंका ध्यान देवराजकी ओर कुछ आकर्षित हुआ ज़रूर, तो भी अभी वह उसे एक अशिक्षित उत्साही युवक ही समझते थे। हाँ, अब वह कटया थानासे ज़िला सभाका सभासद् था।

देवराजको कटयाकी पुलीसके अत्याचारोका खूब पता था, लेकिन उसके लिए वह अपनी शक्तिको लगाना व्यर्थ समझता था। बाढकी सहायताको देखकर पुलिस देवराजसे भी सशंक हो उठी, और दारोग़ा घूस रिश्वतके अपने एक मुसाहिबसे कह रहे थे—यदि यह बात डेढ महीने पहिले मलूम हुई होती, तो बच्चाको ११०मे साल भरके लिए बड़े घरकी हवा खिलवाए बिना नहीं रहता। वह उनकी आँखोमें काँटेकी तरह चुभता था, लेकिन अब तो वह माना हुआ कांग्रेस-कार्यकर्ता था। सितंबरके अंतमें ज़िलेके कुछ बड़े नेताओंने उसकी प्रार्थनापर कटया थानेकी सभाओंमें व्याख्यान दिए, और वे स्वयंसेवक देवराजकी लगनको देखकर बड़े प्रसन्न हुए।

सत्याग्रहके लिए स्वयंसेवकोंकी भरती शुरू हुई, सर्कारने उसे ग़ैरक़ानूनी घोषित किया। छपरामें ज़िला-सभाकी बैठकके वक़्त क़ानूनका विरोध करनेके लिए सभामें लोगोंने आ आ कर स्वयंसेवकों-में नाम लिखाना शुरू किया। भूतपूर्व सिपाही देवराजने भी अपना नाम लिखाया। उस वक़्त किसीकी गिरफ्तारी न हुई। देवराज फिर कटया लौट गया।

बरसात कबकी समाप्त हो गई थी। कुछ हल्की हल्की सर्दी भी पड़ने लगी थी। रास्ते सूखे थे और बूँदाबूँदीका डर न था, तो भी लोग फ़सलके काममे लगे हुए थे। धानकी फसल तैयार थी, और रब्बीकी बुवाई जोरोपर थी। देवराजने शामका वक़्त सभाके लिए चुना था। उस वक़्त वह गॉवमें चला जाता और गाँवकी भाषामे लोगोके रातदिनके कष्टो और उनका राजनीतिसे कितना संबंध है, इस विषयपर व्याख्यान देता—"चोरी बुरी है, किन्तु तीन दिन भूखे रहकर, तिलमिलाते बच्चोंकी क्षुधाको शान्त करनेके लिए चोरी करनेवाले चोर, तथा अच्छी तन्खाह पानेपर भी चोरोको छोड देनेके लिए रिश्वत लेनेवाले दारोगामे कौन अधिक अपराधी है ? स्वराजका मतलब है, अपना राज, पंचायती राज। उसमे मेहनत करनेवालोको भूखा नही मरना पड़ेगा।. .।'

राष्ट्रीयताकी पहिली बाढ जो १९२१ सालके आरंभमे आई थी, उसे न देखनेका देवराजको बडा अफ़सोस था। अभी उसे बीते कुछ ही मास हुए थे; किन्तु अब वह पँवारा बन गई थी। लोग बतलाते थे उस वक़्त मालूम होता था कुछ समयके लिए ब्रिटिश सर्कार और उसकी थाना-पुलीस है ही नही। शराब-गाँजाकी तो बात ही क्या, हुक़्क़ा-तम्बाकू और बाज़ारोमे मछली तक बिकनी बन्द हो गई थी। 'ख़िलाफ़त हिन्दुओकी गाय'की आवाज़ अब भी कानोमे आती थी। राजनीतिक आन्दोलनमे इतनी धार्मिकता देवराजको बहुत खटक रही थी, लेकिन वह समझता था, कि राष्ट्रीयताका प्रवाह सीधे नही चलता। जड़ प्राकृतिक परिस्थितियाँ भी नदियोको टेढे-मेढे चलनेके लिए मजबूर करती है, फिर करोड़ों मनुष्योके मानसिक भावोंकी अड़चनोंको कैसे सीधे काटा जा सकता है। उसके सन्तोषके लिए इतना ही काफी था, कि इस तूफ़ानने सचमुच लोगोके मनोभावोंमें भारी क्रान्ति पैदा कर दी है। पुलिसकी लालपगडीको देखकर

भागनेवाले गँवार अब उसपर हँसते हैं। अंग्रेज़ी सर्कारका हौवा उनके सिरसे उतर गया। गाँधी बाबाके चमत्कारों—जिन्हें कि शिक्षित राष्ट्रकर्मी भी फैलानेमें संकोच नहीं करते थे—को सुनकर वह उतना ही झूँझलाता था, जितना कि साल भरके भीतर भारतको स्वराज मिला देनेकी प्रतिज्ञासे। इसे वह गांधीजीका अक्षम्य अपराध समझता था।

नवम्बरके अन्तमें देवराजको कटयाके थानेदारने गिरफ्तार करके छपरा भेज दिया। छपरामें बहुत कम गिरिफ्तारियाँ हुई थी और जो गिरफ्तार भी हुए थे, वे थे ज़िलेके बडे बडे नेता। देवराजको अपनी गिरिफ्तारीसे यह समझकर प्रसन्नता हुई कि अब उसके ऊपर राष्ट्र-कर्मी होनेकी मुहर लग गई; और कटयाके थानेदार उसे फिर दफा ११० में चालान न कर सकेंगे। साथ ही इसका भी अर्थ उसकी समझमें नही आता था कि नेताओके साथ गुमनाम स्थानका एक साधारण स्वयंसेवक क्यों गिरिफ़्तार कर लिया गया।

यह पहली बार था, जब कि उसे नेताओंको भीतरसे देखनेका मौक़ा मिला। छपरा जेलकी ऊँची दीवारोंकी बगलसे न जाने कितनी दफा वह गुज़रा होगा। कभी कभी कैदियोंको भी उसने बग़लके बगीचेमें काम करते देखा था। दूरसे लोहेके सीखचोंवाले जेलके फाटक और उसपर खड़े बन्दूक़धारी सन्तरीपर भी शायद उसकी नज़र पड़ी हो; लेकिन, उसे यह गुमान भी नहीं था, कि इन ऊँची चहारदीवारियोंके अन्दर एक दूसरी दुनिया बस रही है। उसके भीतर आते ही आदमी 'असामी' हो जाता है। जेलके अधिकारी और सिपाही क़ैदीको 'रे' और 'तू' कहकर पुकारते हैं।

देवराजको पहले फाटकके भीतर करके कान्स्टेबल बिदा हो गये फिर उसे जेलरके सामने उपस्थित किया गया। नाम, पिताका नाम, स्थान हुलिया—एक एक करके लिखी गई। फिर दाग देखनेके

लिए उसके शरीरकी जाँच-पड़ताल की गई। तब एक और लकड़ीके फाटककी ओरसे उसे भीतर भेजा गया। आगे लम्बा-चौड़ा हाता था, जिसमें जगह जगह कुछ आम, पीपल, रीठा, बेल आदिके दरख्त थे। बीच बीचमें क़ैदियोंके रहने, खाने, काम करने और गोदामके मकान थे। काली धारीवाला कुर्ता, जाँघिया तथा गर्दनमें लोहेके तारोंमें लटकते लोहेका तौक़ पहने क़ैदी जहाँ तहाँ दीख पड़ते थे। क़ैदियोंने देवराजकी तरफ़ देखा और फिर कानो-कान आवाज़ पहुँच गई—"सुराजी बाबू।" वह राजनीतिक कैदी था, जेलके अधिकारी दूसरे क़ैदियोंसे उसका मिलना खतरेसे खाली नहीं समझते थे; इसलिए उसे उत्तर तरफकी कालकोठरियो(सेल)में रक्खा गया।

जेलका प्रथम भोजन भी उसके लिए एक नया अनुभव था। लोहेके दो तसले देकर पहरेवाले क़ैदीने बतला दिया था कि इनमेंसे एक खानेके लिए है और दूसरा पानी रखनेके लिए। भोजनमे भात, दाल, तरकारी थी। भातके भीतर एक चौथाई छिलकेवाले धानोंकी तो उसे परवाह न थी, लेकिन चबाते वक़्त जब कंकड़ियोंसे युद्ध करना पड़ा, तो समझ हीमे नही आता था कि क्या करे। दाँतोंको दाँतों तक बिना पहुँचाये खानेकी कला सीखनेमें उसे काफ़ी समय लगा। कराईके अतिरिक्त काफी परिणाममें कम्बलके बालोंको देखकर वह पहले दिन दाल न खा सका। साग क्या था—उबली हुई घास। उसने समझा, कि शायद यह भोजन भी दंडका एक भाग है, लेकिन, उसके सेलके दूसरे क़ैदियोंने बतला दिया, कि हमारे खानेका बहुत-सा भाग जेलके अधिकारियोके जेबमें जाता है। तरकारियाँ चुनकर सुपरिन्टेन्डेन्ट और जेलरोंकी डालियोंमें चली जाती है; और बचे-खुचेमेंसे भी जब जमादार और सिपाही चुन लेते हैं, तब क़ैदियोंकी बारी आती है। शामके वक़्त भातकी जगह रोटी थी, जिसमें आटेसे कम बालू और मिट्टी न थी।

देवराजको तीन कम्बल मिले थे। शाम होते ही उसे कोठरीमें बन्दकर ताला लगा दिया गया। अब साढ़े पाँच बजेसे दूसरे दिन ६॥ बजे तक उसे उसी पाँच हाथ लम्बी और चार हाथ चौड़ी कोठरीमें रहना था। उसीके एक कोनेमें मिट्टीके दो गमले, पाखाना-पेशाबके लिए रक्खे हुए थे। जब तक पूरा अँधेरा न हुआ, देवराज सींकचोंवाले दरवाज़ेसे बाहरके छोटेसे आँगन, उसके द्वार और ऊपर दिखलाई पड़नेवाले नीले आसमानके छोटेसे टुकड़ेको देखता रहा; फिर कम्बल बिछाकर सो गया। देर तक उसका चित्त नई दुनिया-के तजरबेपर तर्क-वितर्क करता रहा। अभी नीद आई ही थी, कि किसीकी कड़कती हुई आवाज़ने उसे जगा दिया। सिपाही गंदी गालियाँ बकते हुए कह रहा था—"क्यों रे साले, कितनी देरसे बुला रहे है, बोलता नही? बापका घर समझा है?"

देवराजने चाहा तो कि कुछ जवाब दें, लेकिन, फिर चुप रहना ही उसने पसन्द किया। रातको हर दो दो घंटे पर पहरेकी बदली होती और हर सिपाही उसी तरह उसे गाली देकर जगाता।

दूसरे-तीसरे दिनसे जेलकी नवीनता भी जाती रही; और उधर कितने ही और लोग भी उसी अपराधमें गिरिफ्तार होकर जेलमे आने लगे। धीरे धीरे उनकी तादाद १३ हो गई। उन्होंने देखा कि उनके बीच सिर्फ़ देवराज ही एक 'अशिक्षित' स्वयंसेवक है।

मुक़द्दमेके लिए बहुत प्रतीक्षा न करनी पड़ी और पेशीके दिन ही कलक्टरने फ़ैसला दे दिया। सबको एक एक सालकी सादी क़ैद। देवराजने छपरासे बक्सर जाते वक़्त एक संक्षिप्त पत्र जेनी-को लिखा।

३२

शिक्षित-अशिक्षित

बिहार सरकारने प्रान्तके सभी राजनीतिक क़ैदियोको बक्सर जेलमे रखनेका इन्तज़ाम किया था। जिस वक़्त छपराकी जमात वहाँ पहुँची, उस वक़्त ऐसे क़ैदियोकी संख्या चार सौ थी। छपराके नेताओंके कितने ही दूसरे ज़िलोंके परिचित मित्र और सहयोगी आए हुए थे। वे एक दूसरेसे लिपटकर गलेसे मिले। देवराजने देखा कि वहाँ बहुतसे उसीकी तरह स्वयंसेवक भी हैं। वह सीधे उनकी तरफ़ गया और चन्द मिनटों हीमें सब एक दूसरेके कार्य और स्थानसे परिचित ही नहीं हो गए, बल्कि पुराने दोस्तसे बन गए।

भूख-हड़ताल और दूसरी दिक़्क़तोंसे बचनेके ख्यालसे सरकारने राजनैतिक क़ैदियोके भोजन आदिका अलग प्रबन्ध किया था। साथ ही उन्हें अपने घरसे भी खाने-पीनेकी चीज़ें मँगानेका अधिकार था। देवराजको यहाँ बिहारके चुने हुए राजनीतिक कार्यकर्त्ताओंके सम्पर्कमें आनेका मौक़ा मिला। उसे एक बात देखकर बड़ी निराशा हुई—उन लोगोका राजनीतिक कौशल, कष्टसहिष्णुता और त्यागपर उतना विश्वास न था, जितना कि गाँधीजीके चमत्कार और उनकी साल भरकी प्रतिज्ञा पर। ३१ दिसम्बरको तो बहुतसे इस ख्यालको लेकर सोए थे, कि आधी रातको उनका दरवाज़ा खुला मिलेगा। राजनीतिक पुस्तकोंके पढ़नेकी किसीकी ख्वाहिश नहीं थी; हाँ, धार्मिक पुस्तकों—गीता, रामायण और क़ुरानके पढ़नेमें लोग बड़ी

तन्मयता दिखला रहे थे। देवराजको इसलिए और भी अधिक आश्चर्य हो रहा था, कि इन नेताओंमें बहुतसे विश्वविद्यालयके ग्रेजुएट और राजनीतिक अर्थशास्त्रके क-खसे परिचित थे।

अशिक्षित स्वयंसेवकोके प्रति उनका बर्त्ताव, देवराज की दृष्टिमें सराहनीय नही था। शिक्षित लोग, मालूम होता था, पगपगपर ठोकर लगाकर प्रकट करना चाहते थे, कि तुम हमसे नीच हो। शिक्षितोके मनोरंजनके लिए शतरज, चौपड़ तथा दूसरे खेल थे। गाना गानेवाले भी थे, और कभी कभी वे नाटक भी कर लेते थे, साथ ही वे पुस्तकोंके पढनेमें भी अपना समय काट सकते थे; किन्तु अशिक्षित स्वयंसेवकोके लिए मनोरंजन और कालक्षेपका कोई प्रबन्ध न था। कबड्डीमे भी उन्हे शामिल नही किया जाता था। अखाड़ेमें उनके लिए जगह थी, क्योंकि पहिले ही दिन पता लग गया कि देवराज वहाँका सबसे बडा पहलवान है; और इस प्रकार सारे अखाडेका खलीफ़ा होनेके कारण स्वयंसेवक उसे अपनी चीज़ समझते थे। फागुनका महीना आया। एक दिन स्वयंसेवक "हो महे-रवामें हो-ओ-हो · · ·" गाने जा रहे थे। बेचारे समझ रहे थे, जेलमें हमारी दूसरी स्वतंत्रता भले ही छीन ली गई हो, किन्तु फागुनके इस गीत द्वारा मनोरजन करनेकी स्वतंत्रता नही छीनी गई है; और दरअसल सर्कारकी ओरसे छीनी भी नही गई थी; लेकिन उन्हें क्या मालूम था, कि जो स्वतंत्रता सर्कार द्वारा नही छीनी गई, उसे उनके शिक्षित साथी छीन सकते हैं। "हो म-हे-र-वा" की पाँती भी पूरी नहीं होने पाई थी, कि पास बैठे एक सम्भ्रान्त नेताने डाँटकर कहा—"क्या बकबक कर रहे हो।" बेचारे स्वयं-सेवकोंके दिलपर बिजलीसी पड़ गई। देवराजको यह बात बुरी मालूम हुई, लेकिन उसने अपनेको रोक लिया।

वह सोच रहा था—ये लोग अपने मनोरंजनको सभ्य मनोरंजन

समझते हैं, हँसी-ख़ुशीसे कालातिपातके लिए उसकी ज़रूरत भी समझते हैं, लेकिन इन अशिक्षित तरुणोंसे आशा रखते हैं, कि यह खाना खायें, सोयें और चुपचाप पड़े रहें। देवराज किसी समय हिन्दीका समाचार पत्र पढ़ता, कभी कभी कोई हिन्दीकी पुस्तक भी देखता। अंग्रेज़ी पत्र या पुस्तकको वह हाथ भी नहीं लगाता था। बाक़ी समय उसका स्वयंसेवकोंमे गुज़रता था। प्रतिदिन दो घंटे वह उन्हें पढ़ाता था। फिर हातेमे, शिक्षितोंकी बैठकसे दूर उसने एक स्थान चुन लिया था, जहाँ स्वयंसेवकोका जमघट लगता था। आपसकी अनबनके कारण जहाँ शिक्षित तीन-चार टुकड़ियोंमें बँटे थे; वहाँ अशिक्षितोंकी एक जमात थी; और देवराज उनका हर बातमें साथी, एकमात्र नेता था। वहाँ उनके फाग और बिरहामें कोई रुकावट न थी, और देवराज स्वयं उसमें शामिल होता था। शिक्षित लोगोंको देवराजके व्यवहारसे यह पता था, कि वह संस्कृत तरुण है; साथ ही वे यह भी जानते थे कि वह हिन्दी जानता है; फिर उन उजड्ड गँवारोंमे उसे इस तरह दूध-शक्कर होते देख उन्हें अनकुस-सा लगता था। तो भी यह देखकर वे उसकी तारीफ़ किए बिना नहीं रहते थे, कि उसने उन तरुणोंमें अनुशासनकी पाबन्दीका ज़बर्दस्त भाव पैदा कर दिया है, और अशिक्षितोकी सुसगठित जमात शिक्षितोंकी प्रतिद्वन्द्विताका भाव नहीं रखती।

देवराज फाग, चैता, कजरी गाने हीमें सबको मात नहीं करता था, बल्कि उसके अहीरी (फरीके) नाचको देखकर जानकार भी दाद दिए बिना नहीं रहते थे। पहिले दिन तालियोंकी आवाज़ सुनकर कुछ शिक्षित भद्र लोग उधर गए। देखा पचास-साठ स्वयंसेवकोंके घेरेमें लोंगोंकी तालियोंपर देवराज नाच रहा है। उनमेंसे एकने कहा—

"आख़िर इसने दो अक्षर पढ़े भी हैं, फिर भी इसे शरम नहीं आती।"

दूसरा—"आख़िर गोबरका कीड़ा गोबर हीमें। और देखते नहीं इन मूर्खोंकी जमातको। यदि सुपरिन्टेंडेंट आ गया, तो हम हिन्दुस्तानियोंकी कितनी हँसी उड़ायेगा?"

देवराजकी जमातको इन टीका-टिप्पणियोंके सुननेकी फ़ुर्सत न थी। वह तो देवराजकी कलाबाज़ियों, नस-नसको ढीला करनेवाले कर्तब और ताल-सुरपर उठते अंग-प्रत्यंगको देखनेमें तन्मय थी।

कुछ शिक्षितोंने देवराजको उसकी ग़लती सुझानी चाही। वे यह सब उसके ही हितके ख्यालसे करना चाहते थे। एकने बात इस प्रकार शुरू की—

"देवराज, देखो, जो यहाँ अपढ़, अशिक्षित स्वयंसेवक आए हुए हैं, हमें उन्हें सभ्यता सिखलानी है। तुमको इसका ख़्याल रखना चाहिए।"

देवराजने नम्रतापूर्वक दीहाती बोलीमें कहा—"आप लोग हमारे नेता हैं। आप लोगोको ज़रूर ऐसा करना चाहिए। मैं भी, आप देख रहे हैं, रोज कुछ समय उनके पढानेके लिए दे रहा हूँ। दो-चारको छोड़कर सभी अब अपनी दस्तख़त कर लेते हैं, और मुझे आशा है कि अगले दो महीनोंमें वे रामायण पढ़ने लगेंगे। आपकी बात सुनकर मुझे बडी प्रसन्नता है। सचमुच पचास-साठ आदमियोंको अकेला पढ़ाना मेरे लिए मुश्किल हो रहा है।"

"ख़ैर, पढ़ाते हो, बहुत अच्छी बात है। लेकिन, हम कहना चाहते थे तुम्हारी उस शिक्षाके ख़िलाफ़, जो कि उन्हें और जंगली बनानेके लिए तुम दे रहे हो।"

"जंगली बनानेके लिए!"

"हाँ, अभी कल दोपहरके बादकी ही तो बात है—तुम गँवारू

नाच नाच रहे थे और वे सभी जाहिल पागलकी तरह ताली पीट रहे थे।"

देवराजको इन अधकचरे शिक्षितोकी बातपर गुस्सा हो आया; लेकिन, फिर, उसने अपनेको सँभालकर हँसते हुए कहा—"अपने मनोरंजनके लिए आप लोगोके पास खेल, तमाशा, ·उपन्यास है, और आख़िर, इन लोगोंके मनोरंजनके लिए भी तो कोई चीज़ चाहिए, नहीं तो दिन कैसे कटेगा ?"

उन्हें मालूम हुआ कि देवराज दबी ज़बानसे अपनी गलती कबूल कर रहा है। सहानुभूति दिखलाते हुए दूसरे सज्जनने कहा—"मनोरंजन आवश्यक है, और हम यह नही बतला सकते कि कौन सा मनोरंजन इन लोगोके लिए अनुकूल होगा; तो भी बिरहा और नाचको तुम्हीं ख्याल करो, यदि यहाँके अंग्रेज़ आई० सी० एस० सुपरिन्टेन्डेन्टने देख लिया, तो हमारी कितनी भद्द होगी ?"

"हमारी नाचको तो कोई अंग्रेज़ नापसंद नही करेगा। ख़ैर, हम लोग इसका पूरा ध्यान रक्खेगे कि लोगोंका मनोरंजन भी हो जाय और साथ ही सुपरिन्टेन्डेन्ट साहेब देख भी न पाये।"

इसके बाद देवराज उस वार्डमें और अधिक नही रह सका। उसे और दो-एक साथियोको सेलमें भेज दिया गया। सेलोकी संख्या पन्द्रह-सोलह थी, लेकिन तीनको छोडकर बाकी सभीमें अनुशासन-भंग करनेवाले साधारण क़ैदी थे। अप्रेल-मईका महीना था इसलिए गर्मी बहुत थी—खासकर दोपहरके तीन घंटे। देवराजको यहाँ सिर्फ़ दो साथियोको पढ़ाना था। बिरहा और नाचके लिए भी यहाँ जगह न थी, इसलिए बाक़ी समय सोने, सोचने और बातचीत करनेमें बीतता था।

बक्सरमें लम्बी मियादके क़ैदी रहते थे। कितनोंसे उसने बातचीत की। डाकू अपने डाकोंकी बात सुनाते थे, खूनी अपने खूनकी

उनकी कथाओंको सुनकर देवराजको यह निश्चय हो गया था, कि इनमेंसे नब्बे फीसदीसे भी अधिक वर्तमान सामाजिक और आर्थिक दुर्व्यवस्थाके शिकार है।

× × ×

"क्या तुम्हारा नाम देवराज सिह है?"—बक्सरके सब्-डिविजनल मैजिस्ट्रेट, मिस्टर टर्नर, आई० सी० एस्०ने सेलके दरवाजेपर खडा होकर पूछा। उनके हाथमे एक पत्र था।

देवराजने टर्नरके शब्द सुनते ही उनके हाथोंकी ओर नज़र दौड़ाई और समझ गया कि चिट्ठी किसकी है। उसने नम्रतापूर्वक कहा—"हॉ, मेरा ही नाम है।"

"इंग्लैडमे तुम्हारा कोई दोस्त है?"

"हाँ, बहुतसे।"

मिस्टर टर्नरने अंग्रेज़ीमे बात शुरू की—"तो, मै समझता हूँ यह मिस् जैनी ब्रॉउन्की चिट्ठी आपके लिए ही है?"

"हॉ, मेरे ही लिए" देवराजने भी अंग्रेज़ीमें बोलते हुए हाथ बढाकर चिट्ठी ले ली, "बहुत धन्यवाद!"

मि० टर्नरने लज्जितसा होकर कहा—"क्षमा कीजिए मिस्टर सिह, राजनीतिक कारणोंसे आप भले ही यहाँ क़ैदी हों; लेकिन, आप एक शिक्षित, भद्र पुरुष हैं। मैंने उस वार्डके सज्जनोंसे पूछा तो उन्होने बतलाया कि यहाँ कोई देवराज नामक सज्जन नही हैं, जिनकी चिट्ठी इंग्लैडसे आवे। बहुत मुश्किलसे मालूम हुआ, कि देवराज नामक स्वयंसेवक है, जो इस वक़्त सेलमें है। उनके कहनेके ढंगसे मुझे विश्वास नही था कि मै इस चिट्ठीके पानेवालेको पा सकूँगा। ख़ैर, यह तो हुआ। मुझे अफसोस है कि मैंने साधारण शिष्टाचारका भी पालन नही किया।"

देवराजने कहा—"नही, आपकी भद्रताके लिए मै कृतज्ञ हूँ।"

मि० टर्नरने टोप उतार दाहिना हाथ बढ़ाकर हाथ मिलाया।

मि० टर्नरने बातका सिलसिला जारी रखते हुए कहा—"माफ़ कीजिए मिस्टर सिंह, जेलके कानूनके मुताबिक़ प्राइवेट चिट्ठियाँ भी हमें पढ़नी पडती हैं।"

"नहीं, नही, माफ़ीकी कोई बात नही।"

"और, किन्हीं किन्हीं बातोंको चिट्ठियोंसे काट देना होता है; यह बात आपकी इस चिट्ठीके साथ भी हुई है। ख़ैर, वह वैयक्तिक बात नही थी। हाँ, एक बात पूछनेके लिए आप क्षमा करेंगे। मिस् जेनी ब्रॉउन्का ऑक्सफ़ोर्डके विख्यात प्रोफ़ेसर ब्रॉउन्से क्या कोई सम्बन्ध है?"

"हाँ, उनकी लड़की है।"

"मुझे आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मै भी ऑक्सफ़ोर्डमें प्रो० ब्राउन्का विद्यार्थी रह चुका हूँ। पत्रमें जेनी ब्राउन् एम्० ए० (ऑक्सफ़ोर्ड) और ऑक्सफ़ोर्डमें प्रो० ब्राउन्का जिक्र पढकर मुझे सन्देह हुआ था। अब आपके प्रति मेरा वैयक्तिक भाव क्या हो सकता है, इसे आप ख़ुद समझ सकते हैं। विशेष कर आप यह भी जानते हैं कि प्रो० ब्राउन्का शायद ही कोई ऐसा अभागा विद्यार्थी हो, जो उनके दिलकी धधकती आगकी एक-आध चिनगारीसे भी महरूम हो। मैं अपने लिए इसे ख़ुशक़िस्मती समझूँगा, यदि आपकी कोई सेवा कर सकूँ।"

"धन्यवाद, मि० टर्नर, जब मुझे कोई ज़रूरत होगी, मै आपसे ज़रूर कहूँगा। प्रो० ब्राउन्के एक विद्यार्थीसे मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मुझे प्रो० ब्राउन्के क्लासमें शामिल होनेका सौभाग्य नही मिला; लेकिन, उनकी पुस्तकों और वार्तालापसे मैंने बहुत सीखा और वह अपने शिष्यके तौरपर मुझे स्वीकार करते हैं।"

"अफ़सोस है कि यहाँ दोनों शिष्य दो कैम्पोंमें हैं।"

"लेकिन, मुझे उम्मीद है, प्रो० ब्राउन्की चिनगारी बुझ नहीं सकती।"

"नहीं, आपका अनुमान बिलकुल दुरुस्त है; लेकिन, आप जानते हैं, कि इन अंग्रेज-नौकरशाहोंमें हम जैसोंकी क्या गत होती है?"

"हाँ, इसके लिए तुलसीदासने एक चौपाई कही है—"जिमि दसननमे जीभ बेचारी।"

"हम लोग ज़िन्दा ही मुर्दे हैं; भीतर अपने साथी सिविलियनोंसे अपने भावोंको छिपाए रखना पड़ता है; और, बाहर, चारों ओर, हमे सिर्फ़ ख़ुशामदी हिन्दुस्तानी मिलते हैं। लेकिन, आप विश्वास रखिए हिन्दुस्तानके अच्छे पहलूका भी मुझे परिचय है।"

"धन्यवाद, मि० टर्नर, अपने देशकी प्रशंसामे इन शब्दोंके लिए।"

"नही, मि० सिंह, यह हमारी शिक्षा और संस्कृतिका तकाज़ा है। हाँ, मुझे यह सन्तोष है कि अब वे लोढा-पंथी नौकरशाह भी तस्वीरका दूसरा पहलू देखने लगे है। इस नौकरीमे तो मेरा एक दिनके लिए भी मन नही लगता और कोई ताज्जुब नही कि मै इसे छोड़कर चला जाऊँ। इसमे रुपए भले ही कुछ कमाए जा सकें, लेकिन, अपने अरमानोको दफ़नाकर।"

"अरमानों और आदर्शोंके बारेमें कहनेका मै कोई अधिकार नही रखता; लेकिन, मि० टर्नर, मै एक बात कहूँगा कि भारत और इंग्लैडमे मैत्री स्थापित करनेके लिए कुछ अच्छे टाइपके अंग्रेज़ोंकी आवश्यकता है।"

"यह मै मानता हूँ। क्षमा करें, मैने आपका इतना समय लिया।"

"आपके इतना विश्वास प्रकट करनेके लिए अनेक धन्यवाद।"

हाथ मिलाकर टर्नरके जाते ही देवराजके दोनों साथी आ पहुँचे। यद्यपि अपने सेलके भीतरसे वे देवराज और सुपरिन्टेन्डेन्टको

देख नही सकते थे; लेकिन, अंग्रेजीमें लम्बी बात-चीतसे उन्हें बडा कुतूहल और ताज्जुब हुआ; क्योंकि उन्होंने कभी देवराजको अंग्रेज़ी क्या, शिक्षितोंकी हिन्दी भी बोलते नहीं सुना था। उनका पहला प्रश्न था—

"भैया देवराज, तुम रँगरेजी भी जानते हो?"

"नही, उतना नही जानता। लडाईमें बिलायत गया था, यह तुमसे मैंने बतलाया है। उसी वक़्त कुछ टूटी-फूटी अंग्रेजी सीख गया था"—देवराजने देहाती बोलीमे कहा।

"साहेब इतनी देरतक क्या बात कर रहा था?"

देवराजको उत्तर तलाश करनेमें मुश्किल हो रही थी, तो भी सन्देहका अवसर दिए बिना उसने कहा—"तुमने देखा नही, मेरे शरीरमें लड़ाईके वक़्तके कितने दाग है? साहब कह रहा था, तुम्हारे ऐसे ख़ैरख़ाह आदमीको सरकार-बहादुरके खिलाफ़ नही होना चाहिए। वह पचीस रुपयेकी नौकरी दे रहा था।"

देवराजको यह देखकर बहुत सन्तोष हुआ, कि उसके साथी उसके सफ़ेद झूठको सफ़ेद सच मान रहे हैं। वह जेनीकी चिट्ठीको पढ़नेके लिए उतावला हो रहा था, उधर साथियोंके प्रश्नोंका ताँता ही नही टूटता था। इसी वक़्त रसोइए लोग भोजन लेकर चले आए और सब लोग अपनी थाली-बाटी सँभालने लगे। भोजनके बाद तीन घटा सेलमे सोनेका समय था। यह सारा समय उसका अपना था। उसने जेनीकी चिट्ठी खोली। उन सुन्दर अक्षरोंको देखते ही उसके सामने एक मुस्कराता परिचित चेहरा फिर गया। पत्र इस प्रकार था—

"जेनी ब्राउन्, एम्० ए० (ऑक्सफ़ोर्ड)
सम्पादिका, "श्रमिकोकी आवाज़" (वर्कर्स वॉइस्)
लंदन २७ अप्रेल, १९२२

"मेरे प्यारे डेवी,

"कई महीनोंकी प्रतीक्षाके बाद तुम्हारे पाँच पंक्तियोंके पत्रको पाकर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई, इसे प्रकट करनेके लिए मेरे पास शब्द नहीं है। तुम्हारी साल भरकी सज़ाको सुनकर गर्वसे मेरा मस्तक उन्नत हो गया। मुझे अपने 'स्वयंसेवक'पर नाज़ है।····

"तुम्हें यह सुनकर बहुत सन्तोष होगा कि, यद्यपि तुम्हारे जैसा मेरा भाग्य नही है तो भी मै अपना थोड़ा समय भी फ़जूल जाने नहीं देती। दो मास हुए हम लोगोंने एक साप्ताहिक पत्र निकालनेके लिए तै किया। इसकी जरूरतको तुम भी महसूस करते थे। मुझे ही उसकी सम्पादिका बनाया गया है। उसका स्वागत अच्छा हुआ है, और धीरे धीरे 'आवाज़' अपने लिए स्थान बना रही है।····

"और डेवी, तुम हारे मैं जीती। पुत्री नहीं पुत्र। और चेहरा बिलकुल तुम्हारे जैसा। आँखें तो बिलकुल नक़ल की गईसी हैं। पापाको हमसे भी ज्यादा खुशी है। कहते हैं--ठीक डेवी, लेकिन इसकी आँखोंसे ऑक्सफ़ोर्डके प्रोफेसर ब्राउन्की प्रतिभाकी भी कुछ किरणें छिटक रही है। मै कभी कल्पना भी नही कर सकती थी, कि संसारमें अपना शारीरिक प्रतिनिधि देखनेमें इतना आनन्द होता है। साथमें छोटे डेवीकी तस्वीर भेज रही हूँ। बाल भूरे हैं।

·······सप्रेम।

तुम्हारी अपनी
जेनी"

शारीरिक प्रतिनिधि छोड़नेके बारेमें देवराजकी बिलकुल दूसरी ही राय थी। वह इसे एक वैयक्तिक लोभकी बात समझता था, और असंख्य वर्षोंके कालमें चन्द शताब्दियोंके नाम और प्रसिद्धि-कामनाकी तरह इसे भी आदमीकी मानसिक दुर्बलता समझता था; लेकिन अब छोटे डेवीका फोटो उसके सामने था। वह नहीं कह

सकता था, कि उसका चेहरा मेरा ही प्रतिबिम्ब है; लेकिन उसके मानसमें एक विशेष आत्मीयताके खिचावसे उथल-पुथल हो रही थी। कुछ देर तक उसने उसे रोकनेकी कोशिश की, किन्तु अन्तमें परास्त होना पडा। वह छोटे डेवीको अपनेसे अलग नही कर सकता था। उसे मालूम होने लगा—यह मेरा ही उत्तरांश है, अपने अपूर्ण कार्योंको पूरा करनेमें जब मेरा शरीर निर्बल और असमर्थ हो जयगा उस वक्त नये कन्धोकी आवश्यकता होगी; और क्या वह यही कन्धे नही है? सात महीनेका "डेवी" तकियाके सहारे लेटा ओठोको बन्द किए हुए उसकी तरफ देख रहा था। उसका गोल चेहरा, बिखरे छोटे छोटे केश, ऊर्ध्व वृत्ताकार पतली हल्की भौहें, चौडी और छोरोपर केशोमें झुकी चली गई पेशानीको वह देर तक देखता रहा। उसके मुँहसे अचानक निकल पडा—"कौन कहता है, मनुष्यका भविष्य अनन्त शून्य है।"

× × ×

देवराजने जेनीको पत्र लिखा—

" · · ·मै अपनी हारका स्वागत करता हूँ, और छोटे डेवीने मेरी धारणामे जो परिवर्तन किया है, उसके लिए मै उसका आभारी हूँ ·

"इंग्लैन्ड और भारतके जलमे बहुत अन्तर है। यहाँ तो मनुष्यताका जेलके फाटकके भीतर प्रवेश निषिद्ध है· · · · · ·

"तुम्हें अपने समयका कुछ हिस्सा डेवीके लिए भी देना होगा। मुझे अफ़सोस है, कि मै इसमें तुम्हारी सहायता नही कर सकता। मैं जानता हूँ कि यह तुम्हारे लिए वैयक्तिक प्रसन्नताकी बात होगी। लेकिन, तुम्हारे सार्वजनिक कर्तव्यमें इसे बाधा जरूर पहुँचती होगी। मेरा रातदिन, चौबीसों घंटा राजनैतिक कल्पनाओं और वातावरणमें

बीतता है; इसलिए, सिवाय उसके, दूसरी क्या बात मैं तुम्हे लिख सकता हूँ। लिखनेपर, शायद वे पंक्तियाँ जेलसे बाहर न जा सकेंगी। यह सुनकर तुम्हे सन्तोष होगा कि मैं शारीरिक और मानसिक दोनो तौरसे स्वस्थ प्रसन्न हूँ · · · · ।"

खुजली अच्छी हो गई और देवराज फिर जेलसे उसी हातेमें चला आया, जहाँ दूसरे राजनैतिक क़ैदी थे। अब बरसात शुरू हो गई थी। अधिकांश लोग छै महीनेसे कमकी सजावाले थे और स्वयंसेवकोमे तो सभी तीन ही चार मासवाले थे, इसलिए जूनके अन्तमे राजनैतिक कैदियोंकी संख्या घटकर साठके करीब रह गई थी। वे सभी शिक्षित थे। एक सप्ताहके सहवाससे ही उन्हे देवराजके प्रति अपनी धारणा बदलनी पड़ी। पहले उसे वे नम्र, किन्तु देहाती, अशिक्षित तरुण समझते थे, लेकिन अब वह उनके लिए सुशिक्षित, अनुभवी, दूरदर्शी विचारशील, राजनीतिज्ञ था। अपनेको खोलनेके लिए देवराजको उस वक्त मजबूर होना पड़ा था, जब कि मिस्टर टर्नरने लोगोके सामने ही हाथ मिलाते हुए कहना शुरू किया--

"हलो मिस्टर सिंह, आप कैसे है?"

देवराज अपने साथियोसे कहा करता था—अपनी राजनीतिक समास्याओंका हल धर्मोमें खोजना बड़ी भारी गल्ती है। धार्मिक विचारोंके लिए स्वतन्त्रता भले ही रहे, लेकिन, राजनीतिमें धर्मका दखल बहुत ही हानिकारक बात है। उसकी बातोका यह असर हुआ कि लोगोंने अर्थशास्त्र और राजनीतिकी किताबें पढनी शुरू की। सस्ती शहीदीसे देशकी परतन्त्रताको हटा देनेका ख्याल निर्बल पड़ने लगा।

देवराजको इस बातका अफसोस हुआ, कि अब वह अपनेको उतनी सफलताके साथ छिपा न सकेगा।

३३

षड्यन्त्र

असाधारण उत्तेजनाके कारण एक जगह कुछ खून-खराबी हो जानेसे गाँधीजीने सत्याग्रह बन्द किया और सरकारने छै सालके लिए उन्हें जेल भेज दिया। नवम्बरके अन्तमें जिस वक़्त देवराज जेलसे बाहर निकला, उस वक़्त राजनीतिक क्षेत्रमें चारों ओर निराशा छाई हुई थी। साल भरमें स्वराज्य लेनेके विश्वासपर आए हुए लोग अपनी अपनी जगहोंपर लौट गए, यदि लौटनेके लिए वे स्वतन्त्र थे; कितने सस्ते स्वराज्य लेनेवाले सज्जन गाँधीजीको कोस रहे थे। लेकिन, देवराज जैसे व्यक्ति जिनका ऐसी बातोंपर कभी विश्वास नहीं था, आन्दोलनकी शिथिलतासे कभी निराश न हुए; हाँ, गाँधीजीके व्यक्तिवादपर वे कुढ़ते जरूर थे। उनका कहना था——जन-आन्दोलनने गाँधीजीको पैदा किया है; गाँधीजी यदि जन-आन्दोलनको पैदा करनेका ख्याल रखते है, तो ग़लती करते हैं। पराजयके कारण हताश और विशृंखलित सेनाको फिरसे संगठित करना बहुत मुश्किल काम है। लेकिन, देवराज स्वयं आन्दोलनके परिणामसे हतोत्साह न था। वह जानता था कि जो राजनीतिक चेतना और ज्ञान जनताको इतने दिनोंमें मिला है, वह उसे भूल नहीं सकती। कठिनसे कठिन कष्ट और पराजयको जनताका हृदय याद रखनेकी शक्ति नहीं रखता! अभी तक अपनी जिन तकलीफ़ों और दुरवस्थाओंको वह भाग्य और भगवानका खेल समझती थी, अब उसके कानोंमें नई आवाज़ आई है——कारण भाग्य और

भगवान नहीं, बल्कि राजनैतिक परतन्त्रता है। भूख, प्यास रोज़-रोज़की चीज़ हैं, फिर अपनी दरिद्रताके कारण इस राजनैतिक परतन्त्रताको वह कैसे भूल सकती है?

उस साल (१९२२) कांग्रेस गयामें होनेवाली थी। अभी उसके होनेमें महीने सवा महीने और थे, जब कि देवराज जेलसे छूटा। वह पहले सीधे कटया गया। साल भरके भीतर कोई सभा और व्याख्यान न होनेके कारण लोग समझते थे—स्वराज्य सो गया। लेकिन, जब देवराजकी शकल गाँव गाँवमें घूमने लगी, तो मालूम होने लगा कि स्वराज्य फिर जगा है। उसके साथी स्वयंसेवक हतोत्साह नहीं हुए थे, क्योंकि देवराजने हमेशा उन्हें यही समझानेकी कोशिश की थी, कि भारतकी स्वतन्त्रता एक सालमें नहीं मिल सकती; उसके लिए एक पीढ़ीका समय भी अधिक नहीं कहा जा सकता।

देवराजने पुलिसके अत्याचारसे पीड़ित जनताकी ओर ध्यान देनेका विचार किया। लेकिन ज़िलेमें इतनी शिथिलता आ गई थी, कि ज़िला-कांग्रेसको संचालित करनेके लिए आदमी नहीं मिल रहे थे। बक्सरके साथियोंके लिए देवराज अब वह पुराना देवराज नहीं रह गया था। लोगोंने उसे ही ज़िला-कांग्रेसका मन्त्री चुना। देवराज अब अपना सारा समय कटया-थानामें नहीं दे सकता था। उसने सारे ज़िलेका दौरा किया और अधिकांश थानोंमें फिर कार्यकर्ताओंको उत्साहित कर संगठनको मज़बूत किया। गयामें परिवर्तनवादी और अपरिवर्तनवादी दलोंका बड़ा भारी विवाद था। गाँधीजी सत्याग्रह बन्दकर छै सालके लिए जेल चले गए थे और उन्होंने कोई ऐसा राजनैतिक प्रोग्राम देशके सामने नहीं रक्खा था, जिसको अपनानेके लिए जनता उत्साह प्रदर्शित करे; लेकिन, अब भी उनके अनुयायी उनके नामपर सत्ती होनेका परामर्श दे रहे थे। देवराज

अपरिवर्तनशीलताका कभी कायल न था। गया-कांग्रेसमें अपरिवर्तन-वादियोंका बहुमत रहा। देवराजने जिलेके मन्त्रिपदसे इस्तीफा दे दिया।

उसने जिलेमें नौजवानोंका एक मजबूत दल संगठित किया। दलका पहला काम था राजनीतिक चेतनाको जनताके मनमें बराबर ताज़ा करना। इन तरुणोंकी राजनैतिक शिक्षाके लिए उसने पुस्तकों और व्याख्यानोंका इन्तिजाम किया। कटयामें पुलिसके अत्याचारोंकी उसने खूब छान-बीन की और सताए लोग निडर होकर रिश्वत और जुल्मके बारेमें अपने बयान लेखबद्ध कराने लगे। थानेदारने—जो अभी तक शेर थे—भीगी बिल्ली बनकर देवराजसे छोड़ देनेके लिए बड़ी मिन्नत की; लेकिन, देवराज क्षमा देनेवाला कौन था? उसने सारे जुल्मोंकी रिपोर्ट जिला-मेजिस्ट्रेटके पास भेजी। अत्याचार इतने स्पष्ट और सच्चे थे, कि मजबूरन थानेदारको दूसरे जिलेमें बदलना पड़ा। लेकिन, साथ ही, नीचेसे ऊपर तक सारी पुलिस देवराजसे खार खाने लगी। उसके पीछे हर वक्त खुफिया पुलिस रहती, और उसकी सारी गति-विधिपर कड़ी निगाह रक्खी जाती थी। कटया वालोंपर पुलिसका जुल्म बन्द हो गया। लोग खुलकर साँस लेने लगे। उनकी दृष्टिमें इसका सारा श्रेय देवराजको था। उसके कामोंका असर आसपासके थानोंमें भी पड़ा और कुआड़ी परगनेकी जनताके लिए देवराजकी उपस्थिति वरदान थी।

× × ×

देवराजका कार्यक्षेत्र छपरा जिला था। पटना वह सिर्फ़ प्रान्तीय कांग्रेस-कमेटीकी मीटिंगके लिए जाता था; लेकिन, नीचेसे ऊपर तक छपरा जिलेकी सारी पुलिस देवराजको एक मिनटके लिए भी स्वतन्त्र नहीं देखना चाहती थी। अगस्त (१९२३) में पटनाके आगम-

कुँग्रामे कुछ नौसिखिए बम बनाना सीख रहे थे। उसी वक्त एक बम फटा और एक तरुण वहीं मर गया, दूसरा बुरी तरह घायल हुआ। पुलिसने अगमकुँआ-बमके नामपर एक भारी षड्यन्त्र तैयार किया। घटनाके एक हफ्ताके भीतर ही देवराज भी गिरफ्तार करके पटना जेल पहुँचाया गया। षड्यन्त्रकारियोंपर अभियोग यह था कि वे क़ानून द्वारा स्थापित सम्राटकी सरकारको उलटनेकी कोशिशमें थे। जसीडीहमें मारे गए खुफिया-पुलिस इन्स्पेक्टर रघुनाथसिंहकी हत्या भी इन्हींका काम बतलाया गया। भय और प्रलोभन देकर एक लड़केको तैयार किया गया कि वह सरकारी गवाह बनकर पुलिसके सिखाए अनुसार गवाही दे। देवराज इस दलका अगुआ बतलाया गया। मुक़दमेका अभिनय साल भर तक होता रहा, लेकिन, देवराजको पहले ही मालूम था कि क्या होनेवाला है। उसे १२ साल पहले उस षड्यन्त्रकी याद बराबर आती थी, जिसमें निर-पराध मोहनलाल खन्नाको फाँसी हुई थी। देवराजके ऊपर इस बातका सीधा आरोप न था, कि उसने खुद इन्स्पेक्टर रघुनाथकी हत्या की। देवराजने भी अपनी जिरहसे पुलिसके गवाहोंको तंग कर दिया और कितनो हीके मुँहसे न कहने लायक बातें निकलवा ली। सरकारी वकीलका कहना था, देवराज एक सफल वकील होता। खैर, उसकी वकालत इस मानेमें अब भी सफल रही कि अभि-युक्तोंमें किसीको फाँसीकी सज़ा नहीं हुई—उन्हें १२से ३ साल तककी सज़ा हुई और देवराजको ६ सालकी कड़ी सजा।

सालभरसे ऊपर हो गए थे, जब कि देवराज या तो पटना-जेलकी चहार-दीवारियोंके भीतर रहता या साथियोंके साथ सशस्त्र पहरेमें मोटर-लारीपर 'क्रान्ति चिरंजीवी हो'का नारा लगाते अदालत पहुँचता। उसे इस बातका आश्चर्य और खेद था कि उसके विचारोंको अच्छी तरह जानते हुए अपनेको राजनीतिक कार्यकर्ता

कहनेवाले लोग भी उसकी सूरत देखकर घबराते थे। वे इस महँगी शहीदीको जानका बवाल समझते थे। स्वतन्त्रताकी क़ीमत उनकी दृष्टिमें बहुत हल्की थी। वे समझते थे—गाँधीजीने अवतार लेकर ऐसा रास्ता हमें बतला दिया, जिसमें इतनी तकलीफ़ और परेशानीकी कोई ज़रूरत नहीं। वे इन नौजवानोंको बेवक़ूफ़ समझते थे। सबसे बड़े अफ़सोसकी बात तो यह थी, कि उनके सामने जानकी बाज़ी लगानेवाले इन तरुणोंकी क़ुर्बानियोंकी कोई कीमत न थी। देवराज आतंकवादसे भारी मतभेद रखता था; लेकिन, तो भी जहाँ कही उनकी क़ुर्बानियोंपर आक्षेप करना किसीने शुरू किया कि वह अपनेको सँभाल नही सकता था। वह यह भी माननेको तैयार न था, कि यह क़ुर्बानियाँ निष्फल हुई। वंग-भंगको हटाकर फिर सारे बंगालको एक करनेकी बातको वह उदाहरणार्थ पेश करता था।

सज़ाके बाद देवराजको बक्सर भेजा गया। बहुत दिनोंसे एक जगह रहते रहते वह उकतासा गया था, इसलिए यह परिवर्तन उसे पसन्द आया। पहले वह शान्तिमय असहयोगका विशेष क़ैदी था। उसके लिए खाना अलग था और क़ैद भी सादी थी? वह अपना कपड़ा पहन सकता था और साथियोंकी भारी जमातमें दिनरातको भुला सकता था। अबकी बार ग्यारह आदमियोंकी छोटीसी जमात थी। सभीके गलेमें तौक़ और बदनपर क़ैदियोंकी पोशाक थी। उन्हें साधारण क़ैदियोंको मिलनेवाला भोजन मिलता था। वे सेलमें रक्खे गए थे और हर एकको प्रतिदिन बीस सेर गेहूँ पीसनेको मिलता था। सौभाग्यसे एकको छोड़कर बाक़ी सभी शरीरसे मज़बूत थे। देवराजको यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई, कि यहाँ 'मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना'वाली जमातसे उसे पाला नहीं पड़ा है। सभी सुव्यवस्थित फ़ौजकी तरह अनुशासन माननेको तैयार रहते थे। अपने कमज़ोर साथीको

कुछ सहायता देनेकी ज़रूरत पड़ती थी, जिसमें देवराज सबसे आगे रहता था; बाक़ी सभी समयसे दो घटा पहले ही गेहूँ पीसकर रख देते थे। पन्द्रह दिन बाद जेलरने देवराज और उसके एक साथीको कोल्हूका काम दिया। उसके साथी इसका विरोध करना चाहते थे, लेकिन, देवराजने यह कहकर रोक दिया—यह मेरे लिए अच्छा व्यायाम होगा। कंकड़-भरे चावल, काली दाल और घासके सागके खिलाफ़ आवाज़ पहले पहल देवराजने उठाई। सभीने खाना छोड़ दिया। पच्चीस दिन तक भूख-हडताल जारी रही और अन्तमें जेलवालोंको भोजनमें परिवर्तन करना पड़ा।

देवराजके साथियोंको अलग अलग सेलोंमें रक्खा जाता था, इसलिए उन्हें एक दूसरेसे मिलनेका मौक़ा बहुत कम मिलता था। खानेके वक़्त या जब भी कुछ मिनटोंके लिए उनकी आपसमें मुलाक़ात होती, उस समयका अच्छा उपयोग करनेके लिए वे सूत्ररूपमें बात किया करते थे। देवराजके सभी साथी शिक्षित थे और वैसे भी अपने स्कूल-कॉलेजके होनहार लड़के थे; इसलिए सूत्ररूपमें बात उनके लिए कोई दिक़्क़त नहीं पैदा करती थी।

देवराजने देखा, उसके साथी सिर्फ राष्ट्रीयताके नामपर राजनीतिक स्वतन्त्रताके लिए क्रान्ति चाहते हैं। उसने उन्हें बतलाया कि गोलमोल स्वतन्त्रतामें न सफलता होगी और न उससे काम चलेगा। देशकी धनिक श्रेणी और देशी राजा लोग सन् सत्तावनमें भी स्वतन्त्रताके बाधक हुए थे; और, अब तो और भी बाधक होंगे; क्योंकि वे जानते है कि यह स्वतन्त्रता साधारण जनताके बलपर प्राप्त की जानेवाली है; और उसमें साधारण जन-स्वार्थका ख्याल सबसे अधिक रखा जायेगा। इसलिए अच्छा है, कि हमारा राजनीतिक आन्दोलन अर्थनीतिपर अवलम्बित हो; और हज़ारमें नौ सौ नब्बे शोषित जनताके लिए हमें लड़ना चाहिए।

देवराजके साथियोको पहले यह बात कुछ उल्टी सी जँची। उनका कहना था, राजनीतिक स्वतन्त्रताके लिए सभी वर्गोंकी एकता आवश्यक है।

देवराजने और भी स्पष्ट करते हुए कहा—"सभी वर्गोंकी एकताको मै भी अच्छा समझता हूँ, लेकिन यह सम्भव नही। राजा-महाराजाओ और धनिकोका स्वार्थ वही नही है, जो कि साधारण जनताका। रेजिडेन्टके सामने महाराज चाहे दुम दबाकर सटक जाते हो, लेकिन अपनी प्रजाकी इज्जत, धन और प्राणके साथ वे खुले खेल सकते है। रियासतकी सारी आमदनी और दस लाख कर्ज लेकर भी वह फूँक सकते है। वे प्रजाके गाढे पसीनेकी कमाईको सालों-साल यूरपके नफीस होटलोमे वेश्याओ और शराबके लिए पानीकी तरह बहा सकते है। रेजिडेन्ट और ब्रिटिश-गवर्नमेट इसमे हस्तक्षेपकी कोई आवश्यकता महसूस नही करती। जनताकी बात मानी जानेपर रगीले राजा ऐसी वाजिदअलीशाही कर सकेगे? इसलिए आप निश्चय ही देशी रियासतोके शासकोसे एकताकी आशा नही रख सकते। यही बात कलक्टरके इशारेपर अमन-सभाओमे नाचनेवाले जमीदारो, राजाओ और नवाबोंके बारेमे भी समझिए।"

एक साथीने कहा—"तो, जो लोग हमारे साथ चलनेको तैयार है, हम क्या उन्हे भी छोड़ दे?"

"मै छोडनेकी बात नही कहता। लेकिन, हाथ-पैर जोड़कर आप किसीको साथ नही ले सकते। हमारी ही तरह जो देशकी स्वतन्त्रताकी जरूरतको महसूस करता है, वह निर्भय होकर आगे बढेगा। खिलाफ़तके धार्मिक सवालको सामने रखकर हमने मुसल-मानोंको अपनी तरफ़ खीचना चाहा। खिलाफ़तको कमालपाशाने बासफोरसमें डुबो दिया, और हमारे यहाँ सिर्फ कुछ मौलवियोंके महत्त्व और धार्मिक कट्टरताके बढा देनेके सिवा वह आन्दोलन टॉय-

टाँय-फिस् रहा। अब हमारे शासक कान ऐंठकर मुसलमानोंको कितना तैयार कर चुके है, यह तुम अपनी आँखों देख रहे हो। यदि हमने धर्मको हटाकर शुद्ध राजनैतिक और आर्थिक प्रश्न सामने रक्खा होता, तो यह अवस्था न हुई होती; चाहे उतनी संख्यामे मुसलमान आन्दोलनमे शामिल न भी होते, लेकिन जो होते, वे समझबूझकर होते।"

दूसरे साथीने अपनी सम्मति प्रकट करते हुए कहा—"राज-नीतिमे धर्मका प्रवेश मुझे भी पसन्द नही।"

"साथ ही हमारे क्रान्तिकारी आन्दोलनमे अर्थनीतिका प्रवेश आवश्यक है। साम्प्रदायिकताके भूतको हम रोटीके सवालसे ही भगा सकते है। रोटीकी समस्या हिंदू, मुसलमान, ईसाई, सभी ग़रीबोंके लिए एक-सी है।"

"लेकिन, आप जानते है, रूस कई बातोमे हम क्रान्तिकारियोंका आदर्श रहा है। वहाँ भी तो धार्मिक एकताकी जगह राष्ट्रीय एकता और जन-सत्ताकताको क्रान्तिका आधार माना गया?"

"यह आप १८६०के पहलेकी बात कह रहे है। अलेक्सन्द्र उलियानोफ़की फाँसीके साथ उस नीतिका भी श्राद्ध हो गया। उसके छोटे भाई लेनिन्ने मार्क्ससवादको क्रान्तिका आधार बनाया। सात साल पहले उसीके आधारपर रूसमे सफल क्रान्ति हो सकी। रूसकी पच्चीसो जातियाँ क्या राष्ट्रीयताके नामपर कभी एक हो सकती थी? अमर्यादित राष्ट्रीयताका अर्थ ही है अपनेको सबसे बड़ा और पास-पडोसवालोको छोटा समझना। आपको मालूम होना चाहिए कि वर्तमान रूसी प्रजातन्त्रकी चौथाई जनता एसियाई है। वहाँ भी रंगका सवाल भयंकर था . . . . . ."

देवराजसे कई दिनों इस विषय पर बहस होती रही और अन्तमें वह अपने साथियोंको संकुचित राष्ट्रीयतासे हटाकर उदार

राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोणपर लानेमे सफल हुआ।

उसके एक साथीने कहा—"भाई देवराज, शिथिल और अस्त-व्यस्त चिंतन खतरनाक चीज़ है। दृष्टिकोण परिवर्तनकी सबसे पहले आवश्यकता है। दृष्टि मिल जानेपर सभी गुत्थियाँ अपने आप सुलझ जाती हैं।"

३४

जेल-यातना

देवराजने अपनी सज़ाके बारेमें जेनीको लिख दिया था; लेकिन, पत्रसे अधिक मुकदमेके बारेमें उसे समाचार-पत्रोंसे मालूम हुआ था। उसने एक लम्बा पत्र लिखा, और देवराजको एक मित्रके द्वारा भेजा, क्योंकि वह जानती थी, कि जेलवाले इस पत्रको देवराजके हाथमें न जाने देंगे। सरकारने चाहे कितना ही कड़ा इन्तिजाम किया हो, लेकिन पत्रों और सन्देशोंका जेलकी चहारदीवारी पार करके देवराज जैसे ख़तरनाक क़ैदीके पास पहुँचना भी मुश्किल न था। पत्रमें छोटे डेवीका एक फ़ोटो था। अब वह चार वर्षका हो गया था; और फ़ौजी लिबासमें सेल्यूट दे रहा था। देवराज कुछ देर तक उस हँसते चेहरेकी ओर देखता रहा। उसके मनमे आया—यदि मेरी अवस्था मोहन भैयाकी हुई होती, तो भी यहाँ एक छोटा डेवी मेरी जगह लेनेवाला मौजूद था। साथ ही वह यह भी स्वीकार करता था—चाहे मैं मोहन भैयाका शारीरिक उत्तराधिकारी न भी होऊँ, लेकिन यदि उनका मानसिक उत्तराधिकारी नहीं हूँ तो हूँ ही क्या? देवराजने पत्रको पढ़ना शुरू किया—

" . . . . . .

लंदन ५।१।१९२५

"मेरे प्यार डेवी,

"तुम्हारा पत्र मिल गया था। और उससे भी अधिक मुक़दमेकी बात भारतीय पत्रोंसे मालूम हुई। पहले मुझे यह सुनकर आश्चर्य

हुआ, कि तुम आतंकवादमें शामिल हुए। लेकिन, फिर पुलिसकी गवाहियोंसे और सोचनेसे वह आश्चर्य जाता रहा। आश्चर्य करनेकी आवश्यकता नही, जब कि हमे विश्वास हो गया है, कि भारतीय पुलिस राजनैतिक मामलोंमे कितनी दूर तक उतर सकती है। तुम्हारे लिए तो यह कोई नई बात न होगी। तुमने अपने साथी मोहनलाल खन्नाको निरपराध फाँसीपर चढते देखा था। मै तो अपने भाग्यको सराहती हूँ, कि पुलिस तुम्हारे लिए उतनी दूर न गई। लेकिन, मैं इसके लिए उसे धन्यवाद देनेकी जरूरत नही समझती। शायद यह उसके हाथसे बाहरकी बात थी। मैंने 'आवाज' मे तुम्हारे मुकदमेके बारेमे सम्पादकीय लेख लिखे है। निजी सम्बन्ध-के कारण भाषा कड़वी हो गई है। पापाने कहा, यह स्वाभाविक ही है। मैंने इधर कई गुमनाम लेख इस विषयपर लिखे है कि इग्लैडके गरीबोका भाग्य हिंदुस्तानकी स्वतन्त्रताके साथ बँधा हुआ है।

"हाँ, एक बात और। मै पिछले अगस्तमे दो हफ्तेके लिए पापाके साथ रूस गई थी। हम वहाँके बच्चेखानोंमे गए। डेवी तो अपनी उम्रके बीस-पच्चीस बच्चोको देखकर उनके साथ खेलने लगा था। सैकड़ों तरहके खिलौने, चतुर दाइयाँ, साफ-सुथरे कमरे, मनो-रंजन और ज्ञानवृद्धिका सुन्दर प्रबन्ध। बच्चाखानेको देखकर हम बहुत प्रभावित हुए। सात वर्षो—जिनमे पाँच वर्ष तो युद्ध और सर्व सहारमे ही बीत गए—मे वहाँ जितने परिवर्तन दिखलाई पड़ रहे है, उन्हे देखकर सोवियत्-भूमिका भविष्य बिल्कुल उज्वल मालूम पड़ता है। सोवियत-भूमि ही क्या यह तो ससारके सभी शोषितोंके भविष्यकी प्रतीक है। लेनिन्का उत्तराधिकारी स्तालिन् भी वैसा ही चतुर और जनप्रिय है। पापाका तो कहना है, कि वह लेनिन्से भी अधिक व्यावहारिक प्रतिभाका धनी है। हाँ, हम लोगोंको

रूसके कुछ शिक्षितोंसे मिलनेका मौक़ा मिला। उनसे बड़ी निराशा हुई। तुम्हारा कहना ठीक है, कि ये विश्वसनीय तत्व नही है।

"डेवीका पाँचवाँ साल चल रहा है। उसके स्वास्थ्यके बारेमें तो फ़ोटोसे भी कुछ मालूम होगा। वजन और क़द दोनोमे वह अपनी उम्रके लडकोंसे बड़ा मालूम होता है। पापाकी तस्वीरको पहचानता है। कहता है, मै भी सैनिक बनूँगा। तेरा पापा कहाँ है—पूछनेपर बोलता है, हिन्दुस्तानमें। नानाको छोडना नहीं चाहता। अगले सालसे ऑक्सफ़ोर्डमें ही रहेगा।

"तुम्हारी स्मृति मुझे कभी कभी भावावशमे डाल देती है, आशा है, इसके लिए तुम मुझे गुनहगार न समझोगे। लेकिन मै तुम्हें विश्वास दिलाना चाहती हूँ कि वह सिर्फ एकान्तका विषय है, और मेरे काममे किसी तरहकी बाधा नही डाल सकता।

"सप्रेम।

"तुम्हारी अपनी
जेनी"

× × ×

जेलवालोका बर्ताव देवराज और उसके साथियोके साथ बहुत बुरा था। मालूम होता था पद-पदपर अवहेलना और अपमान करके वे सरकारकी अधिक सेवा कर सकते है। इन लोगोने उन बातोंकी मुख़ालफत करनेकी प्रतिज्ञा कर ली थी। कड़ेसे कड़े कामसे उन्हें इन्कार न था, लेकिन भोजनकी ख़राबी, अधिकारियोके दुर्व्य-वहारको वे बर्दाश्त करनेके लिए तैयार न थे। इसके लिए उन्हें कई मरतबे खडी हथकड़ी, डंडा-बेडी, बोरेकी पोशाक और बेंत तककी सजा भोगनी पड़ी। आखिरमें आजिज आकर उन्हें हजारीबाग जेल भेज दिया गया। यहाँके गोरा जेलरको राजनीतिक क़ैदियोंका पहलेसे

अनुभव था और वह समझता था कि खामखाह दबाकर उन्हें आज्ञाकारी नहीं बनाया जा सकता। उसके ऐसा सोचनेमें एक और भी कारण था—गोरा जेलर जेलकी सभी चीजोंको अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति समझता था। जिन पुराने घरोंके सीकचों और लकड़ियोंको निकालकर तीन तीन हजार रुपयेमें बेचना था, उन्हें वह दो दो सौ रुपयेमें किसी अपने कृपापात्र ठेकेदारके नाम खरीद लेता था। अपने मकानके लिए वह जेलके क़ैदियोंसे ईंट और सुर्खी तैयार करवाता था। पुरानी मोटरें खरीदकर अक्सर जेलके विशेषज्ञ क़ैदियोंसे मरम्मत करा तिगुने चौगुने दामपर बेंच देता। खाने-पीनेकी चीजोंकी चोरी तो जेलकी आम शिकायत है; साथ ही वह कैदियोंसे बडी सख्तीसे पेश आता था। गोरा होनेके कारण कोई शिकायत उसपर चलती न थी। जहाँ तक देवराज और उसके साथियोंका सम्बन्ध था, जेलरने उन्हें शिकायतका मौक़ा नही दिया। उन्हें कोल्हूका काम नही दिया गया और आटा पीसनेमें भी पन्द्रह सेरसे अधिक गेहूँ किसीको नही मिलता था। पढने-लिखनेका भी उन्हें सुभीता था। रातको लालटेन मिल जाती थी। साधारण क़ैदियोंकी अवस्था देखकर देवराजको अपनी बेबसीपर बहुत दुःख होता था। कोई हफ्ता नही जाता, जब कि दो-चारको बेंत न लगते हों। पैंसेवाले असामीकी तो जानपर आ जाती। तुरन्त घानी या चक्कीमें दे दिया जाता और रोज काम कम करनेकी रिपोर्ट होने लगती; फिर सजायें शुरू होती, जो कि बेंत तक पहुँच जातीं—यदि उसके सम्बन्धियोंने रुपये-पैसे देकर जेल-अधिकारियोंको संतुष्ट नहीं किया। कर्घा-मास्टरको कसाई कहा जाता था। खराब सूतसे भी पूरी बिनाई न करनेपर कई आदमी बेंत खा चुके थे। कितनोंके ऊपर मारपीटका अभियोग लगाकर उनकी सज़ा भी बढ़ा दी गई थी।

लोग अत्याचार सहते सहते तंग आगए थे। उन्होंने शेरखाँ और हरिकृष्ण—अपराधमें आजन्म सज़ा पानेवाले कैदियों—के नेतृत्वमें कुछ कर गुजरना चाहा। दोनों उसी हातेमें रातको सोने आया करते थे जिसमें कि रातको देवराज और उसके साथी रहा करते थे; इसलिए देवराजको सारे षड्यन्त्रका पूरा पता था। शेरखाँ बहादुर आदमी था। आनके लिए उसने खून किया था। मौतसे उसको बिलकुल झिझक न थी। उसने हरिकृष्णके सामने प्रस्ताव रखते हुए कहा—

"भाई हरीकिसन, कब तक इसे हम बर्दाश्त करते रहेंगे? कोल्हू और चक्की देनेपर तो हम लोग अपना काम पूरा कर देते हैं। किसीको कमजोर देखकर उसके हिस्सेके कामको भी पूरा कर लेते हैं। लेकिन इस सडे सूतके बारेमें क्या किया जाय? हर दस मिनटमें सूत टूट जाता है, और उसके जोड़नेमें इतनी देर लगती है, कि कोई अपना काम पूरा कर ही नहीं सकता।"

"पूरा काम देना असम्भव है। हम लोगोंने सुपरिन्टेन्डेन्टसे कई बार कहा। लेकिन, जेलरके सामने हमारी बात कौन मानता है।"

"कितने दिनों तक यहाँके क़ैदी इस तरहकी जुल्मकी चक्कीमें पिसते रहेंगे? कोल्हू और चक्कीमें तो हमने अपने खिलाफ़ रिपोर्ट नहीं होने दी; लेकिन कर्घाको देकर बदला चुकाना चाहता है। दो बार रिपोर्ट हो चुकी है। क्या कोई उपाय है?"

"मैं भी सोच रहा हूँ। मुझे तो मालूम होता है कि कर्घा-मास्टर जब तक नहीं सुधरता, तब तक कैदियोंकी जान नही बँच सकती।"

"मैं भी इसी नतीजेपर पहुँचा हूँ। एक उपाय सोचा है। लोहेकी पत्तीको रगड़कर चाकू बनाया जाय, और जिस वक़्त पासमें कोई सिपाही न हो, उसी वक़्त कर्घा-मास्टरको पकड़कर नाक काट ली जाय। छै महीने, चलो और सही।"

"शेर भाई, मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

शेरखाँ और हरीकृष्ण जिस बातको कह दें, उसे बिना चूँ-चिराके सारे क़ैदी मनानेको तैयार थे। नेतृत्वकी शक्ति उनमें स्वाभाविक थी। वस्तुतः वे प्रकृतिसे अपराधी नहीं थे। उनकी स्वाभाविक प्रतिभाको अपना जौहर दिखानेका कोई अवसर न मिला, इसीलिए आज वे जेलमें थे। दो दिनमें सारी तैयारी कर ली गई, तीसरे दिन नौ बजे कर्घा-घरमें बडा हल्ला मचा। डेवराजके पास खबर पहुँची कि, क़ैदियोंने कर्घामास्टरपर भयकर हमला किया है और उसकी हालत अब-तब है। लेकिन, सच बात यह थी कि शेरखाँ और उसके अनुयायियोंने कर्घामास्टरकी नाकको भी ठीकसे काट नहीं पाया। पकड़ते ही वह चिल्लाया। लोग सिर्फ नाकपर हमला करना चाहते थे और वह सिरको हिलाता था। चाक़ूने ज़रा सा नाकको छुआ था कि तब तक सिपाही, मेट, और पहरा-वालेने आकर उसे बचा लिया।

शेरखाँ, हरीकृष्ण और तीन दूसरे क़ैदियोंपर मुकदमा चलाया गया। अभियोग नाक काटनेका नहीं, बल्कि जानसे मार डालनेका था। नाकपर छटक कर छुरी लगी थी। जेलरके कृपापात्र जितने क़ैदियों—विशेषकर पहरावालों और मेटों—ने गवाही दी। जजने जान-बूझकर हत्याके प्रयत्नके अपराधमें शेरखाँ और हरीकृष्णको फाँसी और दूसरोंको दस-दस बारह-बारह सालकी सख्त सजा सुनाई। शेरखाँने अपने बयानमें कहा था—"हमने कर्घामास्टरको जानसे मार डालनेका कभी ख्याल नहीं किया। यदि हमारी यही मनसा रही होती, तो उसे मारनेके लिए हमारे पास अधिक सुभीता था। कर्घामास्टर और जेलरके ज़ुल्मसे सारे कैदी जितने तंग आ गए हैं, उसीको दूर करनेके लिए हमने कर्घामास्टरकी नाक काटकर चेतावनी देनी चाही। हमें अफ़सोस है कि उसमें सफल न हो

पाये। आप कोई भी सज़ा दें, लेकिन जेलमें क़ैदियोंके ऊपर होते अत्याचारोंकी ओर ध्यान जरूर आकर्षित करें।"

देवराजने उसी दिन शामको शेरख़ाँको देखा, जिस दिन कि उसे फाँसीकी सज़ा हुई थी। चौबीस वर्षका नौजवान। मूछें थोड़ी-थोड़ी निकली हुईं। कद खूब लम्बा-चौडा और बलिष्ठ। उस वक़्त उसका चेहरा गम्भीर जरूर था, लेकिन उसपर भयका चिह्न नही था। उसने पहलेकी तरह मुस्कराते हुए देवराजको सलाम किया और समवेदना प्रकट करनेपर कहा—"मौतके लिए मुझे अफसोस नहीं। दुनियाके हर पहलूमें जुल्म और बेइमानीका जिस तरह राज्य है, उससे दम घुटता है। अफ़सोस है कि मुझे आपके जैसे काममें जान देनेकी खुशकिस्मती नसीब न हुई।"

देवराज और उसके साथियोंको बहादुर शेरख़ाँकी अन्तिम सूरत जिन्दगी भर भूलनेवाली नही थी। वे जानते थे कि उसने व्यक्तिगत स्वार्थके लिए यह अपराध नही किया। बीचमें शेरख़ाँकी अपील होती रही और कभी कभी वह देवराजसे मिलनेकी ख्वाहिश जाहिर करता था। सिपाही भी जेलरके अत्याचारको जानते थे और साथ ही वे शेरख़ाँकी बहादुरीके क़ायल थे। उसकी शकल-सूरत और बातचीतको देखकर किसीको अनुमान भी नहीं हो सकता था कि फाँसीकी रस्सी उसकी गर्दनके लिए इन्तजार कर रही है। आस-पासमें देखकर पहरेवाला सिपाही देवराजको शेरख़ाँके नजदीक जाने देता था। हाँ, वह यह बिनती जरूर करता था—"बाबू, जल्दी कीजिएगा, जेलर देख लेगा तो मेरी नौकरी चली जायगी।"

शेरख़ाँ देवराजसे देशकी आजादीके लिए क़ुर्बान होनेवाले शहीदोंके बारेमें पूछता और उसे बहुत चावसे सुनता था।

आख़िर एक दिन वह सुबह भी आई, जब कि क़ैदियोंके ताले वक़्तपर नहीं खुले और शेरख़ाँ तथा हरीकृष्ण फाँसीपर झुला दिए गए।

३५

सत्याग्रही

स्वतन्त्रताके लिए साल भरकी मियाद देकर लाहौर कांग्रेस (दिसम्बर १९२९)ने पूर्ण स्वाधीनताका प्रस्ताव पास कर दिया। गाँधीजी अबकी बार सत्याग्रहके बारेमे बड़ा कड़ा रुख ले रहे थे। क़ानून-भग किस रूपमें किया जाय, इसके बारेमें कई कल्पनायें दौड़ रही थी। पहले पहल जब नमक-कानूनको तोड़नेकी ख़बर मिली तो देवराजके साथी भी देशके कितने ही और लोगोंकी तरह इसकी बुरी तौरसे आलोचना करते थे। मुकुंदने कुछ जोशमें आकर कहा—"क्या बच्चोंकी सी बात है! नमक बनाया जायगा!! इसका क्या असर अंग्रेज़ोपर होगा? लोगोंको नमक खाना ही होगा और व्यापारके योग्य नमक बनाया नही जा सकता।"

विनोदने उसकी "हाँ" में "हाँ" मिलाते कहा—"पहले गाँधीजी चर्खा लेकर चले थे स्वराज्य लेने और अब यह नमक! राज-नीतिज्ञताकी हद्द हो गई!!"

देवराजने नौजवानोंके जोशकी दाद देते हुए संजीदगीके साथ कहा—"चर्खा और नमक छोटी चीज़े है, इसमें शक नहीं; लेकिन दोनोंको मिलाना नही चाहिए। चर्खा रचनात्मक कार्य है, उसमे सन्देह हो सकता है कि वह मिलके कपडोंका स्थान ले सकता है या नहीं; लेकिन नमक-सत्याग्रह ध्वंसात्मक कार्य है। हम किसी सरकारी क़ानूनको तोड़ना चाहते है; और यह हमें उसके लिए अवसर देता है। हमें इसी दृष्टिसे इसे देखना चाहिए।"

देवराजके साथी इससे सहमत हुए कि कानून तोडना किसी एक ही बातसे शुरू होगा, इसलिए वे गाँधीजीसे अधिक नाराज़ नही हुए। जून (१६३०)मे देवराजको जेलसे छूटना था। उसके साथ चार और साथी छूटनेवाले थे। उन्होंने जेलहीमें तय कर लिया था, कि सत्याग्रहमे भाग लेगे। यद्यपि सत्याग्रह छिड़े चार महीने हो गए थे और सरकार अपनी पूरी शक्तिसे उसका दमन कर रही थी। लेकिन देवराजने देखा, जनताका उत्साह मन्द नहीं पड़ रहा है। जुर्मानेकी सजामें घरकी चीजोको उठते देखकर बाल-बच्चोंका ख्याल कर लोगोंको कुछ दुःख जरूर होता था, लेकिन जेलका डर तो उनके दिलसे बिलकुल निकल गया था। अमन-सभा-वाले खूब दौड-धूप कर रहे थे। चौकीदारो, दफादारोंको जमा करके वे अंग्रेजी राज्यकी बरकत और देशमें अमन-चैनपर व्याख्यान झाड़ते थे। उनको पूरा विश्वास था, कि जिस प्रकार पिछला असहयोग-आन्दोलन असफल रहा, यह सत्याग्रह उससे भी बुरी तरह असफल होकर रहेगा।

देवराजको गाँवमें घूमते हुए यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि सालभरमें स्वराज्य पानेकी लालच और गाँधी बाबाके बड़े बड़े दैवी चमत्कारोंके अभावमें भी लोग १६२१से भी अधिक उत्साह-से आन्दोलनमें भाग ले रहे है। पिछले आन्दोलनमें कचहरी और पढ़ाई छोड़नेवाले लोग अब अपनेको अधिक अनुभवी और चतुर समझ रहे थे; इसलिए सत्याग्रहमें भाग लेना उनकी दृष्टिमें बेवकूफी थी। अमन-सभाके सरगर्म मेम्बर केशवसिंह वकीलका कहना था—

"मैने वकालतके अन्तिम इम्तिहानको चार महीने रहते लॉ-कॉलेज छोड़ा था। १६२१के आन्दोलनमें मैने ज़िलेका कोई गाँव नहीं छोड़ा। गाँधीजीने सालभरमें स्वराज्य कहकर लोगोंको धोखा

दिया। हँड़ियाकी जाँच एक ही बार होती है। उन्होंने लाखों तरुण विद्यार्थियोंका जीवन ख़राब कर दिया, हज़ारोंकी अच्छी नौकरी छुड़वाकर दर-दरका भिखारी बनवाया और अब चले हैं नमकसे स्वराज्य लेने! मुझे ताज्जुब होता है इन नौजवानों और गवाँरोंकी अक़लपर। गवाँर तो गवाँर ही हैं। क्या इन शिक्षित नौजवानोंके हियेकी फूट गई है? ख़ैर, सबक़ तो आख़िरमें मिलेगा ही; लेकिन 'तब पछताए होत का जब चिड़िया चुग गई खेत'।"

वकालत-ख़ानेमें दमनके कारण सहमे हुए वकीलोंके बीच बाबू केशवसिंह अक्सर अपनी लम्बी तक़रीर किया करते। जिला अमन-सभाके सेक्रेटरी और कलक्टर साहबके कृपापात्र, साथ ही किसीके खिलाफ भी ख़ुफ़ियाका काम करनेके लिए तैयार बाबू केशवसिंहकी ऊटपटांग बातोंका जवाब देनेकी किसीको हिम्मत नहीं होती थी। लेकिन उनकी नीचतापर लोग घृणा जरूर करते थे। केशवसिंह देवराजकी पहली जल-यात्राके साथी थे। एक दिन वकालत-ख़ानेमें दोनोंका सामना हो गया। सभी वकील चाहते थे कि आज केशवसिंह-को खूब जवाब दिलाया जाय। देवराज केशवसिंह और दूसरे परिचितोंको प्रणाम और सलाम करके एक कुर्सीपर बैठ गया। सामने, मेजकी दूसरी तरफ केशवसिंह बैठे थे। जल्द ही लम्बी मेज चारों तरफ दुहरी कुर्सियोंसे भर गई। केशवसिंह देवराजकी प्रतिभाके कायल थे; लेकिन, उन्हें तो दिखलाना था कि मैं बड़ा राजभक्त हूँ। उन्होंने स्वयं बात शुरू की--

'भाई देवराज, मैं तुम्हें बड़ा दूरदर्शी और चतुर आदमी मानता हूँ। जब पागलपनमें आकर हम लोग चर्खेसे स्वराज लेनेकी बकवास लगाया करते, तब भी तुम उसका मज़ाक उड़ाते थे। कहते थे—हम हवाई जहाजके युगसे छकड़ोंके युगमें नहीं लौट सकते। ३१ दिसम्बर (१९२१)को जब लोग स्वराजकी सरकार द्वारा जेलका

फाटक खुलनेका स्वप्न देख रहे थे, तब, मुझे याद है, तुम उनकी [बुद्धिपर तरस खा रहे थे। मुझे उम्मीद है, तुम्हारे जैसा व्यक्ति चर्खेसे स्वराजकी तरह इस 'नमकसे स्वराज' के मूर्खतापूर्ण आंदोलनको पसंद न करेगा।"

"आपकी प्रशंसाके लिए मैं अपनेको आभारी मानता हूँ। चर्खेसे स्वराजपर सचमुच ही मुझे विश्वास न था। लेकिन, हम अंग्रेजी मालके बहिष्कारको राजनैतिक हथियार समझते हैं। वस्तुतः हिंदुस्तान पर अंग्रेज बनियोंका राज है। बनिएकी पाकेटपर जब तक हाथ नहीं डाला जाता, तब तक वह होशमें नहीं आता। उसका सबसे कोमल और कमजोर अंग जेब है। नमकसे भी स्वराज मैं नही मानता, लेकिन, कानून तोडकर ही हम ब्रिटिश सरकारको चुनौती दे सकते हैं।..."

"तो मालूम हो गया, आप भी ठीकसे वस्तुस्थितिकी परख नहीं कर सकते।"

"आपकी तरहकी दिव्यदृष्टि भला मुझे कहाँ? असहयोगके त्याग और जेलके बाद आप समझ सके हैं, कि ब्रिटिश सरकार हमारे हितके लिए है; और आज अमन-सभाओं द्वारा आप भारतमें अमन-चैन कायम करना चाहते है।"

"आप अमनके तो विरोधी नहीं होंगे?"

"नहीं जनाब! मैं भारतमें अमनका सख्त विरोधी हूँ। मुर्दोंके लिए अमनकी जरूरत है। जिन्दोंके लिए तो अमन मौतसे भी बदतर है। भला, यह तो बतलाइये, अंग्रेजोंके कौनसे गुण प्रकट हो गए, जिनसे कि आज आप अमनसभाके झंडाबरदार बन गए?"

"आज ब्रिटिश शासनमें आदमीका मूल्य जो है, क्या वह कभी अपने शासनमें भी हिंदुस्तानमें था? मैंने थोड़ा बहुत भारतके इतिहासको पढ़ा है, और मैं कह सकता हूँ, कि उस वक्त आदमीकी कीमत रत्ती भर भी नहीं थी।"

"मै भी कह सकता हूँ, कि इस वक्त, सन् १६३० में, हमारी कीमत रत्ती भर नहीं है। आप कभी दक्षिण-अफ्रिका गए ? आपने कनाडा देखा ? आपको दूसरे स्वतत्र देशोमें जानेका अनुभव है ? यदि जानेका अनुभव हुआ होता, तो आपको मालूम होता कि इस वक्त भी बड़ेसे बड़े हिंदुस्तानीकी कीमत दुनियाके बाजारमें रत्ती भर नही है। इतिहासकी बात छोड़िए। जिस वक्तके इतिहासके बारेमे आप कह रहे है, उस वक्त इंग्लैडमें भी आदमीकी वही कीमत थी।"

"लेकिन, क्या आप स्वीकार नहीं करते, कि अंग्रेजोंने शिक्षा, सभ्यता और न्यायके प्रसारमें भारतमें वह काम किया है, जिसे किसी भी शासक जातिने अपने आधीन जातिके साथ नहीं किया ?"

"मैं जानता हूँ अग्रेज बहुत ही चतुर और दूरदर्शी शासक है। अगर उन्होंने दूरदर्शितासे काम न लिया होता, तो उनकी भी दशा स्पेन और पुर्तगाल जैसी हुई होती। अंग्रेज धन-सम्पत्ति दूहनेमें सबसे बढ़कर है। बड़े बड़े अत्याचारी शासक भी देशका खून चूसकर उसे उतना गरीब नहीं बना सके जितना कि अंग्रेज। वे छुरीसे कलेजा चीरकर या तलवारसे गर्दन काटकर खून नहीं निकालना चाहते, उनका तरीका बहुत सूक्ष्म है। वह जोंककी तरह हमारा खून इस तरह चूसते है, कि खून भी पूरा निकल आए और हम जीते रहकर हमेशा दुधार गाय बने रहें।"

"इसमें अंग्रेजोंका क्या दोष है ? तुममें अपने ऊपर शासक करनेकी काबिलियत होती तो अंग्रेज क्यों आते ?"

"काबिलियतसे हमने हमेशाके लिए इस्तीफ़ा नहीं दे दिया है; और, जितना आप समझ रहे है, हम उतने नाकाबिल भी नहीं हैं। इसे हम नहीं कहते, आप दूसरे देशोंकी सम्मति इसके पक्षमें पायेंगे।"

"यह तो राष्ट्रीय अहंकार है।"

"लेकिन, बुरी चीज नहीं है। वह बुरा तब होता, जब कि दूसरोंको नीच साबित करनेके लिए हम अपनी तारीफ करते। हम जानते हैं, कि किन्ही गुणोंकी कमीके कारण हमने अपनी स्वतंत्रता खोई; लेकिन, वे गुण और स्वतंत्रता हमेशाके लिए हमारे हाथसे चली नही गई है।"

"स्वतंत्रता हीमें कौन सुर्खाबका पर लगा हुआ है?"

"यदि एम्० ए० तक अंग्रेज़ी साहित्य पढकर आप इसी नतीजेपर पहुँचे है, तो आपके लिए मुझे बहुत अफ़सोस है। . . ."

"नहीं, मेरा मतलब था यूरोपके स्वतंत्र देशोंकी पिछली लड़ाईमें क्या गति हुई? आज कैसरका जर्मनी किस अवस्थाको पहुँच गया है? कितने अपार धन और जनकी हानि उसे उठानी पड़ी है?"

"यह तो यही सिद्ध करता है, कि स्वतंत्रताकी कीमत कितनी अदा करनी होती है। मुझे अफ़सोस है कि आज आप स्वतंत्रताके महत्त्वको स्वीकार नही करना चाहते। आप यदि ठिगने जापानीको यूरोपके शहरोंमें सर ऊँचा करके घूमते और लोगोंको अदबसे झुकते देखते, तब आपको मालूम होता कि स्वतंत्रता क्या चीज़ है।"

"खैर, मैं अपनी अल्पज्ञताको स्वीकार करता हूँ; लेकिन, हिन्दुस्तानमें हिन्दू-मुसलमान और उनके भीतर भी हज़ारों जात-पाँत! क्या उनके रहते हमारी राष्ट्रीय एकता संभव है?"

"आप बिलकुल उचित कह रहे हैं और किसी राष्ट्रीय नेतासे बाबू केशवसिंहके लिए मेरे दिलमें कम सन्मान नहीं हो, यदि वे अमनसभाकी जगह धर्मों और जात-पाँतपर कुल्हाड़ा चलानेमें अपना समय लगावें।"

"कुल्हाड़ा चलानेकी ज़रूरत नही। मै समझता हूँ, हमारे देशकी यह एक विशेषता है। धर्म भारतका प्राण रहा है। भारतमें साधु-फकीरोंका जितना सम्मान रहा है, उतना राजनैतिक अगुओं-

का नहीं। मैं समझता हूँ भारत अपनी विशेषताको किसी भी मूल्य-पर देनेको तैयार न होगा।"

"केशव बाबू, आप अपनेको भारतीय इतिहासका विद्यार्थी कहते हैं, और तब भी यह कहते हैं कि भारत हमेशा धर्मप्राण रहा है, क्या यह परस्पर-विरोधी नहीं है? धर्मप्राणताका नाप क्या है? आपके अवतार रामचन्द्र तक छिपकर शत्रुको मारने, धर्माचरण-के लिए शूद्रका बध करने और निराश्रित गर्भवती स्त्रीको झूठे इल्जामपर जंगलमें छोड़ देनेमें आनाकानी नहीं करते। अपराधियों-को जिस प्रकारके भयंकर दंड दिए जाते थे, खासकर प्राण-दंड पानेवालोंकी जीते जी खाल खींचना, देह भरमें बत्ती जलाना, लाल चिमटोंसे बोटी बोटी मांस नुचवाना आदि आदि दंड तो जरूर उनकी धर्मप्राणताके द्योतक हैं। और, आज हमने धर्म हीके नामपर तो करोड़ों अछूत बना रक्खे हैं, जिनके साथ हमारा बर्ताव पशुसे भी बुरा है। पाँच पाँच बरसकी लड़कीका व्याह भी धर्मप्राणता है। दस वर्षकी अबोध विधवाको आजीवन ब्रह्मचर्य-पालनके लिए मजबूर करना और पचपन बरसके बूढ़ेको, स्त्रीके जिंदा रहते, विवाह करनेकी अनुमति भी तो धर्मप्राणता है। यह भी तो बतलायें कि यह धर्मप्राणता सारे तेंतीस करोड़ भारतीयोंके खमीरकी चीज है, या कुछ गिने-चुने लोगोंके बखरेमें पड़ी है?"

"सारे भारतीयोंके।"

"हिंदू, मुसलमान, ईसाई, छूत-अछूत सभीमें? अच्छा सबकी धर्मप्राणता परस्पर विरोधी है या एक जैसी?"

"परस्पर-विरोधी नहीं एक सी है। विरोधी तो न समझनेके कारण है।"

"किसके न समझनेके कारण?—अल्लाह और भगवान्के न समझनेके कारण, ऋषि और पैगम्बरके न समझनेके कारण या

जाहिलों और अनपढ़ोंके न समझनेके कारण ?"

"जाहिलों और अनपढ़ोंके न समझनेके कारण।"

"गोकशी और गोरक्षा क्या जाहिल अपने मनसे करते हैं ? क्या उनके लिए अल्लाह और भगवान्, ऋषियों और पैग़म्बरोंकी पोथियोंका हवाला नहीं दिया जाता ? जाहिल और अनपढ़ बेचारे तो हथियार मात्र है, सारा जाल तो हम-आप जैसे पठित, चतुर रचते हैं। भारतीय इतिहासके विद्यार्थी होनेके नाते आप इसे तो मानते होंगे कि आजसे साठ ही बासठ पीढ़ी पहले हमारे पूर्वज—पक्के धर्मात्मा हिन्दू—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र--गोमांसको वैसे ही खाते थे, जैसे आज हम साग और दालको। लेकिन, गोरक्षाके लिए मरनेवालोंके सामने आप यह बात कहकर उन्हें अपने इरादेसे मना कर सकते हैं ?"

"यह भी जाहिलों और अनपढ़ोंकी बेसमझी है। मैं मानता हूँ कि हमारे पूर्वज गोमांससे कोई परहेज नहीं रखते थे, लेकिन, आजके जाहिल हमारी बात सुननेको तैयार हों तब न ?"

"माफ़ कीजिए, वह आपकी इस बातको उससे भी ज़्यादा सुननेके लिए तैयार होंगे, जितनी कि चौकीदारों और दफादारोंकी सभा आपके अमन-सभावाले व्याख्यानको सुनती हैं। लेकिन, जाहिलों और अनपढ़ोंको तो हमेशा हम लोग अन्धकारमें रखना चाहते हैं और यही भारतकी धर्मप्राणता है। झूठ, पाखंड, प्रवंचनाको आपने धर्मप्राणताका नाम दे रक्खा है।"

"अच्छा, इसको चाहे आप न मानें; लेकिन, क्या हमारे पास वह बल है, जिससे हम स्वतंत्र हो सकें ?"

"मेरी समझमें साइंस बल सबसे ज़बर्दस्त बल है। यह विज्ञान-का युग है। जो विज्ञानका अनन्य शरण होना चाहता है, वह अधिक दिन तक परतंत्र नहीं रह सकता। आप ख्याल करते होंगे,

हम निहत्थे हैं और युद्धमें वही जीतता है, जिसका लोहा सबसे ज़्यादा मज़बूत होता है। लेकिन, आपको ख़्याल रखना चाहिए कि कभी कभी दो मूज़ियोंमें खटपट होनेपर अपने बचनेका मौका भी मिल जाता है। हाँ, ऐसे मौक़ेसे फ़ायदा उठानेके लिए बड़ी ज़बर्दस्त व्यावहारिक बुद्धिकी आवश्यकता है। राजनैतिक तौरसे हम आगे बढ रहे हैं, इसमें भी क्या आपको सन्देह है ?"

"लेकिन, इस तरहके बढ़नेके लिए इतना सत्याग्रह और असहयोग करनेकी क्या ज़रूरत है ? इसे तो अंग्रेज़ खुद स्वीकार कर चुके हैं—हम अपनेको जितना ही अधिक योग्य साबित करते जायेंगे, हमे और अधिकार मिलते जायेंगे।"

"अमन-सभाका सेक्रेटरी यह छोड दूसरा कही क्या सकता है ? आप अच्छी तरह जानते हैं, अंग्रेज़ जो कुछ देते हैं वह भयके कारण। वह भय हमारा भी है और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिका भी।... "

केशवसिहको इजलासमें हाज़िर होना था और इस प्रकार बहस यही खतम हो गई।

× × ×

देवराजने ज़िलेमें आन्दोलनको फिरसे उज्जीवित किया। सैकड़ों आदमी जेल चले गये थे। हज़ारोंपर लाठी बरसी थी। बहुतोंकी खाने-पीनेकी चीज नष्ट हो गई थी। अदालतें धडाधड़ जुर्माना कर रही थी। लोग परेशान थे। जुर्माने और घरकी बर्बादीकी मारके कारण देवराजने एक थानेके कार्यकर्त्ताओंको दूसरे थानेमें भेजा। लोगोंने वल्दियत सकूनत लिखाना छोड दिया। इस प्रकार जुर्माना वसूल करना असंभव हो गया। उन्होंने अपने ज़िलेमें इतना अच्छा राष्ट्रीय डाकका प्रबन्ध किया कि आन्दोलन-सम्बन्धी पत्र-

व्यवहार बड़ी अच्छी तरह होने लगा। देवराजने खुली तौरसे व्याख्यान नही दिया, उसका काम था भीतरसे सब कामोंका संगठन करना; लेकिन, पुलिस उससे सुपरिचित थी और अमन-सभाके सेक्रेटरीकी उसपर खास कृपा थी। उसे भी फँसाया गया और अक्तूबरमे डेढ़ सालकी सजा हुई।

गिरफ्तारीसे दो दिन पहले उसे जेनीका यह पत्र मिला था—

" . . . .

लंदन, २८ सित० १९३० ई०

"डेवी, मेरे अपने,

". . इंग्लैडके मजदूर-दलसे न हमे पहले कई आशा थी, न उसके कामोको देखकर हतोत्साह होना पड़ा। मजदूर-दलका नेतृत्व है, निम्न-मध्यमवर्गके बुद्धिजीवियोके हाथमें। ये अपनी श्रेणीके अपनत्वको छोडना नही चाहते। और तरहसे उपक्षित ये शिक्षित लोग मजदूरोंकी सहानुभूति प्राप्तकर आगे बढनेका मौका पाते हैं। वह भी अपनी वैयक्तिक महत्वाकांक्षाको पूरा करनेके लिए, किसी उच्च आदर्शके लिए आत्म-त्याग करनेके लिए नही। दो-एक अपवाद भले ही हो सकते है; लेकिन, आम तौरसे इंग्लैडके सभी मजदूर नेताओंका यही हाल है। ये डरपोक, आराम-पसंद, अदूरदर्शी, वैयक्तिक महत्त्वाकाक्षी अपने ही देशके मजदूरोंके लिए कुछ करनेमें डरते है; फिर, भारत जैसे परतंत्र देशोके मजदूरों और किसानोके लिए क्या करेंगे? तुम्हारा कहना ठीक है—इंग्लैडका मजदूर-दल भारतके लिए वैसा ही साम्राज्यवादी है, जैसे कि वहाँके दूसरे दल। मजदूर सरकार भी भारतके राष्ट्रीय आन्दोलनको किस तरह कुचलनेका यत्न कर रही है, यह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। मै कभी कभी सोचने लगती हूँ कि क्या इंग्लैडकी अस्सी फ़ी सदी जनताके भाग्यमें हमेशाके लिए थैलीवालोंकी गुलामी और दरिद्रता-

का जीवन ही बदा है। स्कूलों और कालेजोंमें तरुण बड़ी गर्मगर्म बातें करते है, लेकिन वहाँसे निकलते ही उपनिवेशों या भारतमें जहाँ कोई काम या नौकरी मिली, कि उनपर हज़ारों घड़े पानी पड़ जाते है। हमारे देशके अत्यधिक बनियापनने हममें सुनहले स्वप्नोंको देखन और उनके लिए क़ुर्बानी करनेका माद्दा ही नहीं रहने दिया है... ।

"... .डेवीका दसवाँ साल चल रहा है। फ़ोटो भेज रही हूँ। बालचरीमे उसका बहुत मन लगता है। कहता है, मुझे सैनिक बनना है। पढ़ने लिखनेमें तो उसे क्लासमे प्रथम होना ही चाहिए जब कि देवराज और प्रोफ़ेसर ब्राउन्के खून उसकी रगोंमें बह रहे हैं....।

" .स्नेहके साथ।

तुम्हारी
जैनी"

× × ×

गाँधी-इर्विन समझौतेके अनुसार सत्याग्रह स्थगित हुआ। क़ैदी छोड़ दिए गए और देवराजको भी फरवरी (१९३१) में जेलसे बाहर आनेका मौक़ा मिला। पिछले सत्याग्रहमें ज़मींदारोंने जितना खुलकर अंग्रेज़ोंकी सहायता की थी, उससे राष्ट्र-कर्मियोंकी आँखें खुल गई थीं और एक तरहसे मालूम होता था कि देशभक्ति और देशद्रोह धनिक—खासकर ज़मींदार, और निर्धन श्रेणियोंमें बाँट दिए गए है।

इर्विनकी मीठी-मीठी बातों और धर्मानुरागको देखकर गाँधीजीने समझा कि इंग्लैंडका हृदय परिवर्तित हो गया। शायद उनके ऐसा समझनेमें विलायतकी मज़दूर-सरकारका ख्याल काम कर रहा था;

लेकिन इसका पता तो तभी लग पया, जब कि गाँधीजीकी हज़ार मिन्नतोंके बाद भी भगतसिंहके लिए प्राणभिक्षा मंजूर न हुई।

रौंडटेबुल कान्फ्रेंमकी भूल-भुलइयोंमें अधिकांश लोग फँसे हुए थे, लेकिन देवराज जैसे लोग आशापर चुपचाप बैठनेवाले न थे। उन्होंने समाजवादके प्रचार तथा किसान-आन्दोलनका सूत्रपात किया। उसके साथियोंमेंसे कितने कह रहे थे—आप इसे समयसे पहिले कर रहे हैं।

सत्याग्रह दुबारा आरम्भ हुआ, और फ़रवरी १९३२में देवराज फिर साल भरके लिए जेल भेज दिया गया।

३६

कोयलेकी खान

"कहो भैया, कहाँ जाते हो?"

"झरिया जाते है भैया!"

"कोयला-खानमे?"

"और भैया, हम लोगोंको कहाँ काम मिलेगा? चमारके घर-मे जनम हुआ। गाँवमें रहो, तो बाबूभैयाकी हज़ार गाली सुनते रहो, और पेटपर पत्थर बाँधकर हल, कुदाल चलाओ। मंडुआका आटा भी पेट भर बालबच्चोंको मिलता, तो भी किसी तरह सबर करते।"

"हाँ ठीक कहते हो भैया! कौन जिला घर है?"

"गोरखपुर। और तुम्हारा घर कहाँ है भैया?"

"पड़ोस हीमें छपरा जिला।"

"छपरा जिलामें कहाँ?"

"हथुआके पास बथुआ। और तुम्हारा भैया?"

"तर्कुलहवा। जानते हो? कौन बिरादर हो भैया?"

"रैदास भगत।"

"तब तो जातै भाई हैं। हम जैसवार है।"

"हम भी जेसवार ही है। मँगरू नाम है।"

"मेरा नाम रामलाल है। देख रहे हो न दुखके मारे पाँचों प्रानी जा रहे है। घरमें बुढिया माँ और दो छोटे छोटे बच्चे छोड़ आये है।"

गया स्टेशनसे रेलपर सवार होते ही मँगरू और रामलालकी बात शुरू हुई, और धीरे धीरे उनकी घनिष्टता इतनी बढ़ गई, कि मालूम होता था दोनों भाई-भाई हैं। मँगरूका बदन लम्बा चौड़ा, रंग गोरा, चेहरा प्रभावशाली, शरीरपर मैली कुचैली सड़ी हुई बंडी, उसी तरहकी पुरानी घुटने तककी धोती, सिरपर दो गज़का ५० जगह फटा अँगोछा, दाहिनी बाँहपर सालो मैल-खाते सूतमें बँधी ताँबेकी तावीज़ थी। पोटलीमें एक हुक्का, लोटा तथा कुछ और पुराने लत्ते बँधे थे।

रामलालकी वेशभूषाको देखकर मँगरू बूढा आदमी मालूम होता था। रामलालके साथ उसकी स्त्री सिमरिखिया, १८ वर्षकी लड़की मुँगिया, लड़का चेतू, उसकी स्त्री बिदनी—पाँच व्यक्ति थे। बिदनीको छोड़कर बाक़ी सभीका रंग साँवला था। रामलालने फिर बातचीत शुरू करते हुए कहा—

"मँगरू भैया, कितने बरिसके भए?"

"एक कम दो बीरा। और तुम भैया?"

"दो बीसपर पाँच। तब तो हम ६ बरस बड़े है।"

"पालगी रामलाल भैया!"

"झरिया तो कभी नही गये रामलाल भैया! कोयलाकी खानमें भी काम नही किया। लेकिन जानते हो, हमारी जातके लिए काम ही कहाँ मिलता है? सईसी करो, कोचवानी करो, या कोयलाकी बोझाई करो। कलकत्तामें 'मोटिया'का काम भी तो मिलना मुश्किल है। पता लग गया, कि चमार है, बस सौ गाली—हमारा नारियल छू गया, हमारा आटा छू गया....।"

"सच कहते हो मँगरू" रामलालने मँगरूको और भी नज़दीकसे सम्बोधित करते हुए कहा, "लेकिन क्या करना है, भगवान्‌की यही मर्जी। यदि चाहते तो हम लोगोंको भी न किसी बड़ी जातमें

पैदा करते। चेतू बेटा, चिलम चढाओ न, देखते क्या हो। जातभाईसे मुलाकात बड़े भागसे होती है।"

"टिकिया सुलगा रहा हूँ दादा!"

मँगरूकी ओर मुँह करके रामलालने फिर बात शुरू की—"रोटी पानी हुआ है मँगरू? लजानेकी बात नही, हम दोनों दो नही हैं।"

"नही रामलाल भैया, लजानेकी बात नही। रोटी खाकर गयामें गाड़ीपर चढ़ा।"

"शामके वास्ते जौकी रोटी और नून-मिर्चा बँधा है। जब पहिले ही पहिल झरिया जाते हो, तो जान पहिचान तो किसीसे न होगी? लेकिन, मँगरू, हम तो तुम्हारे भाई है ही। २० सालसे बराबर हम झरियामें काम करते है। कलकत्तामें आरामकी नौकरी कभी कभी मिल जाती है, किन्तु पानी बहुत कच्चा है बाबू, झरियाका पानी पक्का है।" इसी समय चेतूने चिलम जगाकर नारियलको बापकी ओर बढाया। रामलालने मँगरूकी ओर करते हुए कहा—"दो फूँक लगाओ, मँगरू,"

"नही भैया, यह क्या करते हो, पहिले बडेका हक होता है न?"

रामलालने दो फूँक लगाकर मँगरूके हाथमें दिया। मँगरूने दो चार फूँक लगानेकी कोशिश तो की, किन्तु उसकी मुखाकृतिसे मालूम होता था, कि वह अपने ऊपर बलात्कार कर रहा है।

रामलालके हाथमें नारियल रखते हुए मँगरूने कहा—"अच्छा हुआ रामलाल भैया, जो तुमसे मुलाकात हुई। एक तो नई जगह, दूसरे बिना जान-पहचानकी और उसपरसे छोटी जातके हम आदमी, दो दिन टिकनेके लिए भी जगह मिलना मुश्किल।"

"सो तो कोई बात नहीं, मँगरू। आरा, बलिया, गोरखपुरके अपने जान-भाई कोइलरीमें बहुत हैं। हमारी जात वैसे सब तरहसे

तो गरीब है लकिन भाई कहींका हो, उसके लिए एक चिलम तमाकू और एक लोटा पानी तैयार जरूर मिलेगा। तुम चलो बाबू, हमारे ही साथ रोटी-पानी रखना। काम काहे नही मिलेगा। जहाँ बाबू और सरदारको दो दो रुपया सुंघाया कि नौकरी मिली धरी है।"

"मजदूरी क्या है, रामलाल भैया ?"

"मज़दूरी बँधी नही है। जितना कोयला काटो, उसीके मुताबिक मजदूरी। हम और चेतू तो तुमसे कमजोर ही है, लेकिन, दिनमें सात आठ गंडा बना लेते है।"

मँगरू और रामलालमें बहुत देरतक बात होती रही। विषय था कोयलेकी खानका काम और खनकोका जीवन। शामके वक्त रामलालने रोटीकी पोटली खोली। सिमरिखियाने नून और मिर्च सामने रक्खा। मँगरूने भी अपनी पोटलीमेंसे कड़वे तेलकी शीशी निकालते हुए कहा—"रोटी-ओटी तो हमारी खतम हो गई रामलाल भैया, सत्तू और यह कड़ुआ तेल है।"

"रातको सत्तू क्या खाओगे मँगरू ? हाँ, तेल बहुत अच्छा है। जौकी रोटी, नून मिरिच और ऊपरसे कड़वा तेल पड़ जाय तो उसके सामने छप्पनो परकार झूठा।"

रोटियाँ मोटे अटेकी डेढ़ डेढ़ पावकी थी। रामलालने डेढ डेढ हर एकको बाँटी। मँगरूने भी बड़े चावसे अपना हिस्सा खतम किया; लेकिन रामलालके आग्रह करनेपर भी और रोटी न ली।

गाड़ीमें यद्यपि बड़ी भीड़ थी, और वैसे होता तो रामलालके परिवारको ही सभी यात्री दबाना चाहते; लेकिन, बेंचपर सबसे पहले ही बैठा था मँगरू। कपड़ा मैला रहनेपर भी उसके मजबूत बदनको देखते ही किसीको छेड़-छाड़ करनेकी हिम्मत नहीं होती थी। गाड़ी एक दो जगह बदली। दो घंटा दिन बाकी था, जब कि मँगरू और उसके साथी झरिया स्टेशनपर उतरे।

स्टेशनसे निकलते ही रामलालका एक परिचित 'चौधरी पालागी' करते आया। रामलालको यह सुनकर बडी ख़ुशी हुई कि उसका पहिलेवाला बासा खाली है। यह भी पता लगा कि इस वक्त कोयलेका भाव चढा है और मजदूरोंकी बडी माँग है। सभी लोगोंने अपनी अपनी मोटरी सरपर रक्खी। जगह एक मीलसे ज्यादा दूर थी। बासाके नामसे किसीको भ्रम होनेकी जरूरत नही! दो से चार हाथ ऊँची दीवारें और टीनकी छत, छै हाथ लम्बी, पाँच हाथ चौड़ी कोठरी और उतना ही आँगन—यही था रामलालका बासा, जिसके लिए उन्हें दो रुपया महीना देना था। वहाँ ऐसी कोठरियों-की कई पाँतियाँ थी, जिनमें मजदूर लोग रहा करते थे। पानीके नल इतने कम लगाए गए थे, कि एक बाल्टी पानीके लिए घंटा भर इन्तजार करना पड़ता था। पाखानाकी भी वही हालत थी। ऊपरसे गन्दगीका कोई ठिकाना न था।

रामलालकी कोठरीके बगलवाली कोठरी ख़ाली थी। मँगरू देख रहा था कि रामलाल एक ही कोठरी लेना चाहता है, और प्रश्न भी दो रुपये महीने औरका था। उस एक कोठरीमें छै आदमियोका रहना मँगरूकी नजरमें अच्छा नहीं जँचा। उसने कहा—

"भैया रामलाल, कोठरी खाली बराबर नहीं मिला करती। इस वक्त बगलकी कोठरी खाली है, इसको मै ले लेता हूँ; पीछे और कोई आदमी आ जायगा तो साझेमें कर लेंग।"

"काहे वास्ते दो रुपया और खर्च करना? दिनमें खान हीमें रहना है। रातको बाहर भी सो सकते है। चैतके तो दिन हैं।"

"सो तो ठीक है। लेकिन, पानी-बूँदी होनेपर तकलीफ़ होगी। फिर तीन तीन औरतें है। आप चिन्ता मत करें; हफ्ता दो हफ्तामें साथ रहनेवाले दूसरे भी मिल जायेंगे। तीन साथी और हो जाने

पर आठही आना महीना तो पड़ेगा। लेकिन, भैया रामलाल, मेरा भी खाना सिमरिखा भौजीको ही बनाना होगा।"

सिमरिखियाने अपने मुँहपर हँसीकी रेखा अंकित करते हुए कहा—"हाँ, बबुआ मँगरू, भौजाईके रहते देवरको हाथ जलानेकी जरूरत न होगी।"

मँगरूने बगलकी कोठरी ले ली।

आदमी पीछे दो दो रुपया देना पड़ा और दूसरे ही दिन छहो आदमियोंको काम मिल-गया। उसी दिन १० बजे चेतू और बिदनी को छोड़कर सभी लोग खानकी ओर चले। चेतू और बिदनीको दो घंटा बाद आना था। आफिसके पास वाले गोदामसे तीन टोकरियाँ, दो बेलचे, चार सुम्हा और खानके भीतर जाने वाली एक एक लाल-टेन लेकर लोग चंदवककी तरफ चले। वह गोदामसे दूर न था। वहाँ लोगोंकी भीड़ लगी थी। हजार हाथ नीचेसे पिंजरा ऊपर आता था। एक बार आठसे ज्यादा आदमी उसमें चढ नही सकते थे। आध घंटा इन्तिजारके बाद उन्हें मौका मिला। मुँगियाके लिए चँदवक नई चीज थी। आदमी सामान सँभालकर पिजरेमे खड़े हुए। 'तैयार' कहा। कलका पुर्जा घुमाया गया। फिर, बेगसे पिजरा नीचेकी ओर गिरने लगा। मुँगिया घबरा गई। उसे मालूम हुआ, अब चूर चूर होना चाहती है। ऊपरसे घोर अंधकार। उसने अपनी माँको पकड लिया। सिमरिखियाने उसे ढारस बँधाते हुए कहा—"नही बेटी, डरनेकी कोई बात नहीं। पहले पहल ऐसा ही हुआ करता है। पिंजरा लोहेके मजबूत रस्सेसे बँधा है।"

"बहुत डर लगता है माई, मालूम होता है कलेजा मुँहमें आ रहा है...."

अभी माँ-बेटीकी बात खतम भी न होने पाई थी कि गति मंद होते होते पिंजरा चँदवककी पेंदीमें जा लगा। बत्तीकी रोशनी

मंद थी; लेकिन इतने मिनटोंमें अन्धकारमें देखनेका अभ्यास हो गया था; इसलिये आसपासकी चीजोंकी रूप-रेखा वे देख सकते थे। पिंजरेसे उतरनेपर देखा—बगलमें चौरस्ता है, जिससे चारों ओरको गलियाँ गई हुई हैं। इन गलियोंमें लोहेकी पतली लाइनों-पर खुले मुँहकी छोटी गाड़ियाँ चल रही हैं। छतसे टप टप बूँद चू रही है और गलीके किनारेसे कही कही बहते हुए पानीकी आवाज भी सुनाई दे रही है। सबकी लालटेनें जल रही थी। उनसे क्षीण, किन्तु पर्याप्त प्रकाश निकल रहा था।

रामलालको मालूम था कि उन्हें किस जगह काम करना है। दाहिने कन्धेपर सुम्हा रक्खे, बाएँ हाथमें लालटेन लिए वह आगे आगे चल रहा था। उसके बाद था मँगरू, फिर सिमरिखिया और मुँगिया। उस अँधेरेके भीतर वे बहुत देर तक चलते रहे। मुँगिया इन सैकड़ों अँधेरी और अधिकांश सुनसान गलियोंको देखकर डर गई थी। उसे मालूम होता था कि वह पातालपुरीमें भूतोंके गाँव-में घूम रही है। रह रहकर विना मुडे तिरछी नज़रसे वह देख लेती थी कि कोई भूत तो पीछा नही कर रहा है। इतनेपर भी उससे न रहा गया। उसने माँका हाथ छूकर कहा—

"माई, डर लगता है, मुझे आगे चलने दे।"

"आ दुत् तेरीकी। यहाँ डर काहेका? अच्छा आगे चल। देख, आगे लाल बत्ती। कोयलागाड़ी आ रही है, बगल हो जा।"

सब लोग बगल हो गए। मुँगिया अब सिमरिखियाके आगे आगे चल रही थी। २० मिनट चलनेपर रामलाल कामके स्थान-पर पहुँचा। कोयलेपर एक सुम्हा लगाकर मँगरू और मुँगियाको नया समझकर उसने समझाना शुरू किया—

"कोयला नरम है। सर्दारको मैंने कह दिया था, कि यदि काम अच्छा मिलेगा तो आना-रुपयाकी जगह सवा आना देंगे। देखो

कोयला खोदनेका काम—सुम्हासे कोयला काटना। उसे टोकरीमें लोककर थोड़ी दूरपर खड़ी गाड़ीमें लादना; फिर खाली जगहकी छतको थामनेके लिए थूनी लगाना।"

मुँगियाको थूनी लगाना ठीक न जँचा। उसने कहा—"थूनी, जिनकी है, वे लगाते रहेंगे।"

रामलालने समझाते हुए कहा—"थूनी लगाना भी मजदूरीमें शामिल है। देखती नही? हजार हाथ मोटी धरती ऊपर है, अवलम्ब न रहेगा तो हमी लोग दब मरेंगे।"

रामलालने मटमैले पत्थरोंके बीचकी काली तहको नापकर कहा—'तीन हाथ मोटी। बहुत अच्छा है। फ़ुट भर मोटी तहमें आदमी थूनी लगाते लगाते मर जाता है। एक गाड़ीके लिए पाँच हाँथ खोदो। सरदार हमारा पुराना दोस्त है। कुछ दे देनेपर काम अच्छा कर देता है।"

रामलालने एक ओरसे सूम्हा चलाना शुरू किया और उसीकी देखादेखी मँगरूने भी। गली आठ हाथ लम्बी थी, जिसमें बत्तीकी रोशनीसे कोयलेकी तह चमक रही थी। दस-पाँच हाथके बाद मँगरू भी सधा हाथ चलाने लगा। उसे तेजीसे सुम्हा चलाते देख रामलालने कहा—"इतनी जल्दी जल्दी सुम्हा चलाओगे तो जल्दी ही थक जाओगे।"

"नही रामलाल भैया, मै थकनेवाला नहीं हूँ।" पिछले जेलके अट्टारह अट्ठारह सेर गेहूँ पीसनेके कारण घट्ठे पड़े हुए हाथोको दिखाते हुए "देखते नहीं, कुदाल चलाते चलाते हाथ पत्थर हो गए है।"

कोयलेकी धूल उड़ उड़कर मँगरूके मुँहपर पड़ रही थी और पसीनेसे भीगा मुँह, मालूम होता था, कोलतारसे पुता हुआ है। काफी कोयला काट लेनेपर मँगरूने रामलालसे कहा—"मैं खोदता हूँ भैया, तुम भौजी और मुँगियाके सिरपर उठाकर देते जाओ"।

कोयलेके बोझे जानेपर रामलालने फिर खोदना शुरू किया। दो घंटा बाद चेतू और बिदनी भी आगए। साँझ तक सबने मिलकर आठ रुपयेका कोयला चंदवकके ऊपर भेजा। दस आना सरदार को दिया गया और सात रुपया छै आनामें, रामलालका कहना था, कि मँगरूका हिस्सा कुछ अधिक होना चाहिए। उसको डर था कि मँगरू कोयला डेवढ़ासे अधिक खोदता है, कहीं ऐसा न हो कि वह पीछे अपने लिए अलग स्थान पसंद करे। लेकिन, मँगरू ज्यादा लेनेको तैयार न था। उसने कहा—"मजदूरीमें छओ जनेका हिस्सा बराबर है। आजकी मजदूरीमे उन्नीस आना ढाई पैसा हरेकका है। मै थोड़ा अधिक कोयला काट देता हूँ तो क्या हुआ? आखिर, भौजी, बिदनी और मुँगियाको भी खाना बनाकर खिलाना है, चौका बर्तन करना होता है।"

रामलालने कई बार कहा, लेकिन, मँगरूने उसकी एक भी न सुनी। साथ ही उसने यह भी कहा—"भोजनपर महीनेमें जो भी खरच आयेगा, उसमें छै हिस्सेमें एक हिस्सा मेरा।"

घड़ीकी चालकी तरह नित छओ जने समयपर चँदवकके नीचे उतरते और समयपर ही ऊपर आते। सबेरे खाना खाकर दोपहरका खाना साथ ले जाते। मँगरूने खोदनेकी और अच्छी व्यवस्था की। बिदनी मजबूत औरत थी। उसको थूनी लगानेका काम दिया गया। सिमरिखिया और मुँगिया गाडी पर कोयला लादती थीं। रामलालके जिम्मे था बेल्चासे छेटियोंको भरते जाना। चेतू खाने-पीनेकी कमीके कारण कुछ कमजोर मालूम देता था; लकिन, दो ही महीनेमें वह मँगरूके बराबर कोयला काटने लगा। आदमी पीछे बीस आना रोजसे कमका काम नहीं होता था। और. कभी कभी तो छओ जनोंने दस रुपया रोज भी कमाया था। रामलाल बहुत खुश था क्योंकि आठ-आने दस-आनेसे अधिक

पहले उसने कभी कमाया नही था। वह कह रहा था—"अबकी कोयलेका भाव चला है, इसलिए मजदूरीका भावभी बढ़ा दिया गया है। टॉमी साहेब बड़ा अच्छा आदमी है। कहता है कि जब हमको नफा ज्यादा मिलता है, तो मजदूरोंके पेटमें भी उसमेंसे कुछ जाना चाहिए।"

मँगरूने अपने भीतरी भावोंको दबानेकी कोशिश करते हुए कहा—"टामी साहेब अच्छा आदमी होगा रामलाल भैया, लेकिन रुपया-पैसा किसे प्यारा नही लगता? हम लोगोंको नरम कोयला मिल गया है, इसलिए बीस गंडा कमा लेते है। लेकिन, हमारे ही पड़ोसी जोखू राम तो रो रहे है। उन्हे सात गंडा तक पहुँचना भी मुश्किल हो रहा है। कोयलेमें कम्पनीको डेवढ़ा मुनाफा है, और हम लोगोंको पैसा-दो-पैसा मन चटाया जा रहा है।"

"ऐसा है मँगरू?"

"ऐसा ही है भैया, अहरनकी चोरी करके सूईका दान देते है। साहेब हो, चाहे राजा हो, चाहे सेठ हों, सबका गाल पचक जाय यदि हम लोगोकी कसालेकी कमाईको लूटनेका मौका न मिले।"

"हम लोग भी तो कमाल बाबूका बखान (व्याख्यान) सुनते है। क्या कहते हैं, कौन बोलीमें बोलते है? ..."

चेतूने सहारा देते हुए कहा—"अरे दादा, कमाल बाबूके इतना पढ़ा-लिखा आदमी झरिया भरमें कोई नहीं है। नौकरी चाहते तो किसी जिलेका कलट्टर (कलक्टर) होते; लेकिन, रात-दिन हमी मजदूरोंका ख्याल उनको रहता है।"

रामलालने बात जारी रखते हुए कहा—"कमाल बाबू बड़े भले आदमी है। इतने बड़े आदमी होकर भी छोटे बच्चेंसे भी बोलनेके लिए तैयार रहते हैं। लेकिन, एक बात उनकी, मँगरू, मुझे समझमें नहीं आती—मुझे ही नही कोइलरीमें कोई भी उस

बातको पसंद नहीं करता। तुम तो बराबर जहाँ कहीं बखान होता है, पहुँच जाते हो। कमाल बाबू काहे सब धरमोंको झूठ और धोखा कहते हैं ?"

मँगरूने समझाते हुए कहा—"रामलाल भैया, तुमको कमाल बाबूकी बात चाहे न समझमें आवे, लेकिन, वह बात कहते है सच्ची। वैसे तो हिंदू, मुसलमान, सभी धर्मोंके गुरु, परोहित एक दूसरेसे उल्टी बात करते हैं। एकका खाना, दूसरेके लिए हराम है। जो एकका पहनना, वह दूसरेके लिए हराम। गोकशी और गोरक्षा, बाजा और मसजिद, झंडा और ताजिया, लेकर कितना झगड़ा ? लेकिन पंडित, मौलवी, दोनोंसे पूछो कि काहे रामलाल राम आठ आठ घंटा मुम्हा चलाते है, और हमारे सैकड़ों भाई-बन्धु रात-दिन ढेला फोड़ते है; तब भी उनके लिए पेट भर अन्न दुर्लभ; रहनेके लिए सुअरकी खोभारपर भी आफ़त; दूसरी तरफ़ टॉमी साहब, सेठ माजूमल या कुर्सियाँके बाबू बिना मेहनतके ही लाखों और करोड़ोंके मालिक हैं ? उनके कुत्तोंको जैसा खाना मिलता है, वह हमें मिले तो हम अपना भाग्य सराहें।...."

"लेकिन, मँगरू, उन लोगोंने पहले जनममें कमाया है न ?"

"यही तो धरमका धोखा है। चोर चुराकर धन ले जाता है तब क्यों नहीं कहते कि वह उसकी पूरब जनमकी कमाई है ?"

"हमको तो यह समझना मुश्किल है, लेकन कमाल बाबूपर हमारा पूरा विश्वास है। वह धर्मके खिलाफ़ भी कहते हैं तो हिंदू-मुसलमान सबके खिलाफ़। यह नहीं कि एकको ख़राब बतलायें और दूसरेको अच्छा।"

मँगरूने गम्भीर मुख-मुद्रा धारण करते हुए कहा—"हूँ तो मैं भी रामलाल भैया, तुम्हारी ही तरह अपढ़ गँवार; लेकिन, कमाल बाबू और दूसरे नेता लोगोंका बखान सुनकर सचमुच आँख

भूल जाती है। तुम कहते हो अब बुढ़ापेमें अच्छर पढ़कर क्या होगा, लेकिन, बुढ़ापेमें भी पढ़ना पाप थोड़े ही है? चेतू और मैं दोनों कमाल बाबूकी पाठशालामें रातको एक घंटा जाते हैं; और देख रहे हो, हम दोनों अब हनुमानचलीसा पढ लेते है। तुम भी पढ़ते तो महावीरजीकी पूजा भरको तो पढ़ लेते।"

सिमरिखियाने हँसते हुए कहा—"बूढा तोता राम-राम!"

"भौजी, तुम और भैया भी अपनेको बूढ़ी-बूढा समझती हो। क्या तीस-पैंतालीस बरसमें भी कोई बूढ़ा-बूढी होता है?"

"तो मँगरू बबुआ, क्या जुआन माननेसे जुआनी लौट आवेगी?"

"जुआनी गई कहाँ है भौजी?"

"नजर मत लगा देना।"

"देवरकी नजरमें हरज नही।"

"हरज क्यों नहीं, कही नेत बिगड़ जाय तब!"

रामलालने मुँगियाके लाए हुक्केको गुड़गुड़ाते हुए मुस्कराकर कहा—"अरे! देवर-भौजाईकी नेतपर कौन शंका करता है। हनुमानचलीसा पढ़नेका मनतो करता है, मँगरू। हमलोगोंको रात-बिरात रास्ता-कुरास्ता जाना पड़ता है। बारह बरससे हमारे हाथमें दोनों तबीजें बँधी हैं और एक दिन सिर भी नहीं दुखा। हमारे गुरु महराजने कह दिया है कि कहीं कुछ शंका हो तो तबीज तो मदद देगी, साथ ही महावीरजीका नाम ले लेना। महावीरजीके नामपर मेरा बड़ा विश्वास है। एक दिन हम भोज खाने गए थे। बिरादरीका भोज था! चिखना-पियनाका इन्तिजाम था। उस दिन दो चुक्कड़ बेशी हो गया था।......"

सिमरिखियाने ताना मारते कहा—"उस दिन क्या, कब दो चुक्कड़ कम करते हो? जब कहीं भोज-भाज हुआ कि तुम रातभर हम लोगोंको तंग कर डालते हो।"

"चुप रह. . , तुझको क्या मालूम ? देवताकी परसादी है कि ? दो चुक्कड़ अधिक ही हो गया तो क्या हो गया ?"

"हाँ, तुम्हारे लिए देवताकी परसादी है, और घरवालोके लिए रातभरकी आफत !"

"फिर बकबक ! औरत हीकी बुद्धि है न ? क्या समझेगी ?"

"अच्छा, तुम्ही खूब समझो। लेकिन अब किसी दिन गिरते-पडते आए तो पूछूँगी।"

"जाने दो रामलाल भैया, भौजीकी बात।"

"जाने क्या दें, तुमको न पीते देखकर तो और हमारे नाकों दम किए रहती है। कहती है मँगरू बबुआ तो नही पीते। . "

"तो क्या, झूठ कहती हूँ ? मँगरू बबुआ तुमसे कम हुसियार है ? समूचे कोइलरीमें जात-भाईकी जहाँ भी मंडली बैठती है, उन्हीकी पूछ पहले होती है। देखते नही, कमाल बाबू उनको कितना मानते हैं ?"

"तू भी तो बडा बखान देने लगी, लेकिन तेरे कहनेसे रामलाल देवताकी परसादी छोड़नेको नही। 'मँगरू बबुआ' 'मँगरू बबुआ' जब देखो तब 'मँगरू बबुआ'। मँगरू बबुआको खराब कौन कहता है और मँगरू बबुआने एक दिन भी क्या मुझको परसादी से मना किया ? वह तो यही कहते हैं—रामलाल भैया, ज्यादा मत पिया करो। और इसको तो मै मानता ही हूँ।"

सिमरिखियाने हाथ चमकाकर कहा—"खूब मानते हो ! और कुछ कहवाओगे ? जाती हूँ।"

"जा मर। मँगरूपर तेरा बडा प्रेम है तो कह काग़ज़ लिख दूँ, जिससे तू मँगरू-बहू बन जा।"

"देवर-भौजाईके लिए तुम्हारे कागज लिखनेसे क्या होता है। ठीक है न बबुआ ?"

"और नहीं तो भौजी, देवर-भौजाई क्या दूसरे है ?"

× × ×

कमाल बाबूके व्याख्यान रंग लाए । बासेके कड़े किराए, पानी और और पाखानेके कुप्रबन्ध, ज़रा-ज़रासी ग़लतीपर झिड़क और नौकरीसे अलग करना, सरदारो और बाबुओंकी रिश्वतखोरी आदि आदिके साथ मालिकोंका ड्योढ़ा मुनाफ़ा करके भी उसमें से मजदूरोंको कुछ न देना---यह सारी बाते मज़दूरोको खूब समझमे आ गई थी। कमाल बाबूके नेतृत्वमें उन्होंने अपना मजबूत संगठन किया। मँगरू उनका दाहिना हाथ था। कोइलरीमे कोयला खोदनेवाले अधिकतर छोटी जातके लोग थे और मँगरू उनमें सबसे अधिक संख्यावाली चमार जातका चौधरी था। बाकी जातवाले भी उसको अपना मुखिया मानते थे। खानके मालिक समझ रहे थे कि मँगरू सबसे ज्यादा खतर-नाक है; लेकिन, वे यह भी जानते थे कि मँगरूके निकालनेपर कोई भी मजदूर चदवकके भीतर नहीं उतरेगा। उन्होंने रुपया-पैसा देकर बाहरसे उस जातिके दो-एक मुखियोंको बुलवा उनके भीतर फूट डलवानेकी कोशिश की। जद्दूरामने चमारोमें और चुल्हाई मियाँ ने छोटी जातके मुसलमानोमें कहना शुरू किया—"बड़ी जातवाले यह सब झगड़ा फैला रहे है, कमाल बाबू हों चाहे बटुक महराज। तनख्वाह बढ़ेगी तो जुमई-जोखूकी नहीं बढ़ेगी, सब बड़ी जातवाले ले लेंगे। यदि मालिकने निकाल दिया, तो हम किसी कामके न रहेंगे। दाना-दानाके लिए भूखा रहकर तो घरसे भाग यहाँ आए है। गाँवमें जानते ही हो, चारपाईपर बैठनेकी तो बात ही क्या, जूता पहनना भी भारी कसूर समझा जाता है। वहाँ ये लोग जैसी नेकी हमारे साथ करते हैं, सबको मालूम है। इनकी बातोंमें मत पड़ो। टॉमी साहब ऐसा मालिक मिलना मुश्किल है। सब

शिकायतें गढ़ी हुई है। साहब पानी-पाखानेका इंतिजाम कर रहे हैं। वह तो कहते है, मालिक और मज़दूरके भीतर तीसरेके दखल देनेकी क्या ज़रूरत—घर फूटा, गँवार लुटा।"

लेकिन, इन बातोंका मजदूरोंपर असर नहीं हुआ। उस वक़्त कमाल बाबू और बटुक महराजसे भी ज्यादा मँगरूकी बातका असर होता था। वह कहता था—"भाइयो, इन भाड़ेके टट्टुओंकी बात मत मानो। कोयले कम्पनीको ड्योढा नफ़ा हो रहा है, यह बात सच है। क्या इस नफेमें हमारा हक नहीं है? यह नफ़ा हमारे जाँगरकी कमाई है, इसलिए उसपर सोलहों आने हक हमारा है। आजतक काहे नहीं टॉमी साहबने किराया घटाया और पानी-पाखाने का इन्तिजाम किया? आज जब हम लोग एक हो गए है, तब टॉमी साहब यह कहोका वचन दे रहे हैं। हम लोगोमें फूट पैदा करनेके लिए खूब पैसा खर्च करके बाहरसे लोग बुलाए गए है। छोटी जात बड़ी-जातकी बात उठाई गई है। बड़ी जातवाले हमारे ऊपर हज़ारों बरसोसे अत्याचार करते आ रहे हैं, और उसी तरह धरम भी हमेशा हमारी दुर्गति करनेको तैयार है। इसके लिए हमें उनसे लड़ना है। लेकिन, रोटीके सवालमें छोटी-जात बड़ी-जातकी कोई बात नहीं, सवाई मजूरी होगी तो सबकी। बड़ी जातवालोंकी मजदूरी बढ़ जायगी और हमारी नहीं, यह बिलकुल झूठ है। मज़दूरोंमें दो-तिहाई हमारे लोग हैं; इसलिए लडाईमें हमें दो-तिहाई ताकत लगानी चाहिए. . . . ."

खानवालोंने देखा कि मजदूरोंमें फूट नहीं डाली जा सकती। उन्होंने हड़ताल और उसके कारण नुकसानके डरसे मजदूरोंकी प्राय: सभी शर्तें मानकर सुलह करली।

मँगरू मजदूर-सभाकी कार्यकारिणीका सदस्य बनाया गया।

× × ×

जेनी ब्राउनको ताता नगरके किसी मिस्टर डेवसनकी चिट्ठी मिली, जिसमें लिखा था—मैं नये तजरबेमें लगा हुआ हूँ, एक नये जीवनका अनुभव ले रहा हूँ। पत्रका उत्तर माँगनेपर मिलना चाहिए।

३७

अज्ञातवास समाप्त

मँगरू कोइलरीके लिए एक छोटा-मोटा नेता हो गया; लेकिन, रामलालके लिए वह वही पुराना मँगरू था, जिससे गया-स्टेशन पर मुलाक़ात हुई थी। खाने-पीनेका दाम देकर भी मँगरूको हर महीने अठारह-बीस बच जाते थे, लेकिन, रामलालने उसे कभी मनीआर्डर भेजते नहीं देखा। चँदवकसे आकर मँगरू शामको नहाता फिर घरसे बाहर चटाई बिछाकर जहाँ रामलाल बैठा होता वहाँ बैठ जाता। मँगरूको कभी सिगरेट, बीड़ी पीते किसीने नहीं देखा; लेकिन रामलालके देनेपर हुक्काकी एक दम जरूर मार लेता था। रामलाल अच्छी तरह जानता था, कि मँगरू यह खाली उसके ख्यालसे करता है।

आज कहीं बाहर जानेका काम न था। मँगरू रामलालके साथ चटाईपर बैठ गया। दो-चार पड़ोसी भी आ गए। आज मरहीके लिए सुअर चढ़ा था और सिमरिखिया, बिदनी, मुँगिया—सब मांस पकानेमें लगी हुई थी। नमकमें उबालकर अभी अभी उसे छौंका गया था। बिदनी मसाला पीस चुकी थी। शाम बीतकर रात आगई थी। चाँदनी चारों ओर छिटक रही थी। अभी खाना तैयार होनेमें देर थी और गरम मसालेमें पकते मांसकी मीठी सुगन्ध लेते बात करनेमें सबको आनन्द आ रहा था। रामलालने मुँहका धुआँ ऊपर फेंकते हुए कहा—"आज तम्बाकू बड़ा अच्छा है। कहाँसे लाए चेतू?"

"मै नहीं लाया, दादा, मँगरू काका ले आए।"

"वही तो कह रहा था। चेतूको भला ऐसा अच्छा तमाकू कहाँसे मिलने लगा?"

"आज चेतूको घरपर काम था, इसलिए मैं ही रमईकी दुकानसे लाया। गयाका तम्बाकू है भैया।"

"बड़ा अच्छा है, थोड़ा मीठा है।"

"कहा तो था, थोड़ा कड़ुवा बना देना।......"

मुँगियाको बाहर निकली देखकर रामलालकी आँख उधर गई —"कहो बेटा, आधी रात तक पकवान बनेगा? भूखके मारे रहा नही जाता। दो-एक चुक्कड़ तब तक मन-बहलाव करते, लेकिन तुम्हारी माँ पीछे पड़ गई।......"

"माँ क्या पीछे पड़ गई दादा? तुम माँकी बात मानते भी?"

"ठीक कहा बेटा। सब मँगरूकी सोहबतका असर है। जब सबका रवैया दूसरा है, तो मै ही घरमें नक्कू बनने क्यों जाऊँ? अपनी माँसे कह दो कि भूख तेज़ होती जा रही है।"

"माँस तो पक गया दादा, और भात भी चढ़ा दिया गया।'

"अच्छा, कोई जल्दी नहीं। और भूख लगेगी तो दो कौर ज्यादा ही खायँगे। बंधा सुअर रहा है, फिर, तुम्हारी माँका हाथ। उसपरसे मँगरू चुन-चुन करके मसाला लाए हैं। एक बार खानेसे क्या वह मुँहसे छूटेगा?"

मुँगिया घरके भीतर चली गई। रामलालने बात शुरू की —"मँगरू, सब रुपया तुम यहीं खरच कर डालते हो। हर तीसरे दिन कभी मछली तो कभी माँस, कुछ बचाते भी नहीं?"

"दो रुपया हर महीने डाकखानामें जमा करता हूँ, भैया।"

"अरे, दो रुपया महीनासे क्या होता है?"

"बीमार-आरामके लिए अच्छा है, रामलाल भैया। और जमा करके क्या करूँगा?"

"अरे, एक बार मेहरी, लड़का, मर गए, तो क्या फिर घर बसाना नहीं होता ?"

"नहीं भैया, अब फिर ब्याह नहीं करना है।"

जोखनने रामलालकी बातका समर्थन करते कहा—"नहीं, मँगरू भाई, आपको यह हठ छोड़ देना चाहिए। आप अपने मुंहसे कहते हैं चालिस बरस, लेकिन, दूसरा कोई तीससे ज्यादाका न कहेगा। आदमीपर रोग-बीमारी पड़ती है। एक लोटा पानी देनेवाला कोई चाहिए न ?"

"चैतमें देखा नहीं ? मै कितना बीमार पड़ गया था। सिमरिया भौजीने जितनी सेवा-टहल की, घरकी मेहर क्या उससे ज्यादा करेगी ?"

मँगरूकी कृतज्ञतागर्भित बातको सुनकर रामलालने अधिक भावावेशमें आ कहा—"सो ठीक है, मँगरू, यह सब तुम्हारा गुन है। मुझको क्या कभी मालूम होता है कि मँगरू मेरा सहोदर भाई नहीं है ? लेकिन बुढ़ापा है, कहीं हमी न रहे या साथ छूट गया तो वंशबरखा अच्छा होता है मँगरू !"

"नहीं रामलाल भैया, मुझको वंशबरखाकी चाह नहीं है। देखते नहीं—अतवरिया मेरी गोदमें ज्यादा आता है कि चतूकी ?"

"मिठाई और खिलौना रोज तुम ले आते हो; कन्धेपर चढ़ाकर रोज गली-गली घुमाते हो; फिर तुम्हारी गोद छोड़कर वह मेरी या चेतूकी गोद कैसे आयेगा ?"

"अपना पराया कोई चीज नहीं। जो ही लायक है वही अपना है।"

जोखनने बातको बहकती देखकर कहा—"नहीं मँगरू, हम सबकी राय है कि तुम्हारी शादी हो जाय। तुम हमारी जातके चौधरी हो।"

भातका मँड़ पसाकर सिमरिखा भी पहुँच गई। उसका आना ऐन मौक़ेपर हुआ। उसने जोखनके प्रस्तावका गर्मागर्म समर्थन किया —"हाँ, मँगरू बबुआ, तुमको न सही, मुझको एक देवरानीकी बड़ी ज़रूरत है।"

"हाँ, जिसमें कि तुम्हारे हाथका भोजन मेरे लिए दुर्लभ हो जाय।"

"दुर्लभ क्यों हो जायेगा?"

"दुनियामें देवरानी-जेठानीको देखा नहीं है क्या?"

"लेकिन, मैं अपने पसन्दकी देवरानी लाऊँगी।"

"देवरानी बनानेसे पहले ही पसंद आयगी।"

"नहीं, मँगरू देवर, तुम क्या कहते हो? मैंने देवरानी चुन कर रक्खी है।"

"बतलाओ तो भला, वह कौनसी है?"

"वही रोपनकी बहू। रोपन बेचारेको मरे छ महीने हो गए।"

"अच्छा तो भौजी बिलासपुरिनको ढूँढ़ा है?"

"जातेभाई है न?"

"हाँ, जात-भाईमें कोई हरज नहीं......"

"तुम्हारी इच्छा भर मालूम होनेकी देर थी, मँगरू देवर, सोनियाको मै बहुत दिनसे जानती हूँ। कभी किसीसे झगड़ा नहीं करती और काम करनेमें मर्दोंसे कम नहीं है। तो मैं उससे कह दूँ न?"

"क्या कहोगी कि मँगरू ब्याह करना नहीं चाहता?"

"नहीं देवर, ऐसा मत कहो। मैंने तुमसे बिना पूछे ही उसे आशा दे दी है।"

"नहीं भौजी, मैं तुम्हारा चरन छूकर कहता हूँ, मुझे ब्याह नहीं करना है।"

मँगरूकी बातको सुनकर रिमरिखाका उत्साह जाता रहा। इसी वक़्त मुँगियाने आकर खबर दी—भोजन परोसकर तैयार है। रामलाल, मँगरू, चेतू आँगनमें बैठकर खाने लगे। रामलालने माँसकी तारीफ करते कहा—"मुँगियाकी माँमें बस इतना ही गुन है। जिसी अन्नमें हाथ लगाती है वही अमरित बन जाता है।"

"भौजीके हाथके भोजनकी सब तारीफ करते हैं। मैंने कमाल बाबूके लिए एक कटोरा अलग रखवा दिया है।"

"अरे! कमाल बाबू भी करियवाका मांस खाते हैं?"

"तुम कमाल ही बाबूके फेरमें हो? बटुक महराज तो उजरकासे भी परहेज नहीं करते।"

"साँचे ही, भैया, ये लोग धरमको नहीं मानते। यही बात खटकती है। नहीं तो आदमी हजारमेंसे एक, अँगूठीके नगीने हैं।

"लेकिन, रामलाल भैया, इतने दिनके सत्संगसे मुझको तो यह समझमें आ गया कि धरम ग़रीबोंके जीका जंजाल है। खूब शरीरसे मेहनत करना, अपने खाना और साथी-समाजीको खिलाना और तन, मन, धनसे जितना बन पड़े उतना निर्बल, ग़रीबकी सेवा करना। धरमकी कुकुरचेंथ मुझे बिलकुल पसन्द नहीं।"

मँगरू हाटमें घूम रहा था। वह बड़े मुर्गेकी तलाशमें था। आज बटुक और कमाल बाबूका खास तौरसे न्यौता था। उसने हाथसे उठाकर अंदाज कर तीन मुर्गे ख़रीदे। जिस वक़्त उनको वह उठा रहा था, उसी वक़्त देखा उससे दस कदम दूर, दूसरी पाँतीमे गाँधी टोपी, सफेद खद्दरका कुर्ता-पायजामा पहने एक नौजवान उसकी ओर बड़े गौरसे देख रहा है। एक नज़र ही में वह राम-प्रसादको पहचान गया। तीन साल पहले वह एम्० ए० का विद्यार्थी

था, और किसानोंमें काम करनेकी उसे बड़ी धुन थी। मँगरूने देखा वह उसे पहचान नहीं रहा है—और सचमुच उस काली अधबहियाँ, घुटने तककी धोती और बड़ी बड़ी मूछोंने जो परिवर्तन पैदा किया था, उससे उसका पहचानना आसान न था। मँगरूने सिर्फ एक नजर देखा और तुरंत वहाँसे चल पड़ा। रातके वक्त जब बटुक और कमाल आए तो उसे डर लग रहा था कि रामप्रसाद कहीं इनके ही यहाँ ठहरा न हो और उसने सारा भंडा फोड़ न दिया हो। लेकिन, जब उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा कि आज मजदूरों-का संगठन देखनेके लिए पटनासे एक साथी आए हैं, तो उसके दिलमें कुछ धीरज बँधा।

दूसरे दिन, जबकि मँगरू अभी अपनी चारपाईसे उठा भी न था, तभी उसने देखा कि कोई दरवाजा खटखटा रहा है। मँगरूने चेतूको द्वार खोलनेको भेज दिया और चारपाईसे उठते उठते देखता है, कमाल और बटुकके साथ रामप्रसाद भी मुस्कराते हुए उसकी ओर बढ़ रहे हैं। रामप्रसादने मँगरूके हाथको अपने दोनों हाथोंमें लेते कहा—"पालागी, मँगरू चौधरी !"

देवराजने झेंपते—"तुम कहाँ रामप्रसाद बाबू !" और साथ ही चेतूको वहाँसे हटानेके ख्यालसे कहा "आज भौजीसे कहो कि मछली-रोटी बने, तीनों बाबू यहीं खायँगे। यह लो पैसा" कहकर उसने टेंटसे रुपया निकालकर चेतूके हाथपर रख दिया। उसे ठमकता देखकर "देर क्यों कर रहे हो ? हमारे पुराने जान-पहचान के बाबू हैं।"

चेतू चला गया। अबकी रामप्रसादने बात शुरू की—"तो साथी देवराज, आप दो सालसे यहाँ छिपे हैं ? और बटुकने आपको क-ख सिखलाया ? और साथी कमालसे क्या सीखा है ?......"

"तुम्हारी जबान सरौतेकी तरह चलती ही जायगी या रुकेगी भी ?"

"रुकेगी क्यों ? आप १९३३के शुरूसे गायब हैं और यह १९३५की फरवरी जा रही है—दो साल ! हम लोग ढूँढ़ते ढूँढ़ते परेशान हो गए। यह तो अकस्मात् मँगरू चौधरीका दर्शन मुर्गा खरीदते हो गया ! अबतो अज्ञातवास खतम करना होगा।"

"वह तो खतम हो गया, उसी वक्त, जब कि मैंने तुम्हारी मुस्कराती सूरत देखी।"

"कमाल बाबूसे आपकी सब लीला मालूम हो गई। आज शामको हम लोग मँगरू चौधरीके सभापतित्वमें एक बड़ी सभा करने जा रहे हैं।"

"क्यों ? मँगरू चौधरीने क्या कसूर किया है ?"

"कसूरकी बात नही है। एक बड़े नेताका स्वागत करना है। इसलिए हम लोगोंकी सलाह है कि आजकी सभाके सभापति साथी मँगरू बनाए जायँ। मजदूर-संघकी कार्यकारिणीके हरेक मेम्बरकी इसमें स्वीकृति है, इसलिए आप इन्कार नहीं कर सकते।"

"मैं भी तो मेम्बर हूँ।"

"एक वोटसे होता क्या है ?"

"देखो, रामप्रसाद, अब तुम लोग मुझे बनाओ मत।"

"अभी क्या बनाया है, दो सालसे हम सभी लोग परेशान हैं। जेलवालोंसे पूछा तो उन्होंने कहा कि वह २ फरवरी (१९३३) को छूट गए।"

"तो, तुम मुझे सजा दोगे ?"

"और क्या ?"

"तो, आपके वह बडे नेता सभामें पहुँचने ही नहीं पायेंगे, जिनका कि स्वागत मँगरू चौधरीके सभापतित्वमें होनेवाला है।"

स्वागत-सभाके लिए देवराजको स्वीकृति देनी पड़ी और सभाके सभापति रामलाल बनाए गए। सब जगह विज्ञापन और डुग्गी द्वारा प्रचार किया गया। शामके वक्त हाटके पास, मैदानमें दस हजार आदमियोंकी भीड़ जमा हुई। कमाल बाबूने साथी देवराजके कामोंका परिचय कराया और उसके बाद जब मँगरूका हाथ पकड़ कर उसे मंचपर खड़ा किया गया तो लोग दंग रह गए। रामलाल तो आँख फाड़-फाड़कर देख रहे थे। दो सालसे जिसके साथ उनके रातदिनके चौबीसों घंटे बीत रहे थे, उसीको देखते मालूम होता था कि रामलाल किसी नए आदमीको देख रहे हैं।

देवराजने कृतज्ञता प्रकट करते हुए कुछ शब्द कहे और साथ ही यह भी कहा—"मजदूरोंकी तकलीफोंके बारेमें हम कर ही क्या सकते हैं, जब कि उन्हें अच्छी तरह हम जानते भी नहीं। मैंने कोइ-लरीमें आकर स्वयं सब कठिनाइयोंको देखा और इस अनुभवने मुझे आपकी सेवाके लिए अधिक योग्य बनाया है।"

× × ×

देवराजके आग्रहपर रामप्रसादने मान लिया और दोनों चुप-चाप पटना पहुँचे। सरकार सत्याग्रह-आन्दोलनको बलपूर्वक दबाकर सन्तोषकी नींद सो रही थी। वह समझ रही थी, अब यह फिर सर उठानेका नहीं। बाहरसे चारों ओरकी हवा बन्द मालूम होती थी, लेकिन, उसका मतलब यह नहीं कि भीतर ही भीतर भारी भूकम्प-की तैयारी नहीं हो रही थी। देवराजने झरियासे ही हवाई डाकसे एक पत्र जेनीको लिखा, जिसका उत्तर उसे पटनामें मिला—

"...............

"लंदन, ७ मार्च, १९३५

"डेवी, मेरे हृदय,

"तुम्हारी चिट्ठियाँ समय-समयपर आती रहीं। लेकिन, आज दो बरस बाद फिर चिट्ठी लिखनेकी आजादी मिलनेसे मुझे बड़ा सन्तोष हुआ। सबसे पहली खबर तो मैं यह देना चाहती हूँ, कि गत दस दिसम्बरको पापाका देहान्त हो गया। यह हम दोनोंके लिए कितनी बड़ी हानि है, इसके कहनेकी आवश्यकता नहीं। मैं तो उनका खून-माँस ठहरी, लेकिन, तुम्हारे लिए उनका स्नेह और सद्भाव मुझसे कम न था। नये जीवनके अनुभव-सम्बन्धी चिट्ठियाँ तुम जब जब झरियासे भेजते रहे, उन्हें वह बड़े चावसे पढ़ते थे। कहा करते थे—जेनी, मेरी दो सन्तानें है। वह एक ही हफ्ता बीमार रहे और मृत्युके समय उनका होशहवास दुरुस्त था। मामूली ज्वर था। और, किसीको भय नहीं था कि उनका अन्त इतना निकट है। बीमारीमें भी वह तुम्हें बराबर याद किया करते थे। कहते थे—दुनियाके छठे हिस्सेपर सफलताके साथ आज अट्ठारह बरससे साम्यवादका झंडा गड़कर आँखवालोंके लिए साबित कर चुका कि साम्यवाद व्यावहारिक वस्तु है। पापा और मैं पिछले अगस्तमें ही दो महीने रूसकी यात्रा करके लौटे थे। इस यात्राका उनके मनपर जबर्दस्त असर हुआ था। कह रहे थे, इंग्लैंड, फ़ांस या जर्मनीमें साम्यवादी क्रान्ति होनेपर उसके अनुभव उतने व्यापक और महत्त्वपूर्ण न होते जितने कि रूसमें। बोल्शेविक क्रान्ति यूरोपसे भी अधिक एसियाई भागमें हुई है। वह दोनों महाद्वीपोंमें व्यापक है। उसके प्रभावसे पचासों भिन्न भिन्न जातियोंके लोग रंग और भाषाओंके भेदको भूलकर आज एकताके सूत्रमें बँध गए हैं। विषम समस्याओंका जो हल बोल्शेविक क्रान्तिने पेश किया है, वह दुनियाके लिए बहुमूल्य चीज है। पचवार्षिक योजनाओंके बारेमें हमने पढ़ा तो बहुत था, लेकिन, अबकी बार दूसरी पंचवार्षिक योजनाके तीसरे वर्ष तकके कामोंको आँखोंसे देखनेका मौका

मिला। पूँजीवादी पत्र दुनियाकी आँखोंमें धूल झोंकना चाहते हैं। लेकिन, रूसकी आर्थिक सफलताएँ इतनी ठोस है, कि दुनिया कब तक उनसे इन्कार करती रहेगी।....

"पापाके न रहनेसे मुझे कुछ सूनासा मालूम होता है। मैं अपने कामोंको वक्तपर ठीकसे करती जाती हूँ। डेवी छात्रावासमें रहता हैं। उसकी स्कूलकी पढ़ाई इस साल खतम होनेवाली है। रूस-यात्रामें वह भी हमारे साथ था। पापाकी बड़ी इच्छा थी कि उसे रूसके सैनिक विद्यालयमें दाखिल कराया जाय। खैर, समय कितना जल्दी बीत जाता है, क्या कभी ख्याल होता है कि तुम्हें देखे चौदह साल हो गए। न जाने...क्यों, मन अधीर होता है, तुम्हें मिलनेके लिए। तुम्हारे सामने कौनसे काम हैं, यह मैं नहीं जानती। इसी-लिए तुम्हें आनेके लिए नहीं कहती। लेकिन, यदि पसंद हो तो मैं ही चली आऊँ। हाँ, तुम्हारे आनेमे एक फायदा होगा—हम दोनों एक बार फिर सोवियत्-भूमि देख आयेंगे।...मैं जानती हूँ, तुम्हारे पास पैसा न होगा, लेकिन, यहाँ जरूरतसे ज्यादा पैसा मौजूद है दो दो घर, उनका किराया और बाईस हजार पाउंड बेंकमें। काममें मैंने खुलकर खर्च किया है, तो भी पापाका बीमा और दूसरा पैसा भी तो मिला है। आना हो तो मैं तारसे रुपया भेज दूँ....

"सालिंगन।

तुम्हारे दर्शनोंके लिए अधीर
जेनी"

३८

पुनर्मिलन

यही जाड़ोंका मौसिम था और यही सुबहका वक्त। यही नीचे समुद्रका नीला जल और ऊपर ऊँची-नीची पहाड़ी ज़मीनपर बने हुए विशाल घर। उस दिन भी सूर्य निरभ्र आकाशमें चमक रहा था, और ठंडकके मारे स्त्री-पुरुष अपने ओवरकोटके कॉलरको उलट-कर गलेसे बाँधे हुए थे। उस दिन भी अपने प्रेमियों और सम्बन्धियों-के स्वागतमें कितने ही नर-नारी लाल-पीली रूमालें हिला रहे थे; और आज भी वही दृश्य था। लेकिन बीस साल पहले कोई दूसरा ही ख्याल था, जिसको लेकर सिपाही देवराज मार्सेईके बन्दरपर पहुँचा था। उस दिन किसी रूमालको वह गौरसे नहीं देख रहा था और न दूरबीन लगाकर एक एक स्त्रीके चेहरेकी जाँच कर रहा था। आज चौदह बरस बाद समुद्र-तटपर जेनीके चेहरेको देखनेके लिए वह बेकरार था। एक बार सारी पाँतीको वह देख गया और परिचित चेहरेको न पाकर उसे घोर निराशा हुई। रूमालें अभी भी हिल रही थीं। उसने फिर दूरबीनको आँखपर रखा और उसके आनन्दकी सीमा न रही, जब कि जेनीको हाथोंमें गुलाबी रूमाल लिए हुए आते देखा। चौदह वर्षोंका असर उस चेहरेपर होना ज़रूरी था, यद्यपि अब वह नवयौवन नहीं था, तो भी प्रौढ़पन जेनीसे दूर था। पिताकी मृत्यु और उसके बादकी एकान्तताने उसपर अधिक असर डाला था।

जहाज़ धीरे धीरे नज़दीक पहुँचने लगा। जेनी बड़े ग़ौरसे यात्रियोंकी ओर देख रही थी। दोनोंकी आँखें चार हुईं। रूमालें

खूब जोरोंसे हिलीं। यद्यपि जहाजको किनारे पहुँचनेमें कुछ ही मिनट लगे, लेकिन, मालूम होता था, युग बीत गया।

देवराजने अपने मुत्सद्दिसे सामानको भरियाके जिम्मे लगाया और डकपर आते-आते जेनी भी पहुँच गई। वह गलेमें हाथ डाल कर देवराजसे लिपट गई। देवराजने परिचित ओठोंको कई बार चूमा। जेनीकी आँखें तर थीं। उसने रुँधे गलेसे कहा—"डेवी, मेरे डेवी, मेरी आँखोंको विश्वास नहीं हो रहा है कि मैं तुमको देख रही हूँ।"

वह और कुछ न कह सकी। देवराजने रूमालसे उसकी आँखोंको पोंछा। दोनों हाथ मिलाए जहाजसे निकले। कस्टम्ससे जल्दी जल्दी छुटकारा पाकर दोनों 'ओतेल्-काँतिनाँ'में पहुँच गए।

जेनीने एक अच्छा कमरा ले रक्खा था, जिसके साथ ही स्नानागार भी था। एक गोल-मेजके किनारे चार कुर्सियाँ थीं। मेजपर लाल गुलाबका गुलदस्ता रक्खा था। जेनीने घंटी दबाई और परिचारिका आ मौजूद हुई। परिचारिकाने आकर कहा—"क्या चाहिए, मदा–म् ?

"प्रातराश मदमोजेल्, सिल् वू प्ली ?"

"उई (हाँ) मदा–म् !"

जेनीके देखनेसे क्या, देवराजकी भूख ज्यादा बढ़ गई थी। उसने खाते हुए कहा—"यह प्रातराश है, इससे काम नहीं चलनेका।"

"ठीक है। कोयलेके खनकके लिए यह 'ऊँटके मुँहमें जीरा है'?"

देवराजने भोजन समाप्त करके कहा—"जेनी, आज कहीं जान-वानेका मन नहीं करता।"

"चौदह साल बाद यह दिन आया है।"

"मुझे तो चौदह साल नहीं मालूम होते। जान पड़ता है, कल ही तुमसे अलग हुआ था।"

"लेकिन, मेरे सामने दूसरा डेवी जो था, उसकी तिल-तिलकी वृद्धिसे में इन वर्षोंको नापा करती थी; और बार-बार उस दिनकी स्मृति याद आ जाती थी, जब कि विक्टोरिया स्टेशनसे ट्रेन तुम्हें अन्धकारकी ओर खींचती जा रही थी। उस दिन तुमने मुझे मार्सेके तक आने न दिया।"

"वियोगकी घड़ियोंको लम्बा करनेसे क्या फ़ायदा? मिलनेके लिए मैंने तुम्हें मार्सेई आनेके लिए आखिर लिखा न?"

"कितनी ही बार, डेवी, मै सोचा करती थी कि हम दोनों का साथ-साथ रहना क्या अच्छा न होता? ऐसा सोचनेके लिए तुम्हारी उन बातोंसे भी प्रोत्साहन मिलता था, जिनमें तुम कहा करते थे कि भारत और इंग्लैडके श्रमजीवियोंका भाग्य एक सूत्रमें बँधा है, और दोनों ओरसे कार्यकर्ताओंका आदान-प्रदान होना चाहिए।"

"लेकिन, तुम्हारे साथ रहनसे, जेनी, क्या मै इस तरहका जीवन बिता सकता था? क्या इस तरह गुमनाम रहकर कार्य कर सकता था? मुझे तुम्हारी याद न आती हो, सो बात नहीं; और याद आनेपर दिलमें कलक न होती हो, यह भी बात नहीं। दिलकी वह मीठी टीस घंटों बक़रारी पैदा करती थी, लेकिन, आदर्शके गुलाम हम लोगोंकी क़िस्मतमें यही बदा है।" देवराज फिर जेनीकी नीली आँखोंकी तरफ़ देख रहा था।

जेनीके गाल फिर लाल हो आए थे। उसने देवराजके हाथको अपने दोनों हाथोंमें लेकर कहा—"आओ डेवी, हम इस बीचके चौदह सालोंको भूल जायें।"

"उन्हें तो तुम्हारी इन आँखोंको देखते ही मै भूल गया। उसी तरह सुनहरे केशोंसे अलंकृत अपने शिरको मेरी गोदमें रक्खो और हम फिर वही प्रेमी और प्रमिका बनें।"

जेनीने अपने शिरको देवराजकी गोदमें रखा। देवराजने उसके केशोंपर हाथ फेरते हुए कहा—"मेरी जेनी, आज मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ। धूपका तपा ही छायाकी क़ीमत जानता है। चौदह सालकी आकांक्षाएँ आज पूरी हो रही हैं। मैंने कामोंका पहाड़ अपने सिरपर ले रक्खा था और उनमें सब कुछ भूल जानेकी कोशिश करता था। लेकिन, मै ही जानता हूँ कि रातको कितनी ही घड़ियों नींद हराम हो जाती थी।"

जेनीने देवराजके गलेसे लिपटकर लम्बी उसास लेते हुए कहा—"डेवी, हम आदर्शके पक्के गुलाम हैं। मृत्युकी रत्ती भर भी हमें परवाह नही। लेकिन, आखिर हम भी आदमी हैं। हमारे भी सीनेमें हृदय है, और उसमें भी प्रेमकी प्यास है। पहले तो तुम्हारी स्मृति ही विकल करती थी, लेकिन पापाकी मृत्युके बाद तो मेरी हालत बुरी हो गई। सच कहती हूँ, यदि तुम न आते तो जेनी इस साल हिन्दुस्तान ज़रूर पहुँचती; चाहे उसे इसके लिए तुम्हारी झिड़की खानी पड़ती।"

उसके गालोंको चूमते हुए देवराजने कहा—"झिड़की खानेकी ज़रूरत न होती, प्यारी जेनी, पत्रोंके संयमसे मत समझो कि मैं अपनेपर उतना संयम रख सकता था; और यदि अब तुम भारत चली आतीं तो कोई हरज नहीं था। मेरा भी अज्ञातवास बीत चुका था। गुमनाम काम करनेका मौक़ा भी खतम हो चुका था।"

"डेवी, कभी तुमने पार्वतीको देखा?"

"सिर्फ एक बार। छै साल हुए, चुपकेसे गया था। पार्वतीने मुश्किलसे मुझे पहचाना।"

"अबतो सयानी हो गई होगी?"

"दो लड़के, एक लड़कीकी माँ। चेहरेपर बुढ़ापा।"

"बुढ़ापा!"

"हिन्दुस्तानके किसानका जीवन बहुत कठिन है। खाने-पीनेके अभावसे भी बढ़कर चिन्ताकी आग उन्हें जलाए देती है। वह बहुत देर तक रोती रही। मेरे भी आँसू बह रहे थे, लेकिन, उनमेंसे आधे माँके लिए थे।"

"हिन्दुस्तान आनेमें मेरी यह भी एक इच्छा थी, कि एक बार पार्वतीको देखती।"

"और हिन्दुस्तानी ननदको तो भावजके देखनेकी और भी बड़ी साध रहती है।"

"क्या वह मुझे जानती है?"

"खूब। वहाँ लोगोंने ब्याहकी बात कर करके मेरा नाकों दम कर दिया। मैंने कहा—बाबा, मेरा ब्याह हो चुका है। डेवीके साथ-का तुम्हारा फ़ोटो मैं पार्वतीको दे आया हूँ।"

जेनीने आँखोंको विस्फारित करके देवराजके मुँहकी ओर देखते हुए कहा—"तो पार्वती जानती है कि उसकी एक भावज है।"

"और, भतीजा भी। उसने कहा कि एक बार भाभीको बुला लो।"

"तो, तुमने क्या कहा?"

"कहा क्या? कह दिया कि भाभी अंग्रेज मेम हैं आवेगी तो, तुम्हारा चौका-चूल्हा भ्रष्ट होगा। उसने कहा 'नहीं भैया, भरस्ट क्या होगा। भौजीको एक गुलाबी साड़ी पहना देना। फिर मैं अपने साथ चौकेमें ले आऊँगी।' "

"तो, तुमने क्या कहा?"

"कह दिया, सात समुंदर पारसे तुम्हारी भौजीका आना मुश्किल है।"

"मुश्किल है! मैं तो आनेके लिए तैयार थी। तुम नहीं चाहते कि मैं गुलाबी साड़ी पहनूँ।"

"नहीं, मेरी अप्सरा, तुम्हारे लिए गुलाबी साड़ी मैं साथ लेता आया हूँ।"

जेनीने तरुणाईकी चंचलताके साथ उत्तेजित होकर कहा—"कहाँ है, पहनकर देखूँ तो!"

देवराजने सूटकेससे रेशमी साड़ी निकाली। उसकी किनारी बनारसी गोटेकी थी। जेनीने उल्लासके साथ साड़ीको हाथमें उठाया, लेकिन उसका पहनना आसान काम न था। देवराजने अपने हाथों साड़ी पहनाई, ठीक बनारसी ढंगसे अंचलको सिर पर रक्खा। फिर मुखको चूमते हुए बोल उठा—

"यह है मेरी मजदूरी।"

"नहीं, तुम्हें मजदूरी न मिलेगी। इसका दाम देना होगा।"

"दाम! दाम तो देवराजने तुम्हारे हाथमें अपने हीको सौंप दिया है।"

"नहीं, डेवी, जरा तुम भी हिन्दी पोशाक पहनो तो।"

देवराजने धोती- कुर्ता, चादर निकाली, दोनों भारतीय वेषमें विशाल दर्पणके सामने खड़े हुए। जेनीको आलिंगन करते हुए देवराजने कहा—"आदमी पुराना भले ही हो जावे, प्रेम पुराना नहीं होता।"

जेनीने दर्पणमें अपने प्रतिविम्बको देखकर कहा—"साड़ी कोई बुरा लिबास नहीं।"

"मालूम होती हो, सोनकेसी रानी।"

"सोनकेसी रानी क्या?"

"बूढ़ियाँ बच्चोंको कहानी सुनाया करती हैं। उनमें एक सोनकेसी रानीकी भी कहानी है।"

जेनीने देवराजके कंठमें दाहिने हाथको रखकर कहा—"सुनाओ तो डेवी, सोनकेसी रानीकी कहानी।"

"एक राजकुमारीके केश सोनेके थे और चेहरा दहकती आगसा। वह गंगामें नहाने गई। उसके घुटनों तक लटकते केशोंमेंसे एक टूटकर निकल आया। राजकुमारीने उस केशको एक सूखे पत्तेके दोनेमें रखकर गंगामें छोड़ दिया।"

"मैंने अपने केशोंकी उतनी क़दर न की।"

"तुम्हें केशको दोनामें बहानेकी ज़रूरत भी नहीं।"

"अच्छा तो, दोना कहाँ गया?"

"सैकड़ों कोस बहता चला गया। एक राजकुमार गंगा नहाने आया था। उसने सूरजकी रोशनीमें बिजलीकी तरह चमकते केशको देखा और तैरकर बीच गंगासे निकाला। देखा, वह है सुंदर, सुनहला लम्बा केश।"

"और फिर?"

जेनीके दोनों गालोंको अपने हाथोंमें लेकर उसकी पुतलियोंकी ओर देखकर देवराजने कहा—"उसने सोचा, जिसके केश इतने सुंदर हैं, वह सुंदरी कैसी होगी?"

जेनीने देवराजको रुकते देखकर कहा—"तो फिर?"

"राजकुमार खाना-पीना छोड़कर चारपाईपर लेट गया। माता, पिता, बहिन, बार बार कहने लगे। लेकिन, उसने कहा कि तभी जीऊँगा जब कि उस सोनकेसीको पा लूँगा। कुछ कठिनाई तो हुई, लेकिन, अन्तमें राजकुमारने उसे पा लिया।"

"बड़ी अच्छी कहानी है, डेवी।"

"क्योंकि तुम्हारी कहानी है।"

× × ×

मार्सेईमें ही देवराज और जेनीने रूस जानेके बारेमें तै कर लिया था। तब तक छोटे डेवीकी स्कूलकी पढ़ाई भी खतम होने

वाली थी। फास और इंग्लैडमे उन चौदह वर्षोमे कोई भारी परिवर्तन नही हुआ था। बेकारीके शिकार लाखो भूखे अब भी अपनी किस्मत ठोक रहे थे। देवराजने एक दिन लंदनमे, बात करते हुए कहा—"जेनी, इग्लैडमें अनिवार्य शिक्षा है, कोई अपढ नही है। लेकिन, जहॉ तक समझका सम्बन्ध है, मै यहॉवालोको भी वैसा ही बेअक्ल देखता हूँ, जैसा [illegible] देहाती अनपढ।"

"इसका क्या कारण समझते हो, डेवी ?"

छोटा डेवी भी बगलकी कुर्सीपर बैठा मॉ-बापकी बातचीतको बडे गौरसे सुन रहा था। उसने बीचमे बोलते हुए कहा—

"डैडी, मै बताऊँ ?"

"कहो बच्चा !"

"मै तो समझता हूँ, अक्षर और पुस्तक द्वारा जैसे ज्ञानका जल्दी प्रचार हो सकता है, उससे भी जल्दी अज्ञानका हो सकता है। हमारी पुस्तकोमे ज्ञानकी अपेक्षा अज्ञान ज्यादा होता है।"

देवराजने लडकेके शिरपर हाथ फेरते हुए कहा—"ठीक कहा बेटे, यही तो मै कहने जा रहा था। इग्लैडके अखबार धनियोके हाथमें है। पुस्तक-प्रकाशन वही करते है। साधारण जनताको भ्रममे रखनेके लिए उनके अखबार और उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तके कोई भी कसर उठा नही रखती।"

"मुझे तो डैडी, इसमे सदेह नही रह गया, जब मै पिछले साल रूससे लौटा। वहॉके बारेमे हमारे प्रतिष्ठिन प्रतिष्ठित पत्र भी कितना झूठ बोलते है—'रूसमे लोग भूखों मर रहे हैं। पाव भर रोटीके लिए सबेरेसे शाम तक हजारोकी पॉती खड़ी रहती है। मक्खन और मास सपना है।' सफ़ेद झूठ।"

देवराजने कहा—"रूस तुम्हे कैसा लगा, डोव् ?"

"बहुत ही सुदर, डैडी, मैने तीन किताबे रूसीकी पढ ली थी

इसलिए मुझे मम्मी और नानासे ज्यादा सुभीता था। मैं ब्यूनिर् (बालचर) कैम्पमें तीन दिन ठहरा था। हरे देवदार और हरे जंगल-के बीचमें तम्बू लगे थे। वहाँसे लौटनेपर तो यहाँकी सारी बातें मुझे फीकी लगने लगी। वहाँ लोग कितने स्वच्छन्द हैं, कितने निश्चिन्त है!"

"अब तो, डोव्, तुम्हारी स्कूलकी पढाई खतम हो गई, आगे क्या पढना चाहते हो?"

"क्या और कहाँ दोनो कहता हूँ डैडी, मै सैनिक बनना चाहता हूँ। स्काउटिंग, फ़ौजी कवायद और चाँदमारीमें मैं सारी कौन्टी (जिले) मे अव्वल रहा करता हूँ।"

जेनीने गर्वसे कहा—"आखिर सिपाहीका लड़का सिपाही!"

"हाँ, मम्मी, सिपाहीके लडकेको सिपाही होना चाहिए। वैसे गणित और साइन्समे भी मैंने इनाम पाए है, और मेरे अध्यापककी तो सलाह है, मै कैम्ब्रिजमें दाखिल हो जाऊँ और विज्ञानके लिए अपना जीवन अर्पण करूँ।"

देवराजने पूछा—"तो, क्या तुम इसे पसद नही करते?"

"पसद करता हूँ। लेकिन, वैसा वैज्ञानिक मैं नही बनना चाहता, जिसके आविष्कारोको खरीदकर या चुराकर कुछ मुट्ठी भर लोग दुनियाभरकी गुलामीको और भी मजबूत करते जायँ। मै अपने जीवनको सेना-विज्ञानके लिए दूँगा। मै उससे गुलामीकी कड़ियोको तोडूँगा। अतिम फ़ैसला सेना-विज्ञान हीके हाथमे है। मेरी रगोमें भारत और इग्लैंड दोनोका खून बह रहा है, इसलिए मेरी जिम्मेवारी दूनी है।"

देवराजने प्रसन्नताके साथ कहा—"मुझे अभिमान है तुमपर डोव्, माँ-बापके अपूर्ण आदर्शको पूरा करनेका भार सतानके ऊपर होता है।

"यही नही, डैडी! नानाकी बातें भी मुझे याद है। वह कहा

करते थे—डेवी, तुम सिर्फ़ किताबके कीडे न बनना।' मै सैनिक बनूँगा और मै किसी सोवियत् वायुसैनिक-विद्यालयमें दाखिल होना चाहता हूँ।"

"मै इससे बिलकुल सहमत हूँ, तुम्हारी मम्मीकी क्या सलाह है ?"

बिना पूछे ही जेनीने कहा—"मेरी राय यद्यपि शुद्ध विज्ञानकी ओर थी क्योंकि मै समझती हूँ, डेव् उस क्षेत्रमे अपने लिए एक विशेष स्थान बना लेगा; लेकिन, मै जानती हूँ कि उसकी मनशा किधर जानेकी है और उसमे मै बाधा नही देना चाहती।"

उस दिनकी बैठकमे यह तै हुआ कि देवराज और जेनी डेवीके साथ रूसकी यात्रा करेगे।

बसंतका मौसिम था। इसी वक्त इग्लेंडकी भूमि सौदर्यमय हो उठती है। लंदनसे बाहर चारो ओर हरियालीका साम्राज्य दिखलाई पडता है। देवराजने परिचित स्थानोको फिरसे देखा। इंग्लैंडका राजनैतिक वायुमंडल कोई आशामय नही दिखाई पडता था। मजदूर-दल और उसके नेताओकी 'वही रफ्तार बेढंगी' थी। वे न कोई सजीव प्रोग्राम आगे रखना चाहते थे, और न किसी बडी कुर्बानीके लिए ही तैयार थे; फिर, साधारण जनतामे जान कहाँसे आवे ? लेकिन देवराजको यह देखकर प्रसन्नता हुई कि नौजवानोका रुख बदल रहा है। मज़दूर-दलके नेताओसे वे तग आ गए है। वे बडी बडी दिक्कतो और विरोधोके होते हुए भी अपने लिए रास्ता बना रहे है। यद्यपि इस जमातकी सख्या अभी कम है लेकिन, प्रभाव संख्यासे कही अधिक है।

× × ×

बर्लिन और वार्साको सरसरी तौरसे देखते मईके अतमें देवराज पत्नी और पुत्र-सहित मास्को पहुँचा। उसको इस बातका अफसोस

रहा कि पहली मईको वह लाल राजधानी नही पहुँच सका। डोव्के रूसी ज्ञानसे माँ-बापको मालूम नही होता था, कि वे किसी अपरिचित भाषावाले स्थानमे आ गए है। उन्होने इन्तूरिस्त सस्थाकी मार्फत चार मासका यात्रा-प्रोग्राम बनवाया। मास्कोके लिए दो हफ्ता रक्खा था। होतल्-मास्कोमे ठहरनेका इन्तजाम था। लेकिन, जेनीके परिचितोकी सख्या भी काफी थी। देवराजने अनेक राजनीतिक और सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक सस्थाएँ देखी। कार्य-कर्ताओसे बातचीत की। लाल-सेनाके हेडक्वार्टरसे उसके लिए खास तौरपर निमत्रण आया था। उसके युद्धके वक्तकी सेना और 'विक्टोरिया-क्रॉस'ने परिचय देनेमे सहायता पहुँचाई—वह केवल राजनीतिज्ञ नही था। उसने सैनिक सग्रहालय और शिक्षणालयका विशेष रूपसे अध्ययन किया। सैनिको और सेना-नायकोसे खुलकर बातचीत की। इस सम्बन्धमे अपने भावोको उसने मार्शल कर्मियेफ्-के साथ की गई बातचीतमे इस तरह प्रकट किया—

सोवियत-भूमि दुनिया भरके श्रमजीवियोका अपना देश है। हम लोग जानते है कि ससारके षष्ठाशपर लाल झडेके फहराने-का क्या महत्त्व है। हम इस झडेकी छायाको एक अंगुल भी कम देखना पसद नही करते। इसीलिए जब शत्रुओंकी सख्या, शक्ति और मनोभावको देखते है, तो हमारा ध्यान बराबर लाल-सेनाकी ओर जाता है। लाल-सेनाके पुराने कामोका मुझे थोडा-बहुत पता है। इधर, शत्रुओकी तैयारी देखकर कभी कभी चिता हो जाती थी। लेकिन, मैंने यहाँ अपनी आँखो जो देखा और जाना, उससे मुझे पूरा संतोष है।"

मार्शल कर्मियेफ़ने मेजपर हाथ रखकर प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा—"साथी सिह, हम लोग अच्छी तरह समझते है कि लाल-सेना केवल रूस या सोवियत् प्रजातंत्रकी ही सेना नही है, यह दुनिया

के सभी श्रमजीवियोकी सेना है। हम अपने शत्रुओको भी जानते है, और उसीके अनुसार हमारी तैयारी है।"

"साथी कर्मियेफ्, दुनिया भरके पूँजीवादी सारी शक्ति लगाकर सोवियतके खिलाफ झूठ फैला रहे है। लेकिन, निश्चय जानिए, हिन्दुस्तानका एक अनपढ गँवार भी इस भूमिको अपनी प्रिय भूमि समझता है। साथी स्तालिन्की पंचवार्षिक योजनाओके बारेमे मैने काफी पढा था, लेकिन उन अरब-अरब रूबलकी सख्याओके पढनेसे यह भाव दिलमे थोडा ही आता है जो कि यहाँ मास्कोकी मीलों चली गई मकानोकी नई पक्तियोको देखनेसे ?"

मार्शल् कर्मियेफ्से जेनी और देवराजकी देर तक बाते होती रही और वही मार्शलने डोव्का जिक्र करते हुए कहा—"पिछले साल मुझे प्रोफेसर ब्राउन्से मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनका नाम पहिले हीसे सोवियत्-जनतासे अपरिचित नही था। उनकी कई पुस्तकोका अनुवाद रूसी भाषामे हो चुका है। प्रोफेसर ब्राउन् जैसे नानाका नाती और जेनी ब्राउन् और साथी सिंह जैसे माँ-बापका पुत्र—यह बालक क्या बनने जा रहा है ?"

जेनीने हँसते हुए कहा—"आप इसीसे पूछिए।"

मार्शल्ने डोव्की तरफ दृष्टि डालते कहा—"कहो देविश्का, तुम क्या बनना चाहते हो ?"

डोव्ने बिना एक सेकंड ठहरे जवाब दिया—"सोल्दात् (सिपाही)"।

"कौनसी सेनाका ?"

"लाल-सेनाका—हँसिया-हथौडावाले लाल झंडेका।"

मार्शल् कर्मियेफ्से डोव्की शिक्षाके बारेमे बातचीत हुई, उन्होंने कहा—"आपकी संतानके लिए लाल-सेनाका दरवाजा सदा खुला है। मेरी समझमें वायुसैनिक विद्यालयमे दाखिल होनेमे कोई कठिनाई नही होगी। मै परसों तक इसके बारेमें निश्चित सूचना दे सकूँगा।"

देवराजको दूसरे ही दिन टलीफोनपर मार्शल् कमियेफ्ने नतला दिया कि देविश्काके बारेमें मैंने सब बातचीत कर ली है। कल उसकी स्वास्थ्य-परीक्षा आदि हो जानी चाहिए।

देवराजके मास्को छोड़नेसे चार दिन पहले ही छोटे डेवीकी पढाईका मारा इन्तजाम हो गया। देवराजके कहनपर यात्राके अत--अफगानिस्तानकी सीमा--तक उसे माँ-बापके साथ रहनेकी इजाजन मिली। डेवीकी प्रसन्नताका ठिकाना न था। उसने गर्वके साथ पितासे कहा--"डैडी, तुमने वीरतामे "विक्टोरिया-क्रॉस" पाया था।'. ."

जेनीने बीचमे सुधारते हुए कहा--"पाया न था, न चाहनेवाले हाथोसे जबर्दस्ती छीना था।"

"ठीक छीना था। और, मे, मम्मी, सोवियत्का सर्वोच्च पदक प्राप्त करूँगा। मैं वायु-सेनाका कमान्डर बनूँगा।"

देवराजने छोटे डेवीके हर्षोल्लासमे सम्मिलित होते हुए कहा--"नही, डोव्, तुम सिर्फ कमान्डर ही नही बनना। विज्ञानका दर्वाजा तुम्हारे लिए बद नही है। तुम वायुसैनिक विज्ञानमे मौलिक आविष्कार करना और सोवियत्की लाल-वायुसेनाको संसारकी सभी वायुसेनाओंसे बढ चढकर बनानेमें सहायता करना।"

लेनिन्ग्राद्, कजान आदि कितन ही महत्त्वपूर्ण नगरोको देखते वे मध्य-एसियामे पहुँचे। बीस दिन उन्होने किर्गिज़, उज़बेक, तुर्कमान् और ताजिक प्रजातंत्रोको देखनेमे लगाया। देवराज जैसा साम्यवादमें अटल विश्वास रखनेवाला आदमी भी अपनी आँखों देखनेके कारण ही उन बातोपर विश्वास कर सकता था, जिन्हे कि वह अब यहाँ देख रहा था।

तिर्मिज़में, आमू-दरियाके तटपर, देवराजने पुत्र और पत्नीसे विदाई ली। जेनी और डेवी मास्कोकी ओर लौट गए।

३६

देश-विदेश

अफगानिस्तानको मामूली तौरपर देखते देवराज नवम्बर (१६३५)मे भारत पहुँचा। आमूकी धारके बीचसे वह जेनीकी ओर बड़ी चिन्तित दृष्टिसे देख रहा था। उसका मन कह रहा था कि शायद अब फिर वह उसे न देख सकेगा और इसलिए उसका दिल बहुत भारी था।

पजाब और युक्त-प्रान्तके मजदूरो, किसानोकी प्रगतिको देखते हुए देवराज फिर बिहार चला आया और अपने काममे जुट पड़ा। उसे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि उसके साथी किसान और मजदूर संगठनमें दत्तचित्त हैं। चीनीके मिलके मजदूर हों, या कोयलेकी खानोके, रेलके कुली हों या लोहेके कारखानोके, सभी जगह आग सुलग रही थी। किसानोंमें असंतोष और भी बढा हुआ था। देवराजपर पुलिसकी बड़ी कड़ी निगाह थी। वह जहाँ भी जाता, उसके पीछे खुफियाके आदमी लगे रहते। अपने साथियोंसे उसका कहना था, यह हमारे लिए तैयारी करनेका समय है। साधारण जनताको कोई भी असफलता चिरकालके लिए हतोत्साह नही कर सकती। जरूरत है उनकी रोज-ब-रोजकी आर्थिक कठिनाइयों और मानसिक चिन्ताओंका असली कारण बतलाकर भविष्यके जद्दो-जहदके लिए उन्हें तैयार करना।

१६३५-३६का जाड़ा खतम हुआ। गर्मी भी बीत गई। देवराज आज दरभंगा था तो कल जमशेदपुर। परसों आरा था तो चौथे

दिन पूर्णिया। नए सुधारोंके मुताबिक धारा-सभाओका चुनाव होने वाला था। देवराज उन आदमियोमें था जो कहते थे कि चुनावोंको लड़कर हमे अपनी ताकत ब्रिटिश सरकारको बतलानी चाहिए। उसे बडी खुशी हुई जब कि काग्रेसने धारा-सभाओंमे जाना स्वीकार कर लिया।

अगस्त-सितम्बर हीसे सरकारके पिट्ठू और जमीदार अपनी अपनी उम्मीदवारीके लिए लोगोमे प्रचार करने लगे। देवराज और उसके साथियोंने साफ लफ्जोंमे लोगोंको समझाना शुरू किया—

"ये खुशामदी धनी लोग कभी जनताके नही हो सकते। अपना स्वार्थ इनके लिए देशसे भी ऊपर है। ये डरते है कि जनताके प्रतिनिधि धारा-सभाओंमें जाकर उनके स्वार्थोको धक्का पहुँचावेंगे। इसीलिए अपनी सारी शक्ति लगाकर हमे गरीबोंका खून चूसकर मोटे होनेवाले इन लोगोको सामनेसे हटाना है। हमें दिखला देना है कि न हम अंग्रेज सरकारको चाहते है, न उसके पिट्ठुओ इन धनियो और जमीदारोको।"

देवराजने देखा कि कांग्रेसके पुराने नेता भीतर ही भीतर समझौता और धनियोके स्वार्थोकी रक्षाकी ओर प्रयत्नशील है। इसे वह कोई नई बात नही समझता था। वह जानता था कि चाहे कराँची कांग्रेसने किसानो और मजदूरोंके मौलिक अधिकारोंको स्वीकार करनेकी उदारता दिखलाई हो, तो भी वह जनताके डरसे किया गया था; और वक्त आनेपर काँग्रेसका नरम दल—जिनपर पूँजीपतियोंका बडा प्रभाव है और जिनमे कुछ तो खुद पूँजीपति है—कभी उसे माननेको तैयार न होगा। उसने देखा यद्यपि काँग्रेस-निर्वाचन-घोषणामें किसानो और मजदूरोंके बारेमे बड़ी बड़ी बातें की गई है, लेकिन, धारा-सभाओंके लिए जिन आदमियोंको खड़ा किया जा रहा है, उनमें भरसक किसान, मजदूर कर्मियोंके न आने

देनेकी कोशिश की गई है। उसके साथियोंको बड़ा क्षोभ हुआ, जब कि एक प्रभावशाली कार्यकर्त्ताको, सहकर्मियोंकी ओरसे बहुत जोर देनेपर भी, काग्रेसकी ओरसे खडा न होने दिया गया। सभी साथी बहुत उत्तेजित थे। लेकिन देवराजने समझाया—

"मै मानता हूँ, कि काग्रेसके नरम और गरम दलमें पार्थक्य शुरू होगया है। यह पार्थक्य आर्थिक प्रोग्रामके कारण है इसलिए इसे स्थायी तौरपर मिटाया नही जा सकता। तो भी दो बातोंका हमें ख्याल रखना चाहिए। ब्रिटिश सरकारसे हमारी लडाई अभी खतम नही हुई है। जबर्दस्त मोर्चे अभी आगे हैं। इसलिए हमें संयुक्त मोर्चेके साथ लडना है। दूसरे, हम जिस आर्थिक क्रान्तिको लाना चाहते है, वह धारा-सभाओंसे होनेवाली नही है। धारा-सभाएँ वर्तमान आर्थिक ढाँचेको पुष्ट करनेवाली है। हमारी क्रान्ति किसी असाधारण अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिकी खोजमें है। . "

देवराजको यह भी मालूम हो रहा था कि गरम-दलमें भी सभी समाजवादी नही है, और समाजवादियोंमें ऊलजलूल सोचनेवालोंकी संख्या काफी है। उसका बराबर प्रयत्न था, कि कुछ ठोस कार्यकर्ताओंको तैयार किया जाय और आर्थिक समस्याओंको लेकर जनताको जागृत किया जाय।

चुनावके परिणामकी घोषणा हुई। कोई महाराजा ढाई लाख रुपया ख़र्च करके भी चारों खाने चित्त हुए। कोई बाबू सत्तर हजार खोकर हारे। पुराने 'जी हुजूरों' के घरोंमें चिराग नही जल रहे थे। मुस्लिम-निर्वाचन-क्षेत्रोंका परिणाम संतोषजनक न था। एक दिन इसी विषयपर साथियोंमें बात छिड गई। साथी लौटूसिहने कहा—

"मुसलमानोंमें राष्ट्रीय जागृतिकी कमी है। देखिए, अब भी धरमके नामपर इन्हें अन्धा बनाया जा सकता है।"

साथी रामप्रसाद बोले—"लेकिन, इसमें दोष किसका? नई

राष्ट्रीयताके जन्मके साथ किसने उन्हें खिलाफतके नामपर अन्धा बनाया ? धरमकी ओर बढती हुई उदासीनताको हटाकर फिर किसने उनमें धार्मिक भावोंको जगाया ?"

देवराजने रामप्रसादकी बातोंका समर्थन करते हुए कहा—"आज भी तो हमारे बड़े बडे कांग्रेसी नेता धर्मको राजनीतिका अनिवार्य अंग बनाना चाहते है। फिर साम्प्रदायिक मुसलमान कांग्रेसको हिंदू संस्था कहकर क्यो न लोगोको भड़कायें ? रोटी ही का सवाल ऐसा है, जो साम्प्रदायिकताको दूर कर सकता है; लेकिन कांग्रेसके ये नेता स्पष्ट रूपमें इस प्रश्नको जनताके सामने आने देना नही चाहते।"

कमालने कडे स्वरमे कहा—"राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय एकताकी रट लगाई जाती है, जब तक देशमे धर्मका मुँह काला नही किया जाता और सभी भारतीयोकी रोटी-बेटी एक नही होती, तब तक क्या राष्ट्रीय एकता सम्भव है ?"

बटुकने कमालकी ताईद करते हुए कहा—"हमको तो ये लोग कह देते है—इनको पश्चिमकी हवा लग गई है। क्या साफ सोचना पश्चिमकी हवा है ? धीरे धीरे आखिर ये लोग भी उसी जगह पहुँचेंगे, जहाँ तक कि रोटी-बेटीकी एकताका सवाल है। लेकिन, अभी हमको बदनाम करके क्रान्तिकी गतिको मंद करना चाहते है।"

यद्यपि कांग्रेसी नरम-दलके व्यवहारसे प्रगतिशील तरुणदल बहुत असन्तुष्ट था; लेकिन, तो भी प्रगति-विरोधियोको पिछले चुनावमें जिस तरह हार खानी पड़ी, उसे देख उन्हे बहुत प्रसन्नता हुई। शहरों और गाँवोंकी बरसोंकी सुस्ती अब काफूर हो गई थी। राष्ट्र-विरोधियोंके मुँहपर हवाइयाँ उड रही थी।

×　　　×　　　×

जनवरी (१६३७)मे देवराजको जेनीका यह पत्र मिला—

.. .. .. स्पेन
१८, दिसम्बर १६३६

"प्राणोंसे प्यारे डेवी,

"इतने वर्षोंसे क़लम और ज़बान चलाती रही। इग्लैंडके कितने ही अग्रगामी मजदूर नेताओंकी कायरताको देखकर बडी शरम होती है। और, सचमुच इन्हीकी करतूतोंसे तो इंग्लैंडकी जनताने दो-दो बार टोरियोंको जबर्दस्त बहुमतके साथ पार्लियामेंटमें भेजा। टोरी मंत्रिमंडल भलीभाँति जानता है, कि पूँजीवादियोंमें पारस्परिक शान्ति असम्भव है। लेकिन, साथ ही वह यह भी समझता है, कि किसी देशमे पूँजीवादके नाशका मतलब श्रमजीवियोंके राज्यकी स्थापना है। इसीलिए वह कभी इटलीको प्रसन्न करनेकी कोशिश करता है, कभी जर्मनीको। इंग्लैंडकी जनताको वास्तविकतासे अनजान रक्खा जाता है। लेकिन, अनजानकारी खुद भी एक बडा अपराध है। उसके दंडसे बचा नही जा सकता। क्रान्ति—नई नीवपर नए समाज की भित्ति स्थापित करना—बडी लुभावनी चीज है। ख़ासकर शिक्षित तरुण दिमागके लिए। वह समय था, जबकि निम्न-मध्यम-श्रेणीके शिक्षित तरुण ही नही, बल्कि उच्च समाजके भी कितने जवान समाजवादकी ओर आकर्षित होते थे और कितने ही आज भी समाजवादी होनेका दावा कर रहे है। लेकिन, जिस वक़्त उन्हें समाजवादके जमीनपर उतरनेका ख़्याल आता है, तो सोचते है—अरे, तब तो वर्तमान आर्थिक ढाँचा ही चकनाचूर हो जायगा। हमारा अपना घर, बैंकमें जमा रुपया, ज़मीदारी, व्यापारमें लगा धन आदि सभी चीजें छिन जा सकती है। उस वक़्त हम और बीबी बच्चे गलीके भिखारी बन जायेंगे। हमारी मान-प्रतिष्ठा हवा हो जायगी

और सूखे पत्तेकी तरह उडते फिरेंगे। यह डर है, जिसके कारण अपनेको समाजवादी कहनेवाला शिक्षित मध्यमवर्ग समाजवादका सबसे बड़ा दुश्मन बनता है। अपनी कमजोरियोंको वह 'धीरे धीरे क्रान्ति' लानेकी आडमे छिपाना चाहता है। यही भाव है जिनके कारण इंग्लैडकी जनता टोरियोके जबर्दस्त फंदेमे फँमी हुई है और उसका फल उसे भोगना पड़ेगा।

"हम कितने ही तरुण-तरुणियोने अपने देशमे जो काम किया वह निष्फल नही रहा। चाहे गति मन्द हो और आसन्न-भविष्यमे आनेवाले सकटको टालनेमे हम समर्थ न हो, लेकिन, तो भी हम भविष्यके लिए निराश नही है।

"प्यारे डेवी, मुझसे खीझना मत, न उदास होना। मै तुम्हें अपना एक निश्चय सुनाने जा रही हूँ। मैंने तुमसे राय लिए बिना ही एक भारी काम किया है, जिसे कि इस चिट्ठीके ऊपरके स्टाम्पसे ही तुमने समझ लिया होगा। सिर्फ कलम और जबान चलानेमे मुझे सतोष नही हुआ और इसके लिए तुम मुझे अपराधी न ठहराओगे; क्योकि इस अपराधके तुम खुद ही शिकार हो। वार्सिलोना, मद्रिदके हवाई आक्रमणो तथा दूसरे युद्धक्षेत्रोके बारेमे मैंने पत्रोमे कुछ लेख भेजे जरूर है; लेकिन, मै पत्रकार और संवाददाता बनकर यहाँ नही आई। मै यहाँ आई कलमकी जगह बन्दूककी नली पकडने, स्याहीकी जगह गोलियो और खूनसे अपने आदर्शोंकी रक्षा करने। साम्यवादी रूसका बहुत भारी आतंक है ही, इसलिए इग्लैडके धनिक शासक इतने नज़दीक स्पेनमे साम्यवादकी स्थापना फूटी आँखों भी देखना पसन्द नही करते। इटली और जर्मनीके फासिस्ट खुलेआम अस्त्र-शस्त्र और आदमियोसे बागियोंकी मदद कर रहे है। सार्वजनिक चुनावके बहुमत द्वारा स्थापित प्रजातन्त्रपर पीछेसे घात करनेके लिए इंग्लैड और उसके दबावके कारण फ्रांस

भी तैयार है। समय आयेगा, जब कि इग्लैंड और फ्रासको इसके लिए पछताना पडेगा। तो भी स्पेनके शिशु समाजवादी प्रजातन्त्रका इस प्रकार गला घोटे जाते देखकर हम चुपचाप तमाशा नही देख सकते।

"स्पेनके नर-नारी सर्वस्वकी बाजी लगाकर अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षाके लिए तैयार है, इसे तुमने पत्रोमे पढ लिया है। लेकिन धनियो और उनके साथी पादरियोका घोर विश्वासघात स्मरणीय घटना रहेगी। स्पेन उन लोगोके लिए अच्छा जवाब है जो कहते है कि निर्वाचनके बहुमत द्वारा हम समाजवादकी स्थापना कर सकते है। पार्लियामेटके चुनावमे समाजवादियोका जबर्दस्त बहुमत रहा। जब उस बहुमतका उपयोग करके सरकारने शिक्षाको पादरियोके हाथसे निकालकर अपने हाथमे लेना चाहा, किसानो और मज़दूरो के लिए मामूली रियायते करनी चाही, तो यहाँके जमीदारो, पूँजीपतियो और पादरियोने एक होकर विरोध करना शुरू किया। विरोध जबानी नही हथियारसे। आखिर सैनिक और नागरिक अधिकारी प्रायः सभी और देशोकी भाँति यहाँ भी धनिक श्रेणीके थे। जर्मनी और इटलीकी फासिस्ट सरकारे बागियोको खुले तौरसे मदद कर रही है। इग्लैंडकी अर्द्धफासिस्ट सरकार भविष्यका कुछ भी ख्याल किए बिना अहस्तक्षेपकी नीति द्वारा अप्रत्यक्षरूपेण बागियो की सहायक बन रही है। स्पेनके बहादुर किसान मज़दूर आज फ़ासिस्टोकी वेदीपर बलि चढाए जा रहे है। जनताके बहुमत द्वारा निर्वाचित समाजवाद आज जबर्दस्ती अधिकारच्युत किया जा रहा है। समाजवाद सुधार द्वारा स्थापित नही हो सकता, उसके लिए क्रान्ति चाहिए। सभी सरकारें अधिकारारूढ श्रेणीके स्वत्वोंकी रक्षाके लिए होती है। क्या कोई . "

"१९ दिसम्बर

"कल पत्रको आगे नही लिख सकी। आसमानसे फ्रेंकोकी मददके लिए आए जर्मन वायुयानोका हमला हुआ। दूरसे गडगडाहट सुनाई दी। छै हवाई जहाज एकके पीछे एक उडते आ रहे थे। हम १२ सिपाही देवदारोमे ढँकी एक पहाडीपर तैनात थ। मशीनगन दुश्मनकी ओर मुँह किए लगी हुई थी। वायुयान-ध्वसक तोप यहाँ हमारे पास नही है। अपनी तरफ आते देख हम लोग पहाडीके चारों ओर बिखरकर वृक्षोमे छिप गए। शायद हमारी मोर्चाबन्दीको उन्होने देख लिया, पाँच बम्ब गिराए गए। उनके फटनेकी भीषण आवाज से सारी पहाड़ी गूँज उठी। सयोगसे बम्ब सौ गज आगे निकल जानेपर गिरने शुरू हुए, इसलिए हमेसे कोई घायल नही हुआ।

"डेवी, मेरे दिमागमे ख्याल दौड रहा है, २० वर्ष पहले तुम भी इसी तरह दुश्मनके धावेकी प्रतीक्षामे किसी मोर्चाबन्दीपर तैनात रहे होगे। हाँ, तुम परदेशी शासकोकी सहायतामे गुमनाम मरनेके लिए तैयार थे—यही तुम्हारे अग्रेजी अफसर समझते थे—और मै अन्तर्राष्ट्रीय ब्रिगेडकी एक सम्माननीय सिपाही, खुलेआम अपने आदर्शके लिए यहाँ मरने आई हूँ। आदर्शके लिए ही दोनो युद्धपंक्तिमे बैठे थे। मृत्यु! कितना भयकर और अवाछनीय शब्द है!! लेकिन, मेरे लिए उसमे वह भयकरता नही। जीनेके लिए हम मृत्युका आलिंगन करते है। मृत्युके लिए तैयार हुए बिना जीना असभव है। मै अन्तस्तलसे जीना चाहती हूँ, उसी तरह जिस तरह कि हर क्षण तुम्हारे साथ गुजारना चाहती हूँ, लेकिन, जो जीना मृत्युके मोल न मिलता हो, वह जीना किस कामका? जीनेके लिए हमे भारी कीमत अदा करनी पड़ेगी।

"इंग्लैडके हमारे मजदूर नेता जीनेको कौडीके मोल खरीदना चाहते है, इसीलिए यहाँ मेकडानलोकी कमी नही। आज क्या ..

"युद्धकी खाई, स्पेन
२४-१२-३६

प्रिय मिस्टर सिंह,

"दूसरी क़लमसे लिखी इन पंक्तियोंको देखकर आश्चर्य न करें। सखी जेनीने अपूर्ण पत्रको तुम्हारे पास भेजनेके लिए कहा था। जेनीने जीनेके लिए पूरा मूल्य चुकाया। कल शामको दुश्मनके हवाई-जहाज़ोंका जबर्दस्त धावा हुआ। हम लोगोंने आड़ धरा, लेकिन एक बम्ब जेनीसे दस कदमपर फटा। वह बहुत बुरी तरह घायल हुई। दाहिना हाथ उड़ गया। चेहरा झुलस गया। आध घंटा जीवित रही। सिर्फ एक बार होशमें आई थी। सिर्फ इतना ही बोली—"एनी, चिट्ठी . . ."। मरनेपर कोटके पॉकेटमें यह अपूर्ण चिट्ठी मिली। मिस्टर सिंह मुझे अब तक आपसे मिलनेका सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ लेकिन आपके बारेमें जेनीने बहुतसी बातें मुझे बतलाई थीं। जेनी पत्नी ही नहीं आदर्श साथी भी थी, इसलिए आज आपके हृदयमें भारी सूनापन अनुभव होगा। लेकिन, मैं क्या कहकर सान्त्वना दे सकती हूँ। अन्तमें यही कहना चाहती हूँ, कि जेनीने मृत्युका उसी तरह खुशीके साथ आलिंगन किया, जिस तरह कि चिरवियोगी प्रेमिक पुनर्मिलनके समय। जेनीने तीन लड़ाइयोंमें असाधारण बहादुरी और कौशलका परिचय दिया था, और आज कितने ही तमगोंके साथ वह अन्तर्राष्ट्रीय ब्रिगेडमें कप्तान थी।

"आपके असह्य शोककी सहभागिनी—

एनी क्लट (अमेरिकन)"

पत्रको पढ़कर देवराजका हृदय दो टूक हो गया। उसका मन निश्चेतनसा मालूम होने लगा, और सोचने-विचारनेकी अपेक्षा उस वक़्त इसी अवस्थाको वह अधिक पसन्द करता था। आमू-दरियाके तटपर खड़े छोटे मोटरबोटकी ओर देखती वह लम्बी पतली शकल अभी बिलकुल ताज़ी उसके हृदयपर अंकित थी, वह तरुण चेहरा

उसे भूला न था, जिसे बीस साल पहले अस्पतालमें उसने पहले पहल देखा था। उस हृदयका ख्याल करके उसका दिल धैर्य खोने लगता था, जो उसके स्वप्नोंका समभागी था। देवराज अपनेको अपराधी समझता था, जबकि वह सोचता था, कि जेनी भारत देखनेके लिए कितनी उत्सुक थी, और उसकी इच्छाको न पूरा होनेमें वह खुद बाधक हुआ।

× × ×

एसेंबलीके निर्वाचनमें कांग्रेसका अनेक सूबोंमें बहुमत रहा। देशने दिखला दिया, कि अंग्रेजी सरकारकी सारी कोशिशें बेकार हुईं, वह जनताकी आत्माको कुचलनेमें सफल न हुई। देवराजके लिए यह स्वाभाविक बात थी। उसका कहना था—जनताको बड़े-से-बड़े अत्याचार भी आतंकित नहीं कर सकते, क्योंकि रात-दिनकी भूख-प्यासके सामने वह उसे शीघ्र ही भूल जाती है।

कौंसिलोंपर अधिकार हो जानेपर पद-ग्रहणके सम्बन्धमें विवाद उठ खड़ा हुआ। कांग्रेस निरंकुश गवर्नरोंके अधीन रहकर मंत्रिपद ग्रहण करनेके लिए तैयार न थी। अंग्रेज़ी सरकार जैसे हो तैसे मंत्रिमंडल बनानेके लिए उतारू थी। रामप्रसादने उस वक़्तके मनो-भावके बारेमें कहा—

"साथी देवराज, जमींदारोंके मुँहपर हवाइयाँ उड़ रही हैं। उन्होंने आँखें मूँदकर दोनों हाथों रुपए लुटाए, और हर तरहसे जनताकी आँखोंमें धूल झोंककर वोट लेना चाहा; किन्तु उनका सारा प्रयत्न निष्फल गया। आज जब कांग्रेसने मंत्रिपदसे इन्कार कर दिया, तो उनके मुँहसे लार टपक रही है।"

"लेकिन प्रबुद्ध जनताको फिर थपकियाँ देकर सुलाया नहीं जा सकता। अंग्रेज़, जमींदारोंकी मददसे कुछ दिन तक सरकार चला

सकते हैं, लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति जिस प्रकार उनके प्रतिकूल होती जा रही है, उन्हें देखते अंग्रेज़ोंकी विपता दूर नहीं है।"

"किन्तु, साथी देवराज, जिस प्रकार अंग्रेज़ जर्मनीको खुश करना चाहते हैं, क्या उससे युद्ध टल नही जा सकता ?"

"अंग्रेज तो युद्धको टालते जा रहे हैं। वस्तुतः युद्ध जो अब तक नहीं हुआ, उसका कारण था, अंग्रेज़ोंका पीछे हटना। लेकिन सवाल है—अंग्रेज़ कहाँ तक पीछे हट सकते हैं। फ़्रांस और जर्मनीकी मैत्री असम्भव है। अंग्रेज़ोंने हिटलरके सामने मित्रताका हाथ बढ़ाकर फ़्रांसको शंकित बना दिया। फ़्रासने इटलीके साथ मुरव्वत दिखलानी चाही। परिणाम हुआ अबीसीनियापर मुसोलिनीका अधिकार। मित्रोंमे दाँव-पेंच! हाँ, अंग्रेज़ राजनीतिज्ञोंकी राजनीतिक सूझ आजकल ऐसी ही है।"

"तो क्या जर्मनीको अंग्रेज़ किसी तरह अपने अनुकूल नही बना सकते ?"

"अंग्रेज इटली, जापान और जर्मनी तीनोंको अपने अनुकूल बना सकते है, लेकिन इसके लिए उन्हें आधा राजपाट देना होगा। आस्ट्रेलिया जापानकी भेंट हो, दक्षिणी अफ़्रीका जर्मनीको; और मिश्र-सूदान इटलीको। बस, तीनों अनुकूल हुए-हवाए है।"

"बड़ी कड़वी घूँट !"

"नही तो इटली और जर्मनीको अफ़्रीकामें फ़्रांसके साथ मनमाना करने दें, जर्मनीके पुराने उपनिवेश लौटा दिए जायँ, जिसमें वह वहाँ अपने जहाज़ी बेड़ों, और हवाई जहाज़ोके अड्डोंको मजबूत करनेमें समर्थ हो। चीन ही नहीं जावा-सुमात्राको भी जापानके हाथमें जाने दें, जिसमें कि वह पेट्रोल और मिट्टीके तेलसे ही मालामाल न हो जावे, बल्कि आस्ट्रेलिया और हिंदुस्तानके सम्बन्धको इच्छानुसार विच्छिन्न कर सके। इस प्रकार भी इंग्लैंड तीनों फासिस्ट शक्तियोंसे मैत्री स्थापित कर सकता है।"

"कितने दिनोंके लिए ?"

"दो-तीन सौ दिनोंके लिए या इससे कुछ अधिकके लिए भी ?"

"लेकिन फ्रांस जैसे मित्रोको बलिदान चढ़ाकर ही तो ?"

"मित्रोंको बलिदान तो चढ़ाया ही जाता है। खासकर इंग्लैंडके वर्तमान राजनीतिज्ञ सबकुछ करनेके लिए तैयार हैं; वह फ़क़त इतना ही चाहते हैं, कि उनकी वर्तमान पूँजीवादी व्यवस्था जैसे भी हो क़ायम रहे। लेकिन, इंग्लैंड निश्चय ही फ़ासिस्टोंको अन्तमें खुश न कर सकेगा। पूँजीवादियोंके स्वार्थ हमेशा परस्पर-विरोधी हैं, उनमें स्थायी दोस्ती संभव नहीं। जबतक चौथाई धरातलपर फैला इंग्लैंडका साम्राज्य, दूसरे पूँजीवादियोके व्यापारके प्रसारमें भारी रुकावट बना हुआ है, तबतक शान्ति हो कैसे सकती है ? इंग्लैंड शान्तिवादी बना हुआ है, क्यों ? क्योकि उसके पेटमें और हज़म करनेकी शक्ति नही है। वह घबड़ाता है, कहीं वमन-विरेचनकी नौबत न आवे !"

"इंग्लैंडके लिए बचनेका कोई रास्ता नही है ?"

"जबतक उसके साम्राज्यमें सूर्य अस्त नहीं होता, तबतक कोई रास्ता नहीं। भारतके लिए यह सबसे सुन्दर अवसर है। युद्धही भारतके लिए वरदान होगा। इंग्लैंड बस उसी दिनसे घबड़ा रहा है। हमें उसी दिनके लिए तैयारी करनी है। अंग्रेज़ खुशामदियोंका मंत्रि-मंडल भले ही बना लें, लेकिन जनमतको वे समझ गए हैं, वे बहुत दिनों तक उसकी अवहेलना नहीं कर सकते।"

"जनता हीके हाथमें वस्तुतः हमारे भाग्यका फैसला है।"

"लेकिन, मैं तो समझता हूँ, हमें बाहरी शत्रुओंकी अपेक्षा भीतरी शत्रुओंसे अधिक सजग रहना चाहिए। कांग्रेसने जनताके मौलिक अधिकार करांचीमें क़बूल किए, किन्तु बड़े-बड़े चोटीके नेता उसे दिलसे क़बूल करनेके लिए तैयार न थे। निर्वाचन-घोषणामें

भी कांग्रेसने किसानों और मजदूरोंके हितोंकी बात बड़े लम्बे-चौड़े शब्दोंमें पेश की है; लेकिन मुझे विश्वास है, यह भी हमारे नेताओंके हलकके नीचे उतरनेवाली चीज़ नही है। जनताको सजग रखनेकी ज़रूरत है।"

× × ×

तीन महीनेका अन्तर्वर्ती मंत्रिमंडल खतम हुआ। कुछ आश्वासनके बाद कांग्रेसने मंत्रिपद स्वीकार किया। नए मत्रियोंने धुँवाधार व्याख्यानों द्वारा जनताको खुश करना चाहा। इधर ज़मीदार भी पासा पलटते देख मंत्रियोंके दरबारोमें हाज़िरी देने लगे। राजा-महाराजाओंके साथ हाथ मिलानेसे "रंकको राजसम्पत्ति पानेका" आनन्द मिलने लगा। मंत्रियोंने उनके हितोंकी रक्षाके लिए आश्वासनपर आश्वासन देने शुरू किए। देवराज और उसके साथियोंका माथा ठनका।

"जिन ज़मींदारोंने कांग्रेसी उम्मीदवारोंको हटानेमें कोई कसर उठा न रक्खी, आज उन्हींके हकोंकी रक्षाका बीड़ा ये कांग्रेसी मंत्री उठा रहे हैं!! आश्चर्य!!"—उत्तेजित होकर कमालने कहा।

"आश्चर्यकी कोई बात नही" समाधान करते हुए देवराजने कहा "जबतक पद-स्वीकार नही हुआ था, तभी तक गोलमोल बात रह सकती थी। अब अधिक दिनों तक बात छिपी नहीं रह सकती। यह साफ़ है, हमारे मंत्री, ज़मींदारी प्रथा और पूंजीवादके उठानेके लिए वहाँ नहीं गए हैं।"

"उतना अधिकार भी तो नही है।"—रामप्रसादने कहा।

"ज़मींदारी प्रथाको उठानेका भलेही सीधा अधिकार न हो, किन्तु अपनी कार्रवाइयों द्वारा जनताको वह उत्साह-प्रदान कर सकते हैं, जिसके कारण ज़मींदारी खुद कौड़ीकी तीन हो सकती है; किन्तु

वह यह भी पसन्द न करेंगे। लेकिन, एक बात निश्चित है, जनता अब पीछे हटनेवाली नहीं है।"

"लेकिन साथी देवराज, मुझे ताज्जुब होता है, मंत्रियोंके व्यवहार पर।"—कमालने कहा।

"ताज्जुबकी जरूरत नहीं। दुनियामें हर जगह ऐसा होता देखा गया है। जिस सीढ़ीके सहारे कोठपर चढ़ते है, उसे फेंक देनेमें न आनाकानी करनेवाले बहुतेरे आपको मिलेंगे। मेक्डानेलने क्या किया?"

बटुकने उत्तेजित होकर कहा—"विश्वासघात! भाई देवराज, यह सरासर विश्वासघात है। और मैं समझता हूँ, आखिर मंत्री ख़ुद भी तो ज़मीदार है, दस हजारवालेको अपनी ज़मीदारीसे उतना ही प्रेम है, जितना कि दस लाखवालेको अपनीसे।" ।

"ऐसा कहनेसे कोई फ़ायदा नहीं, हमें सिर्फ यह ख्याल रखना है, कि अभी मंजिल बहुत दूर है। कलके हमारे साथी आज हमारे विरोधी बनते जा रहे है। लेकिन, क्रान्तिके अग्रदूत नेता नहीं होते उसका स्रोत जनता है।"

४०

अवसान

"इतनी उम्मीद न थी। वादोंको भूल जानेहीकी बात नहीं, बल्कि यह उल्टी छुरीसे गला रेतना है। क्या 'सत्य-अहिंसा' का पालन इसी तरह होता है ?"—हरनंदनने कांग्रेसी मंत्रिमंडलके सवा सालके कार्योंपर टिप्पणी करते हुए कहा।

"सत्य और अहिंसा ! क्या देख नही रहे हो, कैसी कैसी सूरतें अब तिरंगे झंडेके नीचे खड़ी हो रही है ?" कमालने बातको आगे बढ़ाते हुए कहा "रायबहादुर केशवसिंह सरकारी वकील बनाए गए है।"

"अजी जनाब, अमनसभाकी सेवाओंका भी तो सरकारको ख्याल करना चाहिए था। कितने पुराने दोस्तों और साथियोंको जेलका रास्ता दिखलानेके लिए कुछ तो पारितोषिक मिलना चाहिए !" —बटुकने बालोको पीछेकी ओर सहलाते हुए कहा।

"भाई, यह गद्दीका महातम है, जो उसपर बैठता है वही ऐसा हो जाता है।"

"नहीं, साथी रामप्रसाद, घबड़ानेकी बात नही, इस अवस्थासे भी पार होना पड़ता है। आखिर खरे-खोटेकी परख कैसे होगी ?" निर्मलने कहा।

"सो तो ठीक है, निर्मल, लेकिन देख-देखकर कुफ्त होती है। जो मूर्तियाँ आज झंडेके नीचे इकट्ठा हो रही हैं, वह हृदय परिवर्तित करके नहीं आई हैं, इसीलिए नहीं कि "झंडा ऊँचा रहे हमारा"।

आज कांग्रेसमें कैसी गंदगी है। ऐसे ऐसे लोगोंने खद्दर पहनना शुरू किया है, और ऐसे अभिप्रायसे कि 'लम्बा टीका मधुरी बानी। दगाबाज़की यही निशानी' याद आती है। आखिर हम जा कहाँ रहे है?"

"साथी रामप्रसाद, जा कहाँ रहे हैं, क्या यह भी मालूम नहीं? ज़मीन गोल है, कांग्रेस अमनसभा बनने जा रही है। हरिपुराके लिए प्रतिनिधियोंका चुनाव कैसे हुआ, क्या याद नहीं? धनी और ज़मीदार जानते है कि कांग्रेस एक शक्ति है; इसलिए वह उसपर क़ब्ज़ा करना चाहते हैं। रुपयोंके तोडे खोलकर हजारों झूठे कांग्रेस सदस्य बनाए जा रहे हैं, झूठे वोटर तैयार किये जा रहे हैं। उसपर भी सफलताकी आशा नही रहती, तो बैलेटबक्स तोड दिए जाते है। यह है सत्य और अहिंसा।"

"साथी कमाल, चारों ओर गंदगी। पुलिस सहम गई थी, जिस वक्त कांग्रेसने मन्त्रिपद स्वीकार किया था; कचहरियोंके अमले डर गए थे, और रिश्वत बंद सी हो गई थी, लेकिन अब?"

"अबतो पहलेसे भी दूने उत्साहसे पुलिस और कचहरियोंमें रिश्वत चल रही है। लोग दंग है, क्या यही स्वराज है।"

"भाई, हमारे साथियोंको हिम्मत नहीं होती कि इन बुराइयोंके पीछे पडें। 'आए थे हरिभजकको, ओटन लगे कपास'। भारत-क़ानूनको तोड़नेके लिए आए थे, और अब गद्दीके मोहमें पड़ गए, कम-से-कम हमारे प्रान्तमें तो यह बात बिलकुल सच उतरती है।"

हरनंदनने कमालकी बातोंका समर्थन करते हुए कहा—"हमारी आँखोंके सामने कांग्रेसकी मिट्टी पलीद की जा रही है। गाँवोंके किसान कांग्रेसको स्वार्थियोंका अड्डा समझ रहे हैं। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्यूनिस्पैलटीके प्रबन्धको देखकर तो कभी कभी चित्त निराश होने लगता है।"

"लेकिन साथी हरनंदन," रामप्रसादने कहा, "इसमें न निराश होनेकी ज़रूरत है, न ताज्जुब करनेकी। पहले भी ठीकेदार अधिक-से-अधिक नफ़ा उठाना चाहते थे, लेकिन काम मजबूत करके। आज काम भी ख़राब करना चाहते हैं, और साथही अस्सी फ़ी-सदी रुपया अपने पॉकेटमें रखना चाहते हैं। भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर आध्यात्मिकताकी कलई जो ठहरी। मैं तो समझता हूँ, भारतीय पूँजीवादकी बदतर सत्ता इसका कारण है। इंग्लैंडमें चाहे कुछ दिनोंके लिए पूँजीवादको सह्य माना भी जावे, किन्तु उसका भारतीय संस्करण तो एक क्षणके लिए भी सहने योग्य नहीं है।"

"भारतीय सभ्यता और संस्कृति" कमालने कहा "को सुनते-सुनते कुफ्त हो गया है। क्या है भारतीय सभ्यता और संस्कृति? बदन खोलकर अर्धनग्न पड़े रहो। पाख़ानेकी सफाईपर एक पैसा भी खर्च करना पाप समझो...गाँव हो तो पासके खेत पाख़ानेकी ख़ाली जगहें बनी ही हैं। किताब और अख़बार...जहाँ तक हो सके उनका काम माँग-जाँचकर चला लो। कपड़े धोबीके यहाँ जल्दी-जल्दी जाकर फट न जावें। विरादरी, धर्मके नामपर, ब्याह, श्राद्ध, तीरथ, व्रतके लिए क़र्ज़ निकाल-निकालकर ख़र्च करते जाओ। औचित्यको मानते हुए भी समाजके डरसे थर-थर काँपते रहो। धर्म और सदाचार में 'हाथीके दाँत खानेके और, दिखानेके और'की नीतिको अक्षरशः पालन करते रहो। दुनिया दो सौ साल आगे बढ़ जावे, तब भी तुम अँगड़ाई न लो।"

"आत्मवंचना और परवंचनाकी जितनी ही हद्द कर दो, उतनी ही भारतीय सभ्यता और संस्कृतिको पराकाष्ठा तक पहुँची समझो।" हरिनंदनने उपसंहार करते हुए कहा।

कमाल गम्भीरता लाते हुए बोला—"मेरी समझमें हमारे मंत्री लोग ग़लत समझ रहे हैं, यदि उनका ख्याल है, कि वे किसानों

और मजदूरोंके हितोंको कुचलते हुए भी काग़ज़ी घोड़ों और गाँधी जीकी दुहाई देकर फिर जनताको धोखा दे सकेंगे। आज हमारे मंत्री बड़ी संजीदगीके साथ कहते हैं—'ज़मींदारी-प्रथा उठा देनेपर भी किसानोंकी ग़रीबी दूर न होगी।' मानो यह दलील जमीदारी-प्रथाको अजर अमर रखनेके लिए पर्याप्त है। ज़मींदारी-प्रथाके उठानेसे आदमी पीछे आठ आना मासिककी आमदनी बढ़ जाती कम नहीं है, साथही जब हम विचार करते हैं, कि ज़मींदार गाँवोंमें कितने सामाजिक अत्याचारोंकी जड़ है, वे खुद झूठे मुकदमे, मारपीट, फूट और बिलगाव द्वारा ग़रीबोंपर कितने ज़ुल्मके पहाड़ ढाते हैं; तो और भी उनका अस्तित्व असह्य मालूम होता है।"

"दूसरी तरफ़ हमारे मंत्री यह भी तो कहते हैं—'जमीदारी प्रथा उठानेका हमारा अधिकार नही।"

"जी हाँ! उठानेका अधिकार नही, लेकिन सारी शक्ति लगाकर उसकी रक्षा करनेका काम तो कांग्रेसने आपके ज़िम्मे सौंपा है न! आप लोग सभी जमीदारोंकी हिफ़ाजतमें पहुँच क्यों जाते हैं? आप यदि सच्चे अर्थोंमें तटस्थ रह जावें, तो किसान ज़मीदारीको नरक बना सकते है। आपकी मददपर भी वह नरक बनती चली जा रही है। जमीदारीका कोई ख़रीदार नहीं मिल रहा है। जिस ज़मींदारीको कुछ ही सालों पहले, रुपया लगानेका सबसे अधिक सुरक्षित स्थान समझा जाता था, उसीके नीलाममें कोई बोली बोलनेवाला नहीं मिलता। साथी रामप्रसाद, कम्बख़्त जमींदारी गए बिना नहीं रहेगी, लेकिन 'दमड़ीकी हँड़िया गई, कुत्तेकी जात पहचानी गई'...!"

इसी समय कमरेके भीतर दो और शकलें दाख़िल हुईं, उनमेंसे एकके बदनपर गाढ़ेकी लुंगी, कुर्ता और सिरपर दुपलिया टोपी थी, दूसरा चौड़े पाजामे और कुर्तेके साथ मख़मली किश्तीनुमा टोपी पहने हुए था। तरुणोंने खड़े होकर हाथ बढ़ाते हुए एक साथ कहा—

"आओ साथी जंगली, आओ, साथी अनवर हुसेन। तुम लोग तो दूजके चाँद हो गए। इतने दिनोंतक पटना तुम्हारे दीदारके लिए तरसता रहा।"

"पटना नहीं यार, अजीमाबाद कहो।" जंगली मियाँने कहा "क्या काफ़िराना नाम ले रहे हो।"

"गुस्ताख़ी माफ" कमालने अदबके साथ कहा "अजीमाबाद इन दोनों सूरतोंके लिए तरस रहा था'। कहो तो हज़रात, कहाँ गायब रहे? गूलरके फूल हो गए थे?"

"फिर काफ़िरोंका मुहाविरा?" अबकी बार अनवरकी बारी थी।

"अरे तुम इस्लामको डुबोकर रक्खोगे। क्या कोई इस्लामी मुहाविरा नही है—कहो 'अन्का हो गए थे'।"

"इरशाद सर-आँखोंपर। आकायान् कहाँ अन्क़ा हो गए थे? साथी जंगली......"

"साथी जंगली नहीं" अनवरने बीचमें रोककर कहा "यह भी काफिराना नाम है, साथी वहशिउल्ला कहो।"

"क्या ख़ूब सुब्हानल्ला," कमालने ठहाका मारते हुए कहा, "जंगली मियाँसे वहशिउल्ला।"

"अरे भाई," जंगली मियाँने मुस्कराते हुए कहा, 'अनवरने नाम चुननेका काम अपने ज़िम्मे ले लिया था। और क्या पूछते हो पिछले छै महीनेकी कैफ़ियत? हम दरभंगासे देहलीतकका चक्कर काटते रहे।"

"चक्कर!" बटुकने पेशानीमें सिकुड़न लाते हुए कहा, "और हममेंसे किसीको ले जानेकी ज़रूरत नहीं समझी।"

"अभी मौक़ा हाथसे गया नहीं है।" अनवरने टोपीको मेज़पर पटकते हुए कहा।

दोस्तोंने देखा, अनवरकी चाँदपर बालोंको काटकर तिकोना मैदान बनाया गया है। रामप्रसादने टिप्पणी करते हुए कहा—

"और यह चाँद चटियल कैसे पड़ गई, उस्ताद ?"

"बोलनेकी तमीज़ भी रखते हो, यह लखनवी तर्ज़ है। गर्मी के दिनोंमें इससे सरमें तरावट रहती है।"

"अच्छा तरावट ही सही। फ़रमाइए तो अपनी सर्गुज़श्त।" —कमालने कहा।

"सर् गुज़श्त अनवरसे पूछिए, पुश्तगुज़श्त पूछनी हो तो मैं बतलानेको तैयार हूँ।"—जंगलीने कहा।

"क्या यह भी बात है!"—हरनंदनने कहा।

"मज़हबके छत्तेमें उँगली डालें और सरगुज़श्त पुश्तगुज़श्तकी भी नौबत न आवे? खानपुरके नवाबकी ज़मींदारी है रसूलपुरमें। ४०० एकड़ बकाश्त। जोतते हैं किसान मगर मनमानी मालगुज़ारी लेनेके ख्यालसे खेतपर रैयतोंका हक़ होने नहीं देते थे। रसूलपुरमें आधे हैं हिन्दू और आधे मुसलमान। मुसलमानोमें ६० फ़ी सदी हैं मोमिन जुलाहे। बकाश्तमें भी ६० फ़ी सदी मोमिनोंकी जोत है। नवाब साहबने बक़रीदके मौकेपर दो मौलवी रसूलपुर भेजे—क़ुर्बानी ज़रूर होनी चाहिए। हिन्दू भी नवाब-साहबके यहाँ फ़रयाद करने पहुँचे। नवाबने कहा—'हमारी सात पीढ़ी हिन्दुओंके मज़हबी एहसास् (भावों) का ख्याल करती आ रही है, यह इन रज़ील क़ौमोंकी बदमाशी है'। हमें दरभंगामें इसकी खबर लगी। सोचने लगे—क्या करना चाहिए। बेढब सवाल था......।"

कमालने झुँझलाकर कहा—"अनवर, फ़ज़ूल वक़्त बर्बाद न करो।"

"वक़्त बर्बाद कर रहा हूँ? अच्छा क़िस्साकोताह, बनारसी शर्मा भी संयोगसे उसी दिन दरभंगामें पहुँचा।"

"अच्छा तीन दीवाने ! और फिर ?"

"हमें पता लग गया—नवाब हिन्दू-मुस्लिम झगडा खड़ाकर ४०० एकड़ बकाश्तको अपने हाथमें करना चाहता है। शर्मा तिलक-चंदन लगाकर एक दिन पहले रसूलपुर पहुँचा; और जंगली मियाँ मौलवी रहमतुल्लाके साथ एक दिन बाद।"

"मौलवी रहमतुल्ला कौन भाई ?"

"फ़ैज़ाबादके बड़े भारी आलिम हाजी।" अनवरने हँसी रोककर कहा।

"देवबन्दके तालीमयाफ्ता।" जंगलीमियाँने भोलीभाली सूरतके साथ कहा।

"मेरा घनिष्ट परिचय है, मौलाना रहमतुल्लासे, आप लोगोंको उनके बारेमें पीछे बतलाऊँगा। आगे फिर ?" बटुकने कहा।

"रसूलपुरकी मसजिदमें डेरा। नवाबके भेजे मौलवी दो दिन पहले चले गए थे। उन्होंने समझा था, महीने भर रहकर वह अपना काम खतम कर चुके है। गाँव-वालोंको पता लगा—एक बड़े मौलवी एक मोमिन चौधरीके साथ तशरीफ़ लाए है।"

"फिर फिर ?"

"मौलानाने रोज़ वाज़ (उपदेश) देना शुरू किया। इस्लामकी बरकात, गायकी क़ुर्बानीका सवाब, मोमिनोंकी ज़िल्लतभरी ज़िन्दगीका कारण। दिन बीतते गए और मौलानाने नवाब जैसे शरीफोंके इस्लामको नंगा करके रख दिया। शर्माने उधर आधे गाँवमें महा-बीरी झंडा निकालनेकी तैयारी शुरू की। नवाबके आदमी दोनों ओरके धार्मिक नेताओंको सहायता पहुँचाने लगे। बक़रीद नज़दीक पहुँच रही थी। तनातनी सीमा पार करना चाहती थी। मौलानाने कहा—भाइयो, मोमिनो, मजहबके सामने हमारे सरकी कोई क़ीमत नहीं। हाँ, यह ख्याल रखना चाहिए, कि हम शैतानके बहकावेमें

पड़कर वैसा न करें। आजकल शरीफ़ लोग हर जगह चाल चल रहे है। मैं भी मोमिन माँ-बापका लड़का हूँ, मौलवी हुआ तो क्या हुआ। नवाब साहबका क्या रुख है?'

एक मोमिनने कहा—'नवाब साहेब तन-मन-धनसे हमारी सहायता करना चाहते है।"

"खुल कर?"

'मौक़ा पड़नेपर खुलकर भी।'

'तो तनसे कहना ग़लत। धनकी मदद कितनी दी है?'

'१० रुपया लगाकर मस्जिदकी सफ़ेदी और कुछ चटाइयाँ मोल ले दी है।'

'बड़ा सस्ता सौदा। अच्छा हिन्दू क्या कहते हैं?'

'कहते है, यहाँ कभी गोकुशी नहीं हुई।'

'क्या सचमुच यहाँ गोकुशी नहीं हुई?'

"बूढ़े जुमरातीने सिर खुजलाते हुए कहा—'मौलवी साहेब, ईमानकी बात पूछिए, तो यहाँ क़ुर्बानी कभी नही हुई थी।'

'और कभी हिन्दू-मुसलमानोंका झगड़ा?'

'वह भी कभी सुननेमें नही आया। लेकिन हम बूढ़े लोग गाँवके रहनेवाले थे, पढ़ना लिखना नहीं जानते थे, सही ग़लत नमाज़ किसी तरह पढ लिया करते थे।'

"मौलानाने अंगुल भरकी लम्बी दाढ़ीपर हाथ फेरते कहा—'न जाननेकी वजहसे यदि गाय ज़बह करनेका सवाब तुम न दे सके तो उससे क्या? अंग्रेज़-बहादुरके राजमें मज़हबी आज़ादी सबको हासिल है। लेकिन यह मै जानना चाहता हूँ, नवाब साहबका असामियोंसे कोई झगड़ा तो नहीं है।'

"काने रहीमने सफ़ेद दाढ़ी हिलाते हुए कहा—'हम लोगोंके साथ झगड़ा नहीं है। हिन्दुओंके साथ कुछ सुननेमें आता है?"

'सो क्या ?'

'नवाब साहेब बकाश्त लौटा लेना चाहते हैं।'

'और हिन्दू ?'

'कोई कोई डट गए है।'

'और मोमिन भी बकाश्तमें कुछ जोतते है ?'

'अधिकतर तो हमारी ही जोतमें है।'

'नवाब साहब, उसे निकालना चाहते है ?'

'इसकी बात ही नही चली।'

'तुम्हे रसीद देते हैं ?'

'नही, रसीदका रवाज नही।'

'तुम समझते हो, हिन्दुओसे बकाश्त निकाल लेनेपर तुम्हारी रहने देंगे ?'

'नवाब साहबके कार-पर्दाज़ तो ऐसा ही कहते हैं।'

'मुझे विश्वास नही।' जंगली मियाँने कहा 'बकरीदके झगड़ेमें भी दोनों तरफ़के कुछ आदमी घायल ज़रूर होंगे। और गिरफ्तार तो गाँव भरके मज़बूत आदमी होंगे। रहीम भाई, उस समय नवाब साहब यदि चाहेंगे चारो सौ एकड़पर क़ब्ज़ा कर लेनेको, तो उन्हें रोकनेके लिए गाँवमें कौन रह जायगा ?'

'लेकिन नवाब साहेब ऐसा न करेंगे। बड़े दीनदार आदमी हैं। सब तरहसे हम लोगोकी मददके लिए तैयार है।'

"करीमने रहीमकी बातपर सन्देह प्रकट करते हुए कहा— 'नहीं रहीम भाई, नवाब साहब हजार दीनदार हों, रुपया उनको भी नहीं काटता। नसीबन् बेचारी बेवाने कितनी मुश्किलके साथ लकड़ी खपडा जमा करके घर बनाया। हम लोग मिन्नत करते ही रह गए, लेकिन दस रुपया सलामी न देनेपर घर गिरवाने के लिए तैयार हो गए थे। १२० एकड़ ज़मीन थोड़ी नहीं है।

मुझे भनक मिली है, नवाब साहेब मोटरवाला हल मँगवा रहे हैं। एक दिन उनके अमलेके साथ खेती-विभागका ओवरसियर आया था, वह देख रहा था, कहाँ पानीकी कल बैठानेसे सब जगह पानी पहुँचेगा।'

"जंगली मियाँने गंभीर मुद्रा धारण करते हुए कहा—'मोमिन भाइयो, पीढ़ियोंसे तुम बेवक़ूफ ही रहे। शरीफ़ क़ौमके मुसलमान हमें कितनी हिकारतकी नजरसे देखते हैं, यह तुमसे छिपा नहीं है। क़ुर्बानी और बाजा लेकर जब झगड़ा होता है, तो हमीं आगे बढ़ाए जाते हैं—'लड़ो भतीजो! पीछे हटो पूतो!—वाली कहावत है। कमसे कम रोटीके सम्बन्धके साथ जहाँ मज़हब शामिल किया जावे, वहाँ सजग रहनेकी ज़रूरत है। कहिए मौलवी साहेब आपकी राय इस बारेमें क्या है?'

'आपसे बिलकुल मुत्तफ़िक़ (सहमत) हूँ। ख़ासकर जबसे जॉगर चलानेवाले अपने हक़पर डँटते जा रहे हैं, तबसे मज़हबकी दुहाई ज़्यादा दी जा रही है। हिन्दुओंसे तो शुर्फ़ा (शरीफ़) लोग कौंसिल, एसेम्बली, नौकरी-चाकरी सभी जगह अपना हिस्सा बँटाना चाहते हैं, किन्तु जब हम अपना हिस्सा माँगते हैं, तो कहा जाता है, अभी उसके लायक़ बनो। अरे भाई, इस्लामके नामपर गला फ़ाड़नेवाले शुर्फ़ा क्या हमारे साथ अछूतोंसे बेहतर सलूक करते हैं?"

"मोमिनोंको अब नवाब और उनके दोनों मौलवियोंकी बातोंमें सन्देह मालूम होने लगा। उन्होंने बतलाया कि एक पंडित भी हिन्दुओंको महाबीरी झंडा निकालनेके लिए उकसा रहा है।'

"करीमने कहा—'उकसा तो रहा है, लेकिन साथ ही यह भी कह रहा है, अगर मुसलमान क़ुर्बानीके लिए ज़िद न करें, तो तुम भी झंडेका इरादा छोड़ दो। नवाब साहबकी नीयतपर भी उसने भारी सन्देह प्रकट किया है।'

"मैंने कहा—'क्यों न दोनों तरफके लोगोंसे मिल लिया जावे।'

"सभी मोमिन भाइयोंने कहा—'मिलनेमें क्या हर्ज है, ख़ासकर जब कि नवाब साहबकी नीयत भी हमें साफ़ नहीं मालूम होती।"

"बनारसी शर्मा हिन्दुओंके नेताके तौरपर हम दोनों मुसल्मान नेताओंसे मिला।"

"दोनों मुसल्मान नेता! क्या खूब?" बटुकने भौंवें तानकर ग़ौरसे दोनोंकी ओर देखते हुए कहा।

"और क्या? फ़ैज़ाबादी मौलाना और मियाँ वहशीसे बढ़कर लायक़ नेता कौन हो सकता है?" रामप्रसादने उत्तर दिया "फिर नेताओंने क्या तय किया?"

"नेताओंमें एकाध बार गर्मागर्म भी छिड़ गई। मालूम होता था, झंडा और क़ुर्बानीका झगडा तो आगे पीछे होता रहेगा, यह तो इसी वक़्त निबटारा कर लेना चाहते है। लेकिन अन्तमें नवाबकी भीतरी साज़िशोंका भंडाफोड़ होने लगा। दोनों तरफ़के नेताओंने हिन्दू-मुसल्मानोंकी सम्मिलित सभा बुलाई। बनारसी शर्मा हिन्दुओंको तैयार करके लाया था। उसने कहा—'हिन्दू भाइयो, अपने बाल-बच्चोंकी ओर तो देखो। नवाब साहब उन्हें दाने दानेके लिए मुहताज करना चाहते है। मै तो कहूँगा—एक गायकी कुर्बानीके लिए तुम इतनी जानोंकी क़ुर्बानी मत कराओ। अगर तुम्हारी राय हो तो मै मुसल्मान भाइयोंको कह दूँ—आज तक क़ुर्बानी चाहे भले ही न हुई हो, किन्तु यदि आज तुम चाहते हो तो बेरोक-टोक क़ुर्बानी कर सकते हो।' हिन्दुओंमें दो-एकको छोड़कर सबने कहा—हम तैयार हैं। उन दो आदमियोंके बारेमें वहीं मालूम हो गया कि वे नवाबके आदमी हैं।"

"फिर मुसल्मानोंकी ओरसे क्या जवाब दिया गया?" कमालने पूछा।

अनवरने कहा—"मोमिनोंकी ओरसे मुझे जवाब देनेको कहा गया। मैंने कहा—'भाई खुदाको गायके गोश्तकी कोई खास ज़िद्द नही है। हिन्दू भाइयोंने अपनी ओरसे जिस उदारताका परिचय दिया है, इसका बदला हम यह करके चुका सकते है—कि हम न गायकी कुर्बानी करेंगे और न बाजेके खिलाफ आवाज़ उठायेंगे।' इसपर वहशीने कहा—"मोमिन भाइयोंकी ओरसे मै यह भी कहूँगा कि हिन्दू-मुसल्मान दोनों एक होकर चारो सौ एकड़ खेतको—जिन्हें कि हमारे ही काश्तोंको नीलाम करा कराकर नवाबने इकट्ठा किए हे—किसानोके हाथसे निकलने न दें।'

"और किसानोकी जयके साथ रसूलपुरकी ४०० एकड़ बकाश्तमें नवाब-साहबकी दाल गलने न पाई।"

× × ×

१९३८ के सारे सालभर देवराज और उसके साथियोंको ज़मीदारोंसे कई मोर्चे लेने पड़े। हर वक़्त उनका एक पैर जेलमें था। सालभरके भीतर देवराजको तीन बार जेलकी हवा खानी पड़ी। अक्तूबर-नवम्बरका महीना था, जब कि मीनापुरके किसानोंने अपने दुःखोंकी गाथा देवराजके कानों तक पहुँचाई—मीनापुरके ज़मीदार रायबहादुर कन्हाई सिह अपने ज़ुल्मोके लिए काफ़ी बदनाम थे। मीनापुरके किसानोंकी गाय-भैसें, साग-भाजी, फल-फूल ही नहीं उनकी इज्ज़त भी कन्हाई सिंहके पैरोके नीचे थी। दूध उनसे बचने-पर गाय-भैसवालोंको मिलता था। तर्कारी उनके लिए अनावश्यक होनेपर बाज़ार या घरमें जाती थी। मीनापुरका कोई किसान न था, जिसके अँगूठेके निशानवाले सादे दो-चार काग़ज़ कन्हाई सिंहके पास न हों। चम्पारन ज़िलेकी हवा बदली देखकर कन्हाई सिंहको कुछ चिन्ता हुई, किन्तु उन्हें विश्वास था कि क़र्ज़की नालिशके

डरके मारे किसकी हिम्मत होगी उनके खिलाफ जानेकी। सचमुच मीनापुरके किसानोकी हिम्मत भी ऐसा करनेकी न थी; किन्तु जानपर आ पड़नेपर चीटी भी काट खानेसे बाज नही आती। कन्हाई सिहने लोगोंकी काश्तोको नीलाम कराकर उन्हीको जोतनेको दे दिया था। अब उन्हे मालूम हुआ, कि जोत रहनेपर उन्हीका हक़ हो जावेगा।

कन्हाई सिंहने चाहा कि जिनपर विश्वास नही है, उनसे खेत निकाल लिया जावे। किसान इस प्रकार जीवसे भी बढकर अपनी प्यारी जीविकाको छिनते देख अधीर हो गये। उनकी आँखोके सामने दाने-दानेके लिए बिलबिलाते अपने बच्चोंकी सूरतें घूमने लगी, आगम अन्धकार मालूम होने लगा। वे देवराजके पास दौड़े। देवराजने मीनापुरमें जाकर खुद जाँच की। किसानोकी दयनीय दशाको देख-कर उनके धैर्यपर उसे आश्चर्य होता था। उसने कन्हाई सिंहसे विनय की, लेकिन वहाँ पसीजनेवाला दिल न था। रायबहादुर कन्हाई सिंह असहयोग और सत्याग्रह मे चम्पारनकी अमन-सभाके प्रधान स्तम्भ थे। लगुनीमे जब पुलिसने गोली चलाई थी, तो गोली चलाकर थके हुए सिपाहियोके लिए मोटर भरकर वह ताज़ी पूड़ी ले गए थे। जिले और प्रान्तके बड़े-बडे हाकिम उन्हें मानते थे। पुलिससे उनकी गहरी मित्रता थी। उनका बड़ा लड़का दस सालसे अवैतनिक खुफ़ियाका काम करता था। कोई राजनीतिक मुक़दमा न था, जिसमें उसने गवाही न दी हो। वह अभिमानसे कहता था, कि मैने इतनोको फाँसीपर चढ़वाया, इतनोको डामिल कराया। ज़िलेके बड़े-बडे चोर रायबहादुर कन्हाई सिंहके खरीदे दास जैसे थे। उनमेंसे यदि कोई जेलसे बाहर था, तो कन्हाई सिंहकी भेंट-पूजा करनेके कारण और जो जेलमें थे वह कन्हाई सिंहके नाराज़ होने के कारण। कन्हाई सिंहको इस मदसे खासी आमदनी होती थी, और उसमें वह पुलिसको भी शामिल रखते थे।

देवराज सिंहने यह भी देखा था, कि "जनताकी सरकार" उसके कामोसे बहुत नाराज है; ऐसी हालतमें मीनापुरके किसानोका पक्ष लेना बड़े जोखिमका काम था—यह वह भली प्रकार जानता था। लेकिन देवराजके आजतकके जीवनमें एक बात जो सबसे स्पष्ट थी, वह थी—उसकी निर्भयता। जब कन्हाई सिहने उसकी बातको ठुकरा दिया, तो उसने मैजिस्ट्रेट और जिलाके कलेक्टरके दरबारमें मीनापुरके किसानोकी दुःखभरी गाथा सुनाई। लेकिन चिर-राजभक्त रायबहादुर कन्हाई सिहके खिलाफ कोई अंग्रेज़ अफसर जा ही कैसे सकता था।

देवराजको मीनापुरकी सरहदके भीतर जानेकी मनाही हो गई। देवराजने गाँव-गाँवमे घूम-घूमकर मीनापुरके ज़मींदारके ज़ुल्मोको लोगोके सामने रखना शुरू किया। जहाँ सभी न्यायालयोके दरवाजे बन्द हो जाते है, वहाँ जनताकी अदालतसे ही न्याय पानेका भरोसा रहता है। लोग—अच्छे-बुरे सभी—कन्हाई सिहसे आजिज़ आ गए थे। ज़िलेके इस दूसरे कलेक्टरने उन्हें इतना तग कर रक्खा था कि वे इस मौक़ेको बेकार जाने देना नही चाहते थे। हज़ारों स्वय-सेवक भर्ती होने लगे। थाने थानेमे अनाज और रुपया जमा होने लगा। मीनापुरके किसानोने खेत छोड़नेसे इन्कार कर दिया। अदालतने राबहादुरके पक्षमे फ़ैसला दिया। क़ानूनकी अवहेलना देखकर पुलिस चुप कैसे रहती? मीनापुरके सभी किसान-घर वयस्क आदमियोसे शून्य हो गए। ज़िलेके दूसरे स्थानोके सैकड़ो आदमी भी उनके साथ जेल चले गए। देवराजको मीनापुरमे न जाते देख, थानेमें जानेकी मनाही की गई, और आज्ञाके न माननेपर उसे जेलमें डाल दिया गया। घरके पुरुषोंके चले जानेपर किसान-स्त्रियोने बगा-वतका लाल झंडा उठाया। पुरानी गीतोकी जगह अब वह क्रान्तिकी गीते गाती फिरती थी। सैकड़ों वर्षों तक सुधारकोने उपदेश देकर

जो काम नही कर पाया, वह इस छोटेसे आन्दोलनने चन्द महीनोंमें कर दिखाया। वह अब मुक्त थी, और अपने पतियोकी तरह अपने खेतोंपर डटी हुई थी। पुलिसने इमानदारीको ताक़पर रख दिया था। और तो और उनपर बुरेसे बुरे लाछन लगानेमे वह बाज न आती थी, और "जनताकी सरकार"से उसे प्रोत्साहन मिल रहा था।

अकेले मीनापुरसे कन्हाई सिहको दबते न देखकर उनकी जमीदारीके सभी गाँवोमे किसानोने ज़मीदारके साथ असहयोग शुरू किया। उनके नौकरो-चाकरोपर बिरादरीका दबाव पड़ने लगा, और वे भागने लगे। नौ मास बीतते बीतते कन्हाई सिहने देखा, कि वह अपने किसी नौकर-चाकरपर विश्वास नही कर सकते। पुलिस, ज़िलाधिकारी और सरकारकी मदद होनेपर भी उनकी इज्ज़त जनताकी आँखोंमे खाकमें मिल चुकी थी।

कलेक्टर बीचमे पडे। कन्हाई सिहने मामला पंचायतके हवाला किया। किसानोंको उनकी ज़मीन मिली।

मीनापुरमें सर्वत्र ख़ुशी मनाई जाती थी, लेकिन रायबहादुरके घरपर नहूसत छाई हुई थी। सुलहके बाद दो बार देवराजकी रायबहादुरसे मुलाक़ात हुई, और उसने कोशिश की, कि रायबहादुरके दिलकी कदूरत निकल जावे। रायबहादुरके कहनेसे भी मालूम होता था, कि अब वह "बीती ताहि बिसारि दे" का अनुसरण कर रहे हैं, किन्तु, देवराजके साथी उसे सावधान कर रहे थे—मीनापुरके किसानोको भले ही ज़मीन मिल गई है, लेकिन रायबहादुर तुम्हें क्षमा करनेके लिए तैयार नही है। लेकिन देवराजकी निर्भयता उसे माननेके लिए तैयार न थी।

२४ फ़रवरी (१६३६)को दस बजे दिनका समय था। देवराज अकेला मीनापुरकी ओर जा रहा था। आज शामको मीनापुरके

किसान उसका अभिनंदन करना चाहते थे, और अपने स्वभावके अनुसार अपने समय और मार्गकी सूचना दिए बगैर वह अकेला क़दम बढ़ाए गाँवकी ओर जा रहा था। सड़क छोड़कर उसने पगडंडीका रास्ता लिया। एक सूखी नदीकी अँगनाईमें उतरा। उसे क्या मालूम था, कि करारकी आड़से मृत्यु उसकी ओर झाँक रही है। जिस वक़्त उसके पैर करारसे नीचेकी ओर बढे, उसी वक़्त दोनों तरफ़से दो लाठियाँ उसके पैरोंपर पड़ी, वह वहीं मुँहके बल गिर गया। एक पैरकी हड्डी चूर हो चुकी थी। बातकी बातमें दस आदमी चारो ओरसे उसपर टूट पडे; और चन्द मिनटोंमें वहाँ देवराजका निर्जीव शरीर पडा था।